



تَطْبِيقُ الْآيَاتِ (اُردو)

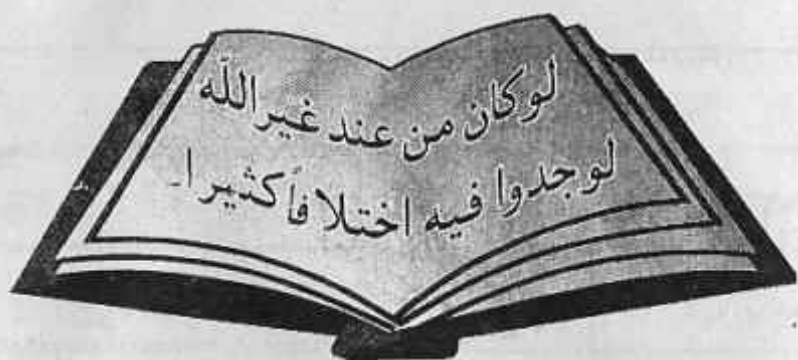
قرآن مجید کی آیات میں ظاہری تعارض و تقاض کی بہترین
دولتین تشریح و تطبیق مستند و معتد قدیم و جدید عربی تفاسیر کی روشنی میں

تصنیف

مولانا مفتی ذاکر حسن نعمانی

استاد حدیث و تخصص جامعہ عثمانیہ پشاور

سلسلہ مطبوعات نمبر 2



تَطْبِيقُ الْآيَاتِ (اُردو)

قرآن مجید کی آیات میں ظاہری تعارض و تقاض کی بہترین
دو لکھین تشریح و تطبیق مستند و معتد قدیم و جدید عربی تفاسیر کی روشنی میں

تصنیف

مولانا مفتی ذاکر حسن نعمانی

استاد حدیث و تخصص جامعہ عثمانیہ پشاور

فاضل جامعہ العلوم اسلامیہ علامہ نوری ٹاؤن کراچی و متخصص جامعہ دارالعلوم حقانیہ کوئٹہ خٹک

ناشر

دارالتصنیف: جامعہ عثمانیہ پشاور

سن تالیف
ستمبر 2004ء جب ۱۳۲۵ھ

فہرست تطبیق الآیات

| صفحہ | عنوان | صفحہ | عنوان |
|------|-----------------------|------|--|
| ۳۶ | تعارض نمبر ۱۳ آیت 57 | ۹ | تقریظ: مولانا مفتی غلام الرحمن صاحب |
| ۳۷ | تعارض نمبر ۱۴ آیت 56 | ۱۱ | تقریظ: علامہ مولانا مغفور اللہ صاحب |
| ۳۹ | تعارض نمبر ۱۵ آیت 60 | ۱۲ | قرآنی آیات میں تعارض اور تطبیق (ڈاکٹر حسن) |
| ۴۰ | تعارض نمبر ۱۶ آیت 87 | | سورة البقرة |
| ۴۲ | تعارض نمبر ۱۷ آیت 102 | ۱۶ | تعارض نمبر ۱ آیت 2 |
| ۴۳ | تعارض نمبر ۱۸ آیت 114 | ۱۹ | تعارض نمبر ۲ آیت 2 |
| ۴۸ | تعارض نمبر ۱۹ آیت 114 | ۲۱ | تعارض نمبر ۳ آیت 6 |
| ۴۹ | تعارض نمبر ۲۰ آیت 118 | ۲۳ | تعارض نمبر ۴ آیت 7 |
| ۵۱ | تعارض نمبر ۲۱ آیت 143 | ۲۵ | تعارض نمبر ۵ آیت 18 |
| ۵۵ | تعارض نمبر ۲۲ آیت 170 | ۲۶ | تعارض نمبر ۶ آیت 22 |
| ۵۶ | تعارض نمبر ۲۳ آیت 174 | ۲۷ | تعارض نمبر ۷ آیت 23 |
| ۵۷ | تعارض نمبر ۲۴ آیت 184 | ۲۸ | تعارض نمبر ۸ آیت 29 |
| ۵۹ | تعارض نمبر ۲۵ آیت 185 | ۲۹ | تعارض نمبر ۹ آیت 24 |
| ۶۱ | تعارض نمبر ۲۶ آیت 193 | ۳۱ | تعارض نمبر ۱۰ آیت 46 |
| ۶۲ | تعارض نمبر ۲۷ آیت 213 | ۳۳ | تعارض نمبر ۱۱ آیت 47 |
| ۶۳ | تعارض نمبر ۲۸ آیت 221 | ۳۴ | تعارض نمبر ۱۲ آیت 49 |

جملہ حقوق بحق مصنف محفوظ ہیں

نام کتاب..... تطبیق الآیات

تصنیف..... مولانا مفتی ڈاکٹر حسن نعمانی

صفحات..... ۳۵۸

کیوزنگ..... (الکلیم کیوزنگ) دارالعلوم حقانیہ اکوڑہ خٹک

تعداد..... ایک ہزار

تاریخ طباعت..... رجب ۱۴۲۵ھ ستمبر ۲۰۰۴ء

پروف ریڈنگ..... مولانا فضل مغفور حقانی، مولانا مبشر احمد، مولانا احسان اللہ شاہ

قیمت.....

ناشر..... دارالتصنیف جامعہ عثمانیہ پشاور صدر

ملنے کے پتے

۱. جامعہ عثمانیہ پشاور صدر نوٹھیہ روڈ پوسٹ بکس ۱۲۰۹

۲. حافظ کتب خانہ نزد دارالعلوم حقانیہ اکوڑہ خٹک

۳. مکتبہ فاروقیہ بالمقابل جامعہ فاروقیہ شاہ فیصل کالونی نمبر ۶ کراچی نمبر ۲۵

۴. اسلامی کتب خانہ علامہ بنوری ٹاؤن کراچی نمبر ۵ پوسٹ کوڈ ۷۴۸۰۰

۵. کتب خانہ رشیدیہ راجہ بازار اولپنڈی

۶. مکتبہ المعارف محلہ جنگلی پشاور

| صفحة | عنوان | صفحة | عنوان |
|------|-----------------------|------|-----------------------|
| ١٣٩ | تعارض نمبر ٣ آیت 108 | ١١٥ | تعارض نمبر ٥٩ آیت 95 |
| ١٤٠ | تعارض نمبر ٤ آیت 108 | ١١٤ | تعارض نمبر ٦٠ آیت 139 |
| ١٤١ | تعارض نمبر ٥ آیت 130 | | سورة المائدة |
| ١٤٣ | تعارض نمبر ٦ آیت 131 | ١١٩ | تعارض نمبر ٦١ آیت 21 |
| ١٤٥ | تعارض نمبر ٧ آیت 148 | ١٢١ | تعارض نمبر ٦٢ آیت 42 |
| ١٤٩ | تعارض نمبر ٨ آیت 160 | ١٢٢ | تعارض نمبر ٦٣ آیت 94 |
| | سورة الاعراف | ١٢٣ | تعارض نمبر ٦٤ آیت 101 |
| ١٥١ | تعارض نمبر ٩ آیت 15 | ١٢٥ | تعارض نمبر ٦٥ آیت 106 |
| ١٥٣ | تعارض نمبر ١٠ آیت 28 | ١٢٤ | تعارض نمبر ٦٦ آیت 109 |
| ١٥٦ | تعارض نمبر ١١ آیت 51 | ١٣٠ | تعارض نمبر ٦٧ آیت 115 |
| ١٥٤ | تعارض نمبر ١٢ آیت 54 | ١٣١ | تعارض نمبر ٦٨ آیت 128 |
| ١٥٨ | تعارض نمبر ١٣ آیت 78 | | سورة الانعام |
| ١٦٠ | تعارض نمبر ١٤ آیت 94 | ١٣٢ | تعارض نمبر ٦٩ آیت 25 |
| ١٦١ | تعارض نمبر ١٥ آیت 107 | ١٣٥ | تعارض نمبر ٧٠ آیت 26 |
| ١٦٢ | تعارض نمبر ١٦ آیت 109 | ١٣٦ | تعارض نمبر ٧١ آیت 61 |
| ١٦٣ | تعارض نمبر ١٧ آیت 137 | ١٣٨ | تعارض نمبر ٧٢ آیت 103 |

| صفحة | عنوان | صفحة | عنوان |
|------|-----------------------|------|-----------------------|
| ٩٠ | تعارض نمبر ٢٣ آیت 142 | ٦٣ | تعارض نمبر ٢٩ آیت 221 |
| ٩٢ | تعارض نمبر ٢٥ آیت 155 | ٦٦ | تعارض نمبر ٣٠ آیت 253 |
| ٩٣ | تعارض نمبر ٢٦ آیت 164 | ٦٨ | تعارض نمبر ٣١ آیت 254 |
| ٩٣ | تعارض نمبر ٢٧ آیت 186 | ٤٠ | تعارض نمبر ٣٢ آیت 256 |
| | سورة النساء | ٤٢ | تعارض نمبر ٣٣ آیت 284 |
| ٩٥ | تعارض نمبر ٢٨ آیت 3 | | سورة آل عمران |
| ٩٤ | تعارض نمبر ٢٩ آیت 12 | ٤٣ | تعارض نمبر ٣٤ آیت 7 |
| ٩٨ | تعارض نمبر ٥٠ آیت 15 | ٤٦ | تعارض نمبر ٣٥ آیت 38 |
| ٩٩ | تعارض نمبر ٥١ آیت 23 | ٤٨ | تعارض نمبر ٣٦ آیت 38 |
| ١٠١ | تعارض نمبر ٥٢ آیت 26 | ٤٩ | تعارض نمبر ٣٧ آیت 45 |
| ١٠٣ | تعارض نمبر ٥٣ آیت 32 | ٨٠ | تعارض نمبر ٣٨ آیت 55 |
| ١٠٣ | تعارض نمبر ٥٤ آیت 33 | ٨٢ | تعارض نمبر ٣٩ آیت 67 |
| ١٠٤ | تعارض نمبر ٥٥ آیت 42 | ٨٣ | تعارض نمبر ٤٠ آیت 90 |
| ١٠٨ | تعارض نمبر ٥٦ آیت 69 | ٨٦ | تعارض نمبر ٤١ آیت 102 |
| ١١٠ | تعارض نمبر ٥٧ آیت 78 | ٨٤ | تعارض نمبر ٤٢ آیت 103 |
| ١١٢ | تعارض نمبر ٥٨ آیت 93 | ٨٩ | تعارض نمبر ٤٣ آیت 123 |

| صفحة | عنوان | صفحة | عنوان |
|------|------------------------|------|-------------------------|
| ٢١٨ | تعارض نمبر ١٢٥ آیت 27 | ٢٠١ | تعارض نمبر ١١٣ آیت 17 |
| ٢١٩ | تعارض نمبر ١٢٦ آیت 29 | ٢٠٢ | تعارض نمبر ١١٣ آیت 36 |
| ٢٢٠ | تعارض نمبر ١٢٧ آیت 49 | ٢٠٣ | تعارض نمبر ١١٥ آیت 43 |
| ٢٢١ | تعارض نمبر ١٢٨ آیت 50 | | سورة الحجر |
| ٢٢٣ | تعارض نمبر ١٢٩ آیت 52 | ٢٠٣ | تعارض نمبر ١١٦ آیت 18 |
| ٢٢٣ | تعارض نمبر ١٣٠ آیت 53 | | سورة النحل |
| | سورة مريم | ٢٠٣ | تعارض نمبر ١١٧ آیت 25 |
| ٢٢٥ | تعارض نمبر ١٣١ آیت 71 | ٢٠٦ | تعارض نمبر ١١٨ آیت 36 |
| ٢٢٤ | تعارض نمبر ١٣٢ آیت 85 | ٢٠٩ | تعارض نمبر ١١٩ آیت 67 |
| ٢٢٩ | تعارض نمبر ١٣٣ آیت 91 | ٢١٠ | تعارض نمبر ١٢٠ آیت 100 |
| | سورة طه | | سورة بنی اسرائیل |
| ٢٣٠ | تعارض نمبر ١٣٤ آیت 15 | ٢١١ | تعارض نمبر ١٢١ آیت 14 |
| ٢٣٢ | تعارض نمبر ١٣٥ آیت 22 | ٢١٣ | تعارض نمبر ١٢٢ آیت 15 |
| ٢٣٣ | تعارض نمبر ١٣٦ آیت 27 | ٢١٥ | تعارض نمبر ١٢٣ آیت 85 |
| ٢٣٣ | تعارض نمبر ١٣٧ آیت 104 | | سورة الكهف |
| ٢٣٥ | تعارض نمبر ١٣٨ آیت 115 | ٢١٦ | تعارض نمبر ١٢٤ آیت 20 |

| صفحة | عنوان | صفحة | عنوان |
|------|------------------------|------|------------------------|
| | سورة هود | ١٦٥ | تعارض نمبر ٨٨ آیت 157 |
| ١٨٥ | تعارض نمبر ١٠١ آیت 15 | ١٦٤ | تعارض نمبر ٨٩ آیت 179 |
| ١٨٤ | تعارض نمبر ١٠٢ آیت 20 | | سورة الانفال |
| ١٨٨ | تعارض نمبر ١٠٣ آیت 45 | ١٦٩ | تعارض نمبر ٩٠ آیت 2 |
| ١٨٩ | تعارض نمبر ١٠٤ آیت 118 | ١٤١ | تعارض نمبر ٩١ آیت 33 |
| ١٩٠ | تعارض نمبر ١٠٥ آیت 118 | ١٤٢ | تعارض نمبر ٩٢ آیت 72 |
| ١٩٢ | تعارض نمبر ١٠٦ آیت 119 | | سورة البراءة |
| ١٩٣ | تعارض نمبر ١٠٧ آیت 120 | ١٤٣ | تعارض نمبر ٩٣ آیت 30 |
| | سورة يوسف | ١٤٥ | تعارض نمبر ٩٤ آیت 41 |
| ١٩٦ | تعارض نمبر ١٠٨ آیت 22 | ١٤٦ | تعارض نمبر ٩٥ آیت 43 |
| ١٩٤ | تعارض نمبر ١٠٩ آیت 55 | ١٤٨ | تعارض نمبر ٩٦ آیت 101 |
| ١٩٨ | تعارض نمبر ١١٠ آیت 100 | | سورة يونس |
| | سورة الرعد | ١٤٩ | تعارض نمبر ٩٧ آیت 18 |
| ١٩٩ | تعارض نمبر ١١١ آیت 42 | ١٨٠ | تعارض نمبر ٩٨ آیت 58 |
| | سورة ابراهيم | ١٨١ | تعارض نمبر ٩٩ آیت 98 |
| ٢٠٠ | تعارض نمبر ١١٢ آیت 9 | ١٨٣ | تعارض نمبر ١٠٠ آیت 101 |

| صفحة | عنوان | صفحة | عنوان |
|------|-----------------------|------|-----------------------|
| ٢٨٣ | تعارض نمبر ١٤١ آیت 5 | | سورة الفاطر |
| ٢٨٣ | تعارض نمبر ١٤٢ آیت 47 | ٢٦٩ | تعارض نمبر ١٦٠ آیت 3 |
| ٢٨٦ | تعارض نمبر ١٤٣ آیت 49 | ٢٤١ | تعارض نمبر ١٦١ آیت 24 |
| | سورة الشورى | | سوره يس |
| ٢٨٤ | تعارض نمبر ١٤٣ آیت 45 | ٢٤١ | تعارض نمبر ١٦٢ آیت 51 |
| ٢٨٨ | تعارض نمبر ١٤٥ آیت 45 | ٢٤٣ | تعارض نمبر ١٦٣ آیت 28 |
| | سورة الزخرف | | سورة صفت |
| ٢٨٩ | تعارض نمبر ١٤٦ آیت | ٢٤٣ | تعارض نمبر ١٦٣ آیت 4١ |
| | سورة الدخان | | سورة الزمر |
| ٢٩٠ | تعارض نمبر ١٤٤ آیت 49 | ٢٤٥ | تعارض نمبر ١٦٥ آیت 53 |
| | سورة الجاثية | | تعارض نمبر ١٦٦ آیت 68 |
| ٢٩٢ | تعارض نمبر ١٤٨ آیت 28 | | سورة مؤمن |
| ٢٩٣ | تعارض نمبر ١٤٩ آیت 32 | ٢٤٤ | تعارض نمبر ١٦٤ آیت 7 |
| ٢٩٣ | تعارض نمبر ١٨٠ آیت 9 | ٢٤٩ | تعارض نمبر ١٦٨ آیت 68 |
| | سورة محمد | ٢٤٩ | تعارض نمبر ١٦٩ آیت 72 |
| ٢٩٦ | تعارض نمبر ١٨١ آیت 36 | ٢٨١ | تعارض نمبر ١٤٠ آیت 74 |
| --- | ----- | | سورة خم السجدة |

| صفحة | عنوان | صفحة | عنوان |
|------|-----------------------|------|------------------------|
| | سورة النمل | | سورة الانبياء |
| ٢٥٥ | تعارض نمبر ١٥٠ آیت 4 | ٢٣٦ | تعارض نمبر ١٣٩ آیت 81 |
| ٢٥٤ | تعارض نمبر ١٥١ آیت 83 | | سورة المؤمنون |
| | سورة القصص | ٢٣٨ | تعارض نمبر ٢٠ آیت 12 |
| ٢٥٨ | تعارض نمبر ١٥٢ آیت 56 | ٢٣٠ | تعارض نمبر ٢١ آیت 96 |
| ٢٦٠ | تعارض نمبر ١٥٣ آیت 63 | ٢٣٠ | تعارض نمبر ١٢٢ آیت 101 |
| | سورة العنكبوت | ٢٣١ | تعارض نمبر ١٢٣ آیت 101 |
| ٢٦١ | تعارض نمبر ١٥٣ آیت 24 | | سورة النور |
| ٢٦٢ | تعارض نمبر ١٥٥ آیت 27 | ٢٣٣ | تعارض نمبر ١٢٣ آیت 3 |
| | سورة الروم | ٢٣٦ | تعارض نمبر ١٢٥ آیت 24 |
| ٢٦٣ | تعارض نمبر ١٥٦ آیت 45 | ٢٣٨ | تعارض نمبر ١٢٦ آیت 26 |
| | سورة الاحزاب | | سورة الفرقان |
| ٢٦٥ | تعارض نمبر ١٥٤ آیت 6 | ٢٥٠ | تعارض نمبر ١٣٤ آیت 69 |
| | سورة السباء | ٢٥٢ | تعارض نمبر ١٣٨ آیت 75 |
| ٢٦٦ | تعارض نمبر ١٥٨ آیت 17 | | سورة الشعراء |
| ٢٦٨ | تعارض نمبر ١٥٩ آیت 41 | ٢٥٣ | تعارض نمبر ١٣٩ آیت 145 |

| صفحة | عنوان | صفحة | عنوان |
|------|----------------------|------|----------------------|
| ٣٠٩ | تعارض رقم ١٩٢ آيت 35 | | سورة الحجرات |
| ٣١٠ | تعارض رقم ٢٩٣ آيت 39 | ٢٩٤ | تعارض رقم ١٨٢ آيت 13 |
| | سورة الحديد | | سورة ق |
| ٣١٢ | تعارض رقم ١٩٣ آيت 4 | ٢٩٩ | تعارض رقم ١٨٣ آيت 45 |
| ٣١٣ | تعارض رقم ١٩٥ آيت 8 | | سورة الذاريات |
| | سورة المجادلة | ٣٠٠ | تعارض رقم ١٨٣ آيت 50 |
| ٣١٥ | تعارض رقم ١٩٦ آيت 12 | ٣٠١ | تعارض رقم ١٨٥ آيت 58 |
| | سورة الممتحنة | | سورة الطور |
| ٣١٥ | تعارض رقم ١٩٤ آيت 8 | ٣٠٢ | تعارض رقم ١٨٦ آيت 9 |
| | سورة المنافقون | ٣٠٣ | تعارض رقم ١٨٤ آيت 21 |
| ٣١٨ | تعارض رقم ١٩٨ آيت 1 | | سورة النجم |
| | سورة المعارج | ٣٠٣ | تعارض رقم ١٨٨ آيت 43 |
| ٣١٩ | تعارض رقم ١٩٩ آيت 4 | ٣٠٥ | تعارض رقم ١٨٩ آيت 39 |
| ٣٢١ | تعارض رقم ٢٠٠ آيت 8 | | سورة القمر |
| | سورة نوح | ٣٠٤ | تعارض رقم ١٩٠ آيت 19 |
| ٣٢١ | تعارض رقم ٢٠١ آيت 27 | ٣٠٨ | تعارض رقم ١٩١ آيت 29 |
| | سورة المزمل | | سورة الرحمن |

| صفحة | عنوان | صفحة | عنوان |
|------|-----------------------|------|----------------------|
| ٣٣٦ | تعارض رقم ٢١١ آيت 10 | ٣٢٣ | تعارض رقم ٢٠٢ آيت 9 |
| | سورة الطارق | | سورة المدثر |
| ٣٣٤ | تعارض رقم ٢١٢ آيت 17 | ٣٢٣ | تعارض رقم ٢٠٣ آيت 54 |
| | سورة الاعلى | | سورة الدهر |
| ٣٢٨ | تعارض رقم ٢١٣ آيت 7,6 | ٣٢٦ | تعارض رقم ٢٠٤ آيت 21 |
| | سورة الغاشية | ٣٢٤ | تعارض رقم ٢٠٥ آيت 28 |
| ٣٣٠ | تعارض رقم ٢١٣ آيت 6 | | سورة المرسلات |
| | سورة الفجر | ٣٢٨ | تعارض رقم ٢٠٦ آيت 35 |
| ٣٢٢ | تعارض رقم ٢١٥ آيت 22 | ٣٣٠ | تعارض رقم ٢٠٤ آيت 36 |
| | سورة الشمس | | سورة النبأ |
| ٣٢٣ | تعارض رقم ٢١٦ آيت 8 | ٣٣١ | تعارض رقم ٢٠٨ آيت 23 |
| | سورة الليل | | سورة عبس |
| ٣٢٣ | تعارض رقم ٢١٤ آيت 12 | ٣٣٣ | تعارض رقم ٢٠٩ آيت 2 |
| | سورة الضحى | | سورة التكويد |
| ٣٢٥ | تعارض رقم ٢١٨ آيت 7 | ٣٢٣ | تعارض رقم ٢١٠ آيت 19 |
| | سورة القدر | | سورة الانشاقق |

| صفحہ | عنوان | صفحہ | عنوان |
|------|----------------------|------|-----------------------------|
| ۳۵۲ | تعارض نمبر ۲۲۲ آیت 2 | ۳۲۹ | تعارض نمبر ۲۱۹ آیت 1 |
| | سورة الكافرون | | سورة الزلزال |
| ۳۵۵ | تعارض نمبر ۲۲۳ آیت 3 | ۳۵۱ | تعارض نمبر ۲۲۰ آیت نمبر 8,7 |
| | سورة الناس | | سورة العديت |
| ۳۵۷ | تعارض نمبر ۲۲۳ آیت 4 | ۳۵۲ | تعارض نمبر ۲۲۱ آیت 7,6 |
| | ----- | | سورة العصر |
| | | | |

حضرت مولانا مفتی غلام الرحمن مدظلہ

شیخ القرآن والحديث رئيس دار التصنيف مهتمم جامعه

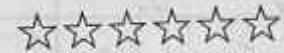
عثمانیہ پشاور

باسمہ تعالیٰ

حضرت مولانا مفتی ذاکر حسن نعمانی صاحب کی علوم قرآن پر ایک اور تیسف 'تطبيق الآيات آپ کے ہاتوں میں ہے بجز اللہ اس سے قبل' 'وجوه التکرار فی القرآن' علمی حلقوں میں پذیرائی حاصل کر کے ایک خاص مقام حاصل کر چکی ہے۔ یہ قرآن مجید سے آپ کے گہرے تعلق کی دلیل ہے کہ علوم قرآن کے نئے زاویے آپ پر کھل کر تحریری شکل میں قارئین تک پہنچ رہے ہیں۔ یہ قرآن کی خوبی ہے کہ اس سے تعلق جتنا قوی ہوگا اتنے ہی اس کے رموز اور مخفی راز انسان پر کھلتے ہیں۔

قرآن چونکہ اللہ تعالیٰ کی کتاب ہے زمانہ اور حالات کے بدلنے کے باوجود اس کی رعنائیاں اور تروتازگیاں قائم و دائم ہیں اس میں ہر زمانہ کے حالات کی رعایت پائی جاتی ہے اس لئے ہر جگہ اور ہر حالات سے ہم آہنگ اور موافق ہے اس میں ہر دور کے مسائل کا حل موجود ہے یہ ممکن نہیں کہ کسی وقت کے مسائل کا حل اس میں نہ ہو کیونکہ اللہ تعالیٰ کا علم ازلی اور ابدی ہے وہ زمانوں کے تغیر و تبدیلی اور حالات کے نشیب و فراز سے آگاہ ہیں اس عالم خبیر نے انسان کی فلاح کے لئے جس نسخہ کا انتخاب کیا ہے اس میں یہ امکان نہیں کہ حالات سے ناموافق ہو جس کی وجہ سے اس کو ترک کر دیا جائے۔

قرآنی آیات کا تضاد و تعارض مفسرین کے ہاں ایک معرکہ الاراء مسئلہ ہے اگرچہ حقیقت میں کوئی تعارض اور تضاد نہیں پایا جاتا کیونکہ دو آیات کا آپس میں متعارض



ہونا حالات سے ناواقفی یا عجز کا نتیجہ ہوتا ہے اور رب کائنات میں ایسے اسباب نہیں پائے جاتے لیکن پھر بھی بسا اوقات کوتاہ نظری کے وجہ سے تعارض کا شبہ سامنے آتا ہے علماء کرام نے اپنے اپنے ذوق کے مطابق اس مسئلہ کو حل کرنے کی کوشش کی ہے۔

زیر نظر کتاب میں موصوف نے معتمد عربی تفاسیر کا سہارا لیکر متعارض آیات اور ان کا حل یکجا کرنے کے کوشش کی ہے۔ موصوف کی یہ محنت قرآن فہمی میں ممد و معاون رہیگی۔ دلی دعا ہے کہ اللہ تعالیٰ یہ محنت اپنے دربار میں قبول فرما کر نجات کا ذریعہ بنا۔ آمین۔

غلام الرحمن

۱۳۲۵/۶/۳ھ

فضيلة الشيخ مولانا مغفور الله صاحب حفظه الله

استاد الحديث بالجامعة الحقانية

باسمه تعالى.

الحمد لله رب العلمين والصلوة والسلام على سيد الانبياء والمرسلين
محمد وآله واصحابه اجمعين.

اما بعد فقد قال الله تعالى ان نحن نزلنا الذكروا ناله لحفظون. ومن الدلائل
الواضحة على صداقة وعده تبارك وتعالى ان ترى في كل قرن وعصر
رجالا يعثهم الله تعالى ويقسمهم لخدمة القرآن الكريم باطوار شتى
يحمون حول مباحث القرآن الكريم ينفون عنه تحريف الغالين وتاويل
الجاهلین وانتحال المبطلين فنعم مسلکهم ونعم مآلهم. ومنها دفع
التعارض بين الآيات باعتبار ظاهر النظر. وان الاخ في الله ذاكر حسن
النعماني المدرس واستاد الحديث بجامعة العثمانيه الواقعة في بشاور
صاحب التحقيق والتدقيق والتقرير والتحرير وذو ملكة علمية وخصال
سنية بذل جهده حول مبحث دفع التعارض فجمع حقائق ودقائق ونكاتا
واسراراً ولطائف ولقد اجاد فيما افاد. واسئل الله تعالى ان يجعل جهده
مقبلاً ومجهوده نافعاً للمسلمين ومن الباقيات الصالحات والصدقات
الجارية له الى يوم الدين. آمين.

ويرحم الله عبد اقال آمينا.

العبد الاقفر مغفور الله خادم الحديث دار العلوم حقانيه اكورّه خشك

۱۳۲۵/۶/۱۲ھ

قرآنی آیات میں تعارض تطبیق

اور تعارض کی حقیقت

الحمد لله الذی انزل علی عبدہ الكتاب ولم يجعل له عوجاً
ونصلی ونسلم علی النبی الامی الذی هدانا الی فہم القرآن
بالحق وعلی آلہ وصحبہ اجمعین.

وبعد۔ قال اللہ تعالیٰ تبارک وتعالیٰ افلا یتدبرون القرآن
ولو کان من عند غیر اللہ لوجدوا فیہ اختلافاً کثیراً.

کیا غور نہیں کرتے قرآن میں اور اگر یہ ہوتا کسی اور کا سوائے اللہ کے تو ضرور پاتے
اس میں بہت تفاوت۔ (النساء)

قرآن مجید کا خاصہ ہے کہ اس میں کوئی اختلاف اور تناقض نہیں بلکہ اس
میں اختلاف کا نہ ہونا کلام باری ہونے کی دلیل ہے۔ اللہ تعالیٰ نے قرآن مجید کو اپنے
وسیع محیط اور لازوال علم کے مطابق اتارا ہے۔ انزلہ بعلمہ۔ (النساء) انسان اصل
میں جاہل ہے جتنا علم حاصل کر لے پھر بھی اس کا جہل اس پر حاوی ہوتا ہے اس
کا جہل ہر حالت میں اس کے علم سے زیادہ ہوتا ہے علم کے حصول کے ساتھ اس کے
جہل میں کمی آتی رہتی ہے لیکن اس کا علم اس کے جہل سے بڑھتا نہیں اس لئے
انسان کے علم میں بے شمار اختلافات تضادات اور تناقضات پائے جاتے ہیں قرآن
کی آیات میں جو بظاہر تعارض نظر آتا ہے وہ انسان کے اس ذاتی وصف جہالت کا
نتیجہ ہے۔ اللہ تعالیٰ کے علم میں تو اختلافات کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا ارشاد باری ہے
وسح کل شیء علما اللہ تعالیٰ اپنے علم سے تمام چیزوں کا احاطہ کئے ہوئے ہیں قرآن
مجید کی آیات کا تعارض دراصل انسان کے ناقص علم کا تعارض ہے جس کا مکمل کلام الہی
نہیں بلکہ اس جہول انسان کا ذہن ہے جن آیات میں ایک مفسر تطبیق اور توفیق

پیدا کرتا ہے اس کا مکمل بھی خود اس کا ذہن ہے اس کے ذہن میں تعارض آیا
اور پھر اس کے ذہن میں تطبیق آگئی۔ گویا تھوڑی دیر پہلے ذہن میں آیات کے بارے
میں جو جہل کی تاریکی تھی اس کی جگہ علم کی روشنی نے لے لی اور کلام الہی کے بارے
میں ذہن بالکل صاف ہو گیا۔ جن حضرات کا علم و تقویٰ وسیع اور زیادہ ہو ان کو آیات
میں تعارض محسوس نہیں ہوتا۔ مثلاً مولانا رشید احمد گنگوہی فرماتے ہیں نصوص شرعیہ میں
کہیں تعارض محسوس نہیں ہوتا۔ ہر نص اپنے محل اور محل پر چسپاں نظر آتی ہے۔ بڑے
بڑے مفسرین جو اپنی تفاسیر میں تطبیق بیان کرتے ہیں تو اس کی وجہ یہ ہے کہ ممکن ہے
کہ بعد والوں کے اذہان میں تعارض پیدا ہو اور ناقص علم کی وجہ سے تطبیق کی کوئی
صورت نظر نہ آئے تو مشکل میں پھنس جائیں گے اس لئے مفسرین امت نے یہ
خدمت بدرجہ اتم کی ہے۔ ان کی تفاسیر دیکھنے سے یہ بات بالکل عیاں ہے۔

ایک سوال ذہن میں پیدا ہوتا ہے کہ قرآن کی آیت ولو کان من عند غیر اللہ
لو وجدوا فیہ اختلافاً کثیراً سے تو معلوم ہوتا ہے کہ قرآن کی آیات میں کسی قسم
کا تعارض نہیں۔ حالانکہ کافی آیات میں بظاہر تعارض نظر آتا ہے۔

علامہ زنجیری نے اس کا جواب دیا ہے کہ یہ اختلاف اور تعارض متدبرین
(غور کرنے والوں کے نزدیک) نہیں بلکہ غیر متدبرین کے لئے ہے۔ اس سے یہ
بات بھی معلوم ہوئی کہ قرآن مجید میں تعارض عدم تدبر یا ناقص تدبر کی وجہ سے
پیدا ہوتا ہے۔ صحیح تدبر والے قرآن مجید میں کسی قسم کا تعارض نہ پائیں گے۔ اور تطبیق
کا راستہ بھی تدبر ہے۔

تعارض کسی حقیقت :
قرآن مجید میں ظاہری تعارض
ہے حقیقی تعارض نہیں۔ حقیقی تعارض کے لئے آٹھ چیزوں میں اتحاد ضروری
ہے۔ اگر ان میں کوئی وحدت فوت ہو جائے تو تناقض نہیں ہوگا۔

- (۱) موضوع کا اتحاد. زید قائم و عمرو لیس بقائم یہاں موضوع کا اختلاف ہے لہذا کوئی تناقض نہیں.
- (۲) محمول کا اتحاد. زید قائم و زید لیس بضاحک کوئی تناقض نہیں اس لئے کہ محمول مختلف فیہ ہے.
- (۳) زمان کا اتحاد. زید قائم لیل و زید لیس بنائے نہار کوئی تناقض نہیں اس لئے کہ زمان کا اختلاف ہے.
- (۴) مکان کا اتحاد. زید جالس فی الدار و زید لیس بجالس فی السوق. تناقض اس لئے نہیں ہے کہ مکان کا اختلاف ہے.
- (۵) شرط کا اتحاد. کل حیوان انسان بشرط کوند ناطقا و بعض الحيوان لیس بانسان بشرط کوند لاناطقاً. تناقض نہیں اس لئے کہ شرط مختلف ہے.
- (۶) اضافت کا اتحاد. زید اب لعرف و زید لیس باب. تناقض نہیں اس لئے کہ اضافت مختلف فیہ ہے.
- (۷) قوت و فعل کا اتحاد. کل انسان کاتب بالقوة و بعض الانسان لیس بکاتب بالفعل. قوت و فعل میں اختلاف ہے لہذا تناقض نہیں.
- (۸) جزو و کل کا اتحاد. بعض الزنجی اسود و کل زنجی لیس باسود. زنجی کا بعض بدن اسود ہے اس لئے کہ دانت سفید ہیں کل زنجی اسود اس لئے نہیں کہ دانت سفید ہیں. یہاں جزو و کل کا اختلاف ہے لہذا تناقض نہیں کبھی تمیز کے اختلاف کی وجہ سے بھی تعارض دفع ہو جاتا ہے. مثلاً زید طیب نسباً. زید نسب کے لحاظ سے اچھا ہے و زید لیس بطیب خلقاً. اور زید اخلاق کے لحاظ سے اچھا نہیں. دونوں کوئی تعارض نہیں.
- تناقض کی حقیقت کو جاننے کے لئے یہ اشعار مفید ہیں.

در تناقض ہشت وحدت شرط دان. وحدت موضوع و محمول و مکان. وحدت شرط و اضافت جزو کل قوت و فعل است در اخر زمان. تناقض کی مذکورہ حقیقت ہی کی روشنی میں مفسرین نے بظاہر متعارض آیات میں تطبیق اور توفیق پیدا کی ہے.

جن تفاسیر سے متعارض آیات کی تطبیق تلامذہ کسی حصہ ان کے نام یہ ہیں.

۱. الکشاف ۲. طبری ۳. القرطبی ۴. ابن کثیر ۵. روح المعانی ۶. روح البیان ۷. زاد المسیر ۸. بیضاوی ۹. جلالین ۱۰. الصاوی ۱۱. الجمل ۱۲. اضواء البیان ۱۳. تفسیر کبیر ۱۴. معانی القرآن ۱۵. خازن ۱۶. البحر المحیط ۱۷. الثعالبی ۱۸. غرائب القرآن ۱۹. الدر المنثور ۲۰. الدر الثمین ۲۱. ابی اسعود ۲۲. مظہری ۲۳. معالم التزیل ۲۴. بیان القرآن اس کے علاوہ مسائل الرازی اور تاج القرآء الکرمانی کی کتاب البرہان فی توجیہ تشابہ القرآن سے بھی استفادہ کیا گیا ہے. مذکورہ تفاسیر اور کتب سے عربی عبارت بمع حوالہ نقل کی ہے اور ساتھ عبارت کا ترجمہ بھی کر دیا گیا ہے. کوشش کی گئی ہے کہ ایک متعارض مقام میں تطبیق کے لئے مختلف اقوال نقل کئے جائیں. جہاں متعدد اقوال نہیں ملے وہاں ایک ہی جواب پر اکتفاء کیا ہے. بعض مقامات پر بندہ نے اپنے ناقص علم کے مطابق تطبیق میں حقیر کوشش بھی کی ہے. بعض معتبر تفاسیر سے اپنی حقیر کاوش کی بعض مقامات میں تائید بھی مل گئی ہے جس کا ذکر کر دیا گیا ہے. فللہ الحمد.

اللہ تعالیٰ سے دعا ہے کہ اس طالب علمانہ حقیر کاوش کو شرف قبولیت بخش کر دونوں جہاں کی بھلائیوں سے مالا مال فرماویں. آمین.

طالب دعا..... ذاکر حسن نعمانی.

الم ذالک الكتاب - قرآن کی طرف اشارہ ہے۔ ذالک سے اشارہ بعید کی طرف کیا جاتا ہے۔ لیکن دیگر آیات میں قرآن کی طرف اشارہ ہذا کے ساتھ ہے جس کا مطلب ہے کہ قریب ہے۔

فرمان باری ہے۔ ان هذا القرآن یهدی للتی ہی اقوم - یہ قرآن بتلاتا ہے وہ راہ جو سب سے سیدھی ہے (بنی اسرائیل آیت ۹) ایک اور ارشاد ہے ان هذا القرآن یقص علی بنی اسرائیل یہ قرآن سناتا ہے بنی اسرائیل کو (سورۃ النمل آیت ۷۶) قرآن مجید کو کبھی بعید اور کبھی قریب کہنا ناقض ہے۔

تطبیق: امام قرطبی فرماتے ہیں قیل المعنی هذا لکتاب و ذالک قد تستعمل فی الاشارة الی حاضر وان کان موضوعا للاشارة الی غائب کما قال اللہ فی الاخبار عن نفسه جل و عز ذالک عالم الغیب والشهادة العزیز الرحیم۔ (قرطبی ج ۱ ص ۱۵۷)۔

ذالک کیساتھ اگرچہ اشارہ غائب اور دور کی طرف ہوتا ہے لیکن کبھی اس کا استعمال حاضر کے لئے بھی ہوتا ہے جیسے اللہ تعالیٰ نے اپنے آپ سے خبر ذالک کیساتھ دی ہے حالانکہ وہ بعید اور غائب نہیں بلکہ ہر جگہ موجود ہے۔ یہاں ذالک کا استعمال ہذا کی جگہ ہوا ہے۔

علامہ زبیری فرماتے ہیں کہ قرآن مجید کی طرف اشارہ ہذا اور ذالک دونوں کیساتھ صحیح ہے۔ ذالک بعید کی طرف ہے ذالک سے قبل الم گزر چکا ہے اس کی طرف اشارہ ہے۔

فرماتے ہیں۔ وقعت الاشارة الی اسم بعد ماسبق التکلم به - کلام میں اس طرح ہوتا ہے يحدث الرجل بحديث ثم يقول و ذالک مما لا شک فيه آدی ایک بات کرتا ہے پھر اس کی طرف اشارہ ذالک کے ساتھ کرتا ہے۔ اس کے بعد قرآن مجید سے مثال دی ہے لا فارض ولا بکر عوان بین ذالک (البقرہ ۶۸) ذالک سے گذشتہ مضمون کی طرف اشارہ ہے ان کی توجیہ کا حاصل یہ ہے کہ جہاں ہذا ہے وہاں قریب مراد ہے۔ جہاں ذالک ہے وہاں بعید مراد ہے۔ (الکشاف ج ۱ ص ۳۲) امام فراء فرماتے ہیں۔ یہاں ذالک کی صحت کے لئے دو وجہیں ہیں اور ہذا کے لئے ایک وجہ یہ ہے ہذا الحروف یا احمد ذالک الكتاب الذی وعدتک ان اوحیہ الیک - اے محمد یہ حروف اسی کتاب کے ہیں جن کے نزول کا آپ کے ساتھ وعدہ کیا تھا۔ یہاں صرف ذالک آئیگا۔ کیونکہ بعید کی طرف اشارہ ہے دوسری وجہ جو بیان فرماتے ہیں اس میں ذالک اور ہذا دونوں کے ساتھ اشارہ صحیح ہے۔ پہلے ایک کلام گزر جائے تو اس کی طرف اشارہ کرنے کے لئے ہذا اور ذالک دونوں لائے جاتے ہیں۔ الاتری انک تقول قد قدم فلان فیقول السامع قد بلغنا ذالک و قد بلغنا هذا الخبر۔ هذا اس لئے صحیح ہے کہ قد قرب من جوابہ۔ خبر سامع کے جواب کے قریب ہے۔ فصار کالحاضر الذی تشیر الیہ۔ گویا خبر جس کی طرف اشارہ کر رہا ہے اس کے سامنے حاضر ہے۔ ذالک کی صحت کی وجہ یہ ہے کہ متکلم نے جو خبر دی گزر چکی اور گزری ہوئی چیز غائب ہوتی ہے اور غائب کی طرف بعد کی وجہ سے ذالک سے اشارہ کیا جاتا ہے۔ فرماتے ہیں لا نقضائہ والمنقضی غائب۔ اس تشریح کے بعد قرآن مجید سے دونوں کی صحت کی مثالیں دی ہیں۔ واذا کمر عبانا ابراهیم سے کل من الاخیار تک ذکر کے

بعد فرمایا۔ هذا ذکر۔ اسم اشارہ قریب لائے ذالک کی مثال و جاءت سكرة الموت
بالحق۔ ذالک ماكنت منه تحيد۔ گذشتہ آیت کے مضمون کی طرف ذالک سے
اشارہ ہوا۔ (معانی القرآن ج ۱ ص ۱۰)۔

امام رازی نے بڑی عمدہ اور نفیس بحث کی ہے۔ جس کا خلاصہ یہ ہے۔ ہم مانتے ہیں کہ
ذالک الکتاب میں مشارالیه حاضر ہے۔ لیکن یہ نہیں مانتے کہ ذالک سے اشارہ صرف
بعید کے لئے ہوتا ہے۔ اس لئے کہ ذالک اور هذا دونوں اسماء اشارات ہیں اور دونوں کی
اصل "ذا" ہے۔ ہا تنبیہ کے لئے ہے۔ جب کوئی چیز سامنے موجود ہو تو اس کی طرف هذا
کہہ کر مخاطب کو متنبہ کیا جاتا ہے۔ کہ گویا تو اس کو اپنی آنکھوں سے دیکھ رہا ہے۔ کبھی "ذا"
کیساتھ خطاب کے لئے کاف اشارہ میں اور تاکید کے لئے لام ذکر کر دیتے ہیں تاکہ
مخاطب کو خوب تنبیہ ہو کہ مشارالیه آپ سے دور ہے ان کی بحث کا خلاصہ یہ ہے کہ دونوں
میں اصل وضع کے لحاظ سے کوئی فرق نہیں۔ قریب اور بعید کا فرق عرفاً آیا ہے۔ اس کے بعد
فرماتے ہیں۔ واذا ثبت هذا فنقول انانحمله هذا على مقتضى الوضع
اللفوى لا على المقتضى الوضع العرفى وحينئذ لا يفيد البعد۔ (تفسیر
کبیر ج ۲ ص ۱۳) یہاں ہم ذالک سے وضع لغوی مراد لیتے ہیں۔ وضع عرفی
مراد نہیں لیتے۔ اور وضع لغوی میں قریب اور بعید کا کوئی فرق نہیں ہوتا لہذا ذالک میں
بعید کا معنی نکالنا صحیح نہیں۔ ۱۲

جب وضع لغوی کے اعتبار سے قریب اور بعید کا فرق ختم ہو گیا تو تعارض بھی باقی نہ رہا۔

تعارض نمبر ۲ سورۃ البقرۃ

آیت ۲

لاریب فیہ جس میں کوئی شبہ نہیں۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ قرآن مجید میں کوئی شک
نہیں سچی کتاب ہے۔ لیکن وان کنتم فی ریب مما نزلنا اور اگر تم لوگ کچھ خلجان
میں ہو اس کتاب کی نسبت جو ہم نے نازل فرمائی (بقرۃ ۲۳) سے معلوم ہوتا ہے کہ قرآن
مجید کے کلام الہی ہونے میں کفار کا شبہ و انکار تھا۔ لیکن لاریب فیہ سے بالکل نفی کر دی
ہے۔ ایک مقام میں شک کی نفی ہے، دوسری جگہ شک کا اثبات ہے۔

تطبیق: شیخ الہمد مولانا محمود حسن فرماتے ہیں۔ کسی کلام میں اشتباہ ہونے کی دو صورتیں
ہیں۔ یا تو خود اس کلام میں کوئی غلطی اور خرابی ہو یا سننے والے کے فہم میں خلل ہو۔ اول
صورت میں محل ریب یہ کلام ہے اور دوسری صورت میں محل ریب حقیقت میں سمجھنے والے کا
فہم ہے کلام بالکل حق ہے۔ گو اس کو اپنی نافرمانی سے وہ کلام محل ریب معلوم ہو سو اس آیت
میں ریب کی صورت اول کی نفی فرمائی ہے۔ تو اب یہ شبہ کہ کلام اللہ کے کلام الہی اور حق
ہونے میں تو سب کفار کو ریب و انکار تھا پھر اس نفی کے کیا معنی بالکل جاتا رہا یہی صورت
ثانی اس کو آگے چل کر فرمادیا گیا وان کنتم فی ریب۔ (تفسیر عثمانی ص ۳)۔

حافظ ابن کثیر فرماتے ہیں۔ وقال بعضهم هذا خبر و معناه النهی ای لا
تدرتابوا فیہ۔ بعض کہتے ہیں یہ خبر ہے اور نہی کے معنی میں ہے اس کا مطلب ہے کہ اس
میں شک نہ کرو (تفسیر ابن کثیر ج ۱ ص ۳۹) تعارض اس وقت بنا تھا جب صرف خبر ہو اور
نہی نہ ہو۔

قاضی بیضاوی فرماتے ہیں۔ لاریب فیہ معناه انه لو ضوحه و سطوح برهانہ بحیث لا یرتاب العاقل بعد النظر الصحیح فی کونہ وحیا بالغاحدا الاعجاز لا ان احدا یرتاب فیہ الا تری الی قولہ وان کنتم فی ریب۔ قرآن مجید اپنی وضاحت اور صاف برائیں کیساتھ ایسا مزین ہے کہ کوئی عقل مند صحیح غور و فکر کے بعد اس کے وحی اور معجز ہونے میں انکار نہیں کر سکتا۔ ایک اور توجیہ بھی بیان کی ہے۔ لاریب فیہ للمتقین۔ پرہیزگاروں کے لئے اس میں شک نہیں (بیضاوی ج ۱ ص 40) کفار اگر شک کریں تو فرق نہیں پڑتا۔ علامہ آلوسی فرماتے ہیں یہود کہا کرتے تھے کہ حضور پر جو کچھ نازل ہوتا ہے وہ وحی کے مشابہ نہیں وان کنتم فی ریب میں کلمہ ان تو بیخ کے لئے ہے تو کیسے شک کرتے ہو یہ علی سبیل الفرض ہے۔ کیونکہ ازالہ شک اس مقام میں موجود ہے (روح المعانی ج ۱ ص 192) قرآن فی نفسہ لاریب ہے۔ عقل سلیم کو استعمال میں لا کر قرآن و دلائل میں غور کیا جائے تو شک کا فور ہو جائیگا لیکن کفار نے ایسا نہ کیا۔ تو ان کے شک کو کالعدم قرار دے کر شک کی بالکل نفی کر دی۔ محاورہ میں بھی سچے کلام کو سچا قرار دیا جاتا ہے اور مخاطب کے شک کا لحاظ نہیں رکھا جاتا۔

قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں۔ نجماً نجماً بحسب الوقائع و هذا موجب لریبہم قیاساً علی کلام الشعراً وقولہم لولا نزل علیہ القرآن جملة واحدة۔

قرآن مجید حسب موقع تھوڑا تھوڑا نازل ہوتا تھا۔ اس کی وجہ سے ان کو تردد ہوا کہ یکدم کیوں نازل نہیں ہوا۔ (مظہری ج ۱ ص 27)۔

نزلنا تنزیل سے ہے تنزیل کا معنی آہستہ آہستہ یعنی تدریجی نزول ہے۔ اس لحاظ سے

مطلب یہ ہوگا کہ قرآن مجید میں شک نہ تھا بلکہ اس کے تدریجی نزول کے بارے میں شبہ تھا۔ اسلئے لاریب فیہ سے تعارض نہیں بنتا۔

احقر کے نزدیک لاریب فیہ کی جو خبر دی ہے یہ عوی ہے۔ کہ قرآن مجید شک و شبہ سے پاک کتاب ہے اور ان کنتم فی ریب مما نزلنا۔ اس دعویٰ کی دلیل ہے۔ کہ اس میں اثبات ریب نہیں۔ بلکہ دعویٰ کو مبرہن کرنے کے لئے علی سبیل الفرض کہا کہ اگر تمہارا شک ہے تو تم بھی اس جیسی ایک سورۃ بنا لاؤ۔ لیکن اس سے تو ساری دنیا عاجز تھی اور اب بھی عاجز ہے۔ ان کے عجز کے بعد بات بالکل واضح ہو گئی کہ قرآن مجید واقعی لاریب کتاب ہے۔ لیکن ان کا انکار محض عناد تھا۔ ورنہ ان کو اس پر ایمان لانا چاہیے تھا۔ یہی وجہ ہے کہ اپنے عجز کو چھپانے کے لئے قرآن مجید پر اعتراضات شروع کر دیے کہ اگر اللہ کی کتاب ہوتی تو اس میں پتھر اور کھسی کی مثالیں نہ ہوتیں۔

لاریب کو اگر دعویٰ مان لیں اور ان کنتم فی ریب کو دلیل تو دونوں میں تعارض کا اشکال باقی نہیں رہتا۔ امام رازی فرماتے ہیں۔ لاریب فیہ عند اللہ ورسولہ والمؤمنین۔ اس کتاب میں اللہ، رسول اور مؤمنین کے نزدیک ریب نہیں (مسائل الرازی وا جوابہا ص 3)۔

تعارض نمبر ۳

سورۃ البقرۃ

آیت 6

ان الذین کفروا سواء علیہم اذ انذرتہم ام لم تنذرہم لایؤمنون۔ بے شک جو لوگ کافر ہو چکے ہیں برابر ہے ان کے حق میں خواہ آپ ان کو ڈرائیں یا نہ ڈرائیں وہ

ایمان نہ لائیں گے۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ کفار کے لئے ایمان معدوم ہے۔ لیکن دوسری جگہ ارشاد ہے
ومن هؤلاء من يؤمن به اور ان لوگوں میں بعض ایسے ہیں کہ اس کتاب پر ایمان لے
آتے ہیں (سورۃ العنکبوت آیت 47)۔

ایک اور ارشاد ہے كذلك كنتم من قبل فمن الله عليكم۔

ان آیتوں سے معلوم ہوا کہ ایمان لائیں گے، تو ایمان لانا اور نہ لانے میں کھلا تناقض ہے۔
تطبیق :- بظاہر آیت میں عموم ہے لیکن اس میں تخصیص ہے۔ ختم الله على قلوبهم
سے اس کی تائید ہوتی ہے۔ کیونکہ مہر تمام کفار کے دلوں پر نہیں لگائی بلکہ صرف وہ کفار مراد
ہیں جن کا کفر کی حالت میں مرنا اللہ تعالیٰ کے علم میں مقرر ہے۔ علامہ شفق علی فرماتے ہیں۔
بان المعنى لا يؤمنون مادام الطبع على قلوبهم واسماعهم والغشاوة
على ابصارهم فان زال الله عنهم ذلك بفضله امنوا (اضواء البیان ج 10)
جب تک ان کے دلوں اور کانوں پر مہر لگی ہو آنکھوں پر پردہ ہو تو ایمان نہ لائیں گے جب
اللہ کے فضل سے ان اشیاء کا ازالہ ہو جائے تو پھر ایمان لے آئیں گے۔

امام قرطبی فرماتے ہیں ہی عامة و معناها الخصوص فيمن حقت عليه كلمة
العذاب سبق في علم الله انه يموت على كفره (قرطبی ج 1 ص 184)۔

آیت عام ہے لیکن مراد وہ خاص لوگ ہیں جن کے بارے میں عذاب مقدر ہے اور اللہ کے
علم میں ہے کہ ان کی موت کفر کی حالت میں واقع ہوگی۔ علامہ زنجشیری فرماتے ہیں
يجوز ان يكون للعهد وان يراد بهم ناس باعيا نهم كابي لهب و ابي
جهل والوليد بن المغيرة و اضرا بهم۔ (الکشاف ج 1 ص 48) جائز ہے کہ اس

سے خاص افراد مثل ابو جہل، ابی لہب اور ولید بن مغیرہ مراد لیے جائیں۔ امام رازی فرماتے
ہیں لانزاع فی انه ليس المراد منها هذا الظاهر۔ یعنی اس میں جھگڑا نہیں کہ
آیت ظاہر پر محمول نہیں ہے فرماتے ہیں۔ ان الله قد يتكلم بالعام ويكون مراده
الخاص۔ کبیر (ج 2 ص 39) اللہ تعالیٰ کبھی عام کلام ذکر کر کے خاص مراد لیتے ہیں۔

تعارض نمبر ۴

سورۃ البقرۃ

آیت 7

ختم الله على قلوبهم بند لگا دیا ہے اللہ تعالیٰ نے ان کے دلوں پر جب ان کے دلوں پر
اور کانوں پر مہر لگ گئی اور آنکھوں پر پردے پڑ گئے تو کفر پر مجبور ہو گئے۔ لیکن دیگر آیات
سے معلوم ہوتا ہے کہ وہ کفر پر مجبور نہ تھے بلکہ ان کا کفر اختیاری تھا۔ ارشاد ہے فاستحبوا
العمى على الهدى سوانہوں نے گمراہی کو، بمقابلہ ہدایت کے پسند کیا (سورۃ حم السجدۃ
آیت 17) ومن شاء فليكفر اور جس کا جی چاہے کافر رہے (سورۃ الکہف آیت
29) اوليك الذين اشتروا الضلالة بالهدى يبدؤه لوگ ہیں کہ انہوں نے گمراہی
لے لی بجائے ہدایت کے (سورۃ البقرۃ آیت 16)۔

تطبیق :- اللہ تعالیٰ نے ہر انسان کے لئے حق و باطل کا خوب وضاحت کے ساتھ بیان کیا
ہے۔ جو انسان اللہ کی بتائی ہوئی ہدایات پر چلنا چھوڑ دے اور اپنی فطری استعداد ضائع
کر دے تو اللہ تعالیٰ سزا کے طور پر اس کے ہدایت کے قبول کرنے کے راستے مسدود کر دیتا
ہے۔ ختم اللہ سے ان کفار کی کفر پر مجبوری معلوم نہیں ہوتی بلکہ یہاں اللہ تعالیٰ نے صرف اپنا
عذاب بیان کیا ہے۔ کیونکہ مہر لگانا اللہ کا عذاب ہے اور اس عذاب کے نزول کی وجہ دیگر

مقامات پر بیان کی ہے بل طبع اللہ علیہا بکفرہم بلکہ ان کے کفر کے سبب ان کے قلوب پر اللہ تعالیٰ نے بند لگا دیا ہے (سورۃ النساء آیت 155)۔

ذالك بانهم امنوا ثم كفروا فطبع على قلوبهم يراى سبب سے ہے کہ یہ لوگ ایمان لے آئے پھر کافر ہو گئے سو ان کے دلوں پر مہر کر دی گئی (المنافقون آیت 3) فلما ازاغوا ازاغ الله قلوبهم پھر جب وہ لوگ ٹیڑھے ہی رہے تو اللہ تعالیٰ نے ان کے دلوں کو اور ٹیڑھا کر دیا (سورۃ الصف آیت 5) ختم اللہ میں صرف عقاب کا ذکر ہے اور اس کی وجہ مذکورہ آیات میں ہے۔ اللہ تعالیٰ نے ابتداً ان پر مہر نہیں لگائی کہ ان کو مجبور سمجھا جائے۔ بلکہ کفار خود کہا کرتے تھے وقالوا فى قلوبنا اكنة مما تدعونا اليه وفى اذا ننا وقر اور وہ لوگ کہتے ہیں کہ جس بات کی طرف آپ ہم کو بلا تے ہیں ہمارے دل اس سے پردوں میں ہیں اور ہمارے کانوں میں ڈاٹ ہیں (حم السجدۃ آیت 5) ابن کثیر فرماتے ہیں۔ انما ختم على قلوبهم وحال بينهم و بين الهدى جزأ وفاقاً على تما ديهم فى الباطل و تركهم الحق (ابن کثیر ج 1 ص 81) اللہ تعالیٰ نے مہر لگائی اور ان کو ہدایت نہ دی اسلئے کہ ان کو باطل میں گھسنے اور حق کو چھوڑنے کی پوری جزا دے۔ امام قرطبی فرماتے ہیں۔ ولان الامۃ مجمعة على ان الله تعالى قد وصف نفسه بالختم والطبع على قلوب الكافرين مجازاً لكفرهم (قرطبی ج 1 ص 187) امت کا اس بات پر اتفاق ہے کہ اللہ تعالیٰ نے دلوں پر ختم اور طبع کی نسبت اپنی طرف اس لئے کی کہ یہ ان کے کفر کی جزا ہے۔ امام قرطبی نے ایک اور بڑی کام کی بات کہی ہے۔ بین سبحانه فى هذه آلايته المانع لهم من الايمان بقوله ختم الله۔ اللہ تعالیٰ نے اس آیت میں کفار کے ایمان لانے کی وجہ بیان کی

ہے۔ ایمان کیوں نہیں لاتے اسلئے کہ ان کے دلوں پر مہر لگ گئی اور مہر کیوں لگی اس کی وجہ اوپر تفصیل سے بیان ہو چکی۔ یہ مطلب ہرگز نہیں کہ ختم اور طبع ابتداً بلا کسی وجہ کے ہوئی۔

تعارض نمبر ۵

سورۃ البقرۃ

آیت 18

صم بکم عمی بہرے ہیں گونگے ہیں اندھے ہیں اس آیت سے معلوم ہوا کہ منافقین نہ سنتے ہیں نہ دیکھ سکتے ہیں اور نہ بولنے کی طاقت رکھتے ہیں حالانکہ بعض آیتوں سے معلوم ہوتا ہے کہ یہ تینوں قوتیں ان میں موجود ہیں ارشاد باری تعالیٰ ہے۔ ولو شاء الله لذهب بسمعهم وابصارهم۔ اور اگر اللہ چاہے تو لے جائے ان کے کان اور آنکھیں (البقرۃ 20) وان يقولوا تسمع لقولهم اور اگر یہ باتیں کرنے لگیں تو آپ ان کی بات سن لیں (سورۃ المنافقون آیت 4) فاذا ذهب الخوف سلقوكم بالسنة حداد پھر جب جاتا رہے ڈر کا وقت چڑھ چڑھ بولیں تم پر تیز تیز زبانوں سے (الاحزاب 19) ان آیتوں میں ان قوتوں کا اثبات ہے اور پہلی آیت میں ان قوتوں کی نفی ہے۔ لہذا ایک دوسرے کی معارض ہوئیں۔

تعلیق :- علامہ زنجیری فرماتے ہیں کانت حواسهم سليمة ولكن لما سدوا عن الاصاغة الى الحق مسامعهم وابوا ان ينطقوا به السنتم وان ينظروا ويتبصروا بعيونهم جعلوا كانما انتفت مشاعرهم وانتقضت بناها التي بنيت للاحساس والادراك (الکشاف ج 1 ص 76) ان کے حواس صحیح تھے لیکن جب کانوں کو حق سننے سے بند کیا زبانوں نے اقرار حق سے انکار کیا اور آنکھوں

نے حق دیکھنا چھوڑ دیا۔ تو گویا احساس و ادراک والے قوی کو توڑ کر ختم کر دیا۔ تینوں قوتیں بے کار اور شل ہو کر رہ گئیں۔ ابام قرطبی فرماتے ہیں کہ یہ مطلب نہیں کہ ان کی یہ تینوں قوتیں سلب ہو گئی تھیں بلکہ ایک خاص جہت کی وجہ سے ان قوتوں کی نفی کی گئی ہے۔ فلان اصم من الخنا۔ فلاں برے کلام کے سننے سے بہرہ ہے۔ حالانکہ حقیقتاً بہرہ نہیں۔ قتادہ کا قول نقل کیا ہے۔ صم عن استماع الحق بکم عن التكلم به عمی عن الابصار له۔ (قرطبی ج ۱ ص 215، 214) حق سننے سے بہرے، حق پر تکلم سے گونگے اور حق کو دیکھنے سے اندھے ہیں۔

من اسباب سماویة وتأثيرات اثیریة فہی مبدأ مجازی له۔ بارش برسنے کے اسباب اور اثیری تاثیرات آسمان میں ہوتے ہیں۔ اس لحاظ سے آسمان بارش کے لئے مجازاً مبدأ ہے۔ تفسیر خازن میں ہے وانزل من السماء یعنی السحاب آسمان سے پانی نازل کیا یعنی بادل سے (ج ۱ ص 33) ایک جواب یہ بھی ہے کہ دونوں کی طرف نسبت صحیح ہے بارش آسمان سے ہوتی ہے بادل اس کے لئے چھلنی ہے۔ جس سے چھن کر پانی زمین پر گرتا ہے۔ اگر بادل کا واسطہ نہ ہوتا تو بارش کی موٹی دھاروں سے زمینی مخلوق کو سخت دقت کا سامنا کرنا پڑتا۔ (صاوی)۔

تعارض نمبر ۷

سورة البقرة

آیت 23

فأتوا بسورة من مثله لے آؤ ایک سورة اس جیسی۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ اللہ نے کفار اور مشرکین کو قرآن کے مثل ایک سورت لانے کا چیلنج دیا ہے۔ لیکن سورة القصص سے معلوم ہوتا ہے کہ پوری کتاب کا چیلنج دیا ہے۔ قل فأتوا بكتاب من عند الله سورة الا سرا سے معلوم ہوتا ہے کہ قرآن کے مثل کا چیلنج ہے، قل لئن اجتمعت الانس والجن علی ان یا توا بمثل هذا القرآن سورة ہود سے معلوم ہوتا ہے کہ دس سورتوں کا چیلنج ہے قل فأتوا بعشر سور من مثله (آیت 13)۔

تطبیق:- ان مختلف قسموں کے چیلنجوں میں کوئی اختلاف اور تعارض نہیں۔ اسلئے کہ یہ اختلاف زمان اور مکان پر محمول ہے ابن کثیر کے مطابق یہ تمام آیات مکی ہیں۔ پھر ان کو مدینہ میں بھی چیلنج دیا گیا۔ اسی طرح یہ چیلنج کئی مرتبہ دیا گیا ہے۔ فرماتے ہیں۔ وقد

تعارض نمبر ۶

سورة البقرة

آیت 22

وانزل من السماء ماء اور اتارا آسمان سے پانی۔ دیگر آیات بھی ہیں جن سے معلوم ہوتا ہے کہ بارش آسمان سے ہوتی ہے لیکن بعض دیگر آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ بارش بادلوں سے ہوتی ہے۔ ارشاد باری ہے وانزلنا من المعصرات ماء ثجاجاً اور اتارا نچوڑنے والی بدلیوں سے پانی کاریل (آیت 14) لہذا ان آیات میں تعارض ہوا۔

تطبیق:- علامہ آلوسی فرماتے ہیں والمراد من السماء جهة العلو او السحاب۔ آسمان سے اوپر کی جہت یا بادل مراد ہیں (ج ۱ ص 302) بادل اور آسمان دونوں ایک ہیں۔ بادل چونکہ بلندی پر ہوتے ہیں اسلئے سحاب پر سماء کا اطلاق صحیح ہے بارش حقیقت میں بادل سے ہوتی ہے چونکہ بادل بلندی پر ہوتے ہیں اسلئے کبھی بارش کی نسبت آسمان کی طرف مجازاً ہوتی ہے۔ علامہ آلوسی فرماتے ہیں وعلى هذا يراد بالنزول نشوؤہ

تحداهم بهذا في مكة والمدينة مرات عديدة یعنی ان کو یہ چیلنج مکہ اور مدینہ میں کئی مرتبہ دیا گیا ہے (ج ۱ ص 104) دوسرا جواب یہ ہے کہ اول پورے قرآن کا چیلنج دیا جب اس سے عاجز بن گئے تو پھر دس سورتیں بنانے کا چیلنج دیا جب اس سے بھی عاجز ہو گئے تو صرف ایک سورت بنانے کا چیلنج دیا لیکن بالآخر مکمل طور پر عاجز بن جانے کے بعد قرآن مجید پر اعتراضات شروع کر دیئے۔ کمزور مناظر، مناظرہ میں جب جواب دینے سے عاجز ہو جاتا ہے تو پھر اپنے خصم پر اعتراضات کی بوچھاڑ سے اپنی سبکی رفع کرنے کی بھرپور کوشش کرتا ہے۔

تعارض نمبر ۸ سورة البقرة

آیت 29

هو الذي خلق لكم ما في الارض جميعا ثم استوى الى السماء وه ذات پاک ایسی ہے جس نے پیدا کیا تمہارے فائدے کے لئے جو کچھ زمین میں موجود ہے سب کا سب پھر توجہ فرمائی آسمان کی طرف قل أأنکم لتکفرون بالذی خلق الارض۔ آپ فرمائیے کیا تم لوگ ایسے خدا کا انکار کرتے ہو جس نے زمین کو دو روز میں پیدا کیا۔ اس کے بعد فرماتے ہیں ثم استوى الى السماء۔ پھر آسمان کی طرف قصد کیا (حم السجدة آیت 11) ثم تراخى في الزمان کے لئے ہے۔ ان آیتوں سے معلوم ہوا کہ اللہ تعالیٰ نے اول زمین کو پیدا کیا پھر آسمان کو۔ لیکن سورة النزعات سے معلوم ہوتا ہے کہ آسمان کو پہلے پیدا کیا ہے۔ فرمایا أأنتم اشد خلقا ام السماء بناها۔ بھلا تمہارا پیدا کرنا زیادہ سخت ہے یا آسمان کا اللہ نے اس کو بنایا۔ (آیت 27) پھر فرمایا والارض

بعد ذلك دحها۔ اور اس کے بعد زمین کو بچھایا (آیت 30) آسمان کی پیدائش کے بعد زمین کو بچھایا۔

تفسیق :- حکیم الامت مولانا تھانوی فرماتے ہیں۔ اول زمین کا مادہ بنایا اور ہنوز اس کی ہیئت موجود نہ بنی تھی کہ اس حالت میں آسمان کا مادہ بنا جو سورۃ دخان میں تھا۔ اس کے بعد زمین کی ہیئت موجود پھیلا دی گئی پھر اس پر پہاڑ درخت پیدا کئے گئے۔ پھر اس مادہ دخانیہ سیالہ کے سات آسمان بند کیئے۔ (بیان القرآن ج ۱ ص 17) علامہ زکریا فرماتے ہیں۔ لان جرم الارض تقدم خلقه خلق السماء و اما دحوها فمتأخر (الکشاف ج ۱ ص 124) مادہ زمین تخلیق آسمان سے قبل ہوا اور زمین کا بچھانا بعد میں۔ قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں۔ قال ابن عباس خلق الله الارض باقواتها من غير ان دحوها قبل السماء ثم استوى الى السماء فسواهن سبع سموات ثم دحى الارض بعد ذلك۔ (مظہری ج ۱ ص 45) ابن عباس فرماتے ہیں۔ اول زمین کو اپنی خوراکیوں کے ساتھ بغیر بچھانے پیدا کیا پھر آسمان کی طرف قصد کر کے سات آسمان بنائے اس کے بعد زمین کو بچھایا۔

ابن کثیر میں ہے۔ بان الارض خلقت قبل السماء وان الارض دحيت بعد خلق السماء (ابن کثیر ج ۱ ص 119)

تعارض نمبر ۹ سورة البقرة

آیت 34

واذ قلنا للملائكة اسجدوا لادم اور جس وقت حکم دیا ہم نے فرشتوں کو کہ سجدہ میں

گر جاؤ آدم کے سامنے۔ اس آیت میں غیر اللہ کے سامنے سجدہ کرنے کا حکم۔ حالانکہ غیر اللہ کے سامنے سجدہ کرنا ناجائز ہے۔ ارشاد ہے **وَأَسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ**۔ اور اس خدا کو سجدہ کرو جس نے ان نشانیوں کو پیدا کیا اگر تم کو خدا کی عبادت کرنا ہے۔ (سورۃ تم السجدۃ آیت ۳۷) معلوم ہوا سجدہ صرف اللہ کا حق ہے۔

تعلیق: سجدہ کی دو قسمیں ہیں۔ سجدہ عبادت اور سجدہ تعظیمی۔ سجدہ عبادت کسی شریعت میں اور کسی وقت جائز نہیں رہا ہے۔ جبکہ سجدہ تعظیمی گذشتہ بعض شریعتوں میں جائز تھا۔ جیسے ہم باہم ملاقات کے وقت ملایک ملایک کرتے ہیں۔ علامہ رخصدی فرماتے ہیں **السجود لله تعالى على سبيل العبادة ولغيره على وجه التكرمة كما سجدت الملائكة لادم وابو يوسف واخوته له**۔ عبادت کا سجدہ صرف اللہ کے لئے ہے اور غیر اللہ کے لئے صرف تعظیمی تھا۔ جیسے فرشتوں نے آدم کے سامنے اور یوسف علیہ السلام کے باپ اور اس کے بھائیوں نے یوسف علیہ السلام کے سامنے کیا۔ (الکشاف ج ۱ ص 126) علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔ **والمسجد له في الحقيقة هو الله تعالى و آدم اما قبله أو سبب**۔ مسجد اللہ تعالیٰ ہے۔ آدم علیہ السلام مسجد الیہ تھے جیسے قبلہ (روح المعانی ج ۱ ص 228) اس تشریح کا حاصل یہ ہے کہ ایک مسجد الیہ جن کے لئے سجدہ کیا جاتا ہے ایک مسجد الیہ ہے جس کی طرف سجدہ کیا جاتا ہے۔ دونوں میں فرق ہے۔ جیسے قبلہ ہمارا مسجد الیہ اور اللہ مسجد الیہ ہے۔ ہمارا منہ صرف قبلہ کی طرف ہوتا ہے اور حقیقت میں سجدہ اللہ کے لئے کرتے ہیں۔ اس موضوع پر مولانا محمد قاسم نانوتوی کی کتاب "قبلہ نما" قابل دید و قابل داد ہے امام رازی فرماتے ہیں۔ **اجمع المسلمون على ان ذلك السجود ليس عبادة لان سجود العبادة لغير الله كفر**

والله لا يحكم بالكفر۔ مسلمانوں کا اجماع ہے کہ یہ عبادت کے سجدے نہ تھے۔ کیونکہ غیر اللہ کا سجدہ عبادت کے طور پر کفر ہے۔ اور اللہ تعالیٰ کفر کا حکم نہیں دیتے۔ فرماتے ہیں۔ **ان ذلك السجود كان لله و آدم عليه السلام كان كالقبلة**۔ فرشتوں کے یہ سجدے اللہ کے لئے تھے اور آدم علیہ السلام بمنزلہ قبلہ کے تھے۔ ایک اور قول نقل کرتے ہیں۔ **ان السجدة كانت لادم عليه السلام تعظيماً له وتحية له كالسلام منهم عليه وقد كانت الامم السالفة تفعل ذلك كما يحي المسلمون بعضهم بعضاً بالسلام**۔ فرشتوں کا آدم علیہ السلام کے سامنے سجدہ بطور تعظیم تھا۔ جس طرح فرشتے آدم علیہ السلام کو سلام کیا کرتے تھے۔ گذشتہ امتوں میں سجدہ تعظیمی کا رواج تھا۔ جیسے مسلمان ایک دوسرے کو سلام کرتے ہیں۔ (تفسیر کبیر ج 2 ص 212)۔

تعارض نمبر ۱۰

سورۃ البقرۃ

آیت 46

الذين يظنون انهم ملقوا ربهم جن کو خیال ہے کہ وہ رو برو ہونے والے ہیں اپنے رب کے اس آیت میں اس بات کی دلیل ہے کہ ظن امور آخرت میں مفید ہے۔ لیکن بعض آیات میں صاف مذکور ہے کہ ظن مفید نہیں ارشاد ہے۔ **ان الظن لا يغنى من الحق شيئاً اکل کام نہیں دیتی حق بات میں کچھ بھی (سورۃ یونس آیت 36) ظن کے مفید ہونے اور مفید نہ ہونے میں تعارض ہے۔**

تطبیق: سب سے اول تو یہ بات ذہن میں رکھنا ضروری ہے کہ قرآن مجید محاورہ عرب

کے مطابق نازل ہوا ہے کہ کون سا لفظ کن کن معنوں میں کہاں کہاں اور کب استعمال ہوتا ہے بعد کے ماہرین علوم و فنون نے علوم کو سمجھنے اور سمجھانے کیلئے کچھ اصطلاحات وضع کیں ہیں۔ ان اصطلاحات کی روشنی میں اگر قرآن مجید کو سمجھنے کی کوشش کی گئی تو یہ تحقیق نہیں بلکہ ایک تحریفی کاوش ہوگی۔ ظن کا اصل معنی رجحان احد الطرفین ہے یعنی جانب راجح۔ اب اگر اسی ایک معنی کو لیکر قرآن مجید میں جہاں جہاں لفظ ظن آیا ہے اس کی تشریح و تفسیر بیان کرنا شروع کر دیں تو مشکل اور الجھن میں پڑ جائیں گے۔ امام راغب الاصفہانی فرماتے ہیں

الظن اسم لما يحصل عن امارة ومتى قويت أدت الى العلم ومتى ضعفت جداً لم يتجاوز حد التوهم (مفردات الفاظ القرآن ص 317) خاص نشانیوں سے جو چیز معلوم ہو اس کو ظن کہتے ہیں۔ ان نشانیوں میں جب قوت آجائے تو یقین کا معنی بن جاتا ہے۔ جب یہ نشانیاں انتہائی کمزور ہوں تو ظن تو ہم کے معنی سے تجاوز نہیں کرتا۔ اس تشریح سے معلوم ہوا کہ ظن کے تین معنی ہوئے (۱) جانب راجح (۲) یقین (۳) توہم (انگل) اس کے بعد امام راغب نے یہ بتایا ہے کہ کون سا معنی کب اور کہاں مراد لیا جائے۔ اب بات آسان ہوگئی۔ الذین یظنون انہم ملقوا میں ظن بمعنی یقین ہے۔ اور ان الظن الاغنی میں ظن بمعنی توہم اور انگل ہے۔ لہذا کوئی تعارض نہیں۔

سمین الحلبی فرماتے ہیں ان الظن ہنا بمعنی یقین یہاں ظن بمعنی یقین ہے۔ آگے لکھتے ہیں فاستعمل الظن استعمال یقین مجازاً۔ ظن یقین کے معنی میں مجاز استعمال ہوا (الدر المنصور ج ۱ ص 332) ابن الجوزی فرماتے ہیں۔ والظن ہنا فی قول الجمهور بمعنی یقین ومنہ قوله تعالیٰ انی ظننت انی ملاقی حسابیہ۔ میں نے خیال رکھا اس بات کا کہ مجھ کو ملے گا میرا حساب (سورۃ الخاتئہ آیت

(20) (زاد المسیر ج ۱ ص 76) علامہ زبیر فرماتے ہیں۔ فی مصحف عبداللہ یعلمون عبداللہ بن مسعود کے مصحف میں یظنون کی جگہ یعلمون ہے۔ پھر فرماتے ہیں ولذلک فسریظنون بییقنون (الکشاف ج ۱ ص 134) اسی لئے مفسرین یظنون کی تفسیر کبھی یقین کے ساتھ کرتے ہیں۔

تعارض نمبر ۱۱

سورۃ البقرۃ

آیت 47

وانی فضلتکم علی العلمین اور اس کو کہ میں نے تم کو تمام جہاں والوں پر فوقیت دی تھی۔ اس آیت سے بنی اسرائیل کی تمام دنیا کے انسانوں پر افضلیت معلوم ہوتی ہے لیکن امت محمدیہ تمام بنی آدم میں افضل ہے، اور بہترین امت ہے اس امت کی فضیلت اس آیت میں ہے۔ کنتم خیر امة اخرجت للناس تم لوگ اچھی جماعت ہو کہ وہ جماعت لوگوں کے لئے ظاہر کی گئی ہے (سورۃ آل عمران آیت 110) دونوں آیتوں میں تعارض ہوا۔

تطبیق :- امت محمدیہ بنی آدم میں افضل ہے۔ بنی اسرائیل کی فضیلت تمام جہاں والوں پر ان کے زمانہ میں تھی۔ ان کے زمانہ میں جتنے بنی آدم بستے تھے ان سب میں افضل بنی اسرائیل تھے۔ تمام مفسرین نے یہی لکھا ہے۔ قاضی بیضاوی فرماتے ہیں اسی عالمی زمانہ محمد (بیضاوی ص 53) ابن الجوزی فرماتے ہیں۔ یعنی علی عالمی زما نہم قال ابن عباس وابوالعالیہ و مجاہد وابن زید، قال ابن قتیبہ وهو من العلم الذی ارید بہ الخاضع۔ یہ وہ عالم ہے جس سے خاص ارادہ کیا گیا ہے (زاد المسیر ج ۱ ص 76)

ص 76) ذکر تو تمام جہاں والوں کا ہے لیکن مراد صرف ان کے زمانہ کے لوگ ہیں۔
 امامہ زکھری فرماتے ہیں۔ علی العالمین علی الجم الغفیر من الناس۔ عالمین
 سے مراد لوگوں کی کثرت ہے۔ یعنی بہت سے لوگوں میں افضل ہیں۔ اس سے یہ لازم نہیں
 آتا کہ امت محمدیہ سے بھی افضل ہیں۔ محاورہ نقل کرتے ہیں۔ رائیت عالما من
 الناس، یراد الکثرة۔ جب ایک آدمی کہے میں نے لوگوں میں سے ایک عالم دیکھا اس
 کا یہی مطلب ہے کہ بہت سے لوگ دیکھے۔ زکھری نے جو معنی بیان کیا ہے کہ عالمین سے
 مراد بہت لوگ ہیں۔ اس کی تائید میں ایک آیت پیش کی ہے و نجینہ و لوطا الی
 الارض الی بارکننا فیہا للعلمین۔ اور ہم نے ابراہیم کو اور لوط کو ایسے ملک کی طرف
 بھیج کر بچالیا جس میں ہم نے دنیا جہاں والوں کے واسطے برکت رکھی ہے۔ (سورۃ الانبیاء
 آیت) اس میں بھی عالمین سے مراد بہت سے لوگ ہیں ورنہ ظاہر بات ہے کہ تمام دنیا
 والوں کے لئے وہ سرزمین کیسے برکت والی ہو سکتی ہے۔

تعارض نمبر ۱۲

سورۃ البقرۃ

آیت 49

واذ نجیناکم من ال فرعون یسومونکم سوء العذاب یذبحون ابناءکم
 ویستحیون نساءکم۔ اور جبکہ رہائی دی ہم نے تم کو متعلقین فرعون سے جو فکر میں لگے
 رہتے تھے تمہاری سخت آزاری میں لگے کانتے تھے تمہاری اولاد ذکور کے اور زندہ چھوڑ دیتے
 تھے تمہاری عورتوں کو۔

اس آیت میں بیٹیوں کے ذبح کرنے اور بیٹیوں کو یوں ہی چھوڑ دینے کو عذاب کہا۔ حالانکہ

بیٹیاں عطا کرنا یہ اللہ کی نعمت ہے۔ اللہ کی طرف سے عیب اور عیب ہے فرعون نے بیٹیوں کو
 ذبح نہیں کیا جب بیٹیوں سے کچھ تعرض نہ کیا تو اس کو عذاب کیسے کہا گیا۔ ارشاد باری ہے
 یهب لمن یشاء اناثاً جس کو چاہتا ہے بیٹیاں عطا کرتا ہے (سورۃ الشوری آیت 49)
 تصنیق:- اس آیت میں بیٹیوں کو نسا کہا گیا۔ یہ مال کے اعتبار سے ہے کیونکہ بچی بعد
 میں زندہ رہنے کے بعد عورت بن جاتی ہے۔ تفسیر قرطبی میں ہے و عبر عنہم باسم
 النساء بالمال (قرطبی ج اس 385) بے شک بیٹیاں اللہ کا عیب ہیں۔ لیکن فرعون کا
 ان سے تعرض نہ کرنا اس لئے نہ تھا کہ یہ عیب خداوندی ہیں بلکہ ان کو یوں ہی چھوڑنا ان کی
 تذلیل کے لئے تھا کہ بڑی ہونے کے بعد ان سے خدمت لی جائے گی۔ اسلئے یہ ایک قسم کا
 عذاب ہوا۔ ابن الجوزی فرماتے ہیں۔ انما استبقوا نساہم للاستذلال
 والخدمة (زاد المسیر ج اس 78)۔

جلاہین کے حاشیہ میں ہے۔ وقیل الاستحیا للاسترقاق۔ ان کو لونڈیاں بنانے کے
 لئے چھوڑ دیتا تھا۔ یہ بھی عذاب ہے استحیا کا استرقاق معنی لینا لغت عرب و عجم میں نہیں
 ہکذا قال ابن جریر طبری۔ (ص 9) علامہ آلوسی نے ایک قول نقل کیا ہے قیل
 یفتشون فی حیائہن ینظرون هل بہن حمل و الحیاء الفرغ لانه
 یستحی من کشفہ (روح المعانی ج اس 254) ان کا حمل معلوم کرنے کے لئے
 شرمگاہوں کا معائنہ کیا جاتا تھا۔ حیاء فرج کو کہتے ہیں۔ کیونکہ آدمی اپنی شرمگاہ کھولنے سے
 شرماتا ہے۔

وانزلنا عليكم المن والسلوى اور پونچایا ہم نے تمہارے پاس ترنجبین اور شیریں۔
اس آیت میں دو قسم کے طعاموں کا ذکر ہے۔ لیکن بعد کی آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ ایک
قسم کا طعام تھا۔ ارشاد باری ہے لن نصبر على طعام واحد ہم ایک ہی قسم کے
کھانے پر بھی نہ رہیں گے۔ جلالین میں ہے کہ طعام واحد سے مراد من و سلوی ہے (سورة
بقرة آیت 61)

تطبیق:- علامہ زختری فرماتے ہیں۔ یراد بالوحدة نفی التبدل والاختلاف
جب کسی دسترخوان پر مختلف قسم کے کھانے ہوں اور ان مختلف اقسام پر دوام ہو۔ ان میں
تبدیلی وغیرہ نہ آتی ہو تو ان کی اقسام سے تعبیر طعام واحد کیساتھ کی جاتی ہے۔ دوسری توجیہ
یہ ہے ویجوز ان یریدوا انها ضرب واحد لانها معاً من طعام اهل التلذذ
والتتريف ونحن قوم فلاحه (الکشاف ج ۱ ص 145) یہ ایک قسم کا کھانا تو مالدار
لوگوں کا ہے ہم تو زمیندار قسم کے لوگ ہیں ہمیں یہ ایک خوراک نہیں چاہیے۔

احقر کے ذہن میں ایک توجیہ یہ ہے کہ من یعنی ترنجبین میٹھی اور شیریں چیز ہے جو بارش کی
طرح آسمان سے برستی تھی یا تو اس کو پینے کے طور پر استعمال کرتے تھے جیسے ہمارے ہاں
خوراک کے بعد کوک اور سیون اپ استعمال کرتے ہیں یا ترنجبین کو بطور میٹھے دُش کے
خوراک کے ساتھ استعمال کرتے تھے جیسے ہمارے کھانوں میں زردہ ہوتا ہے یا آخر میں
فنی وغیرہ کا استعمال ہوتا ہے۔ میٹھی دُش اور جوس کو عرفاً کھانے کے تابع سمجھا جاتا ہے۔

اس کو مستقل طعام نہیں سمجھا جاتا شاید اس لئے بنی اسرائیل نے من و سلویٰ و ایک طعام کہا۔
سلوی اصل اور مستقل خوراک تھی اور من اس کے تابع روح المعانی میں اس توجیہ کی تائید
گئی الحمد لله على ذلك - علامہ آلوسی فرماتے ہیں لان المن كان شراباً أو
شياً يتحلون به فلم يعدوه طعام آخر من یا تو پینے کے لئے تھا۔ یا کوئی میٹھی چیز
جس کو الگ طعام نہ سمجھا ایک توجیہ یہ بھی کی ہے وعن وهب انه الخبز الرقاق -
وهب سے منقول ہے کہ من سے مراد چپاتی ہے اس توجیہ کی بنا پر بیتر سالن صوا اور من روئی تو
دونوں ایک کھانا بن گئے فرماتے ہیں وقيل المراد به جميع ما من الله تعالى به
عليهم فى التيه وجاءهم عفواً بلا تعب - من سے مراد ہر وہ احسان ہے جو اللہ نے
ان پر وادی تیر میں کیا۔ اور ان کے پاس بلا مشقت مفت آتا تھا ایک اور توجیہ بھی کی ہے۔
وقيل انهم يطبخونها معاً فيصير طعاماً واحداً - من اور سلویٰ دونوں کو ایک
ساتھ پکاتے تھے۔ اسی طرح ایک خوراک بن جاتی (روح المعانی ج ۱ ص 263) امام
رازی فرماتے ہیں۔ فان قيل كيف قال (لن نصبر على طعام واحد)
وطعامهم كان المن والسلوى وهما طعامان.

قلنا المراد أنه دائم غير متبدل وان كان نوعين - اگرچہ کھانے کی دو چیزیں
تھیں لیکن ان پر دوام کی وجہ سے ایک کھانے کا اطلاق کیا (مسائل الرازی واجوبہ تھا ص 5)

ثم بعثناكم من بعد موتكم - پھر ہم نے تم کو زندہ کراٹھایا تمہارے مرنے کے بعد

فقال لهم الله موتوا ثم احياهم سوا اللہ تعالیٰ نے ان کے لئے فرمایا مر جاؤ پھر ان کو جلا دیا۔ (آیت 243) ان آیات سے معلوم ہوا کہ قیامت سے پہلے بھی انسان زندہ ہو سکتا ہے۔ جن آیات میں اس بات کا ذکر ہے کہ وقوع قیامت سے قبل مردہ زندہ نہ ہوگا اس کے منافی ہے۔ ان آیات سے بھی تعارض ہے جن سے ثابت ہوتا ہے کہ دنیا میں موت ایک مرتبہ آئے گی۔ ارشاد ہے۔ لا یذوقون فیہا الموت الا الموتۃ الاولیٰ۔ اور وہاں ججا اس موت کے جو دنیا میں آچکی تھی اور موت کا ذائقہ نہ چکھیں گے (سورۃ الدخان آیت 56) ایک مرتبہ آئے گی لیکن پہلی دونوں آیتوں سے ثابت ہوا کہ ان کو دنیا میں دو دو مرتبہ موت آئی۔ کیونکہ ایک مرتبہ مارنے کے بعد اللہ نے ان کو زندہ کیا پھر طبعی موت مرے۔

تعلیق :- مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں۔ یہ حیات ثانیہ ان آیات کے منافی نہیں ہے۔ جن سے معلوم ہوتا ہے کہ قیامت سے پہلے دنیا میں آنا نہیں ہوتا کیونکہ ان آیات میں نفی عادت متسود ہے اور یہ حیات بطور خرق عادت کے احيانا ہوئی ہے لہذا کوئی تعارض نہیں۔ آیت 145) ان کی موت عذاب کی تھی اجل والی نہ تھی۔ اگر اجل والی ہوتی تو اللہ ان کو دوبارہ زندہ نہ کرتے ابن الجوزی فرماتے ہیں۔ ان موتہم بالعقوبۃ لم یفن اعمارہم ان کی موت نے ان کی عمروں کو ختم نہیں کیا تھا۔ وکان احيائہم آیۃ من آیات نبیہم و آیات الانبیاء نوادر لا یقاس علیہا۔ ان کا زندہ ہونا ان کے انبیاء کی عجزہ تھا۔ جو نوادرات سے ہوتا ہے۔ اس پر قانون کا قیاس صحیح نہیں (زاد المسیر ج 1 ص 289) علامہ آلوسی فرماتے ہیں لان ذالک لم یکن عن استیفاء الآجال کما قال مجاہد و انما هو موت العقوبۃ فکانہ لیس بموت یہ اجل والی موت نہ تھی ایک عذاب تھا جو موت کی شکل میں آیا۔ اسلئے گویا وہ مرے ہی نہیں تھے۔ ایضا ہو

من خوارق العادات فلا یرد نقضان کا زندہ ہونا امر خارق ہے لہذا کوئی تعارض نہیں (روح المعانی ج 2 ص 161)۔

تعارض نمبر ۱۵

سورۃ البقرۃ

آیت 60

فانفجرت منه اثنتا عشرة عینا پس فوراً اس سے پھوٹ نکلے بارہ چشمے فانبجست منه اثنتا عشرة عینا پس فوراً اس سے بارہ چشمے پھوٹ نکلے (سورۃ الاعراف آیت 160) انفجار میں تیزی اور زیادتی ہوتی ہے انجاس میں کمی اور آہستگی ہوتی ہے دونوں میں منافقا ہے۔

تعلیق :- امام راغب فرماتے ہیں۔ لکن الانجاس اکثر ما یقال فیما یرج من شیئی ضیق والانفجار یستعمل فیہ و فیما یرج من شیء واسع و لذلك قال عزوجل فانبجست منه اثنتا عشرة عینا وقال فی موضع آخر فانفجرت منه اثنتا عشرة عینا۔ انجاس کا استعمال وہاں ہوتا ہے جہاں کوئی شیء تنگ مخرج سے نکلے انفجار بھی کبھی انجاس کے معنی میں استعمال ہوتا ہے۔ انفجار اس کو کہتے ہیں جب وسیع مخرج سے نکلے قرآن مجید میں انفجار اور انجاس ایک دوسرے کے معنی میں استعمال ہوئے ہیں۔ (مفردات القرآن ص 37) علامہ زنجبیری فرماتے ہیں فانبجست فانفجرت والمعنی واحد دونوں کا ایک معنی ہے (الاکشاف ج 2 ص 169) قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں۔ قال اکثر المفسرین انفجرت وانبجست بمعنی واحد۔ اکثر مفسرین کے نزدیک دونوں کا معنی ایک ہے۔ (مظہری

ج اص 75) امام قرطبی فرماتے ہیں۔ والابنجاس اذیق من الانفجار لانه
 يكون ابنجاساً ثم يصير انفجاراً۔ ابتدا میں ابنجاس تھا پھر انفجار بن گیا (قرطبی ج
 اص 419) ابتداء میں چٹھے سے نکتے ہوئے پانی کم تھا پھر زیادہ ہو گیا علامہ آلوسی فرماتے
 ہیں۔ وعلى فرض المغائرة لا تعارض لا اختلاف الاحوال اگر انفجار اور
 ابنجاس کے معنی میں فرق مان لیں تو پھر بھی تعارض نہیں کیونکہ مختلف احوال ہو سکتے ہیں۔
 (روح المعانی ج اص 271) یعنی بعض حالت میں پانی کم اور بعض میں زیادہ تھا۔ جس کی
 وجہ سے پانی میں تیزی اور آہستگی پیدا ہوتی تھی۔

تعارض نمبر ۱۶

سورة البقرة

آیت 87

ففریقاً کذبتم وفریقاً تقتلون سو بعضوں کو تو تم نے جھوٹا بتلایا اور بعضوں کو قتل کر
 ڈالتے تھے۔ قل فلم تقتلون انبیاء اللہ پھر کیوں تم قتل کرتے تھے اللہ کے پیغمبروں کو
 (سورة البقرة آیت 91) ان آیات اور اس طرح دیگر آیات میں انبیاء کرام کے قتل،
 ایذاؤں اور تکالیف کا ذکر ہے۔ جن سے انبیاء کرام کی مغلوبیت معلوم ہوتی ہے۔ لیکن بعض
 آیات میں بالکل تصریح ہے کہ اللہ کا وعدہ ہے کہ انبیاء کرام کی مدد کریں گے اور یہ مقدس
 طبقہ ہمیشہ دنیا و آخرت میں غالب رہے گا۔ ارشاد باری ہے کتب اللہ لاغلبن انا
 ورسلی اللہ تعالیٰ نے یہ بات لکھ دی ہے کہ میں اور میرے پیغمبر غالب رہیں گے (سورة
 الحجد آیت 21) ولقد سبقتمنا لعبادنا المرسلین انہم لهم
 المنصورون اور ہمارے خاص بندوں یعنی پیغمبروں کے لئے جو یہ قول پہلے سے مقرر

ہو چکا ہے کہ بے شک وہی غالب کئے جائیں گے۔ (سورة الصغف آیت 172) انا
 لننصر رسلنا والذین امنوا فی الحیوة الدینا اور ہم اپنے پیغمبروں کی اور
 ایمان والوں کی دنیاوی زندگی میں بھی مدد کرتے ہیں (سورة المؤمن آیت 51)
 تصنیق: اللہ تعالیٰ کا وعدہ بالکل سچا ہے۔ اس کا یہ مقدس گروہ اور ان کے تابعین ہمیشہ دنیا و
 آخرت میں غالب رہیں گے۔ غلبہ کبھی حجت اور دلیل کے لحاظ سے ہوتا ہے اس لحاظ سے تو
 انبیاء کرام ہمیشہ غالب رہے۔ کیونکہ ان کے ساتھ حجت بازی کرنا اور غالب آنا کسی انسان
 کے بس کی بات نہیں ان کیساتھ اللہ کی تائید و نصرت ہوتی ارشاد باری ہے۔ قل فلولہ
 الحجة البالغة تو کہہ دو۔ بس اللہ کا الزام پورا ہے۔

غلبہ کی دوسری قسم مادی طاقت ہے انبیاء کرام مادی طاقت کے لحاظ سے بھی کبھی غالب
 ہوتے ہیں۔ اس کو غلبہ بالسیف کہتے ہیں۔ کبھی دنیا میں یہ مقدس گروہ اس مادی طاقت کے
 لحاظ سے بظاہر مغلوب نظر آتا ہے۔ لیکن انجام کار کامیاب یہی ہوتے ہیں۔ اللہ تعالیٰ ان
 کے مخالفین کو اس دنیا میں طرح طرح کے عذاب سے بلا کر کے انتقام لے لیتے ہیں۔ جو
 اس بات کی دلیل ہے کہ یہ مقدس گروہ غالب ہے۔ علامہ زنجشیری فرماتے ہیں۔ لاغلبن
 انا ورسلی بالحجة و السیف او باحدہما (الکشاف ج 4 ص 496) غلبہ
 حجت اور تگوار کے لحاظ سے ہے یا ان دونوں میں سے کسی ایک کے ساتھ۔ انا لننصر
 رسلنا میں علامہ زنجشیری لکھتے ہیں۔ یغلبہم فی الدارین جمعياً
 بالحجة والظفر علی مخالفیہم وان غلبوا فی الدنیا فی بعض الاحیاء
 امتحاناً من اللہ فالعاقبة لهم۔ (الکشاف ج 4 ص 172) مخالفین کے مقابلہ
 میں ان کو دونوں جہاں میں غالب کریں گے۔ اگرچہ دنیا میں بعض اوقات امتحاناً مغلوب

ہو جائیں لیکن انجام کے لحاظ سے پھر بھی یہ مقدس گروہ غالب ہوگا۔ انہم لہم المنصورون کی تفسیر میں فرماتے ہیں ولا يلزم انہزامہم فی بعض المشاهد وماجرى علیہم من القتل فان الغلبة كانت لهم ولمن بعدهم فی العاقبة (الکشاف ج 4 ص 67) اس مقدس گروہ کے بعض جنگوں میں قتل ہونے یا شکست کھانے سے یہ کہنا درست نہیں کہ مغلوب ہوئے۔ کیونکہ انجام کار غالب یہ گروہ رہا ہے۔

امام قرطبی انالمنصر رسلنا کی تفسیر میں لکھتے ہیں۔ ماقتل قوم نبیاً او قوماً من دعاة الحق من المؤمنین الا بعث الله عزوجل من ينتقم لهم فصاروا منصورین فیہا وان قتلوا (قرطبی ج 15 ص 322) کسی قوم نے جب بھی کسی نبی کو یا کسی مسلمان مبلغ کو قتل کیا تو اللہ تعالیٰ نے ان سے انتقام لینے کے لئے ضرور بندوبست کیا۔ جس کی وجہ سے یہ مقدس گروہ کامیاب و منصور رہا اگرچہ خود بھی قتل ہوئے۔ اللہ تعالیٰ نے قوم نوح، قوم صالح اور قوم لوط کو طرح طرح کے عذاب سے ہلاک کیا۔

علامہ شنیطی فرماتے ہیں۔ رسولوں کی دو قسمیں تھیں۔ ایک وہ قسم ہے جن کو قتال کا حکم تھا ان کے ساتھ نصرت کا وعدہ تھا اور ان کی مدد کی۔ ایک وہ قسم ہے جن کو قتال سے روکا گیا تھا اور صبر کا حکم دیا تھا۔ یہ قتل ہوئے تاکہ مزید بلند درجات حاصل کر سکیں۔ (اضواء البیان ج 10 ص 24)۔

سورة البقرة

تعارض نمبر ۱۷

آیت 102

ولقد علموا المن اشتراه ما له فی الآخرة من خلاقٍ ط ولبئس ما

شروا به انفسهم ط لو كانوا يعلمون۔ اور ضرور یہ بھی اتنا جانتے ہیں کہ جو شخص اس کو اختیار کرے ایسے شخص کا آخرت میں کوئی حصہ نہیں اور بے شک بری ہے وہ چیز جس میں وہ لوگ اپنی جان دے رہے ہیں کاش ان کو قتل ہوتی۔

آیت کے اول اور آخر میں منافقہ ہے کیونکہ شروع میں ہے کہ جانتے ہیں اثبات علم ہے اور آیت کے آخر میں ہے کہ کاش وہ جانتے یعنی نہیں جانتے علم کی نفی ہے۔ نفی اور اثبات میں کھلا تعارض ہے۔

تضبیق:- حاشیہ الصاوی ج ۱۱ ص ۱۱۱ میں ہے۔ لو كانوا يعلمون لا منافاة بینہ و بین قوله ولقد علموا لانہم علموا انہم لیس لهم نصیب فی الآخرة ولكن لم يعلموا انہم لا یقتلون من العذاب الدائم۔ (ج ۱ ص 50) کوئی منافقہ نہیں۔ یہ تو جانتے ہیں کہ آخرت میں ان کا کوئی حصہ نہیں۔ لیکن یہ نہیں جانتے کہ آخرت کے دائمی عذاب سے جان نہیں چھوٹے گی۔

علامہ زنجیری فرماتے ہیں۔ لو كانوا يعلمون ان ثواب الله خیر مماہم فیہ وقد علموا لکنہ جہلہم لتترك العمل بالعلم۔ کاش وہ یہ جانتے کہ ان کے لئے اللہ کا ثواب بہتر ہے اور وہ اس بات کو جانتے تھے۔ لیکن اس ثواب کی کمائی کیلئے عمل نہیں کرتے تھے تو ترک عمل کی وجہ سے ان کی طرف جہل کی نسبت کی گئی (الکشاف ج ۱ ص 86)

غیر عامل پر جہل کا اطلاق ہوتا رہتا ہے۔ حاشیہ بیضاوی میں ہے۔ والمراد بالعلم الاول العلم الاجمالی بثبوت عذاب من غیر تعین والمنفی العلم بنصوص العذاب۔ جو علم ان کے لئے ثابت ہے وہ اجمالی طور پر عذاب کے ثبوت کے بارے میں ہے لیکن اس کی تعین نہیں اور منفی علم سے مراد ان کا عذاب والی نصوص سے بے خبر

ہوتا ہے۔ (بخ اس 71)

الشیخ محمد مخلوف فرماتے ہیں۔ لو كانوا يعلمون علماً ينفع كاش ان کو علم نافع کا علم ہوتا۔ (تفسیر الثعالی بخ اس 94) جو علم تھا وہ نافع نہ تھا۔

امام رازی فرماتے ہیں۔ لكنهم علموا شيئاً و جهلوا شيئاً آخر علموا انهم ليس لهم في الآخرة خلاق و لكنهم جهلوا مقدار ما فاتهم من منافع الآخرة و ما حصل لهم من مضارها و عقوباتها۔ منی ایک علم ہے اور مثبت دوسرا علم ہے۔ مثبت علم یہ ہے کہ وہ جانتے تھے کہ آخرت میں کوئی حصہ نہیں۔ اور منفی علم یہ ہے ان کو یہ معلوم نہیں تھا کہ آخرت کا کتنا نفع کھویا اور کتنا نقصان اور عذاب پایا۔ (تفسیر کبیر ج 3 ص 222)۔

تعارض نمبر ۱۸ - سورة البقرة

آیت 114

ومن اظلم ممن منع مسجد الله اور اس سے بڑا ظالم کون جس نے منع کیا اللہ کی مساجد میں ومن اظلم ممن كتم شهادة اور اس سے بڑا ظالم کون جس نے چھپائی وہ گواہی جو ثابت ہو چکی اس کو اللہ کی طرف سے (سورة البقرة آیت 140) ومن اظلم ممن افترى على الله كذباً سوائے شخص سے زیادہ کون ظالم ہوگا جو اللہ پر جھوٹ باندھے (سورہ ہود آیت 18) ومن اظلم ممن ذكر بايات ربه فاعرض عنها اور اس سے زیادہ ظالم کون جس کو سمجھایا اس کے رب کے کلام سے پھر منہ پھیر لیا اس کی طرف سے (سورة الكهف آیت 57) فمن اظلم ممن كذب بايات الله۔ سوائے

شخص سے زیادہ کون ظالم ہوگا جو ہماری آیتوں کو جھوٹا تلاوے (سورة الانعام آیت 158)۔

ان آیات کا آپس میں اس طرح تعارض ہے کہ پہلی آیت سے معلوم ہوا کہ سب سے بڑا ظالم وہ ہے جو لوگوں کو اللہ تعالیٰ کی مساجد سے روکتا ہے۔ دوسری آیت سے معلوم ہوا کہ بڑا ظالم وہ ہے جو ایسی گواہی چھپائے جو اللہ کی طرف سے ثابت ہو چکی ہے بقیہ آیتوں کو اس پر قیاس کرو۔ اس طرح ان آیات کا تعارض اس آیت سے بھی ہے۔ ان الشرك لظلم عظیم بے شک شریک بنانا بھاری بے انصافی ہے۔ (سورة لقمن آیت 13)

تطبیق :- ان آیات میں ظلم کی مختلف انواع کا ذکر ہے۔ ایک نوع ظلم کی رکاوٹ ہے۔ دوسروں کے دیدار بننے میں رکاوٹ بننا۔ دوسری نوع گواہی چھپانا۔ تیسری نوع دین سے اعراض اور منہ پھیرنا۔ چوتھی نوع افتراء کی ہے۔ پانچویں نوع تکذیب ہے۔ دین میں رکاوٹ بننے والے سب ظالم ہیں لیکن مساجد سے روکنے والا سب سے بڑا ظالم ہے۔ اس لئے کہ مسجد کے اندر انسان صرف اللہ تعالیٰ کیساتھ رابطہ کے لئے جاتا ہے۔ اللہ اور بندہ کے مابین رکاوٹ بننے والا یقیناً بڑا ظالم ہے۔ دوسری نوع ظلم کی گواہی چھپانا ہے گواہی چھپانا ظلم ہے لیکن ایسی گواہی جو اللہ کی طرف سے اس کے نزدیک ثابت ہو پھر بھی اس کو چھپائے بڑا ظلم ہے۔ مثلاً اہل کتاب کے علماء کے نزدیک اللہ کی طرف سے حضور کی نبوت ثابت تھی۔ اور وہ اس کو جانتے بھی تھے پھر بھی آپ کی نبوت کی گواہی نہیں دیتے تھے۔ تیسری نوع ظلم کی اعراض ہے اچھی اور نیک باتوں سے منہ موڑنا ظلم ہے۔ جس شخص کو اللہ تعالیٰ جیسے کریم رحیم اور رؤف کی طرف سے نصیحت کی جائے اور پھر بھی اعراض کرتا ہے بڑا ظالم ہے۔ بمقابلہ اس شخص کے جو کسی عام داعی کی نصیحت سے اعراض کرتا ہے۔ چوتھی نوع

افتزی کی ہے کسی پر جھوٹ باندھنا۔ عام لوگوں پر افتزی پھر علماء پر افتزی، صحابہ کرام پر افتزی، انبیاء کرام پر افتزی اور اللہ تعالیٰ پر افتزی۔ یہ سب افتزی کی قسمیں ہیں۔ موٹی عقل والا بھی جانتا ہے کہ کسی عالم پر افتزی سے لوگ کتنے ڈرتے ہیں اور پھر نبی پر افتزی سے تو ایمان سلب ہو جاتا ہے۔ سب سے بڑھ کر افتزی اللہ کی پاک ذات پر ہے مفتزی علی اللہ یقیناً بڑا ظالم ہے۔ پانچویں نوع تکذیب ہے کسی کو یہ کہنا کہ تو جھوٹ بولتا ہے سب سے بڑی تکذیب اللہ کی آیات کی ہے۔ کیونکہ اللہ تعالیٰ کی آیات وحی ہیں اور کائنات میں وحی سے سچی اور یقینی شے کوئی بھی نہیں اسلئے اللہ تعالیٰ کی آیات کی تکذیب کرنے والا بڑا ظالم ہے۔ حاشیہ الصادی علی الجلالین میں ہے۔ واجیب بان هولاء الموجودیین فی الآیات ظلّمهم زائد عن غیر ہم۔ (ج ۱ ص 53) ان آیات میں جن کو بڑا ظالم کہا ہے یہ بمقابلہ ان گناہ گاروں کے ہے جو ان کے علاوہ ہیں۔ یہ مطلب نہیں کہ یہ آپس میں ایک دوسرے سے ظلم میں زیادہ ہیں۔ بلکہ یہ سب مساوی درجہ کے ظالم ہیں علامہ آلوسی نے بھی یہی جواب ایک مثال بیان کر کے دیا ہے فرماتے ہیں۔ فالأولیٰ ان یجاب بان ذالک لا یدل علی نفی التسویة فی الاظلمیة وقصادی ما یفہم من الآیات اظلمیة اولئک المذكورین فیہا ممن عداہم کما انک اذا قلت لا احدا ففہ من زید، عمرو، و خالد۔ یعنی ان آیات میں مذکورہ آدمیوں کی آپس میں اظلمیت کی نفی نہیں۔ بلکہ یہ مذکورین دیگر گناہ گاروں سے بڑے ظالم ہیں۔ جب تو کہے کہ زید، عمرو اور خالد سے کوئی بڑا فقیہ نہیں تو اس کا یہ مطلب نہیں کہ یہ آپس میں ایک دوسرے سے بڑے فقیہ ہیں۔ بلکہ زید، عمرو اور خالد بقیہ تمام لوگوں سے فقہ میں بڑھ کر ہیں۔

علامہ آلوسی نے ایک اور جواب بھی دیا ہے۔ فرماتے ہیں وان جعلت ذالک الکلام

مخرجاً مخرج المبالغة فی التهید والذجر مع قطع النظر عن نفی المساواة او الزیادة فی نفس الامر کما قیل بہ محکماً العرف۔ عرفاً اس سے یہ مطلب لیا جائے کہ ان مذکورین کی تہدید اور زجر ہے قطع نظر اس سے کہ ان میں بڑا ظالم کون ہے اور چھوٹا کون ہے۔ (روح المعانی ج ۱ ص 363)۔ ان سب آیات کا ان الشکر للظلم عظیم سے بھی تعارض ہے۔ اس کا جواب امام رازی نے دیا ہے انہ عام دخلہ التخصیص فلا یقدح فیہ۔ من اظلم ممن منع وغیرہ میں عموم ہے اور شرک کو ظلم عظیم کہنا اس سے تخصیص ہے۔ ان آیات کے عموم سے خاص کیا گیا ہے۔ (تفسیر کبیر ج 4 ص 11)

امام نیشاپوری فرماتے ہیں۔ ومن اظلم الذی فی قوۃ لیس احد اظلم لیس علی عمومہ لان الشکر اعظم من هذا الفعل ان الشکر للظلم عظیم۔ آیت کا معنی ہے مسجد سے روکنے والے سے بڑا ظالم کوئی نہیں۔ لیکن اس میں عموم نہیں کہ ہر ظالم سے بڑھ جائے کیونکہ شرک ظلم عظیم ہے اور شرک کا فعل اس کے فعل سے بہت بڑا ہے۔ (غرائب القرآن حاشیہ تفسیر طبری ج ۱ ص 374)

مولانا محمد نعیم دیوبندی فرماتے ہیں اظلمیت کی تخصیص بلحاظ سبقت ہو یعنی سب سے پہلے ہونے کی وجہ سے بعد والوں پر فائق ہو (۲) ابن حبان اس توجیہ کو صواب کہتے ہیں کہ ان نصوص میں اظلمیت کی نفی کی جارہی ہے اس سے ظالمیت کی نفی لازم نہیں آتی کیونکہ مقید کی نفی سے مطلق کی نفی لازم نہیں آیا کرتی اور جب ظالمیت کی نفی نہ ہوئی تو تاقض بھی لازم نہیں آیا۔ کیونکہ اظلمیت میں برابری ثابت ہوئی اور جب برابری ہوگی تو کوئی کسی سے بڑھا ہوا نہ رہا۔ بلکہ سب برابر ہو گئے گویا اظلمیت انسان کی طرح کلی متواظلی ہوگئی جو مساوی طور پر

مکذّب، مفتری، مانع وغیرہ سب پر صادق آئے گی۔ اب نہ ان سب کی اظہار میں مساوات پر کوئی اشکال رہا اور نہ ایک کا دوسرے سے باہم ظلم ہونا لازم آیا چنانچہ کہا جاتا ہے لا احد انتہ ظلم منہم حاصل یہ کہ تفضیل کی نفی سے مساوات کی نفی نہیں ہوتی۔ (۳) یہ بھی کہا جاسکتا ہے کہ اسم تفضیل بمعنی اسم فاعل ہے۔ (کمالمین ج 5 ص ۴۴۳)۔

تعارض نمبر ۱۹

سورة البقرة

آیت 114

اولئك ما كان لهم ان يدخلوها الا خائفين ان لوگوں کو تو کبھی بھی بے ہیبت ہو کر ان میں قدم بھی نہ رکھنا چاہئے تھا۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ کفار مساجد میں داخل ہو سکتے ہیں۔ لیکن ایک آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ کفار کو مسجد حرام میں داخلہ کی اجازت نہیں ارشاد ہے فلا یقربوا المسجد الحرام بعد عامہم هذا۔ سو یہ لوگ اس سال کے بعد مسجد حرام پاس نہ لانے پاویں۔ (سورة التوبة آیت ۲۸)

تطبیق :- مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں۔ فقہ حنفی کی رو سے مراد اس سے قرب و دخول بطور توطن و استیلاء کے لئے کہ یہ ناجائز ہے ورنہ مسافر انہ امام کی اجازت سے آنا اگر امام کے نزدیک خلاف مصلحت نہ ہو تو مضائقہ نہیں۔ (بیان القرآن ج 4 ص 105)۔

مسجد میں داخل ہو سکتے ہیں۔ علامہ زبیری فرماتے ہیں۔ ونہی المشرکین ان یقربواہ راجع الی نہی المسلمین عن تمکینہم منہ۔ مسلمانوں کو حکم دیا کہ مشرکین کو روکو اس کا مطلب یہ ہے کہ ان کو غلبہ حاصل کرنے کا موقع نہ دو۔ فرماتے ہیں وقیل ان یمنعوا من تولی للمسجد الحرام والقیام بمصالحہ وبعزلوا

عن ذالك۔ مسجد حرام کی سرپرستی سے ان کو باز رکھنا ہے (الکشاف ج ۲ ص 261) علامہ آتوسی فرماتے ہیں والنہی محمول علی التنزیہ او الدخول للحرمہ بقصد الحج۔ یہ نہیں تنزیہی ہے یا مشرکین کو بغرض ادا ایگی حج مسجد حرام سے روکو۔ (روح المعانی ج ۱ ص 364) امام قرطبی فرماتے ہیں۔ وقال الشافعی آیتہ عامۃ فی سائر المشرکین خاصة فی المسجد الحرام ولا یمنعون فی دخول غیرہ۔ امام شافعی فرماتے ہیں کہ ممانعت کا حکم تمام مشرکین کے لئے مسجد حرام کے ساتھ خاص ہے۔ مسجد حرام کے علاوہ مسجد میں داخل ہو سکتے ہیں (قرطبی ج 8 ص 105) الا خائفین سے جو مسجد میں داخلہ کا جواز معلوم ہوتا ہے یہ حکم نہیں بلکہ خبر ہے۔ الا خائفین خبر ہے کہ یہ لوگ مسجد میں خوف و حراس کی حالت میں داخل ہوں گے ابن الجوزی فرماتے ہیں۔ انه اخبار عن احوالہم بعد ذالك۔ یہ ان کے احوال کی خبر ہے (زاد المسیر ج ۱ ص 134) علامہ زبیری فرماتے ہیں۔ الاحائفین علی حال التہیب وارتعاد الفرائض من المومنین ان یبطشوا بہم۔ مسجد میں مسلمانوں کی گرفت کے خوف کی وجہ سے کچھ کی حالت میں داخل ہوتے ہیں۔ (الکشاف ج ۱ ص 179) اس سے معلوم ہوا کہ کفار کے داخلہ کی خبر دی گئی ہے۔

سورة البقرة

تعارض نمبر ۲۰

آیت 118

قد بینا الآیات لقوم یوقنون ہم نے تو بہت سی دلیلیں بیان کر دی ہیں ان لوگوں کے لئے جو یقین چاہتے ہیں۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ بیان خاص یقین والوں کے لئے ہے حالانکہ دیگر آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ بیان عام ہے۔ اس میں کسی کی تخصیص نہیں ارشاد ہے **كذالك يبين الله آياته للناس لعلهم يتقون**۔ اسی طرح اللہ تعالیٰ اپنے احکام لوگوں کے واسطے بیان فرمایا کرتے ہیں اس امید پر کہ وہ لوگ پرہیز رکھیں (سورۃ البقرۃ آیت 87)۔

ایک اور ارشاد ہے۔ **هذا بيان للناس** یہ بیان کافی ہے تمام لوگوں کے لئے (سورۃ ال عمران آیت 138) معلوم ہوا کہ بیان تمام انسانوں کے لئے ہے۔

تصبیق :- اللہ تعالیٰ نے تمام انسانوں سے بیان کیا ہے یعنی دلائل وغیرہ سب کے سامنے کھول کھول کر بیان کئے ہیں۔ لیکن بیان کا فائدہ یقین رکھنے والوں کو ہوتا ہے اسلئے ان کا ذکر بطور خاص ہوا۔ یہ مطلب نہیں کہ ان کے علاوہ کسی سے بیان نہیں ہوا۔ قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں۔ **خصهم لان منفعة الآيات راجعة اليهم**۔ یقین والوں کا بطور خاص ذکر اس لئے ہوا کہ بیان دلائل کا نفع ان کی طرف لوٹتا ہے۔ (مظہری ج ۱ ص 120)

ابن جریر طبری فرماتے ہیں۔ **وخص الله بذلك القوم الذين يوقنون لانهم اهل التثبت في الامور والطالبون معرفة حقائق الاشياء على يقين وصحة** (تفسیر طبری ج ۱ ص 408) یقین والوں کو بیان کے ساتھ اس لئے خاص کہا کہ یہ لوگ امور میں ثابت قدم رہتے ہیں اور اشیاء کی حقیقت جاننے کے لئے ان میں صحیح یقین والی طلب ہوتی ہے۔

تعارض نمبر ۲۱

سورۃ البقرۃ

آیت 143

وما جعلنا القبلة التي كنت عليها الا لنعلم من يتبع الرسول ممن ينقلب على عقبيه اور جن سمت قبلہ پر آپ رہ چکے ہیں وہ تو محض اس لئے تھا کہ ہم کو معلوم ہو جائے کہ کون تو رسول کا اتباع اختیار کرتا ہے اور کون پیچھے کو ہٹا جاتا ہے۔ **ولنبلونكم حتى نعلم المجهدين منكم والصبرين ونبلو اخباركم** اور البتہ ہم تم کو جانچیں گے تاکہ معلوم کر لیں جو تم میں لڑائی کرنے والے ہیں اور قائم رہنے والے اور تحقیق کر لیں تمہاری خبریں۔ (سورۃ محمد آیت 31)۔

اس قسم کی اور بھی آیات ہیں جن سے بظاہر یہ معلوم ہوتا ہے کہ اللہ تعالیٰ کو پہلے سے علم نہیں تھا۔ حالانکہ اللہ تعالیٰ کو ماکان اور ما یکون کا علم ہے وہ علیم بذات الصدور ہے اس کا علم انتہائی وسیع ہے۔ ارشاد ربانی ہے **قال من انباك هذا قال نباني العليم الخبير** بولی تجھ کو کسی نے بتلا دی یہ کہا مجھ کو بتایا اس خبر والے واقف نے (سورۃ الاحزاب آیت 3) ان **الله قد احاط بكل شى علماً** (سورۃ الطلاق آیت 12) **كان الله بكل شى علماً**۔

تصبیق :- قرآن مجید میں **لنعلم**، **حتى نعلم**، **لما يعلم الله لنبلونكم** الا لنعلم وغیرہ استقبال کے صیغے آئے ہیں۔ ان سے بظاہر یوں سمجھ میں آتا ہے کہ عیاذاً باللہ اللہ تعالیٰ کو بعد میں علم ہوا۔ اس مشکل گتھی کو مفسرین نے بطریق احسن سلجھا یا ہے علامہ زحتری فرماتے ہیں۔ **لنعلمه علما يتعلق به الجزاء**۔ اس کے بارے میں وہ علم

جان لیں جس کے ساتھ جزاء کا تعلق ہے۔ تحویل قبلہ کے وقت جو آدمی اتباع رسول کرے گا یا نہیں کرے گا۔ تو اس وقت ان کے فعل کے ساتھ اللہ کا علم متعلق ہو جائیگا۔ وہو ان یعلمہ موجوداً حاصللاً دوسرا قول ولیعلم رسول والمؤمنون۔ رسول اور مومنین جان لیں سوال پیدا ہوا کہ رسول اور مومنین کے علم کی نسبت اللہ تعالیٰ نے اپنی طرف کیوں کی۔ اس کا جواب دیا وانما اسند علمہم الی ذاتہ لانہم خواصہ واهل الزلفی عنده۔ ان کے علم کی نسبت اپنی ذات تک طرف اس لئے کی کہ یہ لوگ اس کے مقربین اور خواص ہیں تیسرا قول لنمیز التابع من الناکص۔ تاکہ تابع اور پیچھے بننے والوں کو جدا کر دیں۔ تمیز کی جگہ علم کو لائے اسلئے کہ علم کے ساتھ تمیز حاصل ہوتی ہے۔ تمیز مسبب ہے اور علم مسبب۔ مسبب کی جگہ مسبب کا ذکر ہوا۔ مجازاً ایسا ہوتا ہے (الکشاف ج ۱ ص 200) ابن الجوزی فرماتے ہیں۔ ان العلم راجع الی المخاطبین والمعنی لتعلموا انتم قالہ الفراء۔ فرائد کہ مخاطبین کا علم مراد ہے کہ تم جان لو (زاد المسیر ج ۱ ص 155) قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں۔ ان الام لتعلیل لبيان الغایة وصیغۃ المضارع بمعنی الماضي فالمعنی الا لما علمنا من يتبع الرسول ممن ينقلب۔ لتعلم میں لام علت کے لئے ہے اللہ تعالیٰ اپنی غرض بیان نہیں کرتے اور مضارع بمعنی ماضی ہے۔ معنی یہ ہوگا اس لئے کہ میں پہلے سے جانتا ہوں کہ کون رسول کی اتباع کرے گا اور کون منہ موڑے گا۔ قاضی صاحب شیخ منصور ماتریدی کی تحقیق نقل کرتے ہیں۔ لنعلم کائناتاً موجوداً ماقد علمنا انه یکون ویوجد فالله سبحانه عالم فی الازل بكل ما اراک وجوده انه یوجد فی الوقت الذی شبہ وجوده فیہا۔ (مظہری ج ۱ ص 141)۔

اللہ تعالیٰ کے علم قدیم میں جو چیز موجود ہے اور جس وقت اس کے ظہور کا ارادہ کریں اس وقت وہ موجود ہو جاتی ہے اس طرح تغیر اللہ کے علم میں نہیں بلکہ معلوم میں آتا ہے۔ امام رازی نے بھی بہت توجیحات کی ہیں فرماتے ہیں۔ نعاملکم معاملۃ المختبر الذی کانہ لا یعلم۔ ہم تمہارے ساتھ اس امتحان لینے والے کی طرح معاملہ کریں گے جو نہیں جانتا۔ (کبیر ج 4 ص 117) اللہ کو علم تو ہے لیکن یہاں معاملہ امتحان لینے والے بے خبر کی طرح کریں گے۔

اس مشکل مسئلہ میں شیخ الہند محمود حسن کی تحقیق قابلِ داد ہے۔ بلکہ تحقیق کا حق ادا کر دیا ہے ان کی تحقیق کا خلاصہ اپنے الفاظ میں پیش کرتا ہوں۔ اللہ تعالیٰ کو ما کا ل اور ما کیون کا علم ہے اس کے علم میں تقدیم، تاخیر نہیں۔ تمام اشیاء اس کے لئے بمنزلہ شی واحد میں اللہ کے علم میں ماضی، حال اور استقبال نکالنا قاطع ہے۔ ہاں خود زمانوں میں تقدم و تاخر ہے اس لئے تین زمانے بنتے ہیں۔ اشیاء کے وقوع میں بھی تقدم و تاخر ہے کوئی واقعہ ماضی میں ہوا ہے کوئی آئندہ واقعہ ہوگا۔ اس کا حاصل دو چیزیں ہوئی۔ ایک اللہ کا علم اور ایک حالات و واقعات کا تقدم و تاخر۔ جب اللہ اپنے علم کے لحاظ سے کلام کرتا ہے تو ہمیشہ ماضی اور حال کا صیغہ استعمال کرتا ہے۔ مضارع کا صیغہ استعمال نہیں کرتا۔ کبھی واقعات کے تقدم و تاخر کا لحاظ ہوتا ہے تو ماضی کے واقعہ کے لئے ماضی کا صیغہ حال کے واقعہ کے لئے حال کا صیغہ اور استقبالی واقعہ کے لئے مضارع کا صیغہ لاتے ہیں آئندہ واقعات کے لئے ماضی کا صیغہ لاتے ہیں تو مطلب یہ ہوتا ہے۔ کہ سب کچھ اس کے علم کے احاطہ میں ہے جیسے ونادی اصحاب الجنة جنت والے وقوع قیامت کے بعد جنت میں ندا کریں گے۔ یہ استقبالی واقعہ ہے لیکن اس کے لئے ماضی کا صیغہ لائے۔ کونکہ علم الہی میں سب کچھ موجود ہے۔ جہاں اللہ

استقبال کا صیغہ لاتے ہیں تو اس کا یہ مطلب نہیں کہ اس کا علم بعد میں آیا۔ بلکہ اس میں ان واقعات کے تقدیم و تاخیر کا لحاظ ہوتا ہے کہ یہ واقعہ بعد میں پیش آئے گا۔ واقعہ بعد میں پیش آتا ہے اور اس کا علم قدیم پہلے سے اس کے ساتھ متعلق ہوتا ہے۔ واقعہ بعد میں رونما ہونے والا ہوتا ہے اس لئے اس کے لئے استقبالی صیغہ ذکر کرتے ہیں۔ جیسے لتعلم میں ہے۔

دوسری تحقیق کا حاصل :- علم کی دو قسمیں ہیں بالواسطہ اور بلاواسطہ آگ کا علم دھوئیں کے واسطہ سے بالواسطہ علم ہے اور دھوئیں کا علم بلاواسطہ ہے۔ اللہ تعالیٰ کا علم دونوں طرح پر ہے۔ بلاواسطہ اور بالواسطہ یعنی لوازم کا ملزومات سے اور ملزومات کا لوازم سے اور دونوں علم ازل سے برابر ساتھ ہیں اگرچہ علم بالواسطہ کسی چیز کا اس کے علم بلاواسطہ میں ایسا محو ہوتا ہے کہ اس کا دھیان بھی نہیں گزرتا۔ ایک آدمی جب کسی نارنگی کی طرف دیکھے تو نارنگی کا سرخ رنگ بالواسطہ نارنگی ہے لیکن نارنگی اور اس کے رنگ کا علم ایک ساتھ ہے۔ اس میں زمانے کے لحاظ سے کوئی تقدم یا تاخر نہیں اللہ تعالیٰ کے دونوں علم قدیم ہیں۔ اللہ تعالیٰ جہاں صیغہ استقبال کا ذکر فرماتے ہیں تو وہاں علم بالواسطہ مراد ہوتا ہے اسلئے کہ مخاطب بنی آدم ہیں اگر ایسے موقع پر اللہ ماضی کا صیغہ ذکر کر کے اپنے علم بلاواسطہ کا اظہار کریں تو بنی آدمی پر الزام پورا نہ ہوتا مثلاً اللہ کو پہلے سے معلوم تھا کہ قبلہ کے بارے میں کون رسول کا اتباع کرے گا کون نہیں کرے گا۔ قبلہ واسطہ ہوا اور فرمان بردار اور نافرمان کا علم بالواسطہ قبلہ ہوا۔ بنی آدم کو ان فرمان برداروں اور نافرمانوں کا علم بلاواسطہ قبلہ بالکل ناممکن تھا۔ اسلئے اللہ نے واسطہ قبلہ کا ذکر کر دیا۔ جہاں ایسی مصلحت نہ ہو وہاں صیغہ ماضی اور علم بلاواسطہ کا ذکر ہوتا ہے خلاصہ یہ ہوا کہ بنی آدم کو سمجھانے کے لئے اللہ اپنے علم بالواسطہ کا ذکر کرتے ہیں تاکہ مخاطبین اس کو اللہ کی جانب سے حجت جان کر سمجھ لیں یہ مطلب نہیں کہ

اللہ کو بلاواسطہ علم حاصل نہیں ہو سکتا۔ اسلئے اللہ کے علم میں حدوث کا شبہ صحیح نہیں اللہ تعالیٰ صرف مخاطبین کی رعایت کی وجہ سے علم بالواسطہ کا اظہار کرتے ہیں اس میں زمانوں کے تقدم اور تاخر کا اعتبار نہیں ہوتا تاکہ اللہ کے علم میں عیاذاً باللہ حدوث کا شبہ پیدا ہو۔ واللہ اعلم عند اللہ۔

تعارض نمبر ۲۲

سورة البقرة

آیت 170

او لو كان ابائهم لا يعقلون شيئاً ولا يهتدون کیا اگر چنان کے باپ دادا نہ کچھ سمجھ رکھتے ہوں اور نہ ہدایت رکھتے ہیں۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ کفار میں بالکل سمجھ بوجھ نہیں جبکہ دیگر آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ ان میں عقل اور سمجھ تھی۔ ارشاد باری ہے وزین لهم الشيطان اعمالهم فصدھم عن السبیل وکانوا مستبصرین اور شیطان نے ان کے اعمال کو ان کی نظر میں مستحسن کر رکھا تھا اور ان کو راہ سے روک رکھا تھا اور وہ لوگ ہوشیار تھے۔ (سورة العنکبوت آیت 38) ہوشیار میں کیسے سمجھ نہیں ہوتی۔

تطبیق :- دین اور آخرت کے لحاظ سے ان میں سمجھ نہ تھی۔ دنیاوی اعتبار سے سیانے تھے قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں۔ ای لا یعقلون شیئاً فی امر الدین لانہم کانوا یعقلون امر الدنیا۔ دین کے بارے میں کچھ نہیں جانتے تھے کیونکہ دنیا کے بارے میں سمجھ رکھتے تھے۔ (مظہری ج ۱ ص 166) ابو جعفر طبری فرماتے ہیں لا یعقلون شیئاً من دین اللہ و فرائضہ و امرہ و نہیہ (تفسیر طبری ج 2 ص 47)۔

علامہ آلوسی یعلمون ظاہراً من الحیاة الدنیا کی تفسیر میں ابن عباس کا قول نقل

کرتے ہیں يعلمون منافعها ومضارها ومتى يزرعون ومتى يحصدون وكيف يجمعون وكيف يبنون۔ (روح المعانی ج 21 ص 21) کفار صرف دنیا کے منافع اور مضرتیں جانتے ہیں اور یہ بھی جانتے ہیں کہ کاشت کب کریں گے کٹائی کب ہوگی جمع کب کریں گے اور آبادی کیسے کریں گے۔

تعارض نمبر ۲۳ سورة البقرة

آیت 174

ولا يكلمهم الله يوم القيامة اور اللہ تعالیٰ ان سے نہ قیامت میں کلام کریں گے۔ اس آیت میں ہے کہ اللہ تعالیٰ قیامت کے دن کفار سے کلام نہ فرمائیں گے کلام کی نفی ہے لیکن دوسری آیت سے کلام کا اثبات معلوم ہوتا ہے۔ قال اخسؤا فيها ولا تكلمون ارشاد ہوگا کہ اس میں راندے ہوئے پڑے رہو اور مجھ سے باتیں نہ کرو (سورة المؤمنون آیت 108) معلوم ہوا کہ کفار کے ساتھ کلام ہوگا۔

تصبیق :- کسی سے بات کرنے کی کئی قسمیں ہیں۔ کبھی پیار و محبت اور نرمی سے گفتگو کی جاتی ہے کبھی کسی کو ڈانٹنے کے لئے اس سے کلام کیا جاتا ہے خاص کر جب مخاطب پر غصہ نکالنا ہو۔ علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔ ولا يكلمهم الله يوم القيامة ای کلام رحمة كما قال الحسن فلا ینافی سوالہ ایہم ان سے نرمی کے کلام کی نفی ہے اب اگر ان کے ڈانٹنے کے لئے سوال کیا جائے تو کلام کرنے اور نہ کرنے میں کوئی منافاة نہیں۔

ایک اور جواب بھی دیا ہے۔ وقیل لا يكلمهم اصلاً لمزيد من جلالہ علیہم والسؤال بواسط الملائكة۔ اللہ تعالیٰ انتہائی غصہ کی وجہ سے ان کے ساتھ

کسی قسم کا کلام نہیں فرمائیں گے نہ نرمی کا اور نہ غصہ والا کلام۔ جہاں کلام کا اثبات ہے وہ بواسط فرشتوں کے ہے (روح المعانی ج 2 ص 44)۔

جلالین کے حاشیہ صادی میں ہے قوله ولا يكلمهم الله ای کلام رضا بل يكلمهم کلام غضب (ج 1 ص 78) رضا مندی کا کلام نہیں فرمائیں گے اور غصہ کا کلام فرمائیں گے۔

دونوں آیتوں کے مابین تعارض کو دور کرنے کے لئے ایک یہ توجیہ بھی کی گئی ہے کہ ولا يكلمهم الله میں کلام کی نفی نہیں بلکہ یہ کلام اللہ تعالیٰ کے غصہ سے عبارت ہے کہ اللہ تعالیٰ ان کفار سے انتہائی ناراض ہوں گے غصہ اور ناراضگی کا اظہار دو صورتوں میں کیا جاتا ہے۔ جس سے آدمی ناراض ہو کبھی اس سے قطع تعلق کر کے بات چیت تک گوارا نہیں کی جاتی کبھی گفتگو کے ذریعہ مخاطب پر غصہ کی حالت میں دل کی بھڑاس نکالی جاتی ہے۔ ولا يكلمهم الله میں غصہ اور ناراضگی کی پہلی قسم ہے اور قال اخسؤا فيها میں غصہ کی دوسری قسم ہے علامہ زحشری کی توجیہ سے یہی معلوم ہوتا ہے۔ وقیل نفسی الکلام عبارة عن غضبه علیہم کمن غضب علی صاحبہ فصرمه و قطع کلامه (الکشاف ج 1 ص 108)۔

تعارض نمبر ۲۳ سورة البقرة

آیت 184

وعلى الذين يطيقونه فدية طعام مسكين اور جو لوگ روزہ رکھنے کی طاقت رکھتے ہوں ان کے ذمہ فدیہ ہے کہ وہ ایک غریب کا کھانا ہے۔ اس سے ثابت ہوا کہ جو

روزہ رکھ سکتا ہے اس کو روزہ رکھنے یا فدیہ دینے کا اختیار ہے لیکن ایک اور آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ قادر علی الصوم کے لئے روزہ متعین ہے ارشاد باری ہے۔ فمن شهد منكم الشهر فليصمه سو جو شخص اس ماہ میں موجود ہو اس کو ضرور اس میں روزہ رکھنا چاہئے (سورۃ البقرۃ آیت ۱۸۵)۔

تطبیق :- یہ حکم ابتداء میں تھا پھر باقی نہ رہا۔ قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں فذهب اکثرهم ان الآية منسوخة۔ اکثر کے نزدیک آیت منسوخ ہے اور نسخ فمن شهد منكم الشهر ہے۔ (مظہر ج ۱ ص ۱۹۱)۔

علامہ زبیر فرماتے ہیں۔ يطيقونه میں ایک قرأت يطيقونه ہے۔ يتكلفونه على جهد منهم وعسر وهم الشيوخ والعجائز وحكم هؤلاء الافطار والفدية وهو على هذا الوجه ثابت غير منسوخ۔ تکلیف کیساتھ روزہ رکھنے والے جیسے بوڑھے مرد اور بوڑھی عورتیں ان کے لئے افطار اور فدیہ ہے اس بنا پر آیت منسوخ نہ ہوگی (الکشاف ج ۱ ص ۲۲۷)۔

جالیں میں ہے۔ لا يطيقونه لكبر اور مرض لا يرجى برأه۔ لا مقدر ہے۔ جن میں بڑھاپے یا ایسے مرض کی وجہ سے روزہ کی طاقت نہ ہو جس سے اچھا ہونے کی امید نہ ہو۔ (ص ۲۶)۔

عبدالرحمن ابن محمد بن مخلوف فرماتے ہیں والآية عند مالك انما هي فيمن يدرکه رمضان شان و عليه صوم من المتقدم فقد كان يطيق في تلك المدة الصوم فتركه۔ امام مالک کے نزدیک فدیہ کا یہ حکم اس شخص کے لئے ہے۔ جس نے گذشتہ رمضان کے روزے نہ رکھے ہوں اور دوسرا رمضان آ جائے۔ اور گذشتہ مدت میں

روزہ رکھنے کی قوت اس میں موجود تھی۔ تو ایسے شخص کے لئے روزہ یا فدیہ کا اختیار ہے۔ (تفسیر الثعالبی ج ۱ ص ۱۳۷)۔

علامہ لوسی فرماتے ہیں۔ ان الآية نزلت في الشيخ الكبير الهرم و العجوزة الكبيرة الهرمة۔ آیت انتہائی بوڑھے اور بوڑھی کے بارے میں اتری ہے۔ ایک اور توجیہ بھی کی ہے۔ و جاز ان كون الهمة للسلب كانه سلب طاقته بان كلف نفسه المجهود فسلب طاقته عند تمامه۔ باب افعال کا ہمزہ سلب ماخذ کے لئے ہو۔ جس میں روزہ رکھنے کی طاقت نہ ہو۔ يطيقونه کا ترجمہ ہوگا۔ جو روزہ نہ رکھ سکتے ہوں۔ اب لا مقدر کرنے کی بھی ضرورت نہیں بلکہ باب افعال کی ایک خاصیت کی وجہ سے یہ ترجمہ ہوگا۔ ان تمام صورتوں میں آیت محکم رہے گی۔ شاہ ولی اللہ الفوز الکبیر میں فرماتے ہیں۔ فدیہ سے مراد صدقہ فطر ہے۔ يطيقونه کی مذکر ضمیر فدیہ کی طرف بمعنی طعام کے راجع ہے۔ آیت کا مطلب ہوگا جو لوگ صدقہ فطر دینے پر قادر ہیں ان پر مسکین کو کھانا کھلانا واجب ہے۔ آیت میں روزہ کی طاقت اور عدم طاقت کی بحث نہیں۔ فدیہ طعام مسکین سے جب صدقہ فطر مراد لیا تو سرے سے تعارض ہی واقع نہ ہوگا۔

تعارض نمبر ۲۵ سورۃ البقرۃ

آیت ۱۸۵

شهر رمضان الذي انزل فيه القرآن مهين رمضان کا ہے جس میں نازل ہوا قرآن اس آیت میں نزول قرآن کی نسبت رمضان کی طرف ہے۔ انا انزلناه في ليلة القدر ہم نے اس کو اتارا شب قدر میں (سورۃ القدر آیت ۱)۔

اس آیت میں نسبت شب قدر کی طرف ہے۔ ایک جگہ ارشاد فرمایا۔ انا انزلناه فی لیلة مبارکة ہم نے اس کو اتار ایک برکت کی رات میں (سورۃ الدخان آیت ۳)۔

نزول کی نسبت رمضان، شب قدر اور لیلة مبارکہ کی طرف ہوئی۔ بظاہر تینوں نسبتوں میں تعارض ہے۔

تطبیق :- قرآن مجید کے نزول کی نسبت رمضان، شب قدر اور لیلة مبارکہ تینوں کی طرف صحیح ہے۔ اللہ تعالیٰ نے قرآن مجید کو لوح محفوظ سے رمضان میں اتارا اور یہ شب قدر کی رات تھی اور شب قدر رمضان میں ہے۔ اور لیلة مبارکہ سے بھی شب قدر ہی مراد ہے۔ آسمان دنیا سے زمین کی طرف بھی اس کا نزول شب قدر میں شروع ہوا۔ لہذا تینوں کی طرف نسبت صحیح ہے۔ علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔ ای ابتدا فیہ انزالہ وکان ذالک لیلة القدر (روح المعانی ج ۲ ص ۶۱)۔

امام قرطبی فرماتے ہیں۔ عن ابن عباس قال نزل القرآن فی شهر رمضان و فی لیلة القدر فی لیلة مبارکة۔ قرآن مجید رمضان، شب قدر اور لیلة مبارکہ میں نازل ہوا۔ فرماتے ہیں۔ واللیلة المبارکة لیلة القدر۔ لیلة مبارکہ لیلة القدر ہے۔ اس سے یہ بات بھی معلوم ہوگئی کہ شب قدر صرف رمضان میں ہے۔ اسلئے امام قرطبی فرماتے ہیں۔ و فی هذا دلیل علی ان لیلة القدر انما تكون فی رمضان لا فی غیرہ۔ (قرطبی ج ۲ ص ۲۹۷)۔

اس میں اسی بات کی دلیل ہے کہ شب قدر صرف رمضان میں ہوتی ہے۔

تعارض نمبر ۲۶ سورۃ البقرۃ

آیت ۱۹۳

وقاتلوهم حتی لا تكون فتنه اور ان کے ساتھ اس حد تک لڑو کہ فساد عقیدہ نہ رہے۔ اس آیت میں مطلقاً قتال کا حکم ہے۔ زمان و مکان کی کوئی قید نہیں۔ اسی طرح ایک اور ارشاد ہے۔ فاقتلو المشرکین حیث وجدتموہم تو ان مشرکین کو جہاں چاہو مارو۔ (سورۃ التوبۃ آیت ۵) ایک آیت سے حکم مذکورہ آیتوں کے خلاف معلوم ہوتا ہے۔ ارشاد باری ہے۔ یستلونک عن الشهر الحرام قتال فیہ، قل قتال فیہ کبیر۔ لوگ آپ سے شہر حرام میں قتال کرنے کے متعلق سوال کرتے ہیں۔ آپ فرما دیجئے کہ اس میں خاص طور پر قتال کرنا جرم عظیم ہے۔ (سورۃ البقرۃ آیت ۲۱۷) اس آیت سے معلوم ہوا کہ اشہر حرم میں قتال منع ہے۔

تطبیق :- امام قرطبی فرماتے ہیں۔ فالجمهور علی نصحها واما قتال المشرکین فی الاشهر الحرام مباح۔ عدم قتال اشہر حرم میں جمہور کے نزدیک منسوخ ہے۔ حرمت کے مہینوں میں قتال مباح ہے۔ (قرطبی ج ۳ ص ۴۳)۔

امام رازی فرماتے ہیں۔ فاقتلوا المشرکین حیث وجدتموہم و هذه الآیة ناسخة لتحریم القتال فی الشهر الحرام۔ اشہر حرم میں تحریم قتال کا حکم منسوخ ہے (تفسیر کبیر ج ۵ ص ۳۳)۔ ابن الجوزی فرماتے ہیں۔ هذه الآیة منسوخة بقوله فاقتلوا المشرکین حیث وجدتموہم وبقوله قاتلوا الذین لا یؤمنون بالله ولا بالیوم الآخر۔ (زاد المسیر ج ۱ ص ۲۳۷)۔

قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں۔ اگر کفار کی طرف سے ابتداء قتال ہو تو اشہر حرم میں قتال مباح ہے۔ اگر مسلمان ابتداً ان حرمت کے مہینوں میں قتال شروع کریں تو حرام ہے۔ فرماتے ہیں۔ لا نہا تدل علی اباحة القتال فی الاشهر الحرم ان كانت البداية فی القتال من الکفار۔ آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ ان مہینوں میں اگر کفار قتال میں پہل کریں تو قتال ان سے مباح ہے۔ آگے لکھتے ہیں فبقی البداية بالقتال فی الاشهر محرماً۔ حرمت والے مہینوں میں ابتداً قتال حرام ہی سمجھا گیا۔ (مظہری ج ۱ ص 263)۔

تعارض نمبر ۲۷

سورة البقرة

آیت 213

كان الناس امة واحدة سب آدمی ایک ہی طریق پر تھے۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ سب لوگوں کا ایک ہی دین تھا۔ لیکن ایک آیت میں اس کے خلاف حکم معلوم ہوتا ہے۔ ارشادِ باری ہے۔ هو الذی خلقکم فمنکم کافر ومنکم مومن۔ وہی ہے جس نے تم کو بنا یا پھر کوئی تم میں منکر ہے اور کوئی تم میں ایمان والا (سورة التغابن آیت ۲) اس آیت سے معلوم ہوا کہ سب لوگ ایک دین پر نہ تھے۔

تطبیق :- آدم علیہ السلام کے زمانہ میں سب لوگ ایک ہی دین حق پر قائم تھے۔ مرد زمانہ کے ساتھ اختلافات پیدا ہوئے۔ جس کی وجہ سے دو فرقوں میں بٹ گئے مومن اور کافر۔ اس اختلاف کی وجہ سے ارسال رسل کا سلسلہ شروع ہو گیا۔ اس کی تائید اس آیت سے معلوم ہوتی ہے ولكن اختلفوا فمنهم من آمن ومنهم من كفر لیکن وہ لوگ

باہم مختلف ہوئے سوان میں کوئی تو ایمان لایا اور کوئی کافر رہا۔ (سورة البقرة آیت ۲۵۳) امام رازی فرماتے ہیں۔ هو الذی خلقکم فمنکم کافر ومنکم مومن۔ یہ تقدیر کا قصہ ہے۔ قال ابن عباس انه تعالیٰ خلق بنی آدم مؤمناً وکافراً ثم يعيدهم يوم القيامة كما خلقهم مؤمناً وکافراً۔ یہ تقدیر ہے اور کان الناس امة واحدة یہ تدبیر ہے۔ (تفسیر کبیر ج 30 ص 21)۔

تعارض نمبر ۲۸

سورة البقرة

آیت 221

ولا تنکحوا المشکرین حتی یؤمنوا ء۔ اور عورتوں کو کافر مردوں کے نکاح میں مت دو جب تک وہ مسلمان نہ ہو جائیں۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ عورت کا ولی اس کا نکاح کرائے گا عورت خود اپنا نکاح کسی کے ساتھ نہیں کر سکتی لیکن آیت حتی تنکح زوجاً غیرہ ء۔ یہاں تک کہ وہ اس کے سوا ایک اور خاوند سے نکاح کرے (آیت ۲۳۰) سے معلوم ہوا کہ عورت اپنا نکاح خود کر سکتی ہے۔ دونوں میں تعارض ہے۔

تطبیق :- مولانا تھانوی فرماتے ہیں۔ اپنے اختیار کی ای عرفاً فلا یصح الاحتجاج بالآیة علی اشتراط الوالی فی نکاح النساء مطلقاً۔ (بیان القرآن ج ۱ ص 127 حاشیہ نمبر 2) عرفاً یہ بات کہی گئی ہے کہ عورتوں کو مشرکین کے نکاح میں نہ دو۔ کیونکہ عرف عام ہے کہ ہر جگہ ولی ہی عورت کو نکاح میں دیتا ہے۔ اس کا یہ مطلب نہیں کہ عورت کا اختیار نہیں اور خود اپنا نکاح نہیں کر سکتی۔

دراصل اس آیت میں خطاب اولیاء حکام اور تمام مسلمانوں سے ہے کہ خیال رکھنا کہ کہیں

کوئی عورت کسی غیر مسلم کے نکاح میں نہ چلی جائے۔ اگر کسی عورت نے ایسا کیا یا کسی عورت کے ولی نے ایسا کیا تو تمام مسلمانوں کا فریضہ بنتا ہے کہ ان کو اس سے روکیں اور دونوں کے مابین جدائی قائم کریں۔ اس کا یہ مطلب نہیں کہ عورت کا اپنا اختیار نہیں۔ قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں والخطاب الی الاولیاء او الی الحکام۔ خطاب اولیاء سے ہے یا حکام سے۔ (مظہری ج ۱ ص ۲۷۷) علامہ آلوسی لکھتے ہیں۔ واستدل بہا علی اعتبار الولی فی النکاح مطلقاً وهو خلاف مذهبنا وفي دلالة الآية علی ذلك خفاء لان المراد النهی عن ایقاع هذا الفعل والتمکین منه وکل المسلمین اولیاء فی ذلك (روح المعانی ج ۲ ص ۱۲۰)۔

یعنی اس آیت سے استدلال کیا گیا ہے کہ نکاح ولی کرائے گا جو ہمارے مذہب (احناف) کے خلاف ہے۔ اس آیت سے یہ مطلب لینا واضح نہیں بلکہ آیت کا مطلب یہ ہے کہ نکاح کا یہ فعل غیر مسلم کے ساتھ نہ ہونے دیا جائے۔ اس بارے میں سارے مسلمان عورت کے اولیاء کے زمرہ میں آتے ہیں۔ یعنی ہر مسلمان کو یہ حق پہنچتا ہے کہ اگر کوئی عورت یا عورت کا ولی اس حکم کی خلاف ورزی کرتا ہے تو اس کا سدباب کرے۔

تعارض نمبر ۲۹ سورة البقرة

آیت ۲۲۱

ولا تنکحوا المشرکات حتی یؤمنن ، اور نکاح مت کرو کافر عورتوں سے۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ کافر عورتوں کیساتھ مطلقاً نکاح منع ہے۔ لیکن ایک آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ اہل کتاب کافر عورتوں کیساتھ نکاح جائز ہے۔ ارشاد باری تعالیٰ ہے۔

والمحصنات من الذین اوتوا الکتاب من قبلکم اور پارسا عورتیں ان لوگوں میں سے بھی جو تم سے پہلے کتاب دیئے گئے تھے۔ (المائدہ آیت ۵)۔

تطبیق :- قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں۔ وهذه الآية منسوخة فی حق الکتابیات لقوله والمحصنات من الذین اوتوا الکتاب من قبلکم وهن مشرکات حیث یعبدون عزیزاً و مسیحا۔ یہ آیت اہل کتاب کی عورتوں کے بارے میں منسوخ ہے۔ حالانکہ اہل کتاب کی عورتیں بھی شرک کرتی ہیں کیونکہ عزیز اور مسیح کی عبادت کرتے ہیں۔ (مظہری ج ۱ ص ۲۷۶) ابن الجوزی فرماتے ہیں یہ آیت نہ نسخ ہے نہ منسوخ بلکہ اس کے عموم سے کتابیہ عورت سورۃ المائدہ کی دلیل سے خارج ہے۔

فهذه خصصت عموم تلك من غیر نسخ و علی هذا عامة الفقهاء (زاد المہیر ج ۱ ص ۲۲۲) امام قرطبی نے بعض علماء کی رائے نقل کی ہے کہ دونوں آیتوں میں کوئی تعارض نہیں اور اس کے لئے دو دلیلیں ذکر کی ہیں۔ فرماتے ہیں۔ واما الایتان فلا تعارض بینہما فان ظاہر لفظ الشرك لا یتناول اهل الکتاب لقوله مایود الذین کفروا من اهل الکتاب ولا المشرکین (۲) لم یکن الذین کفروا من اهل الکتاب والمشرکین۔ آیتوں میں تعارض نہیں کیونکہ لفظ شرک اہل کتاب کو شامل نہیں۔ اس لئے کہ مذکورہ آیتوں میں مشرک اہل کتاب کے مقابل میں آیا ہے۔ مشرک اور اہل کتاب کو حرف عطف کے ساتھ ذکر کیا ہے۔ معطوف اور معطوف علیہ میں تعارض ہوتا ہے۔ اس لئے ولا تنکحوا المشرکات میں اہل کتاب کی عورت داخل نہیں۔ بلکہ مشرک سے وہ عورت مراد ہوگی جو اہل کتاب نہ ہو۔ اس بنا پر کتابیہ عورت اس آیت کے عموم میں سرے سے داخل ہی نہیں۔

دوسری دلیل یہ ہے کہ تعارض اس وقت ہوتا جب مشرکات کے مفہوم میں کتابیہ عورت کو داخل مانا جائے۔ اور یہ اس صورت میں ہوگا کہ لفظ مشرک کو عام کر کے کتابیہ اور غیر کتابیہ کو اس کا مصداق ٹھہرایا جائے تو غیر کتابیہ جیسے بت پرست تو لفظ مشرک کا اصل مصداق ہے۔ اور کتابیہ کو احتمال کے طور پر اس میں داخل مانا جائے گا۔ تو کتابیہ عورت کے ساتھ نکاح کی حرمت ولا تنکحوا المشرکات میں احتمالی طور پر ہوئی اور والمحصنات من الذین اوتوا الكتاب میں کتابیہ کیساتھ نکاح کا جائز ہونا صریح نص ہے۔ لہذا احتمال بنس کا مقابلہ نہیں کر سکتا۔ امام قرطبی فرماتے ہیں۔ فلا تعارض بین المحتمل و بین مالا یحتمل۔ محتمل اور غیر محتمل میں تعارض نہیں ہوتا۔ (تفسیر القرطبی ج ۳ ص ۹، ۶۸)۔

تعارض نمبر ۳۰

سورة البقرة

آیت 253

منہم من کلم اللہ بعضہ ان میں وہ ہیں جن سے اللہ ہم کلام ہوئے۔

اس آیت سے بظاہر معلوم ہوا کہ اللہ تعالیٰ نے نبی کو سامنے کر کے اس کیساتھ مشافہتہ کلام فرمایا ہے۔ درمیان میں کسی قسم کا واسطہ نہ تھا۔ حالانکہ ایسا نہیں ہوا۔ کیونکہ کسی بشر (انبیاء) سے اس کے ہم کلام ہونے کی تین صورتیں ہیں۔

(۱) بلا واسطہ پردے کے پیچھے سے، کان سنیں اور آنکھیں دیدار نہ کریں۔ یہ قسم من وراہی حجاب سے معلوم ہوتی ہے۔

(۲) بلا واسطہ فرشتہ اس کی دو صورتیں ہیں۔ فرشتہ مجتہد ہو کر آنکھوں کے سامنے نہ آئے بلکہ نبی کے قلب پر نزول کرتا ہے اس کا ذکر: ﴿وہیأ میں ہے۔

(۳) بلا واسطہ فرشتہ جبکہ فرشتہ مجتہد ہو کر نبی کے سامنے آجائے۔ اس کا ذکر او یرسل رسولاً میں ہے۔

ارشاد باری ہے۔ وما کان لبشر ان یکلمہ اللہ الا وحیاً او من وراہی حجاب او یرسل رسولاً۔ اور کسی آدمی کی طاقت نہیں کہ اس سے باتیں کرے اللہ مگر اشارے سے یا پردہ کے پیچھے سے یا بھیجے کوئی پیغام لانے والا۔ (سورة الشوری آیت ۵۱) اس آیت میں مذکورہ اقسام وحی کا ذکر ہے۔

تطبیق:- کلم اللہ میں سب واسطوں کی نفی نہیں۔ بلکہ صرف فرشتہ کے واسطے کی نفی ہے۔ کلم اللہ میں وحی کی اس قسم کا ذکر ہے۔ جو من وراہی حجاب سے معلوم ہوتی ہے۔ اسلئے کوئی تعارض نہیں جلال الدین اعلیٰ فرماتے ہیں۔ من وراہی حجاب بان یسمعه کلامہ ولا یراہ کما وقع لموسیٰ علیہ السلام۔ پردے کے پیچھے سے ایسا ہوتا ہے کہ کلام سنے اور دیکھنے نہ پائے۔ جیسے موسیٰ علیہ السلام کے ساتھ ہوا۔

اس دور میں اس کی بہترین مثالیں ٹیلی فون اور وائر لیس ہے۔ دو آدمی آپس میں گفتگو کرتے ہیں لیکن ایک دوسرے کو دیکھتے نہیں۔ اگرچہ اللہ تو دیکھتا ہے۔ لیکن بشر کی طرف سے دیکھنا مشکل ہوتا ہے۔ اندھے آدمی کیساتھ جب کوئی کلام کرتا ہے تو بینا اس کو دیکھتا ہے اور بینا اس کو نہیں دیکھ سکتا۔ اسی طرح دنیا میں کوئی آنکھ ایسی نہیں جس میں اتنی تاب ہو کہ اللہ تعالیٰ کو دیکھ لے۔ آخرت کا معاملہ الگ ہے۔

علامہ زبخری فرماتے ہیں۔ بان کلمہ من غیر سفیر۔ اللہ نے بلا واسطہ سفیر کلام کیا۔ وهو من وراہی الحجاب فیسمع صوتہ ولا یری شخصہ وذلك کما کلم موسیٰ۔ پردہ کے پیچھے سے کلام کا یہ معنی ہے کہ آواز سنے اور اس کی ذات کو نہ دیکھ سکے۔

جیسے موسیٰ علیہ السلام نے گتنگوی۔

مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں۔ اور موسیٰ علیہ السلام کے ساتھ ہم کلامی گویا واسطہ فرشتہ کے ہو مگر بے حجاب نہ تھی۔ (بیان القرآن ج ۳ ص ۱۰۰)۔

تعارض نمبر ۳۱

سورة البقرة

آیت 254

يا ايها الذين آمنوا انفقوا مما رزقنكم من قبل ان ياتي يوم لا بيع فيه ولا خلة ولا شفاعة اے ایمان والو خرچ کر لو ان چیزوں سے جو ہم نے تم کو دی ہیں قبل اس سے کہ وہ دن آجائے جس میں نہ تو خرید و فروخت ہوگی اور نہ دوستی ہوگی اور نہ کوئی سفارش ہوگی۔

اس آیت میں دوستی اور سفارش کی نفی ہے۔ حالانکہ سفارش اور دوستی کا ثبوت بھی ہے۔

ارشاد باری ہے۔ من الذی یشفع عنده الا باذنه ایسا کون شخص ہے جو اس کے پاس سفارش کر سکے بغیر اس کی اجازت کے۔ (سورة البقرة آیت ۲۵۵)۔

اس میں سفارش کا اثبات ہے اسی طرح ایک آیت میں دوستی کا اثبات ہے۔ الا خلاء یومئذ بعضهم لبعض عدو الا المتقین۔ تمام دوست اس روز ایک دوسرے کے دشمن ہو جائیں گے بغیر خدا سے ڈرنے والوں کے (سورة الزخرف آیت ۶۷)۔ متقین کے مابین دوستی قائم رہے گی۔

تسلطیبق۔ نہ مطلقاً دوستی کا اثبات ہے نہ نفی اسی طرح مطلقاً سفارش کی نفی ہے نہ اثبات۔ شفاعت بلا اذن کی نفی ہے۔ اور سفارش بلا اذن کا ثبوت ہے۔ اس طرح عام دوستی کی نفی

ہے اور خاص دوستی کا اثبات ہے صرف مومنین کے مابین دوستی قائم ہوگی۔ مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں۔ بعض طریقے تو خود نہ ہونگے۔ جیسے بیچ اور بعض عام نہ ہوں گے جیسے دوستی بعضے اختیاری نہ ہوں گے جیسے شفاعت (بیان القرآن ج ۱ ص 150)۔ تفسیر الصاوی

میں ہے۔ قوله بغير اذنه اشارة بذلك الى ان الآیة مطلقة فتحمل علی المقید وهي قوله تعالی من الذی یشفع عنده الا باذنه۔ پہلی آیت مطلق

ہے جو مقید پر محمول ہے۔ حاشیہ الصاوی علی الجلالین (ج ۱ ص ۱۱۹) یعنی شفاعت بلا اذن کا اثبات ہے۔ اس آیت میں بیچ۔ دوستی اور شفاعت کی نفی ہے کفار کا ذکر ہے اس لئے فرمایا

والکافرون هم الظالمون۔ اور کافر ہی لوگ ظلم کرتے ہیں۔ اس لئے تینوں کی نفی کفار سے ہے۔ ابن الجوزی فرماتے ہیں۔ قیل انما نفی هذه الاشياء لانه غنی عن

الکافرین۔ وهذه الاشياء لا تنفعهم۔ ان کی نفی کفار سے اس لئے ہوئی کہ اللہ تعالیٰ کفار سے بے پرواہ ہیں اور یہ اشیاء کفار کو نفع نہ دیں گی۔ (زاد المسیر ج ۱ ص 302) کفار

کہیں گے فما لنا من شافعين ولا صديق حميم۔ سو نہ کوئی ہماری سفارش ہے اور نہ کوئی مخلص دوست ہے (سورة الشعراء آیت ۱۰۱)۔

علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔ ان نفی تلك الاشياء بالنسبة اليهم۔ کفار سے ان اشیاء کی نفی ہے۔ (روح المعانی ج ۳ ص ۵) ابو حیان اندلسی فرماتے ہیں۔ والمتقون بينهم

فی ذاك اليوم خلة۔ اس دن متقین کے مابین دوستی قائم رہے گی۔ (البحر المحیط ج ۲ ص 276)۔

لا اکراه فی الدین دین میں زبردستی نہیں۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ دین میں زبردستی نہیں۔ لیکن بعض آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ دین میں زبردستی اور جبر ہے۔ ارشادِ باری ہے، **ورفعنا فوقکم والطور** اور ہم نے طور پہاڑ کو اٹھا کر تمہارے اوپر معلق کر دیا (سورة البقرة آیت ۶۳) پہاڑ کا معلق کرنا اکراه ہے۔ ارشاد ہے **واذ نتقنا الجبل فوقہم کانه ظلة** اور وہ وقت بھی قابل ذکر ہے جب ہم نے پہاڑ کو اٹھا کر چھت کی طرح ان پر معلق کر دیا ارشاد ہے۔ **وقاتلوہم حتی لا تکون فتنة** اور ان کے ساتھ اس حد تک لڑو کہ فساد عقیدہ نہ رہے۔ (سورة البقرة آیت ۱۹۳) اس قسم کی آیات اور قتال کی آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ دین میں جبر اور اکراه ہے۔

تطبیق :- شیخ الہند مولانا محمود حسن فرماتے ہیں۔ اکراه در بارہ قبول دین ہرگز نہیں دین تو بنی اسرائیل پہلے سے قبول کئے ہوئے تھے۔ ان پر پہاڑ معلق کرنا نقض عہد سے روکنے کے لئے تھا۔ نہ کہ قبول دین کے لئے (تفسیر عثمانی ص ۱۳) اس کی مثال تو بیمار بچے کی طرح ہے کہ جس کو والدین شفقتاً کڑوی دوا زبردستی پلاتے ہیں کیونکہ اس میں بچے کی شفاء ہوتی ہے۔ بچہ طبعاً کڑوی دوا پینا نہیں چاہتا غور کیا جائے تو تمام شرعی احکامات خلاف طبع ہیں۔ طبیعت اسلام پر چلنے کو آمادہ نہیں ہوتی۔ لیکن شریعت کو اللہ کا حکم سمجھ کر اس پر عمل ضروری ہوتا ہے۔ یہ الگ بات ہے کہ آدمی شریعت کا اتنا پابند ہو جائے کہ مقتضائے شریعت مقتضائے

طبیعت بن جائے۔ مولانا رشید احمد گنگوہی کا ملفوظ کہیں نظر سے گزرا ہے کہ امور شرعیہ امور طبیعیہ بن گئے ہیں امام رازی فرماتے ہیں **والمعنی ان اخذالميثاق كان متقدماً فلما انقضوه بالامتناع عن قبول الكتاب رفع عليهم الجبل بن اسرائيل** سے پہلے قبول کتاب کے لئے عہد لیا گیا۔ جب نقض عہد کیا تو پہاڑ کو ان پر معلق کر دیا گیا۔ (تفسیر کبیر ج ۳ ص ۱۰۷)۔

امام رازی اور شیخ الہند کی توجیہ کا حاصل ایک ہی ہے علامہ آلوسی نے ابن جریر سے بروایت ابن عباس ایک واقعہ نقل کیا ہے۔ حضور کے پاس بنی سالم بن عوف کا ایک آدمی آیا اور کہا کہ میرے دو بیٹے ہیں ان کو زبردستی مسلمان کرنا چاہتا ہوں لیکن وہ نصرانیہ پر ڈٹے ہوئے ہیں تو یہ آیت نازل ہوئی **لا اکراه فی الدین** (روح المعانی ج ۳ ص ۱۳) اس واقعہ سے بھی معلوم ہوتا ہے کہ کسی کو اسلام میں داخل کرنے کے لئے جبر نہیں۔ اسلام قبول کرنے کے بعد مسلمان ہوتے ہوئے اگر کسی جرم کا ارتکاب کرے تو اللہ تعالیٰ نے بہ مقتضائے حکمت و مصلحت سزائیں مقرر کی ہیں۔ جن کو جبر کہنا صحیح نہیں۔ پولیس اور فوج وغیرہ میں زبردستی کسی کو بھرتی نہیں کیا جاتا لیکن بھرتی ہونے کے بعد قواعد اور ضوابط کی خلاف ورزی پر مختلف قسم کی سزائیں دی جاتی ہیں ایسی سزائوں کو کوئی بھی ظلم یا جبر نہیں کہتا۔ البتہ آیات قتال کے ساتھ **لا اکراه فی الدین** کا تعارض معلوم ہوتا ہے۔ بعض مفسرین فرماتے ہیں آیات قتال کی وجہ سے **لا اکراه فی الدین** منسوخ ہے۔ شیخ اسماعیل حقی بروسی فرماتے ہیں۔ **واما قوله لا اکراه فی الدین وامثاله فمنسوخ بالقتال** (روح البیان ج ۱ ص ۱۵۲) علامہ آلوسی فرماتے ہیں **واما قوله لا اکراه فی الدین وقول سبحانہ أفانت تکرہ الناس حتی یکون مومنین فقد کان قبل الامر بالقتال ثم نسخ**

بہ۔ دین میں عدم جبر کا حکم ابتداء میں تھا۔ آیت قتال سے منسوخ ہو گیا۔ (روح المعانی ج ۳ ص ۱۳) لیکن قاضی ثناء اللہ پانی پتی ان آیات میں تعارض کو تسلیم نہیں کرتے۔ کیونکہ جہاد اور قتال اس لئے نہیں ہوتا کہ کسی کو زبردستی اسلام میں داخل کیا جائے بلکہ جہاد تو صرف دفع فساد کے لئے ہوتا ہے۔ فرماتے ہیں والامر بالقتال والجهاد لیس لاجل الاکراه علی الدین بل لدفع الفساد من الارض۔ (مظہری ج ۱ ص ۳۶۳) اگر جہاد کا مقصد کفار کا قتل ہوتا تو اسلام میں جزیہ کا حکم کیوں دیا۔ اور غلام بنانے کا حکم کیوں دیا ابھی تک جو خون کا پیاسہ تھا اس کو جان بخشی سے نواز کر اچھے سلوک کا حقدار کیوں ٹھہرایا معلوم ہوا جہاد کا مقصد نہ کفار کا قتل ہے نہ ان کو زبردستی اسلام میں داخل کرنا ہے بلکہ جہاد کا واحد مقصد دفع فساد اور کفار کے زور کو توڑ کر شوکت اسلام کا اظہار ہے۔

تعارض نمبر ۳۳

سورة البقرة

آیت 284

وان تبدوا مافی انفسکم او تخفوه یحاسبکم به اللہ اور جو باتیں تمہارے نفسوں میں ہیں ان کو اگر تم ظاہر کرو گے یا پوشیدہ رکھو گے حق تعالیٰ تم سے حساب لیں گے آیت کے عموم سے معلوم ہوتا ہے کہ دل میں ہر قسم کے خیالات اور وسوسوں کے پیدا ہونے پر مؤاخذہ ہوگا یہی وجہ ہے کہ اس آیت کے نازل ہونے کے بعد صحابہ کرام بڑی تشویش میں پڑ گئے تھے حالانکہ غیر اختیار و وسوسہ انسان روک نہیں سکتا۔ لیکن آیت لا یغیب علی اللہ نفسا الا وسعها اللہ تعالیٰ کسی انسان کو مکلف نہیں بناتا مگر اس آیت سے ہواں کی طاقت میں ہے۔ (سورة البقرة آیت ۲۸۶) سے معلوم ہوتا ہے کہ غیر اختیاری وسوسوں پر پکڑ نہیں۔

کیونکہ انسان کی طاقت سے باہر ہیں۔

تطبیق :- حافظ ابن کثیر فرماتے ہیں۔ فنسختها الآیة التي بعدھا لا یکلف اللہ نفسا الا وسعها۔ (ابن کثیر ج ۱ ص ۶۰۲) یہ آیت بعد والی آیت کے ساتھ منسوخ ہے۔

امام قرطبی نے ایک قول نقل کیا ہے انما محكمة مخصوصة وهی فی معنی الشهادة التي نهی عن کتمها (قرطبی ج ۳ ص ۴۲۱) آیت منسوخ نہیں بلکہ ایک خاص معنی کے ساتھ مخصوص ہے اس سے مراد دل میں اس شہادۃ کا چھپانا ہے جس کے چھپانے سے منع فرمایا ہے۔

سب سے بہتر توجیہ یہ ہے کہ آیت محکم ہے۔ منسوخ نہیں اور نہ اپنے عموم پر ہے بلکہ اس میں امور قلبیہ اختیار یہ مراد ہیں۔ غیر اختیاری امور اور برے برے وسوسوں کا دل میں بلا اختیار آنا مراد نہیں۔ علامہ زحشری فرماتے ہیں۔ ولا یدخل فی مالا یخفیہ الانسان الوسوس وحديث النفس لان ذلك ممالیس فی وسعه الخلو منہ ولكن ما اعتقده وعزم علیہ۔ (الکشاف ج ۱ ص ۳۳۰)

امور قلبیہ میں دلی وسوس اور حدیث النفس مراد نہیں اس سے تو کوئی دل بھی خالی نہیں اسلئے کہ انسانی طاقت سے باہر ہیں۔ بلکہ وہ قلبی امور اور خیالات مراد ہیں جن کو انسان جما کر عقیدہ بنا لے یا ان کا پختہ عزم کر لے۔ حکیم الامت مولانا اشرف علی تھانوی نے بھی یہی لکھا ہے۔

هو الذي انزل عليك الكتاب منه آيات محكمات هن ام الكتاب و آخر متشابهاً وہ ایسا ہے جس نے نازل کیا تم پر کتاب کو جس میں ایک حصہ وہ آیتیں ہیں جو کہ اشتباہ مراد سے محفوظ ہیں اور یہی آیتیں اصلی مدار ہیں کتاب کا اور دوسری آیتیں ایسی ہیں جو مشتبہ المراد ہیں اس آیت سے معلوم ہوا کہ بعض آیات محکم ہیں بعض تشابہ۔ لیکن ایک آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ پورا قرآن محکم ہے تشابہ نہیں ہے ارشاد باری ہے۔ السر کتاب احکمت ایاتہ۔ یہ ایک ایسی کتاب ہے کہ اس کی آیتیں محکم کی گئی ہیں۔ (سورة هود آیت 1) ایک آیت سے اس کے برعکس حکم معلوم ہوتا ہے وہ یہ کہ سارا قرآن تشابہ ہے ارشاد ہے اللہ نزل احسن الحديث کتاباً متشابهاً مثانی۔ اللہ تعالیٰ نے بڑا عمدہ کلام نازل فرمایا ہے جو ایسی کتاب ہے کہ باہم ملتی جلتی ہے بار بار دہرائی گئی ہے (سورة الزمر آیت ۲۳)۔

تطبیق :- اول محکم اور تشابہ کا معنی جاننا ضروری ہے مفسرین نے کئی اقوال ذکر کئے ہیں۔ زیادہ مناسب معنی وہ ہے جس کو علامہ آلوسی نے ذکر کیا ہے۔ فرماتے ہیں۔ وذهب ساداتنا الحنفیة الى ان المحکم الواضح الدلالة الظاهر الذی لا یحتمل النسخ و المتشابہ الخفی الذی لا یدرک معناه عقلاً ولا نقلاً (روح المعانی ج ۳ ص ۸۲) ہمارے احناف کے نزدیک محکم واضح الدلالة کو کہتے ہیں اور ایسا واضح جس میں نسخ کا احتمال نہ ہو۔ تشابہ ایسا خفی معنی جس کا ادراک نہ عقل سے ہو سکے نہ نقل سے۔ اللہ

کے سوا اس کے بارے میں کوئی نہیں جانتا۔ جیسے حروف مقطعات وغیرہ امام قرطبی فرماتے ہیں۔ وانما التشابه فی هذه الآية من باب الاحتمال والاشتباه من قوله ان البقر تشابه علينا ای التبس علينا ای یحتمل انواع كثيرة من البقر والمراد بالمحکم ما یقابل هذا وهو مالا التبس فيه ولا یحتمل الا وجهاً واحداً (قرطبی ج ۴ ص ۱۰) ال عمران کی آیت میں تشابہ سے مراد احتمالات ہیں۔ جیسے ان البقر تشابه علينا بقرة کے بارے میں اشتباہ میں پڑ گئے، مختلف انواع کے بقرة کا احتمال ہے اور محکم اس کے مقابل کو کہتے ہیں جس میں اشتباہ نہ ہو صرف ایک احتمال ہو لیکن سورة هود میں جو ہے حکمت آیت اور سورة الزمر میں کتاباً متشابهاً۔ ان آیات میں محکم اور تشابہ کا مذکورہ معنی نہیں بلکہ محکم کا معنی یہ ہے ای فی النظم والوصف وانہ حق من عند اللہ معنی کتاباً متشابهاً ای یشبہ بعضه بعضاً ویصدق بعضه بعضاً۔ محکم ہے نظم اور مضبوطی میں اور اللہ کی طرف سے حق ہے اور کتاباً تشابہا کا معنی ہے کہ قرآن مجید کا بعض حصہ بعض کے مشابہ ہے اور بعض بعض پر صادق آتا ہے۔

علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔ فقد یطلق المحکم بمعنی المتقن النظم و المتشابہ علی ما یشبہ بعضه بعضاً فی البلاغة و هما بهذا المعنی یطلقان علی جمیع القرآن و علی ذلك خرج قوله الراحمکت آیاتہ و قوله سبحانہ کتاباً متشابهاً مثانی محکم کا معنی مضبوط نظم ہے۔ اور تشابہ کا معنی بعض کلام بعض کے ساتھ بلاغت میں مشابہ ہے محکم اور تشابہ اپنے ان معانی کے ساتھ پورے قرآن پر صادق آتے ہیں جلال الدین السيوطی فرماتے ہیں۔ حکمات کا معنی واضح الدلالة اور متشابہات

لا يفهم معانيها كما وائل السور - تشابه وہ ہے جس کا معنی معلوم نہ ہو۔ جیسے اوائل السور یعنی حروف مقطعات - وجعله كله محكما في قوله احكمت آياته بمعنى انه ليس فيه عيب یعنی احکمت آیات میں محکم کا معنی یہ ہے کہ قرآن مجید میں کوئی عیب نہیں۔ و متشابهها في قوله كتابا متشابهها بمعنى افه يشبه بعضه بعضا في الحسن والصدق كتاباً متشابهها في تشابهها سے مراد یہ ہے کہ بعض کلام بعض کا حسن اور سچائی میں مشابہ ہے (جلالین ص ۴۶) اس تشریح کے ساتھ تعارض ختم ہو جاتا ہے قاضی بیضاوی فرماتے ہیں احکمت عبارتہا بان حفظت من الاحتمال والاشتباه۔ ال عمران میں حکمت کا معنی یہ ہے جس کی عبارت احتمالات اور اشتباہات سے محفوظ ہو آگے فرماتے ہیں و اما قوله الر كتاب احكمت آياته فمعناه انها حفظت من فساد المعنى و ركافة اللفظ وقوله كتابا متشابهها فمعناه انه يشبه بعضه بعضاً في الصحة المعنى و جزالة اللفظ (بیضاوی ص ۱۲۹) سورہ ہود میں محکم کا معنی فساد معنی اور رکاکت لفظ سے حفاظت ہے سورہ الزمر میں تشابہ سے مراد بعض کلام کا بعض کے ساتھ معنی کی صحت اور فصاحت میں مشابہ ہونا ہے۔

تعارض نمبر ۳۵ سورۃ ال عمران

آیت 38

هنالك دعا زكريا ربه قال رب هب لي من لدنك ذرية طيبة اس موقع پر دعا کی زکریا نے اپنے رب سے عرض کیا کہ اے میرے رب عنایت کیجئے مجھ کو خاص اپنے پاس سے اولاد اچھی اس آیت سے معلوم ہوا کہ زکریا علیہ السلام کو اللہ کی قدرت کا ملہ یر یقیناً

تھا۔ اس لئے بڑھاپے میں اولاد طلب کی کسی قسم کا شک نہیں تھا۔ لیکن بعد کی آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ آپ کو شک تھا۔ ارشاد ہے، قال رب انى يكون لى غلام وقد بلغنى الكبر وامراتى عاقر زكريا نے عرض کی کہ اے میرے پروردگار میرا لڑکا کس طرح ہوگا حالانکہ مجھ کو بڑھاپا آ پہنچا اور میری بی بی بچہ جننے کے قابل نہیں (سورۃ ال عمران آیت 40)

تطبیق :- علامہ زختری فرماتے ہیں۔ انى يكون لى غلام استبعاداً من حيث العادة كما قالت مريم۔ عادة یہ بات بعید ہے کہ بانجھ عورت اور انتہائی بوڑھے کی اولاد نہیں ہوتی یہ جملہ بطور شک کے نہیں کہا۔ (الکشاف ج ۱ ص ۳۶۰) ابن الجوزی فرماتے ہیں۔ من اى وجه يكون لى الوالد ايكون بازاله العقر عن زوجتى ورد شبابى ام ياتى ونحن على حالنا فكان ذلك على سبيل الاستعلام لا على وجه الشك۔ ولد کس کیفیت کے ساتھ پیدا ہوگا آیا میری بیوی کا بانجھ پن ختم ہوگا اور میری جوانی لوٹ آئے گی یا ہم دونوں اسی حالت میں ہو گئے صرف کیفیت معلوم کرنے کے لئے کہا تھا نہ کہ شک کے لئے (زاوالمسیر ج ۱ ص ۳۸۴)۔ قاضی بیضاوی فرماتے ہیں استبعاداً من حيث العادة او استعظماً و تعجباً اور استفهاماً عن كيفية حدوثه۔ بطور انکار نہیں بلکہ عادت کے طور پر یہ جملہ کہا۔ یا اس عطاء ولد کو بہت بڑا جانا اور تعجب کیا۔ یا کیفیت دریافت کرنے کے لئے کہا۔ (بیضاوی ج ۱ ص 137)۔

امام قرطبی فرماتے ہیں۔ قيل الرب هاهنا جبرئيل اى قال لجبرئيل رب اى ياسيدى ان يكون لى غلام يعنى الولد وهذ قول الكلبي رب سے مراد جبرئیل ہے۔ حضرت جبرئیل سے کہا کہ میرے لڑکا کس طرح ہوگا۔ (تفسیر القرطبی ج ۲ ص

۷۹) علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔ ذکر یا علیہ السلام نے انتہائی شوق کی وجہ سے یہ جملہ کہا۔ تاکہ اس کے بارے میں سن کر لذت و سرور حاصل کرے۔

تعارض نمبر ۳۶

سورۃ ال عمران

آیت 38

هنالك دعا زكريا ربه اس موقع پر دعا کی ذکر کرنے کے لئے اپنے رب سے۔ اس آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ ذکر یا علیہ السلام نے وارث کے لئے دعا اس لئے کی کہ بی بی مریم کے خوارق کو دیکھا تھا۔ لیکن سورۃ مریم میں اس دعا کی وجہ اور ہے فرمایا پروردگار میری ہڈیاں کمزور ہو گئی اور سر میں بالوں کی سفیدی پھیل پڑی اور اپنے رشتہ داروں سے اندیشہ رکھتا ہوں اور بیوی بھانجھ ہے۔ فہب لی من لدنک ولیاً سو آپ مجھ کو خاص اپنے پاس سے ایک وارث دیجیے (آیت 5)۔

تصبیق :- مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں اور ال عمران میں اس دعا کا باعث ظہور خوارق مریم علیہا السلام ہونا باعث مذکور فی ہذا المقام کے منافی نہیں اصل رغبت اس سے ہوئی ہو اور اظہار اس کے سبب ہو (بیان ج ۷ ص ۳) یعنی دعا کی رغبت کی وجوہات سورۃ مریم میں ہیں اور دعا کا اظہار خوارق مریم کو دیکھ کر کیا۔

دوسرا جواب یہ ہے کہ اس دعا کا باعث خوارق مریم کا دیکھنا تھا اور سورۃ مریم میں جو امور مذکور ہیں یہ باعث دعا نہیں بلکہ یہ وارث کے لئے دعا مانگنے کا مقدمہ ہے۔ باعث کا ذکر ال عمران میں کر دیا سورہ مریم میں صرف مقدمہ ذکر کر دیا۔ باعث پر اکتفاء سورۃ ال عمران میں ہو اور مقدمہ پر اکتفاء سورۃ مریم میں ہو۔ مختلف مقامات پر قرآن میں اسی طرح اکتفاء

ہوتا رہتا ہے۔

علامہ آلوسی نے جو لکھا ہے اس سے تقریباً یہی معلوم ہوتا ہے فرماتے ہیں وعدم ذکرہ ههنا للتعويل على ما ذكر هنالك كما ان عدم ذكر مقدمة الدعاء هنالك للاكتفاء بذكرها ههنا والاكتفاء بما ذكر في موطن عما ذكر في موطن آخر من السنن التنزيلية۔ (روح المعانی ج ۸ ص ۹۰)۔ یا ایک چیز کے اسباب متعدد بھی ہو سکتے ہیں۔

تعارض نمبر ۳۷

سورۃ ال عمران

آیت 45

واذ قالت الملائكة يمریم ان الله يبشرك اور جب کہ فرشتوں نے کہا کہ اے مریم بے شک اللہ تعالیٰ تم کو بشارت دیتے ہیں اس آیت میں اس بات کا ذکر ہے کہ بی بی مریم کے پاس فرشتے آئے تھے لیکن بعض آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ حضرت جبرئیل آئے تھے ارشاد ہے فارسلنا الیہا روحنا پس ہم نے ان کے پاس اپنے فرشتے کو بھیجا (سورۃ مریم آیت ۱۷) روح سے مراد حضرت جبرائیل ہیں۔

تصبیق :- علامہ آلوسی فرماتے ہیں والمراد من الملائكة رئیسہم جبرئیل علیہ السلام۔ ملائکہ سے مراد حضرت جبرائیل ہیں (روح المعانی ج ۳ ص ۱۵۳) مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں یہاں بھی ملائکہ سے صرف حضرت جبرئیل علیہ السلام مراد ہیں۔ ان کے جمع کے لفظ سے تعبیر باعتبار معنی جنسی کے ہے جیسے محاورہ ہے کہ اس مسئلہ میں علماء یہ کہتے ہیں۔ خواہ ایک ہی عالم سے سنا ہو اور یہ بھی احتمال ہے کہ حضرت جبرئیل کے

ساتھ اور فرشتے بھی تمہیں اور انہوں نے بھی خواہ تفصیلاً خواہ تصدیق بشارت جبرئیل کر کے اجمالاً یہ بشارت دی ہو۔ (بیان القرآن ج ۲ ص ۱۹)۔

تعارض نمبر ۳۸ • سورۃ ال عمران

آیت 55

اذ قتل اللہ یعیسیٰ انی متوفیک ورافعک الی جب اللہ تعالیٰ نے فرمایا اے عیسیٰ بے شک میں تم کو وفات دینے والا ہوں اور میں تم کو اپنی طرف اٹھالیتا ہوں۔ اس آیت سے بظاہر معلوم ہوتا ہے کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام وفات پا چکے ہیں۔ لیکن امت کا اجماعی مسئلہ ہے کہ وہ آسمانوں میں زندہ ہیں قرب قیامت کو تشریف لادیں گے۔ ارشاد ہے وما قتلوه یقیناً بل رفعہ اللہ الیہ اور انہوں نے ان کو یقینی بات ہے کہ قتل نہیں کیا بلکہ ان کو اللہ نے اپنی طرف اٹھالیا ہے (سورۃ النساء ۱۵۸) معلوم ہوا کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام زندہ ہیں۔

تطبیق :- اس آیت کا مفہوم سمجھنے کے لئے لفظ توفی کی تحقیق ضروری ہے۔ عام طور پر ظاہر بین لوگ اس سے صرف موت مراد لیتے ہیں۔ حالانکہ موت اس کا اصل معنی نہیں یہ الگ بات ہے کہ توفی موت کے معنی میں مستعمل ہے۔ امام راغب الاصبہانی وفی کے مادہ میں اس کا معنی بیان کرتے ہیں۔ الذی بلغ التمام یقال درہم واف کسی چیز کا پورا اور تمام ہونا یعنی پورا پورا۔ فرماتے ہیں۔ وقد عبر عن الموت والنوم بالتوفی لفظ توفی کبھی موت اور نیند کے لئے استعمال ہوتا ہے۔ گویا اس کے تین معانی ہوئے۔

(۱) پورا قبض کرنا۔ (۲) موت۔ (۳) نیند۔ دوسری تحقیق اس آیت میں حرف واؤ

کے بارہ میں ہے اللہ نے عیسیٰ علیہ السلام سے فرمایا۔ متوفیک ورافعک۔ توفی اور رفع میں حرف واؤ ترتیب کے لئے نہیں بلکہ جمع کے لئے ہے یعنی دونوں معاملے آپ کے ساتھ پیش آئے ان میں ترتیب ضروری نہیں۔ امام قرطبی فرماتے ہیں لان السواؤ لا توجب الرتبة۔ واؤ ترتیب کے لئے نہیں۔ علامہ شافعی نے اضواء البیان میں بڑی تحقیق کیا ساتھ ثابت کیا ہے کہ واؤ صرف جمع کے لئے آتا ہے اب آیت کی تفسیر ملاحظہ فرمائیں۔ امام فراء فرماتے ہیں۔ یقال ان هذا مقدم ومؤخر والمعنی فیہ انی رافعک الی ومظہرک من الذین کفروا ومتوفیک بعد انزالی ایاک فی الدنیا۔ یعنی توفی اور رفع میں تقدیم و تاخیر ہے۔ تجھے اپنی طرف اٹھا کر کفار سے پاک کر دوں گا اور دنیا میں نازل کرنے کے بعد تجھ کو وفات دوں گا۔ یا آیت میں تقدیم و تاخیر نہیں۔ فیکون معنی متوفیک قابضک کما تقول توفیت مال من فلان قبضتہ من فلان فیکون توفی علی اخذہ ورفعہ الیہ من غیر موت۔ متوفی کا معنی تجھے قبض کروں گا جیسے کہتے ہیں میں نے فلاں سے درہم لے لئے توفی موت کا معنی میں نہیں ہوگا بلکہ قبض اور لینے کے معنی میں ہوگا۔ معنی یہ ہوگا کہ تجھے قبض کر کے بغیر موت کے اپنی طرف اٹھا لوں گا۔ (معانی القرآن ج ۱ ص ۲۱۹)۔

علامہ زحمری فرماتے ہیں۔ وقیل متوفیک قابضک من الارض وقیل ممیتک فی وقتک بعد النزول من السماء ورافعک الآن۔ وقیل متوفی نفسک بالسنوم من قوله والتی لم تمت فی منامها ورافعک وانت نائم حتی لا یلحقک خوف و تستیقظ وانت فی السماء امن مقرب تجھے زمین سے اٹھا لوں گا۔ یا تجھے آسمان سے نازل ہونے کے بعد موت دوں گا اور اب تجھے اٹھا لوں گا یا

تھے نیند کی حالت میں آسمان کی طرف اٹھاؤں گا تاکہ تو گھبرانہ جائے اور جب تو بیدار ہو جائے تو اپنے آپ کو مامون اور مقرب پائے گا۔ (الکشاف ج ۱ ص ۶۷، ۶۸)۔

تعارض نمبر ۳۹

سورۃ ال عمران

آیت 67

ماکان ابراہیم یهودیا ولا نصرانیا ولكن كان حنيفاً مسلماً وما كان من المشركين ابراہیم علیہ السلام نہ تو یہودی تھے اور نہ نصرانی تھے لیکن طریق مستقیم والے صاحب اسلام تھے اور مشرکین میں سے نہ تھے آیت سے معلوم ہوا کہ حضرت ابراہیم علیہ السلام نے کبھی شرک کیا ہی نہیں لیکن بعض آیات سے حکم اس کے خلاف معلوم ہوتا ہے ارشاد ہے۔ رأی کو کباً قال هذا ربی۔ انہوں نے ایک ستارہ دیکھا آپ نے فرمایا کہ یہ میرا رب ہے (سورۃ الانعام آیت ۷۶)۔ اس آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ شرک کیا ہے۔

تطبیق :- حضرت ابراہیم علیہ السلام مناظر تھے ناظر نہ تھے۔ یہ تو مکیا تھے مناظرہ تھا۔ مناظرہ میں مقابل کو مات دینے کے لئے اس قسم کی باتیں علی سبیل الفرض کی جاتی ہیں۔ علامہ زبیر فرماتے ہیں۔ هذا ربی قول من ينصف خصمه مع علمه بانه مبطل فيحكي قوله كما هو غير متعصب لمذهبه لان ذلك ادعى الى الحق وانجى من الشغب۔ مناظرہ میں منصف مزاج مقابل کو باطل پر جانتے ہوئے اس کے مذہب کے موافق قول نقل کرتا ہے کیونکہ اس طرح حق کی طرف بلانا آسان ہے اور شور شغب سے بچنا بھی ہے۔ (الکشاف ج ۲ ص ۴۰)۔

قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں او بحذف همزة الاستفهام يعنى أهذا ربی همزة استفهام محذوف ہے معنی یہ ہے کہ کیا یہ میرا رب ہے یہ اقرار نہیں تھا (تفسیر مظہری ج ۳ ص ۲۵۸)۔

ابن الجوزی فرماتے ہیں انه قال ذلك استند راجاً للحجة۔ حضرت ابراہیم نے هذا ربی ان پر حجت قائم کرنے کے لئے کہا (زاد المیسر ج ۳ ص ۷۴) امام قرطبی فرماتے ہیں انه قال هذا ربی علی قولکم لانهم كانوا يعبدون الاصنام والشمس والقمر ونظير هذا قوله تعالى اين شركائى وهو جل و علا واحد لاشريك له والمعنى اين شركائى علی قولکم هذا ربی كفار کے قول کے مطابق کہا۔ کیونکہ وہ بتوں اور شمس و قمر کی عبادت کرتے تھے۔ اس کی نظیر این شرکائی ہے۔ اللہ فرمائیں گے میرے شرک کہاں ہیں۔ حالانکہ وہ واحد لا شریک ہے۔ اللہ تعالیٰ کا یہ قول کفار کے زعم کے مطابق ہے (تفسیر القرطبی ج ۷ ص ۲۶)۔

بعض کو اللہ تعالیٰ کے اس قول لئن لم یهدنی ربی اگر میرا رب مجھے ہدایت نہ دیتا سے شبہ ہوا کہ حضرت ابراہیم مناظر نہ تھے بلکہ ناظر تھے اور هذا ربی اول ان کے زعم میں تھا۔ لیکن اکثر محققین مفسرین اس کو تسلیم نہیں کرتے۔ کیونکہ انبیاء کرام اپنی زندگی کے ہر زمانہ میں معصوم ہوتے ہیں لئن لم یهدنی تو حضرت ابراہیم نے انکسار کے طور پر کہا ہے۔ ہدایت کو اللہ کا فضل اور کرم جانا۔ اس کو اپنا ذاتی کمال نہیں سمجھا۔ لئن لم یهدنی کا یہ مطلب نہیں کہ پہلے ہدایت پر نہ تھے۔ ایک موقع پر یہ بھی کہا ہے واجنبی و بنی ان نعبد الاضام اور مجھ کو اور میرے خاص فرزندوں کو بتوں کی عبادت سے بچائے رکھے (سورۃ ابراہیم آیت ۳۵) حضرت یوسف علیہ السلام نے فرمایا وما ابذی نفسی اور میں

اپنے نفس کو بری نہیں بتلاتا (سورۃ یوسف آیت ۵۳) اس کا یہ مطلب تو نہیں کہ یوسف علیہ السلام نے جرم کا ارتکاب کیا تھا۔ بلکہ اس جرم سے محفوظ و مامون رہنے کو اللہ کا فضل سمجھا۔ قاضی بیضاوی لکن لم یهدنی کی تفسیر میں فرماتے ہیں ارشاداً لقومہ و تنبیہاً لهم۔ یہ جملہ قوم کو تنبیہ اور سمجھانے کے لئے کہا (بیضاوی ج ۱ ص ۲۶۰) اس لئے نہیں کہا کہ عیاذاً باللہ خود ہدایت پر نہ تھے۔ قاضی ثناء اللہ پانی پتی اس کے بارے میں فرماتے ہیں۔ قال ذلک شکراً لنعمة الهدایة من اللہ تعالیٰ کما قال رسول اللہ لولا اللہ ما اہتدینا ولا نصدقنا۔ حضرت ابراہیم نے لکن لم یهدنی اللہ تعالیٰ کی نعمت ہدایت کے شکر یہ کے طور پر کہا۔ جیسے حضورؐ نے فرمایا اگر اللہ نہ ہوتے تو ہمیں ہدایت اور تصدیق نہ ملتی (مظہری ج ۳ ص ۲۶۱) اس بات کی ایک اور دلیل کے حضرت ابراہیم مناظر تھے ناظر نہ تھے یہ آیت ہے وتلك حجتنا آتینہا ابراہیم علی قومہ (سورۃ الانعام آیت ۸۳) اور یہ ہماری دلیل ہے کہ ہم نے دی حضرت ابراہیم کو اس کی قوم کے مقابل۔ حجت اور دلیل مناظرہ میں پیش کی جاتی ہے۔ واللہ اعلم۔

تعارض نمبر ۴۰

سورۃ ال عمران

آیت ۹۰

ان الذین کفروا بعد ایمانہم ثم ازدادوا کفراً لن تقبل توبتہم۔ بے شک جو لوگ کافر ہوئے اپنے ایمان لانے کے بعد پھر بڑھتے رہے کفر میں ان کی توبہ ہرگز مقبول نہ ہوگی۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ مرتد جب کفر میں بڑھتا جائے تو اس کی توبہ قبول نہ ہوگی حالانکہ مرتد کی توبہ قبول ہوتی ہے ارشاد ہے الا الذین تابوا من بعد ذلک

واصلحوا فان اللہ غفور الرحیم۔ ہاں مگر جو لوگ توبہ کر لیں اس کے بعد اور اپنے کو سواریں سو بے شک خدا تعالیٰ بخش دینے والے رحمت کرنے والے ہیں۔ (ال عمران آیت ۸۹) ارشاد باری ہے وهو الذی یقبل التوبۃ عن عبادہ ویعفو عن السیات اور وہ ایسا ہی ہے کہ اپنے بندوں کی توبہ قبول کرتا ہے اور وہ تمام گناہ معاف کر دیتا ہے (سورۃ الشوری آیت ۲۵) ان آیات سے معلوم ہوا کہ مرتد مقبول التوبہ ہے۔

تطبیق:- مفسرین نے لن تقبل توبتہم کی کئی توجیحات بیان کی ہیں۔ جس سے معلوم ہوتا ہے کہ مرتد مقبول التوبہ ہے اور آیات میں تعارض نہیں۔ علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔

(۱) ان هذه التوبة لم تکن عن الکفر وانما هی عن ذنوب کانوا یفعلونها معہ فتابوا عنها مع اصرارہم علی الکفر فردت علیہم ذلک۔ ان کی توبہ کفر سے نہ تھی بلکہ کفر کے ہوتے ہوئے جو گناہ کرتے تھے۔ تو اس سے توبہ کرتے تھے تو کافر رہتے ہوئے گناہوں کی توبہ مقبول نہیں۔

(۲) لانہم لا یتوبون الا عند حضور الموت والمعائنة وعند ذلک لا تقبل توبۃ الکافر ان کی یہ توبہ موت کے وقت تھی اور موت کے غرغرے کے وقت توبہ قبول نہیں ہوتی۔

(۳) عن ابن عباس لانہم تکن عن قلب وانما کان نفاقاً ان کی توبہ دل سے نہیں تھی بلکہ توبہ میں بھی نفاق تھا۔ (روح المعانی ج ۳ ص ۲۱۸) علامہ زنجیری فرماتے ہیں۔ جعلت عبارة عن الموت علی الکفر لان الذی لا تقبل توبتہ من الکفار هو الذی يموت علی الکفر کانه قیل ان اليهود والمرتدین الذین فعلوا ما فعلوا ماتتوں علی الکفر داخلون فی جملة من لا تقبل توبتہم۔

یہ کہنا یہ ان کی موت علی الکفر سے جس کی توبہ قبول نہ ہوئی یہ وہی کافر ہے جو کفر پر مرا گیا یوں کہا گیا کہ وہ یہود اور مرتدین کفر کرنے کے بعد کفر کی حالت میں مرے تو ان لوگوں سے ہو گئے جن کی توبہ قبول نہیں ہوتی۔ (الکشاف ج ۱ ص ۳۸۲)۔ قاضی بیضاوی فرماتے ہیں لانہم لایتوبون اولا یتوبون الا اذا اشفوا علی الہلاک یا تو توبہ نہیں کرتے یا اس وقت توبہ کرتے ہیں کہ موت کو سامنے دیکھ لیں۔

فکنی عن عدم توبتہم بعد م قبولہا عدم توبہ عدم قبول سے کہنا یہ ہے (بیضاوی ج ۱ ص ۱۳۵) امام قرطبی فرماتے ہیں۔ لن تقبل توبتہم مشکل لقولہ وهو الذی یقبل التوبۃ عن عبادہ ویعفوا عن السيئات۔ ان دونوں آیتوں کا ٹکراؤ ہے جواب دیتے ہیں۔ المعنی لن تقبل توبتہم عند الموت۔ موت کے منظر کے وقت توبہ قبول نہیں ہوتی۔ (۲) التی کانوا علیہا قبل ان یکفرو لان الکفر قد احبطہا۔ کفر کی حالت سے قبل جو توبہ کی تھی وہ مقبول نہیں کیونکہ بعد میں اس توبہ پر کفر طاری ہوا۔ لہذا کفر نے اس توبہ کو ختم کر دیا۔ (۳) اذا تابوا من کفرہم الی کفر آخر وانما تقبل توبتہم اذا تابوا الی الاسلام۔ وہ توبہ قبول نہیں جو ایک کفر سے دوسرے کفر کی طرف ہو اگر کفر سے اسلام کی طرف ہو تو وہ قبول ہے۔ (تفسیر القرطبی ج ۲ ص ۳۱، ۱۳۰)۔

تعارض نمبر ۳۱

سورۃ ال عمران

آیت 102

یا ایہا الذین امنوا اتقوا اللہ حق تقاتہ اے ایمان والو اللہ تعالیٰ سے ڈرا کرو

ڈرنے کا حق اس آیت کا حاصل یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ سے خوب ڈرو۔ لیکن سورۃ التغابن میں حکم اس کے خلاف ہے۔ فاتقوا اللہ ما استطعتم تو جہاں تک تم سے ہو سکے اللہ سے ڈرتے رہو (آیت 16) یعنی جتنا ہو سکے۔

تطبیق:- ابن کثیر فرماتے ہیں ان ہذہ الآیۃ منسوخۃ بقولہ فاتقوا اللہ ما استطعتم۔ حق تقاتہ منسوخ ہے ایک قول یہ ذکر کیا ہے کہ منسوخ نہیں فرماتے ہیں۔ ولكن حق تقاتہ ان یجاہدوا فی سبیلہ حق جہادہ ولا تاخذہم فی اللہ لومة لائم ویقوموا بالقسط ولو علی انفسہم وابائہم وابنائہم (ابن کثیر ج ۲ ص ۸۳) حق تقاتہ کا معنی یہ ہے کہ کسی کی ملامت کی پروا کئے بغیر اس کے راستہ میں جہاد کا حق ادا کرنا اور انصاف پر قائم رہنا اگرچہ خود اپنے آپ یا والد اور بیٹوں کے خلاف حکم کرنا پڑے۔ علامہ زحشری نے ایسا معنی بیان کیا ہے کہ دونوں آیتوں کا مفہوم اس میں آ گیا۔ یرید بالغوا فی التقوی حتی لا تترکوا من المستطاع منها شیا۔ (الکشاف ج ۱ ص ۳۹۳) تقویٰ میں اتنی کوشش کرو کہ اپنی طاقت جواب دے دے۔

تعارض نمبر ۳۲

سورۃ ال عمران

آیت 103

وکنتم حکمی شفا حفرة من النار فانقذکم منها اور تم لوگ دوزخ کے گھڑے کے کنارے پر تھے سو اس سے خدا تعالیٰ نے تمہاری جان بچائی۔ اس آیت کے مخاطبین انصار یا کفار ہیں جو اہل فترت تھے۔ ان کو عذاب نہیں ہوتا کیونکہ ان کے پاس ابھی تک نبی نہیں آیا تھا اس آیت سے معلوم ہوا کہ اس حالت میں مرجاتے تو سیدھا دوزخ کے عذاب

میں جاتے حالانکہ اصل فترۃ کو مزادینا اس آیت کے منافی ہے۔ وہاکننا معذبین
حتی نبعث رسولاً۔ اور ہم سزا نہیں دیتے جب تک کسی رسول کو نہیں بھیج لیتے۔ (سورۃ
بنی اسرائیل آیت 15) دیگر آیات سے بھی یہ مضمون معلوم ہوتا ہے۔

تطبیق:- اس آیت کے مخاطبین فترۃ کے زمانہ سے نکل چکے تھے۔ کیونکہ حضور کی نبوت
دلائل کے ساتھ ان کے سامنے آگئی تھی۔ ایسی حالت میں اللہ تعالیٰ نے ان پر احسان کیا کہ
ان کو ایمان کی توفیق دی ورنہ سیدھا جہنم رسید ہو رہے تھے۔ علامہ شہنشاہی فرماتے ہیں۔ انہ
برسالة محمد لم یبق عذر لا حد فکل من لم یومن به فلیس بینہ و بین
النار الا ان یموت (اضواء البیان ج ۱۰ ص ۶۷) حضور کی رسالت کے بارے میں کسی
کے ساتھ عذر نہ تھا۔ پس جو بھی ایمان نہ لاتا تو اس کے اور آگ کے مابین صرف موت
حائل تھی۔ آگ میں جانے کے لئے صرف مرنے کی دیر تھی۔ علامہ زنجیری فرماتے ہیں
وکنتم مشفین علی ان تقعوا فی نار جہنم لما کنتم علیہ من الکفر اور تم
آگ میں گرنے کے قریب تھے کیونکہ کفر پر قائم تھے۔ (الکشاف ج ۱ ص ۳۹۵)۔

امام قرطبی فرماتے ہیں۔ قال المهدوی وهذا تمثیل یراد به خروجهم من
الکفر الی الایمان مہدوی کہتے ہیں کہ یہ ان کے کفر سے نکل کر ایمان کی طرف آنے
کی ایک مثال ہے۔ (تفسیر القرطبی ج ۳ ص ۱۶۵)۔ یہ صرف مثال ہے کہ کیسے اللہ نے کرم
کیا کہ تم کو ایمان کی روشنی سے منور کر دیا۔ یہ مطلب نہیں کہ فترۃ کے زمانے میں وفات پا کر
عذاب میں مبتلا ہوئے۔

تعارض نمبر ۳۳ سورۃ ال عمران

آیت 123

ولقد نصرکم اللہ ببدر وانتم اذلۃ اور یہ بات محقق ہے کہ حق تعالیٰ نے تم کو بدر
میں منصور فرمایا حالانکہ تم بے سرو سامان تھے۔ اذلۃ ذلیل کی جمع ہے۔ اس آیت سے بظاہر
معلوم ہوتا ہے کہ مسلمان ذلیل تھے حالانکہ مسلمان معزز تھے۔ ارشاد بانی ہے۔ ولله
العزة ولرسوله وللمؤمنین اور اللہ ہی کی عزت اور اس کے رسول کی اور مسلمانوں کی
(سورۃ المنافقون آیت 8)۔

تطبیق:- اس آیت میں ذلت سے مراد بے سرو سامانی ہے۔ مسلمان کمزور تھے۔ جیسے حق
تعالیٰ کا ارشاد ہے واذکروا اذا انتم قلیل مستضعفون فی الارض تخافون
ان یتخطفکم الناس فأوکم وایدکم بنصرہ اور اس حالت کو یاد کرو جب کہ تم
قلیل تھے سر زمین میں کمزور شمار کئے جاتے تھے اس اندیشہ میں رہتے تھے کہ تم کو لوگ نوچ
کھوٹ نہ لیں سو اللہ تعالیٰ نے تم کو رہنے کو جگہ دی اور تم کو اپنی نصرت سے قوت دی (سورۃ
الانفال آیت 26) اس لحاظ سے عزت اور ذلت جمع ہو سکتی ہے۔ علامہ زنجیری فرماتے
ہیں ماکان بہم من ضعف الحنال وقلة السلاح والمال والمرکوب۔
مسلمانوں کیساتھ مال اسلحہ اور سواری کی کمی تھی (الکشاف ج ۱ ص ۴۱۱) ابن الجوزی فرماتے
ہیں وانتم اذلة ای لقلۃ العدد والعدد۔ گنتی اور مال کے لحاظ سے کمزور تھے
(زاد المسیر ج ۱ ص ۴۵۰) علامہ آلوسی فرماتے ہیں والمراد بها عدم العزة لا الذل
المعروف ذلت کا معنی بے سرو سامانی ہے۔ لفظ ذلت سے عام طور پر جو سمجھا جاتا ہے جو معزز

کے مقابلہ میں ہے وہ مراد نہیں۔ مزید فرماتے ہیں۔ وقیل لا مانع من ان یراد المعنی المعروف ویكون المراد وانتم اذلة فی اعین غیر کم وان کنتم اعزۃ فی انفسکم۔ اگر ذلت کا مشہور معنی لیا جائے تو یہ بھی ٹھیک ہے لیکن پھر آیت کا مطلب یہ ہوگا کہ اغیار کی نظروں میں تم ذلیل ہو اگرچہ تم اپنی جگہ معزز ہو۔ (روح المعانی ج ۴ ص ۴۳، ۴۴) آج بھی معزز مسلمان کو بعض لوگ ذلیل سمجھتے ہیں۔

امام راغب فرماتے ہیں۔ والزل متی کان من جهة الانسان نفسه لنفسه فمحمود نحو قوله تعالى اذلة علی المؤمنین، ولقد نصرکم الله ببدر وانتم اذلة۔ (مفردات القرآن ص ۱۸۱)۔ ذلت اگر انسان پر خود اس کی ذات کی طرف سے ہو تو محمود ہے۔ آیت میں یہی محمود ذلت مراد ہے۔

تعارض نمبر ۴۴ سورۃ ال عمران

آیت 142

ام حسبتم ان تدخلوا الجنة ولما يعلم الله الذین جاہدوا منکم ویعلم الصبرین۔ ہاں کیا تم یہ خیال کرتے ہو کہ جنت میں جا داخل ہو گئے حالانکہ هنوز اللہ تعالیٰ نے ان لوگوں کو تو دیکھا ہی نہیں جنہوں نے تم میں سے جہاد کیا ہو اور نہ ان کو دیکھا جو ثابت قدم رہنے والے ہیں۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ جنت کا داخلہ اس وقت ملے گا جب امتحان اور مشقت میں ڈالا جائے۔ بلا مشقت داخل نہیں ملے گا۔ حالانکہ بعض نصوص سے معلوم ہوتا ہے کہ بلا مشقت جنت ملے گی۔ ارشاد ہے۔ ان الله لا یغفر ان یشرك به ویغفر وما دون ذلک لمن یشاء۔ بے شک اللہ تعالیٰ اس بات کو نہ بخشے گا کہ ان

کے ساتھ کسی کو شریک قرار دیا جائے اور اس کے سوا اور جتنے گناہ ہیں جس کے لئے منظور ہوگا وہ گناہ بخش دیں گے (سورۃ النساء آیت 48)۔

تطبیق:- کچھ نہ کچھ مشقت تو ہر آدمی برداشت کر رہا ہے۔ مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں کہ اول ہی چلا جائے اور درجات عالیہ پر بھی پہنچ جاوے سو یہ بدون مشقت کے نہیں ہوتا جیسا کہ دوسرے نصوص سے معلوم ہوتا ہے اور باقی نفس دخول بعض مؤمنین کے لئے محض فضل و کرم سے بھی ہو سکتا ہے۔ جیسا یغفر لمن یشاء سے اہل حق نے سمجھا ہے۔ (بیان القرآن ج ۲ ص ۶۰)۔

امام قرطبی فرماتے ہیں۔ والمعنی ام حسبتم یا من انهزم یوم احدانه تدخلوا الجنة کما دخل الذین قتلوا و صبروا علی ألم الجراح والقتل۔ اے وہ لوگوں جنہوں نے احد میں شکست کھائی کیا تمہارا یہ گمان ہے کہ جنت میں ان لوگوں کی طرح داخل ہو جاؤ گے جو قتل ہوئے اور زخم اور قتل کی تکالیف پر صبر کیا (قرطبی ج ۳ ص ۲۲۰)۔

اس سے معلوم ہوا کہ ام حسبتم میں خطاب سب سے نہیں بلکہ صرف منہزمین احد کے لئے ہے اس لئے ویغفر ما دون ذلک کیساتھ منافی ہیں۔

دفع تعارض کے لئے ایک توجیہ یہ بھی ہو سکتی ہے کہ مقصود اس قسم کی آیات سے مسلمانوں کی تشبیح ہے۔ کہ ہر قسم کے شدائد اور مصائب آئیں گے ان کو برداشت کر کے ثابت قدم رہو۔ یہ مطلب نہیں کہ جس پر شدائد نہ آئیں تو جنت میں داخل نہ ہوگا کسی نہ کسی درجے میں ہر شخص مشقت برداشت کر رہا ہے۔ ایمان پر ثابت قدمی اور اعمال صالحہ کی ادائیگی اور گناہوں سے بچنا ایک مستقل مشقت ہے۔

اس قسم کی ایک آیت سورۃ البقرۃ میں بھی ہے۔ ام حسبتم ان تدخلوا الجنة ولما

یا تکم مثل الذین خلوا من قبلکم - تمہارا یہ خیال ہے کہ جنت میں داخل ہو کے حالانکہ تم کو ہنوز ان لوگوں کا سا کوئی عجیب واقعہ پیش نہیں آیا جو تم سے پہلے ہو گزرے ہیں (آیت 214) اس کا یہ مطلب نہیں کہ اگر کسی مسلمان کو بطور آزمائش کوئی حادثہ پیش نہ آئے تو جنت نہیں جائے گا۔

تعارض نمبر ۲۵

سورۃ ال عمران

آیت 155

ولقد عفا اللہ عنهم ان اللہ غفور حلیم - اور یقین سمجھو کہ اللہ تعالیٰ نے ان کو معاف فرما دیا ہے واقعی اللہ تعالیٰ بڑی مغفرت کرنے والے اور بڑے حلم والے ہیں۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ اللہ حلم والے ہیں۔ اس نے صحابہ کرام کو معاف کر دیا۔ ان کو سزا نہیں دی۔ لیکن ایک آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ غزوہ خندق میں چند صحابہ کرام کی غلطی کی وجہ سے ان کو سزا ملی ہے ارشاد ہے فاثابکم غما بغم لکیلا تخزنو علی ما فاتکم ولا ما اصابکم - سو خدا تعالیٰ نے تم کو پاداش میں غم دیا سب غم دینے کے تاکہ مغموم نہ ہو اور نہ اس چیز پر جو تمہارے ہاتھ سے نکل جاوے اور نہ اس پر جو تم پر مصیبت پڑے (سورۃ ال عمران آیت 153) فاثابکم سے معلوم ہوتا ہے کہ ان کو پاداش ہوئی ہے۔

تطبیق :- استاد اگر کسی شاگرد کو کسی غلطی پر سزا دے تو صورتاً تو وہ سزا ہوتی ہے لیکن حقیقت میں تادیب اور اصلاح ہوتی ہے۔ مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں۔ حلیم سے مفہوم ہوتا ہے کہ عقوبت نہیں ہوئی حالانکہ اصابکم وغیرہ سے معلوم ہوتا ہے کہ پاداش ہوئی جو اب یہ ہے کہ عقوبت قہریہ نہیں ہوئی پاداش اصلاحی ہوئی (بیان القرآن ج ۲ ص ۶۶) امام

نیشاپوری فرماتے ہیں انہ عاقبہم بغم الہزيمة لیتمرنوا علی تجرع الغوم واحتمال الشدائد - ان کو شکست کی عقوبت اس لئے دی تاکہ غموں کو ہضم کرنے اور تکالیف برداشت کرنے کی اچھی مشقیں کر لیں۔ (غرائب القرآن ج ۳ ص ۱۰۷) حاشیہ طبری اس بھی معلوم ہوا کہ یہ پاداش ان کے لئے اصلاح تھی۔

تعارض نمبر ۳۶

سورۃ ال عمران

آیت 164

لقد من اللہ علی المؤمنین اذ بعث فیہم رسولاً من انفسہم اللہ نے احسان کیا ایمان والوں پر جو بھیجا ان میں رسول ان ہی میں سے۔ اس آیت سے بظاہر یہ معلوم ہوتا ہے کہ حضور کی بعثت صرف مؤمنین کے لئے باعث رحمت ہے اور صرف ان پر احسان کیا۔ حالانکہ ایک اور آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ پوری انسانیت اور کائنات کے لئے باعث رحمت ہیں۔ کائنات کا زرہ زرہ اس کے احسان تلے دبا ہوا ہے۔ ارشاد ہے۔ وما ارسلناک الا رحمة للعالمین اور تجھ کو ہم نے بھیجا سو مہربانی کر کر جہاں کے لوگوں پر (سورۃ الانبیاء آیت ۱۰۷)۔

تطبیق :- امام قرطبی فرماتے ہیں۔ وخص المؤمنین بالذكر لانہم المنتفعون بہ فالمننتہ علیہم اعظم۔ مؤمنین کا ذکر بطور خاص اسلئے ہوا کہ یہ حضور سے استفادہ کرنے والے ہیں لہذا ان پر حضور کا سب سے زیادہ احسان ہے۔ (قرطبی ج ۲ ص ۲۶۳)۔

علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔ وتخصیص المؤمنین بالامتنان مع عمومہ نعمۃ البعثة کما یدل علیہ قولہ تعالیٰ وما ارسلناک الا رحمة للعالمین لمزید

انتفاعهم على اختلاف الاقوال فيهم بها ونظير ذلك قوله تعالى هدى للمتقين۔ حضور کی بعثت کی نعمت عام ہے لیکن اس احسان کا ذکر بطور خاص مؤمنین کے لئے اس لئے ہوا کہ انہوں نے زیادہ نفع حاصل کیا۔ اس کی نظیر یہ آیت ہے کہ قرآن مجید ڈرنے والوں کے لئے ہدایت (روح المعانی ج ۴ ص ۱۱۳) حالانکہ ہدی للناس بھی ہے لیکن ہدایت سے زیادہ مستفید ہونے والے متقی لوگ ہیں۔

تعارض نمبر ۳۷

سورة ال عمران

آیت 186

وان تصبروا تتقوا فان ذلك من عزم الامور۔ اور اگر صبر کرو گے اور پرہیز رکھو گے تو یہ تائیدی احکام میں سے ہے۔ خدا لعفو و امر بالعرف و اعراض عن الجاهلین۔ سرسری برتاؤ کو قبول کر لیا کیجئے اور نیک کام کی تعلیم کر دیا کیجئے اور جاہلوں سے ایک کنارہ ہو جایا کیجئے (الاعراف ۱۹۹) اس قسم کی آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ صبر و تقویٰ سے کام لو جاہلوں کیساتھ الجھنے کی کوشش نہ کرو۔ لیکن قتال کی آیتوں سے معلوم ہوتا ہے کہ جنگ و قتال سے پیچھے نہ ہٹو۔ ارشاد ہے وقاتلوهم حتى لا تكون فتنة ويكون الدين لله۔ اور ان کے ساتھ اس حد تک لڑو کہ فساد عقیدہ نہ رہے اور دین اللہ ہی کا ہو جاوے (سورة البقرة آیت ۱۹۳)۔

تفہیم :- مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں اور صبر کرنے کا یہ مطلب نہیں کہ تدبیر نہ کرو یا مواقع انتقام میں انتقام نہ لو یا مواقع قتال میں قتال نہ کرو بلکہ حوادث سے دل تنگ نہ ہو کیونکہ اس میں تمہارے لئے منافع و مصالح ہیں اور تقویٰ یہ کہ خلاف شرع امور سے بچو گو

تدبیر بھی کی جاوے۔ پس آیات صبر آیات قتال کے معارض نہیں کہ احتیاج نسخ ہو۔ (بیان القرآن ج ۲ ص ۸۲) بعض کا خیال ہے کہ صبر و تقویٰ کا حکم آیات قتال کے نزول سے قبل تھا۔ قتال کے حکم سے صبر و تقویٰ کا حکم منسوخ ہو گیا۔ لیکن علامہ آلوسی فرماتے ہیں صح عدم النسخ وان الامر بمذاکر کان من باب المداراة التي لا تنافي الامر القتال۔ صحیح یہ ہے کہ صبر و تقویٰ کا حکم منسوخ نہیں کیونکہ اس کا تعلق مدارات کیساتھ ہے جو قتال کے منافی نہیں (روح المعانی ج ۴ ص ۱۲۸) مدارات کا معنی ہے سرسری برتاؤ یا ظاہر داری۔ امام قرطبی فرماتے ہیں والاظهر انه ليس منسوخ فان الجدل بالاحسن والمداراة ابدأ مندوب اليها وكان عليه السلام مع الامر بالقتال يوادع اليهود ويداريهم ويصفح المنافقين وهذا بين اظهر بات یہی ہے کہ صبر و تقویٰ کا حکم منسوخ نہیں کیونکہ اچھے طریقے سے جدال اور سرسری برتاؤ ہمیشہ پسندیدہ فعل رہا ہے اور حضور کو قتال کا حکم بھی تھا اور یہود کیساتھ امانتیں بھی رکھا کرتے تھے اور ان کیساتھ سرسری برتاؤ بھی قائم تھا۔ منافقین کو درگزر کرتے تھے۔ (قرطبی ج ۴ ص ۳۰۴)۔

تعارض نمبر ۳۸

سورة النساء

آیت 3

فان خفتم الا تعدلو فواحدة پس اگر تم کو احتمال ہو اس کا کہ عدل نہ رکھو گے تو پھر ایک ہی لی بی بی پر بس کرو۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ بیبیاں اگر ایک سے زیادہ ہوں تو ان میں عدل ممکن ہے۔ اختیار سے باہر نہیں۔ لیکن ایک آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ بیبیوں میں

عدل ناممکن بلکہ محال ہے۔ ارشاد ہے ولن تستطيعوا ان تعدلوا بين النساء ولو حرصتم اور تم سے یہ تو کبھی نہ ہو سکے گا کہ سب بیبیوں میں برابری رکھو گوتہہارا جتنا بھی جی چاہے۔ (سورۃ النساء آیت ۱۲۹)۔

تطبیق :- ایک عدل محبت میں ہے۔ محبت غیر اختیاری شے ہے اس میں انسان کے کسب کو دخل نہیں۔ کیونکہ طبعی میلان ہے۔ اس لئے بیبیوں کے مابین محبت میں عدل کوئی بھی قائم نہیں رکھ سکتا۔ جس آیت میں عدل کی نفی ہے یہی مراد ہے اور جس آیت سے عدل کا امکان ثابت ہے اس سے مراد اختیاری امور مثلاً ہر بی بی کیساتھ شب باشی کیلئے باری مقرر کرنا مراد ہے۔ علامہ زنجبیری لن تستطيعوا ان تعدلوا کی تفسیر میں فرماتے ہیں۔

وقيل معناه ان تعدلوا في المحبة، عدل في المحبة مراد ہے۔ (الکشاف ج ۱ ص ۵۷۲)۔ ابن الجوزی ان لا تعدلوا کی تفسیر میں لکھتے ہیں اراد العدل في القسم بينهن۔ عدل سے مراد بیبیوں کے مابین شب باشی کے لئے باری مقرر کرنا ہے۔ (زاد المسیر ج ۲ ص ۹) ان لا تعدلوا کی تفسیر میں ابن الجوزی لکھتے

هيس قال اهل التفسير لن تطيقوا ان تسوا بينهن في المحبة هي ميل الطبع لان ذلك ليس من كسبكم اهل تفسیر فرماتے ہیں تم محبت میں مساوات قائم نہیں رکھ سکتے۔ محبت طبعی میلان ہے جس میں تمہارے کسب کو دخل نہیں۔ (زاد المسیر ج ۲ ص ۲۰۹)۔

تعارض نمبر ۳۹ سورۃ النساء

آیت ۱۲

وان كان رجل يورث كلفة او امرأة وله اخ او اخت فللكل واحد منهما السدس اور اگر کوئی میت جس کی میراث دوسروں کو ملے گی خواہ وہ میت مرد ہو یا عورت ایسی ہو جس کے نہ اصول ہوں نہ فروع ہوں اور اس کے ایک بھائی یا ایک بہن ہو تو دونوں میں سے ہر ایک کو چھٹا حصہ ملے گا۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ کلالہ کی بہن کو چھٹا حصہ ملے گا۔ لیکن ایک آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ کلالہ کی بہن کو کل ترکہ کا نصف ملے گا۔ ارشاد ہے ان امرا هلك ليس له ولد وله اخت فلها نصف ما ترك۔ اگر کوئی شخص مر جائے جس کی اولاد نہ ہو اور اس کے ایک بہن بھائی ہو تو اس کو اس کے تمام ترکہ کا نصف ملے گا۔ (سورۃ النساء آیت ۱۷۶)۔

تطبیق :- علامہ آلوسی فرماتے ہیں اخ او اخت من الام فقط۔ وعلى ذلك عامة المفسرين حتى ان بعضهم حكى الاجماع عليه۔ سورۃ النساء کی اول آیت میں کلالہ کا بھائی اور بہن من الام مراد ہے۔ ماں شریک جس کو اخیانی کہتے ہیں اس کو سدس (چھٹا) حصہ ملے گا۔ بعض نے (من الام) قید پر اجماع نقل کیا ہے سورۃ النساء کی آخری آیت ولہ اخت کے بارے میں فرماتے ہیں۔ والمراد بالاخت الاخت من الابوين والاب لان الاخت من الام فرضها السدس۔ اخت سے مراد اخت من الاب و الام یا صرف اب سے۔ یعنی اعمیانی یا علاتی بہن ہے۔ کیونکہ اخیانی بہن کے لئے سدس ہے۔ (روح المعانی ج ۶ ص ۴۳) ابن الجوزی فرماتے ہیں۔ ولہ اخ او اخت یعنی

من الام بالا جماع۔ اول آیت میں من الام یعنی اخیانی اجماعاً مراد ہے (رادالمسیر ج ۲ ص ۳۳) ولہ اخت کے بارے میں لکھتے ہیں۔ یرید من ابيه وامه ایسی بہن جو ماں باپ کے لحاظ سے شریک ہو یعنی اعمیانی۔ (زادالمسیر ج ۲ ص ۲۶۶)۔

تعارض نمبر ۵۰ سورۃ النساء

آیت 15

والتی یا تین الفاحشة من نسائکم فاستشهدوا علیہن اربعة منکم فان شهدوا فامسکوهن فی البيوت۔ اور جو عورتیں بے حیائی کا کام کریں تمہاری بیویوں میں سے سو تم لوگ ان عورتوں پر چار آدمی اپنوں میں سے گواہ کرو سو اگر وہ گواہی دے دیں تو تم ان کو گھروں کے اندر مقید رکھو۔ (آیت ۱۵) اس آیت سے معلوم ہوا کہ عورت زنا کرے تو اس کی سزا موت تک جس ہے۔ لیکن ایک آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ زنا کار عورت کی سزا کوڑے ہیں۔ ارشاد ہی باری ہے الزانیة والزانی فاجلدوا کل واحد منها لہ کرنے والی عورت اور زنا کرنے والا مرد سو ان میں سے ہر ایک کو درے مارو (سورۃ النور آیت ۲)۔

تطبيق: علامہ زنجیری فرماتے ہیں۔ وکان ذالک عقوبتہن فی اول الاسلام ثم نسخ بقوله الزانیة والزانی۔ زنا کار عورت کو گھر میں موت تک مجبوس رکھنا اسلام کا ابتدائی حکم تھا۔ پھر الزانیة والزانی کیساتھ منسوخ ہو گیا یا یہ حکم منسوخ نہیں۔ فرماتے ہیں۔ ویجوز ان تکون غیر منسوخة بان یتذکر الحد لکونہ معلوماً بالکتاب والسنة ویومی بامساکہن فی البيوت بعد ان یحدون صیلة

لہن عن مثل ما جرى علیہن بسبب الخروج من البيوت والتعرض للرجال او يجعل الله لہن سبيلاً۔ هو النکاح الذی يستغنین به عن السفاح سورۃ نساء کے اس حکم کو منسوخ نہ کیا جائے جبکہ یوں سمجھا جائے کہ اس آیت میں حد کا ذکر نہیں کیونکہ زنا کار عورت کی حد قرآن و حدیث سے معلوم ہے۔ اور ان عورتوں کو گھروں میں رہنے کا حکم دیا جائے تاکہ اس جرم سے بچ جائیں جو گھروں سے نکل کر مردوں کے اختلاط کی وجہ سے ہوا۔ اور یجعل الله لہن سبيلاً کا مطلب یہ ہے کہ اس وقت تک گھروں میں رکھو جب تک ان کے نکاح کا بندوبست نہ ہو جائے نکاح کی وجہ سے زنا سے مستغنی رہیں گی (الکشاف ج ۱ ص ۲۸)۔

علامہ زنجیری کی اس دوسری توجیہ عدم نسخ کا حاصل یہ ہے کہ اس آیت میں زنا کار عورت کو حد لگانے کا ذکر نہیں بلکہ وہ حکم سورۃ نور میں ہے اس میں صرف یہ حکم ہے کہ ایسی عورتوں کو گھروں میں مجبوس رکھو تاکہ دوبارہ زنا کی نوبت نہ آئے یا پھر نکاح کر لیں۔

تعارض نمبر ۵۱ سورۃ النساء

آیت 23

وان تجمعوا بین الاختین اور یہ کہ تم دو بہنوں کو ایک ساتھ رکھو۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ ایک آدمی دو آزاد بہنوں کو نکاح میں نہیں رکھ سکتا۔ اسی طرح اگر لونڈیاں بھی بہنیں ہوں تو ملک بیکم میں نہیں رکھ سکتا۔ اس آیت کے عموم کا مقتضی یہ ہے۔ لیکن بعض آیات کے عموم سے معلوم ہوتا ہے کہ ملک بیکم سے دو بہنوں کو ایک ساتھ رکھ سکتا ہے۔ ارشاد ہے او ما ملکت ایمانہم فانہم غیر ملومین یا اپنی لونڈیوں سے کیونکہ ان پر

کوئی الزام نہیں (سورۃ المؤمنون آیت ۶)۔

تطبیق :- دو بہنوں کو نکاح میں ایک ساتھ رکھنا تو نسا حرام ہے۔ لیکن ان تجمعا بین الاختیسن کے عموم سے دو بہنوں کا ملک بیمن کیساتھ بھی رکھنا حرام ہے۔ دو بہنوں کا لونڈیاں بنا کر جمع کرنا دو طریق سے ہے۔ ملک اور وطی کے اعتبار سے اس آیت کے عموم سے دونوں لحاظ سے حرمت معلوم ہوتی ہے نہ تو دونوں بہنوں کو اپنی ملک میں رکھ سکتا ہے اور نہ ان کیساتھ جماع کر سکتا ہے۔ بعض کے نزدیک دو بہنوں کو اپنی ملک میں رکھ سکتا ہے لیکن جماع نہیں کر سکتا۔ یعنی اس بات پر سب کا اتفاق ہے کہ دو بہنوں کو وطی کے لحاظ سے جمع نہیں کر سکتا اس لیے امام قرطبی فرماتے ہیں۔ مذهب كافة العلماء الى انه لا يجوز الجمع بينهما بالملك في الوطء سب علماء کے نزدیک ان کا وطی کے لحاظ سے جمع کرنا ناجائز ہے۔ پھر فرماتے ہیں وان جمهور اهل العلم كرهوا ذلك۔ جمہور اہل علم اس کو مکروہ جانتے ہیں۔ (قرطبی ج ۶ ص ۱۱۶) علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔ نعم جمعہما فی الوطء بملك یمین ملحق به بطریق الدلالة لا تحادہما فی لامدار فیحرم عند الجمهور۔ ان کا مالک بن کر ان سے وطی کرنا دلالت انص سے حرام ہے۔ آزاد اور لونڈیوں کی حرمت کی علت ایک ہی ہے اسلئے جمہور کے نزدیک حرام ہے۔ آگے فرماتے ہیں فالمرجع التحريم عند المعارضة تدارس کے وقت حرمت کو ترجیح دی جاتی ہے۔ (روح المعانی ج ۴ ص ۲۶۰) امام رازی فرماتے ہیں کہ دو بہنوں کو ملک بیمن میں جمع کرنا جبکہ وطی نہ ہو پھر بھی منع ہے۔ علامہ شمشیری فرماتے ہیں۔ لوسلہنا المعارضة بین الآيتين فالاصل فی الفروج التحريم حتى يدل لللیل لا معارض له علی الاباحتہ اگر آیتوں میں معارضہ تسلیم کر لیں تو فروج (شرم گاہ ہوں)

میں اصل حرمت ہے۔ ان میں حلت کے لئے ایسی دلیل کی ضرورت ہوگی جس کے معارض کوئی دلیل نہ ہو لہذا حرمت برقرار رہے گی۔ ایک اور دلیل حرمت کی بیان کی ہے۔ ایک آیت کا عموم حرمت کا مقتضی ہے دوسری آیت کا عموم حلت کا مقتضی ہے۔ مباح کو چھوڑنا آسان ہے ارتکاب حرام سے (اضواء البیان ج ۱۰ ص ۷۳)۔

تعارض نمبر ۵۲ سورۃ النساء

آیت 26

یرید اللہ لیبین لکم ویہدیکم سنن الذین من قبلکم اللہ تعالیٰ کو یہ منظور ہے کہ تم سے بیان کر دے اور تم سے پہلے لوگوں کے احوال تم کو بتائے ایک اور ارشاد ہے اولئک الذین ہدی اللہ فبہداهم اقتده ۱۔ یہ حضرات ایسے تھے جن کو اللہ تعالیٰ نے ہدایت کی تھی سو آپ بھی ان ہی کے طریق پر چلئے (سورۃ الانعام آیت ۹۰) ان آیات سے معلوم ہوا کہ گذشتہ شریعتیں ہمارے لئے شریعت ہیں۔ لیکن ایک آیت سے اس کے خلاف حکم معلوم ہوتا ہے۔ ارشاد ربانی ہے لكل جعلنا منکم شرعة ومنها جا ۲ تم میں سے ہر ایک کے لئے خاص شریعت اور خاص طریقت تجویز کی تھی (سورۃ المائدہ آیت ۴۸) اس آیت سے معلوم ہوا کہ ہر امت کی الگ الگ شریعت ہے۔

تطبیق :- اصول کے لحاظ سے تمام امتیں مشترک ہیں۔ عقیدہ توحید رسالت، قیامت وغیرہ اور فروع میں جدا جدا ہیں۔ اصول میں اشتراک کی دلیل یہ ہے شرع لکم من الدین ما وصی بہ نوحا راہ ڈال دی تمہارے لئے دین میں وہی جس کا حکم کیا تھا نوح کو (سورۃ الشوریٰ آیت ۱۳) اسی آیت میں آگے ارشاد ہے۔ ان اقیموا الدین ولا

تتفرقوا فيه یہ کہ قائم رکھو دین لو اور اختلاف نہ ڈالو اس میں۔ علامہ مختصری اس آیت کی تفسیر میں فرماتے ہیں والمعاد اقامة دين الاسلام الذي هو توحيد الله وطاعته والايمان برسله وكتبه ويوم الجزاء وسائر ما يكون باقامة مسلماً ولم يرد للشرائع التي هي مصالح الامم على حسب احوالها فانها مختلفة متفاوتة قال الله لكل جعلنا منكم شرعةً منها جا اقامت دين سے مراد اسلام ہے جس میں اللہ کی توحید، رسولوں پر ایمان، کتابوں پر ایمان، یوم جزاء اور ان تمام باتوں کا اقرار جس سے آدمی مسلمان بنتا ہے شامل ہیں۔ اقامت دین سے شریعت مراد نہیں۔ کیونکہ اللہ تعالیٰ نے مختلف احوال اور مصلحت کے اعتبار سے ہر امت کو الگ شریعت دی ہے اور اس کی دلیل یہ آیت ہے۔ لكل جعلنا منكم شرعةً ومنها جا (الکشاف ج ۳ ص ۳۱۵) رہی وہ آیات جن سے بظاہر یہ معلوم ہوتا ہے کہ گذشتہ شریعتیں ہماری شریعت ہیں ان آیات سے یہ مفہوم نکالنا صحیح نہیں۔ ان آیات سے صرف اتنی بات معلوم ہوتی ہے کہ گذشتہ شریعتوں کی کوئی بات اگر منسوخ نہ ہو اور قرآن و حدیث میں مذکور ہو تو اس پر عمل واجب ہوگا۔ قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں۔ وهذه الآية دليل على ان شرائع من قبلنا مالم يظهر كونها منسوخة في شريعتنا واجب علينا اذا ثبت عندنا بالكتاب والسنة (مظہری ج ۲ ص ۸۶) ابن الجوزی ویہدیکم سنن کی تفسیر میں فرماتے ہیں۔ من اهل الحق والباطل لتجتنبوا الباطل وتجنبوا الحق ويهدیکم الى الحق۔ تمہیں گذشتہ لوگوں میں سے اہل حق اور باطل کے بارے میں بتادیں۔ تاکہ تم باطل سے اجتناب کرو اور حق کی پیروی کرو تاکہ ہدایت پا سکو۔ (زاد المسیر ج ۲ ص ۵۹) یعنی اس آیت میں ان کی شریعت کے اتباع

کا ذکر نہیں بلکہ عبرت کے لئے ان کے احوال پر غور کا ذکر ہے۔

اس لئے علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔ وليس المراد ان الحكم كان كذلك في الامم السالفة۔ یہ مراد نہیں کہ گذشتہ امتوں کے لئے بھی یہی حکم تھا جو تم کو ہوا۔ (روح المعانی ج ۵ ص ۱۳)۔ علامہ آلوسی ایک قاعدہ کلیہ بیان کرتے ہیں۔ جس سے آیات کا تعارض ختم ہو جاتا ہے۔ فرماتے ہیں۔ بان كل آية دللت على عدم الاختلاف محمولة على اصول الدين ونحوها۔ جس آیت سے یہ معلوم ہو کہ امتوں کے احکام میں اختلاف نہیں اس سے مراد اصول دین ہیں۔ والتحقيق في هذا المقام انما متعبدون باحكام الشرائع الباقية من حيث انها احكام شرعتنا لا من حيث انها شرعة الاولين۔ تحقیق یہ ہے کہ ہم گذشتہ شریعتوں کے جن احکام پر عمل کرتے ہیں وہ اس حیثیت سے ہے کہ یہ احکام اب ہماری شریعت بن گئے نہ اس حیثیت سے کہ یہ احکام ان کی شریعت ہیں (روح المعانی ج ۶ ص ۱۵۳) اس توجیہ سے بھی تعارض باقی نہیں رہتا۔ کیونکہ گذشتہ شریعت کا غیر منسوخ حکم جب قرآن حدیث میں مذکور ہو تو اب اس کے بارے میں یہ کہنا صحیح نہیں کہ گذشتہ شریعت کا حکم ہے بلکہ اب وہ حکم اس شریعت کا ہے یہی وجہ ہے کہ بعض فروعی احکامات میں شریعتیں مشترک ہیں۔

تعارض نمبر ۵۳

سورة النساء

آیت 32

ولا تتمنوا ما فضل الله به بعضكم على بعض۔ اور تم کسی ایسے امر کی تمنا مت کرو جس میں اللہ تعالیٰ نے بعضوں کو بعضوں پر فضیلت دی ہے۔ اس آیت سے معلوم ہوا

کہ فضائل و کمالات کی تمنائیں منع ہے لیکن بعض آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ فضائل و کمالات میں ایک دوسرے سے بڑھنے کی کوشش کرو۔ ارشاد ہے۔ **فاستبقوا الخیرات** مطہرات کی باتوں کی طرف دوڑو (سورۃ المائدہ آیت ۴۸) ایک اور ارشاد ہے **ونی ذالک فلیینا فی الممتنافسون**۔ اور حرص کرنے والوں کو ایسی چیز کی حرص کرنا چاہیے (سورۃ التطہیف آیت ۲۶)۔

تطبیق :- فضیلت کی دو قسمیں ہیں۔ اختیاری اور کسبی (۲) غیر اختیاری۔ آیت میں غیر اختیاری فضیلتوں کے حصول کی تمنائیں انسان کے بس سے باہر ہوتی ہیں۔ علامہ زنجیری فرماتے ہیں۔ **لان ذالک التفضیل قسمة من اللہ صادرة عن حکمة و تدبیر و علم باحوال العباد**۔ کیونکہ انسانوں میں ایک دوسرے پر برتری اللہ تعالیٰ کی تقسیم ہے۔ بندوں کے احوال کو دیکھ کر اپنے علم، حکمت اور تدبیر کی وجہ سے ایسا کیا ہے (الکشاف ج ۱ ص ۵۰۴) غیر اختیاری امور مثلاً مرد ہونا، اعلیٰ خاندان سے ہونا خوب صورت ہونا اچھے ذہن اور ذہانت کا مالک ہونا۔ ان غیر اختیاری امور کی تمنائیں وجہ سے حسد اور بغض پیدا ہوگا۔ اور اختیاری امور میں تنافس کی وجہ سے خود باکمال بن جائے گا۔ اور نجات اخروی کا فیصلہ بھی ان اختیاری فضیلتوں کی بنا پر ہوگا۔ اگرچہ بعض غیر اختیاری فضیلتوں کو بھی دخل ہے جیسے مومن کا حضور ﷺ کے زمانے میں ہونا۔

تعارض نمبر ۵۴ سورۃ النساء

آیت 33

والذین عقدت ایمانکم فاتوہم نصیبہم اور جن لوگوں سے تمہارے عہد بندھے

ہوئے ہیں ان کو ان کا حصہ دے دو۔ اس کو عقد موالات اور مولیٰ الموالاتہ بھی کہتے ہیں۔ دو آدمی باہم عہد و پیمان کر لیں کہ ایک دوسرے کی مدد کریں گے۔ اور جو مر جائے دوسرا اس کی میراث لے گا۔ اس طرح ایک دوسرے کے حلیف بن جاتے ہیں۔ حلیف کو سدس ملتا تھا۔ لہذا اس آیت سے معلوم ہوا کہ حلیف کو سدس اب بھی ملے گا۔ لیکن میراث کی آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ حلیف کو کچھ بھی نہ ملے گا۔ ارشاد ہے **واولوا الارحام بعضهم اولیٰ ببعض فی کتاب اللہ**۔ اور جو لوگ رشتہ دار ہیں کتاب اللہ میں ایک دوسرے کے زیادہ حقدار ہیں (سورۃ الانفال آیت 75) معلوم ہوا میراث رشتہ دار کو ملے گی۔

تطبیق :- علامہ زنجیری فرماتے ہیں۔ **فیكون للحلیف السدس من میراث الحلیف فنسخ**۔ حلیف کو سدس ملتا تھا اب یہ حکم منسوخ ہے (الکشاف ج ۱ ص ۵۰۵) جب ورثاء موجود ہوں تو خلفاء ایک دوسرے کی میراث نہیں لے سکتے اس پر سب کا اتفاق ہے کیونکہ میراث کی آیات سے حلیف کا حصہ منسوخ ہے۔ امام ابوحنیفہؒ کے نزدیک اگر حلیف کا کوئی وارث نہ ہو تو دوسرے حلیف کو کل مال ملے گا۔ نسخ والی آیات امام صاحب کے اس حکم کے خلاف نہیں۔ علامہ آلوسی فرماتے ہیں **وخبرا بالنسخ المذكور لایقوم حجة علیه اذ لا دلالہ فیما ادعی ناسخاً علی عدم ارث الحلیف لاسیما وهو انما یرثہ عند عدم العصبات واولی الارحام**۔ آیت امام صاحب پر حجت نہیں۔ کیونکہ آیت سے نسخ کے ہوتے ہوئے یہ معلوم نہیں ہوتا کہ حلیف کو حصہ نہ ملے گا۔ خاص کر اس وقت جب کہ مرنے والے حلیف کے عصبات اور اولوالارحام علم نہ ہوں۔ (روح المعانی ج ۵ ص ۲۳) اگر کوئی شبہ کرے کہ حلیف کی بجائے مال بیت المال کا حق ہے۔ حلیف کو نہیں ملنا چاہیے تو اس کا جواب قاضی ثناء اللہ پانی پتی نے دیا ہے۔

بیت المال میں مال اس لئے داخل نہیں کیا جاتا کہ ورثاء کی عدم موجودگی میں اب بیت المال کا حق بنتا ہے۔ بلکہ بیت المال میں مال اس لئے داخل کیا جاتا ہے کہ اب میراث کا کوئی حقدار باقی نہیں رہا۔ فرماتے ہیں۔ **والصرف الی بیت المال ضرورة عدم المستحق لا انه مستحق** (مظہری ج ۲ ص ۱۱۳) مولانا اشرف علی تھانوی کی ایک توجیہ سے معلوم ہوتا ہے کہ آیت منسوخ نہیں اور میراث کی آیات سے ٹکراؤ بھی نہیں فرماتے ہیں ابن عباس سے نصیب کی ایک تفسیر خیرہ امی یا استخبارا وصیت منقول ہے۔ پس یہ ایسا نصیب منسوخ نہ ہوگا (بیان القرآن ج ۲ ص ۱۱۳) یا آیت اس لئے منسوخ نہیں کہ عقد سے مراد صرف ایک دوسرے کی مدد کرتا ہے اسلام نے اس کو برقرار رکھا ہے۔ ابن الجوزی فرماتے ہیں۔ **اراد النصر والعون وهذا لقول سعید ابن جبیر وهو يدل على ان الآیة محكمة**۔ عقد سے مراد ایک دوسرے کا تعاون ہے یہ سعید ابن جبر کا قول ہے اور اس سے معلوم ہوا کہ آیت محکم ہے (زاد المسیر ج ۲ ص ۷۳) لیکن حافظ ابن کثیر نے اس توجیہ کو پسند نہیں کیا۔ فرماتے ہیں **وهذا الذي قال فيه النظر فان من حلف ما كان على المناصرة والمعونة ومنه ما كان على الارث كما حكاه غير واحد من السلف**۔ عقد سے صرف تعاون مراد لینا نکل نظر ہے۔ کیونکہ عقد میراث کے بارے میں بھی ہوتا تھا۔ جیسا کہ اکثر اسلاف نے اس کا ذکر کیا ہے (ابن کثیر ج ۲ ص ۲۷۵) فاتوہم نصیبہم سے بھی حافظ ابن کثیر کے قول کی تائید ہوتی ہے کہ عقد میراث کے بارے میں ہوتا تھا۔

ولا یکتُمون اللہ حدیثاً۔ اور اللہ تعالیٰ سے کسی بات کا انخفاء نہ کر سکیں گے۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ کفار کوئی بات نہ چھپا سکیں گے۔ لیکن بعض آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ چھپائیں گے۔ ارشاد ہے **واللہ ربنا ما کننا مشرکین**۔ قسم اللہ اپنے پروردگار کی ہم مشرک نہ تھے۔ (سورة الانعام آیت ۲۳) معلوم ہوا اپنے شرک کو چھپائیں گے۔ ایک اور ارشاد ہے۔ **فالقوا السلم ما کننا نعمل من سوء** پھر کافر لوگ صلح کا پیغام ڈالیں گے کہ ہم تو کوئی برا کام نہ کرتے تھے (سورة النحل آیت ۲۸)۔

تطبیق:۔ ابن الجوزی نے کئی اقوال نقل کئے ہیں۔ (۱) **وودوا اذا فضحتهم جوار حہم انہم لم یکتُموا اللہ شرکھم**۔ جب ان کے اعضاء ان کو رسوا کر دیں۔ (کیونکہ گواہی دیں گے) تو افسوس کریں گے کہ کیوں اللہ سے اپنا شرک چھپایا۔ (۲) **انہم لما شہدت علیہم جوار حہم لم یکتُموا اللہ حدیثاً بعد ذالک**۔ جب ان کے اعضاء ان کے خلاف گواہی دے چکیں تو اس کے بعد کوئی بات نہ چھپا سکیں گے۔ (۳) **انہم فی مواطن لا یکتُمونہ حدیثاً وفی مواطن یقولون ما کننا مشرکین**۔ کفار کے لئے کئی مواطن (میدان) ہیں کسی موطن میں بات نہ چھپا سکیں گے اور بعض موطن میں بات چھپائیں گے۔ کہ ہم نے تو شرک نہیں کیا۔ (۴) **لا یقدرون علی کتمانہ**۔ چھپانے کی کوشش کریں گے لیکن چھپانے کی قدرت ان کو نہ ہوگی۔ (زاد المسیر ج ۲ ص ۸۸)۔

امام قرطبی فرماتے ہیں۔ والمعنى يود لو ان الارض سويت بهم وانهم لم يكتموا الله حديثا لانه ظهر كذبهم۔ كفار کی خواہش ہوگی کہ زمین میں ملیا میٹ ہو جائیں کہ کیوں اللہ سے بات چھپائی کیونکہ ان کی کذب بیانی ظاہر ہو جائے گی۔ (قرطبی ج ۵ ص ۱۹۹) علامہ زنجبیری فرماتے ہیں۔ لايقدر ان على كتمانهم لان جوارحهم تشهد عليهم۔ اعضاء کی گواہی کے بعد بات نہ چھپا سکیں گے۔ دوسرا قول ذکر کرتے ہیں۔ يودون ان يمدفونوا تحت الارض وانهم لا يكتفون الله حديثا ولا يكذبون في قولهم والله ربنا ما كنا مشركين۔ ان کی خواہش ہوگی کہ زمین میں دھنس جائیں۔ اور اللہ سے بات نہ چھپا سکیں گے (الکشاف ج ۱ ص ۵۱۲)۔

تعارض نمبر ۵۶

سورة النساء

آیت 69

ومن يطع الله الرسول فاولئك مع الذين انعم الله عليهم من النبيين والصدوقين والشهداء والصالحين وحسن اولئك رفيقاً۔ اور جو شخص اللہ اور رسول کا کہنا مان لے گا۔ تو ایسے اشخاص بھی ان حضرات کے ساتھ ہوں گے جن پر اللہ تعالیٰ نے انعام فرمایا ہے۔ یعنی انبیاء اور صدیقین اور شہداء اور صلحاء اس آیت سے معلوم ہوا کہ اللہ اور رسول کا مطیع ان کے درجوں میں ہوگا۔ حالانکہ جنتیوں کے الگ الگ درجے ہیں۔ نچلے درجے کا اعلیٰ درجے میں منتقل نہیں ہو سکتا۔ ارشاد ہے ہم درجات عند اللہ۔ مذکورین درجات میں مختلف ہوں گے اللہ تعالیٰ کے نزدیک (سورة النساء آیت ۱۶۳)۔ تطبیق:- مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں اور یہ مطلب بھی نہیں کہ یہ اشخاص خاص

ان حضرات کے درجے میں چلے جائیں گے کیونکہ ہم درجات عند اللہ وغیرہ آیات میں یہ تفاوت ثابت ہے بلکہ مطلب یہ ہے کہ اپنے درجہ سافلہ سے ان کے درجہ عالیہ میں پہنچ کر مشرف بہ زیارت و برکات اس درجہ کے ہوا کریں گے۔ (بیان القرآن ج ۲ ص ۱۳۲)۔

علامہ اوسى اس آیت کی تفسیر بیان کرتے ہیں۔ ان معنى كون المطيع مع هؤلاء انه معهم فى سلوك طريق الآخرة فيكون ما مونا من قطاع الطريق محفوظ الطاعة عن النهب انبياء صدیقین، شہد اور صالحین مطیع کے سفر آخرت میں ہم سفر ہونگے۔ جن کی وجہ سے مطیع آخرت کا یہ سفر بلا خوف و خطر طے کرے گا۔ اس میں مطیع کو تسلی دی گئی ہے۔ (روح المعانی ج ۵ ص ۷۸) حسن اولئك رفيقاً سے معلوم ہوتا

ہے کہ مطیعین کو ان مذکورہ چار طبقات کی دوستی اور رفاقت مل جائے گی۔ ان مقرب بندوں کی سچی اور محبت بھر دوستی خود ایک نعمت عظمیٰ ہے۔ یہ مطلب نہیں کہ ان کا درجہ مل جائے گا۔

اس لئے علامہ زنجبیری فرماتے ہیں۔ وهذا ترغيب للمؤمنين فى الطاعة حيث

وعدوا مرافقة اقرب عباد الله الى الله وارفعهم درجات عند الله۔ یہ

مسلمانوں کو ترغیب ہے کہ اطاعت کی وجہ سے مقرب اور عند اللہ بڑے درجہ والوں کیساتھ مرافقت اور دوستی نصیب ہوگی۔ (الکشاف ج ۱ ص 531) امام قرطبی فرماتے ہیں۔

يستمتعون برؤيتهم والحضور معهم لانهم يساؤون فى الدرجة فانهم

يتفاوتون لكنهم يتزاورون (مطيعين) تو ان مقرب لوگوں کی زیارت اور ان کے

ساتھ اٹھنا بیٹھنا نصیب ہوگا۔ ایسا نہیں کہ درجہ میں ان کے مساوی ہو جائیں۔ کیونکہ

درجات کا تفاوت رہے گا۔ اور ان کی زیارت کیا کریں گے۔ (قرطبی ج ۵ ص ۲۷۲) امام

رازی فرماتے ہیں۔ ليس المراد بكون من اطاع الله و اطاع الرسول مع

النبيين والصدیقین کون الكل فی درجة واحدة لان هذا یقتضی السوية فی الدرجة بین الفضل والمفضول وانه لا یجوز بل المراد کونهم فی الجنة بحيث یتمكن کل واحد منهم فی رؤیة الآخر وان بعد المكان - یہ مطلب نہیں کہ مطیعین انبیاء اور صدیقین سب ایک درجہ میں ہوں گے اگر ایسا ہوتا تو فاضل اور مفضول میں مساوات قائم ہو جائے گی اور یہ ناجائز ہے بلکہ مراد یہ ہے کہ سب جنت میں ایسی جگہ پر ہوں گے کہ باوجود بعد مکانی کے ایک دوسرے کو دیکھ سکیں گے۔ (تفسیر کبیر ج ۱۰ ص ۱۷۱)۔

تعارض نمبر ۵۷

سورة النساء

آیت 78

کل من عند الله سب کچھ اللہ ہی کی طرف سے ہے۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ ہر واقعہ کا وقوع اللہ کی طرف سے۔ لیکن بعض آیات سے ثابت ہوتا ہے کہ بعض ناگوار واقعات کا ارتکاب نفس انسانی کرتا ہے۔ اور اس کی نسبت انسان کی طرف ہوئی ہے۔ اور شاور بانی ہے وما اصابك من سئئة فمن نفسك۔ اور جو کوئی بد حالی پیش آوے وہ تیرے ہی سبب سے ہے (سورة النساء آیت 79) اس آیت میں بد حالی کی نسبت انسان کی طرف ہے۔

تطبیق :- ہر چیز کے خالق اور موجد اللہ تعالیٰ ہیں۔ خیر اور شر کا خالق بھی وہ ہے لیکن ادب کا تقاضہ یہ ہے کہ خیر کی نسبت اللہ کی طرف کی جاتی ہے اور شر کی نسبت اپنی طرف۔ اجمالاً ہر چیز کی نسبت اللہ کی طرف صحیح ہے جیسا کہ اس آیت میں ہے کل من عند الله۔ ایک مقام پر فرمایا بیدک الخیر آپ ہی کے اختیار میں ہے سب بھلائی (سورة ال عمران 26)

حالانکہ شر بھی اس کے قبضہ میں ہے۔ سورہ فاتحہ میں انعام کی نسبت اللہ کی طرف ہوئی ہے۔ انعمت علیہم میں لیکن غضب اور گمراہی کی نسبت اللہ کی طرف نہیں ہوئی۔ حضرت ابراہیم علیہ السلام فرماتے ہیں۔ واذما مرضت فهو یشفین اور جب میں بیمار ہو جاتا ہوں تو وہی مجھ کو شفا دیتا ہے (الشعرا 80) یوں نہیں فرمایا کہ واذما مرضنی۔ شفاء کی نسبت اللہ کی طرف کی اور بیماری کی نسبت اپنی طرف ما اصابك من سئئة فمن نفسك میں بھی سبب کی نسبت نفس انسانی کی طرف کی ہے۔ حضور جب مدینہ منورہ تشریف لائے تو کفار کو ایمان کی دعوت دی انہوں نے انکار کیا اور کہا آپ جب سے مدینہ آئے ہیں ہمارے کھیتوں اور پھلوں میں کمی آئی ہے خوش حالی کو اللہ کی طرف منسوب کرتے اور بد حالی کو بطور بدفالی حضور ﷺ کی طرف منسوب کرتے تھے۔ جواب آیا کل من عند الله یعنی سب کچھ اللہ کے قبضہ میں ہے۔ اور اسی کے طرف سے ہے۔ علامہ آلوسی فرماتے ہیں امر لہ صلی اللہ علیہ وسلم بان یرد زعمہم الباطل واعتقادہم الفاسد ویر شدہم الی الحق ببیان اسناد الكل الیہ تعالیٰ علی الاجمال ای کل واحدة من النعمة والبلیة من جهة الله تعالیٰ خلقاً و ایجاداً من غیر ان یکون لی مدخل فی وقوع شئ منها بوجه من الوجوه کما تزعمون بل وقوع الاولیٰ منه تعالیٰ بالذات تفضلاً و وقوع الثانیة بواسطہ ذنوب من ابتلیٰ بہا عقوبۃ۔ حضور ﷺ کو اللہ نے فرمایا کہ کفار کے اعتقاد فاسد اور غلط گمانی کی تردید کریں۔ اور اس معاملہ میں ان کو حق بات بتلائیں۔ اجمالاً ہر چیز کی اسناد اللہ کی طرف کر دی۔ حسہ اور سببیت دونوں اللہ کی طرف سے ہیں باعتبار تخلیق و ایجاد کے اس میں کسی انسان کا دخل نہیں جیسے کفار کا گمان تھا۔ حسہ کا وقوع اللہ کی طرف سے بالذات بغیر کسی

واسطہ کے اس کے فضل کی وجہ ہوتا ہے۔ اور سیئہ کا وقوع بواسطہ گناہ کے بطور عذاب کے ہوتا ہے (روح المعانی ج ۵ ص ۸۸)۔

امام نیشاپوری فرماتے ہیں۔ ثم انه تعالى اضاف السيئة الى نفسه في الآية الاولى بقوله كل من عند الله و اضافها في هذه الآية الى العبد بقوله وما اصابك اي يا انسان خطا با عاما من سيئة فمن نفسك فلا بد من التوفيق و ازالة التناقض و ماذك الا بان يجعل هناك بمعنى البلية و ما هنا بمعنى المعصية۔ دونوں آیتوں کے مابین تطبیق یہ ہے کہ کل من عند اللہ میں سیئہ بمعنی امتحان ہے اور من نفسك میں بمعنی معصیت ہے (غرائب القرآن ج ۳ ص ۵ حاشیہ طبری)۔

تعارض نمبر ۵۸
سورة النساء
آیت 93

ومن يقتل مومنا متعمداً فجزاؤه جهنم خالد فيها اور جو شخص کسی مسلمان کو قصداً قتل کر ڈالے تو اس کی سزا جہنم ہے ہمیشہ ہمیشہ کو اس میں رہنا۔ قتل عمد گناہ کبیرہ ہے۔ گناہ کبیرہ کا مرتکب جہنم سے نکلے گا۔ قرآن مجید میں صراحتاً مذکور ہے کہ شرک کے علاوہ اللہ جس گناہ کو چاہے معاف فرمائیں گے۔ ارشاد ہے۔ ان الله لا يغفر ان يشرك به ويغفر ما دون ذلك لمن يشاء۔ بے شک اللہ تعالیٰ اس بات کو نہ بخشیں گے کہ ان کے ساتھ کسی کو شریک قرار دیا جائے اور اس کے سوا اور جتنے گناہ ہیں۔ جن کے لئے منظور ہو گا وہ گناہ بخش دیں گے۔ (سورة النساء آیت ۴۸-۱۱۴) معلوم ہوا کہ قتل عمد بھی قابل معافی جرم

ہے۔ قرآن مجید کے ایک آیت میں قاتل پر مومن کا اطلاق ہوا ہے۔ وان طائفتان من المومنين اقتتلوا اگر مسلمانوں میں دو گروہ آپس میں لڑ پڑیں۔ (سورة الحجرات آیت ۹) ظاہر بات ہے کہ مومن کی سزا ہمیشہ کی جہنم نہیں۔ اس طرح دیگر آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ قاتل کی توبہ قبول ہوتی ہے۔ وانسى لغفار لمن تاب اور میں ایسے لوگوں کے لئے برا بخشے بھی والا ہوں جو توبہ کر لیں۔ (سورة ط آیت ۸۲) لیکن قاتل کی جو سزا سورة النساء میں مذکور ہے اس سے معلوم ہوتا ہے کہ قتل عمد ناقابل معافی جرم ہے اور توبہ قبول نہیں ہوتی۔ اس تعارض کا حاصل یہ ہے کہ قتل عمد کی سزا سے معلوم ہوتا ہے کہ ناقابل معافی جرم ہے۔ جبکہ بعض آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ قابل معافی جرم ہے۔ اس طرح قتل عمد کی سزا سے معلوم ہوتا ہے کہ قاتل کی توبہ قبول نہیں ہوتی جبکہ بعض آیات سے ثابت ہوتا ہے کہ توبہ قبول ہوتی ہے۔

تطبیق: قتل عمد کی اصل سزا توبہ ہی ہے کہ اس کو ہمیشہ کی جہنم میں جھونک دیا جائے لیکن اللہ اس کو اپنے فضل سے یہ اصل سزا نہ دیں گے۔ یعنی آیت میں قاتل جس سزا کا اہل تھا اس کا صرف ذکر کر دیا یہ مطلب نہیں کہ اس کو یہی مذکورہ سزا دی جائے گی۔ اشیخ محمد مخلوف فرماتے ہیں۔ فجزاه جهنم تقدیره عند اهل السنة فجزاءه ان جزاه بذلك ای هو اهل لذلك۔ اگر اللہ اس کو سزا دینا چاہے تو وہ قاتل اسی سزا کا اہل ہے۔ فرماتے ہیں ومعنى الخلود هنا مدة طويلة ان جزاه الله ويدل على ذلك سقوط لفظ التابيد والجمهور على قبول تو بته۔ اگر اللہ اس کو سزا دینا چاہے تو خلود سے مراد ایک طویل مدت ہے۔ بیشکی مراد نہیں اور طویل مدت مراد لینے پر قرینہ لفظ تابید کا سقوط ہے یعنی ابداً کا ذکر نہیں ہوا (تفسیر الشعالی ج ۱ ص ۴۰۱)۔ امام قرطبی فرماتے ہیں۔

والخلود لا يقتضى الدوام۔ خلود میں بیٹھتی نہیں قال الله تعالى وما جعلنا لبشر من قبلك الخلد وقال تعالى يحسب ان ماله اخلده وقال زهير ولا خالداً الا الجبال الرواسيا۔ صرف مضبوط پہاڑ ہمیشہ رہیں گے۔ فرماتے ہیں وهذا كله يدل على ان الخلد يطلق على غير معنى التاييد۔ ان سے معلوم ہوا کہ خلود کا اطلاق وہاں ہوتا ہے جہاں تابد نہ ہو اسی طرح عرب کے محاورے نقل کئے ہیں۔ لا خلدن فلاناً فى السجن والسجن ينقطع ويفنى۔ میں فلاں کو ہمیشہ کے لئے جیل میں ڈال دوں گا حالانکہ سلسلہ جیل محدود اور قابل فنا ہے۔ اس طرح دعائیں کہا جاتا ہے۔ خلدہ اللہ ملکہ اللہ اس کے ملک کو دوام دے۔ مراد ان محاوروں سے طویل مدت ہے (قرطبی ج ۱۵ ص ۳۳۵) قاضی بیضاوی فرماتے ہیں۔ قال ابن عباس لا تقبل توبة قاتل المؤمن عمداً او لعله اراد به التشديد اذ روى منه خلافة والجمهور على انه مخصوص بمن لم يتب لقوله وانى لغفار لمن تاب۔ ابن عباس کہتے ہیں کہ ایسے قاتل کی توبہ قبول نہیں ہوتی لیکن شاید یہ آپ نے زجر کہا ہو کیونکہ آپ سے یہ بھی مروی ہے کہ توبہ قبول ہوتی ہے۔ جمہور کے نزدیک آیت اس قاتل کے ساتھ مخصوص ہے جو توبہ نہ کرے۔ کیونکہ توبہ کرنے والے کو اللہ معاف کرتے ہیں۔ (بیضاوی ج ۱ ص ۱۹)۔ یعنی اگر قاتل توبہ نہ کرے تو اس کی مذکورہ سزا ہوگی۔ فرماتے ہیں وهو مخصوص عندنا یعنی ہمارے نزدیک یہ آیت مخصوص ہے اس قاتل کے ساتھ جو توبہ نہ کرے فرماتے ہیں مخصوص باستحلال۔ یا آیت میں صرف وہ قاتل مراد ہے جو قاتل کو حلال جان کر کرے۔ ظاہر بات ہے اس صورت میں قاتل کا فرین جائے گا اور ہمیشہ کیلئے جہنم رسید ہو جائے گا۔

ام قرطبی فرماتے ہیں۔ ثم ان الجمع بين آية الفرقان وهذه الآية ممكن فلا نسخ ولا تعارض وذلك ان يحمل مطلق آية النساء على مقيد آية الفرقان فيكون معناه فجزاه كذا الا من تاب سورة نساء اور سورة فرقان کی آیات میں تطبیق ممکن ہے کوئی تعارض نہیں نہ کسی آیت کو منسوخ کہنے کی ضرورت ہے۔ سورہ نساء کی مطلق آیت کو سورہ فرقان کی مقید آیت پر محمول کیا جائے تو معنی یہ ہوگا کہ قاتل کی بھی سزا ہے اگر توبہ نہ کی۔ اگر توبہ کر لی تو اس سزا سے جان چھوٹ جائے گی۔ (قرطبی ج ۵ ص ۳۳۳) ابن الجوزی فرماتے ہیں وہی مخصوصة فى حق من لم يتب۔ سورة النساء کی آیت صرف اس قاتل کے بارے میں ہے جو توبہ نہ کرے۔ (زاد المسیر ج ۲ ص ۱۶۸) علامہ آلوسی فرماتے ہیں معتزلاً اس آیت سے ثابت کرتے ہیں کہ قاتل کے لئے خلود فی النار ہے لیکن محققین جواب دیتے ہیں بان ذلك خارج مخرج التغليظ فى الزجر۔ اس سزا کا ذکر زجر اور تغلیظاً ہوا ہے (روح المعانی ج ۵ ص ۱۱۶) بعض احادیث میں زجر ایسی سزاؤں کا ذکر ہے۔ مثلاً من ترك الصلوة فقد كفر۔ جس نے نماز ترک کی کافر بن گیا۔ حالانکہ کافر نہیں بنتا۔ والعلم عند اللہ۔

تعارض نمبر ۵۹ سورة النساء

آیت 95

فضل الله للمجاهدين باموالهم وانفسهم على القعدين درجةً الله تعالى نے ان لوگوں کا درجہ بہت زیادہ بنایا ہے۔ جو اپنے مالوں اور جانوں سے جہاد کرتے ہیں بہ نسبت گمراہ بیٹھے والوں کے۔

اس آیت میں ایک درجہ کا ذکر ہے۔ لیکن اس کے بعد کئی درجے مذکور ہیں ارشاد ہے درجت منه ومغفرة ورحمة یعنی بہت سے درجے جو خدا کی طرف سے ملیں گے اور مغفرت اور رحمت۔ (آیت ۹۶)۔

تطبيق :- تاج القراء الکرامانی فرماتے ہیں۔ لان الاولی فی الدنيا و الثانية فی الجنة۔ ایک درجہ دنیا میں ہے اور درجات جنت میں ملیں گے۔ وقیل الاولی المنزلة و الثانية المنزل و هو درجات

وقیل الاولی علی القاعدین بعذر و الثانی علی القاعدین بغیر عذر۔ ایک درجہ کی فضیلت ان لوگوں کے مقابلہ میں ہوگی جو عذر کے ساتھ قاعدین ہیں اور درجات کی فضیلت ان لوگوں کے مقابلہ میں ہے جو بغیر کسی عذر کے قاعدین تھے۔ (البرهان فی توجیہ تشابہ القرآن ص ۵۲) امام رازی فرماتے ہیں۔ المراد بالدرجة لیس هو الدرجة الواحدة بالعدد بل بالجنس والواحد بالجنس یدخل تحته الكثير بالنوع۔ درجہ سے مراد درجہ واحدہ نہیں بلکہ جنس درجہ مراد ہے اور جنس واحد کے نیچے بہت سی انواع ہوتی ہیں۔

(۲) مجاہد معذور قاعد سے ایک درجہ افضل ہے اور غیر معذور قاعد سے کئی درجے۔

(۳) فضل اللہ المجاہدین فی دنیا بدرجۃ واحدة وھی غنیمۃ و فی الآخرة بدرجات کثیرۃ فی الجنة۔

(۴) پہلی آیت میں جہاد بالنفس اور بالمال کا ذکر ہے۔ جیسا کہ باموالہم وانفسہم سے معلوم ہوتا ہے۔ اور دوسری آیت میں جہاد عام ہے۔ مال، جان، اور قلب سے ہے اس کے بارے میں امام رازی فرماتے ہیں۔ وهو اشرف انواع المجاہدة انواع

مجاہدات میں اشرف نوع ہے۔ لہذا اس میں درجات ہوں گے اور اول قسم میں درجہ۔ اگر دوسری آیت میں بھی جہاد بالمال اور بالنفس مراد لیں تو تکرار ہو جائیگا۔ (تفسیر کبیر ج ۱۱ ص ۹) علامہ آلوسی فرماتے ہیں لان المراد هناک تفضیل کل مجاہد۔ اول آیت میں ہر ایک مجاہد کا درجہ مراد ہے۔ والجمع ثانیاً اور دوسری آیات میں سب مجاہدین کے درجے ہیں۔ (اس کی ایسی مثال ہے کہ ہر ایک کو روپیہ ملے گا پھر کہے سب کو روپے ملیں گے۔ یہاں روپے جمع ذکر کرنا سب کے اعتبار سے ہے)۔

وقیل المراد من التفضیل الاول رضوان اللہ تعالیٰ و نعیمة الروحانی ومن التفضیل الثانی نعیم الجنة المحسوس۔ اول سے اللہ کی رضا اور روحانی نعمت مراد ہے اور تفضیل ثانی سے جنت کی محسوس نعمت ہے۔ وقیل المراد من المجاہدین الآخیرین من جاہد نفسه۔ اول مجاہدین سے مراد وہ مجاہد ہیں جو کفار کیساتھ جہاد کرتے ہیں۔ اور دوسرے سے مراد وہ ہیں جو نفس کے خلاف جہاد کرتے ہیں۔ ان کی فضیلت زیادہ ہے اس لیے کہ حضور کفر مان ہے۔ رجعنا من الجہاد الاصغر الی الجہاد الاکبر۔ (روح المعانی ج ۵ ص ۱۲۳)۔

تعارض نمبر ۶۰

سورۃ النساء

آیت ۱۳۹

فان العزة لله جميعاً سوا عزاز تو سارا خدا تعالیٰ کے قبضے میں ہے اس آیت سے معلوم ہوا کہ ہماری عزت صرف اللہ کے لئے ہے۔ لیکن بعض آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ اللہ کے علاوہ رسول اور مومنین کیلئے بھی ہے۔ ارشاد ہے ولله العزة ولرسوله وللمؤمنین

تطبیق :- اصل اور بالذات عزت اللہ کے لئے ہے۔ اور اللہ تعالیٰ پھر جس کو چاہیں عزت عطا کر دیں۔ اللہ کے علاوہ جس کے پاس عزت ہے وہ باعطاء الہی ہے ارشاد ہے و تعزز من تشاء جس کو آپ چاہیں عزت دے دیں۔ (سورۃ ال عمران آیت ۲۶)۔ منافقین کلمغروں کے پاس عزت تلاش کرتے تھے۔ حالانکہ عزت کا منبع اور خزانہ اللہ کے پاس ہے۔ اسلئے فرمایا کہ ساری عزتیں اللہ کے پاس ہیں علامہ آلوسی فرماتے ہیں ای انما مختصة به تعالیٰ يعطيها من يشاء وقد كتبها سبحانه لا وليا له فقال عز شانه ولله العزة ولرسوله وللمؤمنين۔ عزت اللہ کے ساتھ خاص ہے جس کو چاہیں دے دیں۔ اور اپنے دوستوں کے لئے عزت مقرر کر دی ہے۔ (روح المعانی ج ۵ ص ۱۷۲) قاضی بیضاوی فرماتے ہیں لا يتعزز الا من اعزه وقد كتب العزة لاولياء معزز وهي ہے جس کو اللہ معزز کر دے۔ اور اس نے اپنے دوستوں کے لئے عزت مقرر کر دی ہے۔ (بیضاوی ج ۱ ص ۲۰۷)۔

امام رازی فرماتے ہیں۔ اثبت الاشتراك في نفس العزة التي هي في حق الله تعالى القدرة والغلبة وفي حق الرسول ﷺ علو كلمته واظهار دينه وفي حق المؤمنين نصرهم على اعدائهم وقوله تعالى (ان العزة لله جميعاً) ارا دبه العزة الكاملة التي يندرج فيها عزة الالهية والحق والامانتة والاحياء والبقاء الدائم وما اشبه ذلك فلا تناقض في نفس عزت میں سب کا اشتراک ہے۔ جب اس کی نسبت اللہ کی طرف ہو تو غالب اور قدرت مراد ہوتی ہے۔ اور جب رسول کی طرف نسبت ہو تو اس کے کلمہ کی بلندی اور اظہار دین ہوتا ہے۔ اور

مؤمنین کی طرف نسبت ہو تو مراد ان کے دشمنوں کے مقابلہ میں مدد ہوتی ہے۔

اور یہ فرمان کہ ان العزة لله جميعاً اس سے عزت کامل مراد ہے جس میں اللہ کی الوہیت۔ خلایق وغیرہ صفات سب داخل ہیں۔ لہذا کوئی منافات نہیں (مسائل الرازی ص ۱۲۹)۔

تعارض نمبر ۶۱

سورۃ المائدہ

آیت ۲۱

يتقوم ادخلو الارض المقدسة التي كتب الله لكم اے میری قوم اس متبرک ملک میں داخل ہو کہ اس کو اللہ تعالیٰ نے تمہارے حصہ میں لکھ دیا ہے۔ معلوم ہوا کہ یہ مقدس ملک اور شہر ان کو ملے گا۔ لیکن اسی سورت میں مذکور ہے کہ یہ ملنا ان پر حرام ہے۔ ارشاد باری ہے قال فانها محرمة عليهم اربعين سنة ارشاد ہوا تو یہ ملک ان کے ہاتھ چالیس برس تک نہ لگے گا۔ (آیت ۲۶)۔

تطبیق :- امام رازی اس تعارض کو سوال و جواب کی شکل میں ذکر کرتے ہیں۔ قال ابن عباس كانت هبة ثم حرما عليهم بشوم تمردهم و عصيانهم۔ ان کو یہ ملک ملا تھا پھر عصیان و تمرد کی نحوست کی وجہ سے ان پر حرام کر دیا۔ (۲) کہانہ مکتوب لبعضهم و حرام على بعضهم بظاہر لفظ عام ہے لیکن ہے خاص بعض کیلئے ملک مکتوب ہے اور بعض پر حرام۔ وقيل ان الوعد بقوله (كتب الله) مشروط بتقيد الطاعة وعدة طاعت کی قید کے ساتھ مشروط ہے اگر وعدہ پورا کیا تو ملک مل جائے گا۔ ورنہ نہیں ملے گا۔ وقيل انها محرمة عليهم اربعين سنة فلما مضى الاربعون حصل

ملاکت چالیس سال تک حرام تھا اس کے بعد مل گیا۔ (تفسیر کبیر ج ۱ ص ۱۹۹)۔ علامہ
 آلوسی فرماتے ہیں۔ فیكون التحريم موقتاً لا مؤبداً فلا يكون مخالفاً بظاهر
 قوله تعالى (كتب الله لكم) موقت حرمت ہے ابدی نہیں اس لئے یہ آیت کتب اللہ لکم کے
 خلاف نہیں۔ وقيل لم يدخلها احد ممن قال لن ندخلها ابداً وانما دخلها
 مع موسى عليه السلام النواشى من ذرياتهم وہ لوگ ہمیشہ کیلئے اس ملک میں
 داخل نہ ہوں گے جنہوں نے کہا لن ندخلها ابداً ان کی اولاد موسیٰ علیہ السلام کیساتھ
 اس شہر میں داخل ہوگی معلوم ہوا حرمت چالیس سال تک ان کی اولاد کے لئے تھی۔ (روح
 المعانی ج ۶ ص ۱۰۹)۔

تعارض: 62 سورة المائدة

آیت: 42

﴿فان جاءوك فاحكم بینهما او اعرض عنہما﴾ "تو اگر یہ لوگ آپ کے
 پاس آویں تو خواہ آپ ان میں فیصلہ کر دیجئے یا ان کو ٹال دیجئے"
 اس آیت مبارکہ سے فیصلہ کرنے یا نہ کرنے کا اختیار معلوم ہوتا ہے لیکن ایک آیت سے
 معلوم ہوتا ہے کہ اختیار نہیں بلکہ فیصلہ کرنا ہوگا۔ ارشاد باری تعالیٰ ہے ﴿وان احکم
 بینهما بما انزل اللہ﴾ "اور تم حکم دیتے ہیں کہ آپ ان کے باہمی معاملات میں
 اس سبب سے جو کتاب کے موافق فیصلہ فرمایا کیجئے"۔ (سورة المائدة: 49)

تطبیق: ان الجوزی فرماتے ہیں انہا منسوخة اختیار والی آیت منسوخ ہے ان
 احکم بینهما سے، دوسرا قول ذکر کرتے ہیں لاتسافی بین الآيتين لأن أحدهما
 خیرت بین الحکم وترکہ والثانية بینت كيفية الحکم اذا كان آیت
 منسوخ نہیں بلکہ ایک میں اختیار ہے کہ خواہ فیصلہ کرو یا نہ کرو لیکن دوسری میں اس بات
 کا ذکر ہے کہ اگر فیصلہ کرنا ہے تو پھر ﴿ما انزل اللہ﴾ کے مطابق کرو۔ (زاد
 المسیر ج 2 ص 362)۔

علامہ زبیری فرماتے ہیں: هو منسوخ بقوله وان احکم بینهما بما انزل
 اللہ. (الکشاف: 635/1).

امام قرطبی فرماتے ہیں: فلهب بعضهم الى ان الآية محكمة وان الحاکم
 مخیر آیت محکم ہے اور حاکم کو اختیار ہے۔ (قرطبی: 184/6)۔

﴿وَالْقَبْضُ بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبُعْضَاءُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ﴾ اور ہم نے ان میں باہم قیامت تک عداوت اور بغض ڈال دیا۔ اس طرح کی ایک اور آیت ہے ﴿فَاعْرِضْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبُعْضَاءُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ﴾ (آیت 14)۔

ان آیات کے ذیل میں مفسرین نے لکھا ہے کہ یہودیوں کی آپس میں دشمنی ہوگی، کیونکہ ان کے فرقے ہیں، جبریہ، قدریہ، مشیہ، موحده، اسی طرح عیسائیوں کی آپس میں دشمنی اور بغض ہوگا کیونکہ ان کے بھی فرقے ہیں، مکاریہ، نسطوریہ اور یعقوبیہ۔ یہودیوں اور عیسائیوں کی بھی ایک دوسرے کے ساتھ عداوت اور بغض ہوگا۔ لیکن بعض آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ یہ کفار باہم ایک دوسرے کے دوست ہیں۔ ارشادِ ربانی ہے ﴿وَالَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَىٰ أَوْلِيَاءَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ﴾ ”اے ایمان والوں تم یہود اور نصاریٰ کو دوست مت بناؤ وہ ایک دوسرے کے دوست ہیں“ (سورة المائدة آیت 51)

تطبیق: اگر کفار کی آپس کی دوستی کا یہ مطلب لیا جائے کہ یہودی یہودی کا دوست ہے اور عیسائی عیسائی کا دوست ہے البتہ یہودی اور عیسائی ایک دوسرے کے دشمن ہیں تو آیتوں میں تعارض نہیں آتا کیونکہ ان یہودیوں اور عیسائیوں کے مابین عداوت و بغض قیامت تک ہوگا لیکن یہودیوں کی آپس میں دوستی ہوگی اسی طرح عیسائیوں کی آپس میں دوستی ہوگی۔ تو جس آیت میں بغض اور عداوت کا ذکر ہے تو اس سے مراد یہودی و عیسائی ہے۔ اور جس آیت میں دوستی کا ذکر ہے اس سے مراد عیسائی عیسائی اور یہودی یہودی ہے لہذا تناقض نہیں، اگر عداوت اور بغض عیسائیوں کا آپس میں اور یہودیوں کا آپس میں مراد لیا جائے جیسا کہ اکثر مفسرین نے ان میں فرقہ بندیوں کی وجہ سے اس

کا ذکر کیا ہے تو پھر تعارض کا اشکال قائم رہتا ہے کہ ان کی تو آپس میں دشمنیاں ہے دوستی کہاں سے آگئی؟

اس کا جواب یہ ہے کہ اس میں کوئی شک نہیں کہ ان کی آپس میں عداوت ہے لیکن دشمنی کے مقابلہ میں اتحاد و ملت کی وجہ سے آپس میں دوست بن جاتے ہیں گویا آپس میں دشمن ہیں لیکن اغیار کے مقابلہ میں ایک دوسرے کے دوست بن جاتے ہیں۔ بلکہ تمام کفار کا بھی وطیرہ ہے۔ اس کی تین مثال ماضی قریب کی عراق اور امریکہ کی جنگ تھی۔ تقریباً اٹھائیس ممالک امریکہ کے اتحادی بن گئے تھے، اسی طرح امریکہ نے ہمیشہ مسلمانوں کے خلاف اسرائیل کا ساتھ دیا ہے۔ جن کی وجہ سے بیت المقدس آج بھی یہود بے یہود کے قبضہ میں ہے۔ اس لئے قاضی بیضاوی فرماتے ہیں: ای: فبأنهم متفقون على خلافكم يوالى بعضهم بعضاً لاتحادهم فى الدين۔ مسلمانوں کے مقابلہ میں اتحاد و مذہب کی وجہ سے ایک دوسرے کے دوست بن جاتے ہیں“ (بیضاوی 229/1)۔

امام نیشاپوری فرماتے ہیں: لان الحسنیة علة الضم۔ کیونکہ کفر کا ایک جنس ہونا اتحاد کی علت ہے (غرائب القرآن: 6/159 حاشیہ طبری)۔

دفع تعارض کے لئے ایک توجیہ یہ بھی کی جاسکتی ہے کہ اے مسلمانوں کفار کے ساتھ دوستی نہ بناؤ کیونکہ تمہارے اور ان کے مابین اختلافِ دینیوں کی وجہ سے کوئی نقطہ اتحاد نہیں جس کی بناء پر تم ان سے دوستی شروع کر دو، ہاں کفار اگر ایک دوسرے کے دوست بنا چاہتے ہیں تو بن سکتے ہیں کیونکہ ان کے اتحاد و ملت کی وجہ سے آپس کی دوستی کے لئے مناسبت موجود ہے یہ الگ بات ہے کہ ان کی آپس کی دشمنیاں ہیں گویا آیت میں کفار کی بالقوة دوستی کا ذکر ہے بالفضل دوستی کا ذکر نہیں۔

تکیم الامت مولانا تھانوی نے بھی یہی لکھا ہے: ولما أريد بالموالات التناسب

لا ینافی الآیات الدالة علی تعادی اليهود فیما بینهم و کذا نصاری فیما بینهم . جب سوالات مناسبت سے مراد لی تو اب ان آیات کے منافی نہیں جن سے یہودیوں کا آپس میں اور عیسائیوں کا آپس میں بغض معلوم ہوتا ہے۔ (حاشیہ نمبر 5 بیان القرآن 39/3)

سورة المائدة

تعارض: 64

آیت: 101

﴿یا ایہا الذین امنوا لا تسألوا عن اشیاء﴾ اے ایمان والوں مت پوچھو ایسی باتیں الخ

مؤمنین کو سوال کرنے سے منع کیا ہے حالانکہ بعض آیات میں تصریح ہے کہ مؤمنین سوالات پوچھا کرتے تھے۔ ارشاد باری تعالیٰ ہے ﴿و یسئلونک عن المحیض﴾ (سورة البقرة: ۲۲۲)۔

تطبیق: نفس سوال سے نہیں روکا بلکہ سوالات کی کثرت سے روکا ہے۔ علامہ زبیرؒ فرماتے ہیں: لا تکثروا مسئلة رسول اللہ ﷺ . حضور ﷺ سے زیادہ سوالات نہ کرو۔ (الکشاف ج ۱ ص ۶۸۳)

اس آیت مبارکہ کے شان نزول سے معلوم ہوتا ہے کہ بے صودہ سوالات سے روکا گیا ہے مثلاً کسی نے پوچھا میرا باپ کون ہے کسی نے کہا میرا باپ کہاں ہے۔

یا سوال بطور استہزاء اور نخول کے منع ہے۔ ایک قوم نے استہزاء سوال کیا تھا۔ امین ناقصی میری اونٹنی کہاں ہے۔ ویسے بھی زیادہ قیل وقال اچھا نہیں ہوتا۔ زیادہ سوالات کی وجہ سے کبھی انسان مشکل میں پڑ جاتا ہے۔ بنی اسرائیل کو گائے ذبح کرنے کا حکم ملا انہوں نے موسیٰ علیہ السلام پر سوالات شروع کر دیئے جس کے نتیجے میں گائے کے اوصاف بیان ہوتے گئے یہاں تک کہ گائے نادر الوجود بن گئی۔

قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں: ان السؤال والاستفسار للجهل او المشکل والحفی لا بأس به . (قال رسول اللہ ﷺ : إنما شفاء العی السؤال) ، وإنما ممنوع السؤال عن التکلیف لم یرد الشرع به کالحدیث فی عام ، والسؤال عن لون البقرة المأمورة ذبحها بنی اسرائیل . مشکل اور حفی کے بارے میں اور نہ سمجھنے کی وجہ سے سوال منع نہیں کیونکہ جاہل کو شفاء علمی سوال ہی میں ملتی ہے ایسی نیز کے بارے میں سوال منع ہے جس کے بارے میں شریعت کا بھی کوئی حکم نہیں اترتا۔ جیسے ایک صحابی رسولؐ نے حج کے بارے میں سنا تو سوال کیا کہ حج ہر سال فرض ہوگا یا عمر بھر میں ایک مرتبہ یا جیسے بنی اسرائیل نے اس گائے کے رنگ کے بارے میں جو سوالات کئے جس کے بارے میں ان کو ذبح کا حکم ملا تھا (تفسیر مظہری 192/3)۔

امام قرطبی نے ایک حدیث نقل کی ہے: (کرہ لکم ثلاثا قیل وقال و کثرہ السؤال واضاعة المال) تین چیزوں سے ممانعت ہے بات بات میں کیڑے نکالنا، سوالات کی کثرت اور مال کا ضائع کرنا (تفسیر قرطبی: 331/6)۔

علامہ آلوسی فرماتے ہیں: والمراد بها ما لا خیر لهم فیہ . ایسے سوالات سے منع کیا ہے جس میں کسی قسم کا خیر اور نفع نہ ہو (تفسیر روح المعانی: 39/7)

سورة المائدة

تعارض: 65

آیت: 106

﴿انسنن ذوا عدل منکم أو احران من غیرکم﴾ وہ دو شخص ایسے ہوں کہ دیندار ہوں اور تم میں سے ہوں یا غیر قوم کے دو شخص۔

اس آیت مبارکہ سے معلوم ہوا کہ سفر میں کافر کو وصیت پر گواہ بنا سکتے ہیں لیکن بعض

آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ کفار کی گواہی مسلمانوں کے حق میں صحیح نہیں۔ ارشاد باری تعالیٰ ہے: ﴿وَأَشْهِدُوا ذَوَىٰ عَدْلٍ مِّنكُمْ﴾ اور آپس میں دو معتبر شخصوں کو گواہ کر لو (سورۃ اطلاق: ۲) اس سے معلوم ہوا کہ مسلمانوں کو گواہ بنایا کرو۔

تطبیق: منکم کی تفسیر میں مفسرین فرماتے ہیں: دو احتمال ہیں ای من عشیرتکم و قبیلتکم یعنی گواہ تمہارے خاندان اور قبیلہ کا ہو اس لحاظ سے من غیر کم کی تفسیر ہوگی من غیر عشیرتکم و قبیلتکم جو تمہارے خاندان اور قبیلہ کا نہ ہو اس تشریح کے لحاظ سے منکم اور من غیر کم دونوں مسلمان ہوئے یعنی مسلمان گواہ اپنے خاندان کا یا مسلمان غیر خاندان کا گواہ، اس توجیہ کے مطابق آیتوں میں کوئی تعارض باقی نہیں رہتا کیونکہ گواہی سے کافر کو نکال دیا لیکن اس توجیہ کو بعض مفسرین نے پسند نہیں کیا منکم اور من غیر کم میں دوسری توجیہ یہ ہے کہ منکم من اهل دینکم و ملتکم یعنی اس کو گواہ بناؤ جو تمہارا ہم مذہب ہو من غیر کم من غیر ملتکم دینکم اس کو گواہ بناؤ جس کا تعلق تمہارے مذہب سے نہ ہو، اس توجیہ کو مفسرین نے ترجیح دی ہے۔ وجہ ترجیح بعد میں ذکر کی جائیگی، ابن الجوزی نے یہ بھی کہا ہے: انہا منسوخة بقوله واشهدوا ذوی عدل منکم اور آخران من غیر کم منسوخ ہے۔ ابن الجوزی یہ بھی فرماتے ہیں: کہ غیر مسلم کی گواہی بوقت ضرورت جائز ہے لہذا موضع ضرورتہ کما يجوز فی بعض الأماكن شهادة نساء۔ سفر میں کافر کا گواہ بننا ضرورتاً ہے جیسے بعض مواقع میں ضرورتاً عورت کی گواہی پر اکتفاء کیا جاتا ہے۔ مذکورہ تمام تفصیل ابن الجوزی نے ذکر کی ہے (زاد المسیر ج: 447/2)۔

ابو بکر جصاص نے من غیر کم میں من غیر ملتکم کو ترجیح دی ہے کیونکہ آیت کے شروع میں خطاب مؤمنین سے ہے تو من غیر کم غیر مو من مراد ہے۔ و صبح ان

المراد من غیر المؤمنین فاقتضت الآیة جواز شهادة اهل الذمة علی وصیة المسلم فی السفر۔ من غیر کبیر سے غیر مو من مراد ہے اور آیت تقاضہ کرتی ہے کہ سفر میں غیر مسلم کو وصیت پر گواہ بنا سکتے ہیں۔ (احکام القرآن للجصاص 490/2)۔

امام رازی فرماتے ہیں: من غیر کم سے مراد غیر مسلم ہے اور اس کو چند وجوہ کی بنا پر راجح قرار دیا ہے۔ فرماتے ہیں (1)۔ آیت کے شروع میں مؤمنین سے خطاب ہے تو من غیر کم میں غیر مو من مراد ہوگا۔ (2)۔ سفر کی قید سے بھی یہی معلوم ہوتا ہے ورنہ مؤمن کی گواہی کے لئے سفر اور حضر کی قید ضروری نہیں۔ (3)۔ شان نزول میں دو نرائیوں کی شہادت کا ذکر ہے۔ (4)۔ عام مفسرین کا یہی قول ہے اس کے بعد امام رازی فرماتے ہیں: و انما نجیز اشهاد الکافرین اذا لم نجد أحدا من المسلمین۔ والضرورات تبیح المحظورات جب کوئی مسلمان نہ ہو تو کافر کو گواہ بنانا جائز ہے۔ ضرورت کے وقت ناجائز جائز ہو جاتا ہے۔ (تفسیر کبیر: 116/2)۔

تعارض: 66: سورة المائدة

آیت: 109

﴿يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا أُجِبْتُمْ قَالُوا لَا عِلْمَ لَنَا﴾ جس روز اللہ تعالیٰ تمام پیغمبروں کو جمع کرے گا پھر ارشاد فرمائیں گے کہ تم کو کیا جواب ملا تھا وہ عرض کریں گے کہ ہم کو کچھ خبر نہیں۔

اس آیت مبارکہ سے معلوم ہوا کہ انبیاء کرام علیہم الصلوٰۃ والسلامیات اپنی امتوں کے بارے میں گواہی نہیں دینگے کیونکہ ان کو کسی بات کا علم نہیں لیکن بعض آیات سے صراحتاً

معلوم ہوتا ہے کہ ہر نبی اپنی امت کے بارے میں گواہی دینگا۔ ارشاد باری تعالیٰ ہے ﴿فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَؤُلَاءِ شَهِيدًا﴾ ”سو اس وقت بھی کیا حال ہوگا جبکہ ہر امت میں سے ایک ایک گواہ کو حاضر کریں گے اور آپ کو ان لوگوں پر گواہی دینے کے لئے حاضر لادیں گے“ (سورۃ النساء: ۴۱)

تظنیق: انبیاء کرام علیہم الصلوٰۃ والتسلیمات کو اپنی امتوں کے بارے میں سب کچھ معلوم ہوگا اس لئے تو گواہی دینگے لیکن پھر بھی اپنی علم کی نفی کریں گے کیونکہ مقصود ان کے دشمنوں کو ڈانٹ ڈپٹ ہے۔

علامہ زبیر فرماتے ہیں: یعلمون أن الغرض بالسؤال توبيخ أعدائهم فيكون الأمر إلى علمه واحاطته. اللہ تعالیٰ سوال انبیاء کرام علیہم السلام سے ان کے دشمنوں کو ڈانٹنے کے لئے کریں گے اس لئے انبیاء کرام علیہم السلام سب کچھ اللہ تعالیٰ کے علم کی طرف منسوب کر دیں گے۔

دوسری توجیہ: من هول ذالک الیوم یفزعون ویذهلون عن الجواب ثم یسجیون بعد ما تثوب الیہم عقولہم بالشہادة علی أممہم. قیامت کی ہولناکیوں کی وجہ سے انبیاء کرام علیہم السلام کی عقلیں جواب دے جائیں گی پھر جب ہوش سنبھال لیں تو امتوں کے بارے میں گواہی دینگے۔

تیسری توجیہ: معناه علمنا ساقط مع علمک ومغمور بہ قبیل لا علم لنا بما کان منہم بعدنا انما الحکم للخاتمة. ہمارے لئے آپ کے علم کے مقابلہ میں کوئی حیثیت نہیں ہمیں پتہ نہیں کہ ہمارے انتقال کے بعد وہ کیا کرتے رہے اور اصل مدار خاتمہ پر ہے یعنی ہمیں پتہ نہیں کہ ہمارے امتیوں کا خاتمہ کس حالت میں ہوا۔ (الکشاف: 690/1)۔

امام رازی فرماتے ہیں: کہ لا علم لنا سے معلوم ہوتا ہے کہ انبیاء کرام علیہم السلام گواہی نہ دیں گے حالانکہ ﴿فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَؤُلَاءِ شَهِيدًا﴾ پھر جواب دیتے ہیں کہ قیامت کی ہولناکیوں کی وجہ سے انبیاء کرام علیہم السلام اکثر امور بھول جائیں گے جب ہوش و حواس دوبارہ صحیح ہو جائیں تو گواہی دیں گے۔ امام رازی فرماتے ہیں: کہ یہ جواب ضعیف ہے اهل الثواب لا یحزنہم الفزع

الاکبر کے خلاف ہے۔ اہل ثواب کو بڑی گھبراہٹ غم میں نہ ڈالے گی۔ (اسی طرح ﴿فلا یخوف علیہم ولا ہم یحزنون﴾ کے بھی خلاف ہے) (نعمانی)۔ لیکن علامہ آلوسی اس کو ضعیف قرار نہیں دیتے اس توجیہ کے درست ہونے کا جواب دیتے ہیں ویسکن ان یجواب بان الفزع الاکبر دخول النار ممکن ہے کہ فزع اکبر سے مراد آگ میں داخل ہونا ہے۔ لہذا قیامت کی ہولناکی سے متاثر ہونا لا یحزنہم الفزع الاکبر کے خلاف نہیں ﴿فلا یخوف علیہم ولا ہم یحزنون﴾ کا جواب دیتے ہیں۔ اما کالبشارة بالنجاة من احوال ذلک الیوم یہ قیامت کسی ہولناکیوں سے نجات کی بشارت ہے۔ دوسرا جواب دیتے ہیں ان ذلک الذہول لم یکن لخوف ولا حزن وانما هو من باب العوم فی بحار الاجلال انبیاء کرام علیہم السلام کی عقلوں کا ذہول خوف اور حزن کی وجہ سے نہ ہوگا بلکہ اس وقت وہ سب اللہ تعالیٰ کے جلال کے سمندروں میں غرقاب ہوں گے اس کی وجہ سے ہوش و حواس برقرار نہ رہیں گے۔ (تفسیر روح المعانی: 55/7)۔

امام رازی فرماتے ہیں: ان المراد منه المبالغة فی تحقیق فضیحتہم اس سے مقصود کفار کی خوب رسوائی کرنا ہے، تیسری توجیہ کو راجح قرار دیا ہے نفو العلم عن انفسہم لان علمہم عند اللہ کلا علم انبیاء کرام علیہم السلام نے اپنے آپ سے علم کی نفی اللہ کے علم کے مقابلے میں کی ہے کہ گویا ان کے پاس کوئی علم ہی نہیں۔

چوتھی توجیہ: نداء الأدب فی السکوت وهو فی تفویض الامر الی عدل
الحی القیوم الذی لا یموت۔ ادب کا تقاضہ ہے کہ اللہ کے سامنے خاموشی بہتر ہے
اور تمام امور اس عادل اور حی و قیوم کے سپرد کر دیئے جائیں۔ (تفسیر
کبیر: 123/12)۔

حافظ ابن کثیر فرماتے ہیں: انہم نزلوا منزلا ذہلت فیہ العقول فلما سئلوا
قالوا لا علم لنا ثم نزلوا منزلا آخر فشہدوا علی قومہم انبیاء کرام
علیہم السلام کو ایک مقام پر ٹھہرایا جائیگا جہاں عقلیں کام چھوڑ دیں گی جب ان سے
پوچھا جائے تو کہیں گے ہمیں کوئی علم نہیں پھر دوسرے ٹھہرے پر ان کو لے جایا جائیگا وہاں
اپنی اپنی امتوں پر گواہ بن جائیں گے۔ (تفسیر ابن کثیر: 677/2)

سورة المائدة

تعارض: 67

آیت: 115

﴿فمن یکفر بعد منکم فانی أعذبه عذابا لا أعذبه احدًا من
العالمین﴾ ”پھر جو شخص تم میں سے اس کے بعد ناق شہادت شہادت کرے گا تو میں اس کو ایسی
سزا دوں گا کہ وہ سزا جہاں والوں میں سے کسی کو نہ دوں گا“

اس آیت سے معلوم ہوا کہ سب سے زیادہ سخت سزا اصحابِ مانده کو ہوگی لیکن بعض
آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ ال فرعون کو سخت سزا ملے گی۔ ارشاد باری تعالیٰ ہے ﴿و
یوم نقوم الساعة ادخلوا ال فرعون اشد العذاب﴾ ”اور جس روز
قیامت قائم ہوگی فرعون والوں کو نہایت سخت آگ میں داخل کر دو۔ (سورة المؤمن
۳۶) اسی طرح ارشاد باری تعالیٰ ہے۔ ﴿ان المنفقین فی الذرک الأسفل من
النار﴾ ”بے شک منافقین دوزخ کے سب سے نچلے طبقہ میں جاویں گے“ (سورة

النساء: ۱۲۵)

تطبیق: منافقین اور ال فرعون کی سزا میں تضاد نہیں۔ دونوں کی سخت سزا ہے اور درک
اسل سخت عذاب ہے لیکن اصحابِ مانده کی سزا کے ساتھ تضاد ہے کیونکہ اصحابِ مانده
کے ماسوائے سخت عذاب کی نفی ہے۔

ابن الجوزی فرماتے ہیں: اصحابِ مانده کی سزا مسخ تھی۔ جنس من العذاب لم
یعدب به احد سواہم ایک خاص قسم کی سزا تھی جو کسی کو نہ دی گئی۔ فرماتے ہیں:
یسجو زان یعجل لهم فی الدنیا یہ سخت عذاب دنیا میں ہو یا عالمین سے مراد
عالموا زمانہم ان کے زمانہ کے لوگ ہیں ساری دنیا کے اور تمام زمانوں کے انسان
مراد نہیں۔ (زاد المسیر: 462/2)۔

قاضی بیضاوی فرماتے ہیں: والعالمین مطلقا فانہم مسخوا قردة وخنزیرا
ولم یعدب بمثل ذالک غیرہم عالمین سے مراد تمام انسان ہیں۔ کیونکہ ان کی
شکلیں بندروں اور خنزیر جیسی بن گئیں اور ان جیسا عذاب اللہ تعالیٰ نے ساری دنیا میں
کسی کو نہیں دیا۔ (تفسیر بیضاوی: 246/1)۔

علامہ آلوسی نے حدیث نقل کی ہے: کہ قیامت سخت عذاب اصحابِ مانده، ال
فرعون اور منافقین کو ہوگا۔ (تفسیر روح المعانی: 62/7)

سورة المائدة

تعارض: 68

آیت: 128

﴿قال النار مشواکم حال الدین فیہا إلا ما شاء اللہ﴾ ”اللہ تعالیٰ فرمائیں
گے کہ تم سب کا ٹھکانہ دوزخ ہے جس میں ہمیشہ ہمیشہ رہو گے ہاں اگر خدا کو منظور ہو تو
اور بات ہے“

اس آیت مبارکہ سے کفار کے عذاب کا دوام اور خلود معلوم نہیں ہوتا کیونکہ استثناء کا ذکر ہے جب کہ دیگر آیات سے کفار کے عذاب کا دوام اور خلود معلوم ہوتا ہے۔ ارشاد باری تعالیٰ ہے ﴿وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ﴾ (سورۃ المائدہ: ۳۷) "ان کو عذاب دائمی ہوگا" ﴿خَالِدِينَ فِيهَا اَبَدًا﴾ (سورۃ المائدہ: ۱۱۹) "جن میں وہ ہمیشہ ہمیشہ کو رہیں گے"

تطبیق: قاضی بیضاوی فرماتے ہیں: (1) - الأوقات التي تستقلون فيها من النار الى الزمهرير "اللہ کو جتنا منظور ہوگا آگ میں رکھنے کے بعد زہریر کی طرف منتقل کر دئے جائیں گے"۔ (2) - قيل الا ما شاء الله قبل الدخول كانه قيل النار مثواكم ابدا الا ما اهلكم، الا ما شاء الله كاتعلق آگ میں داخل ہونے سے قبل کے ساتھ ہے، مطلب یہ ہے کہ دوزخ تمہارا ہمیشہ کا ٹھکانہ ہے لیکن اس میں داخل ہونے سے قبل جو مہلت دی جائے۔ (تفسیر البیضاوی: 270/1)۔

ابن الجوزی فرماتے ہیں: (1) خالدين فيها أي يبعثون الا ما شاء الله من مقدار حشرهم من قبورهم ومدتهم في محاسبتهم دوزخ میں ہمیشہ رہیں گے مگر وہ مدت جب کہ قبروں سے اٹھائیں جائیں اور حشر اور حساب تک بات پہنچے۔ (2) - ويجوز ان تكون الا ما شاء الله من مقدار ان يزيدهم فيه العذاب. آگ ہمیشہ کا ٹھکانہ ہے مگر اللہ تعالیٰ اس کو جتنا زیادہ کریں اس میں عذاب کی زیادتی کی طرف اشارہ ہے۔

(3) - قال بعضهم الا ما شاء الله من كونهم في الدنيا بغير عذاب، آگ ہمیشہ کا ٹھکانہ ہے مگر جتنا عرصہ اللہ ان کو بغیر عذاب کے رکھیں، الا ما شاء الله کا تعلق دنیا کے ساتھ ہوا (زاد المسیر ج: 3/124)۔ قاضی بیضاوی نے سورۃ حمد میں اس قسم کی آیت کی تفسیر میں لکھا ہے: استثناء من خلود في النار لأن بعضهم وهم

فساق الموحدين يخرجون منها وذلك كان في صحة الاستثناء لان زوال الحكم عن الكل يكفيه زواله عن البعض. استثناء خلود سے ہے لیکن مراد فساق (گنہگار) موحدین ہیں جو آگ سے نکالیں جاویں گے۔ سوال پیدا ہو کہ یہ استثناء تو کُل کی ہے بظاہر معلوم ہوتا ہے کہ سب کو آگ سے نکالا جائیگا حالانکہ آگ میں کفار اور گناہ گار مسلمان ہوں گے تو اس کا جواب دیا کہ اس طرح کا استثناء صحیح ہے کیونکہ کُل سے حکم منہی ہو جائے تو بعض سے بھی حکم منہی ہو جائیگا۔ بظاہر تو یہ معلوم ہوتا ہے کہ تمام آگ والوں کو آگ سے نکالا جائیگا لیکن مراد اس سے بعض (گناہ گار مسلمان) ہیں۔ ایک اور توجیہ بھی ذکر کی ہے (تفسیر البیضاوی: 386/1) اللہ کفار کو ہمیشہ کے لئے عذاب میں رکھے گا لیکن الا ما شاء الله میں اللہ تعالیٰ اپنی عمومی قدرت کا ذکر کرتا ہے کہ اگر میں عذاب نہ دینا چاہوں تو یہ بھی میری قدرت میں ہے لیکن میں ایسا نہ چاہوں گا۔ اللہ تعالیٰ اگر عذاب دینے پر قادر ہے تو نہ دینے پر بھی قادر ہے۔ الا ما شاء الله میں معتزلہ کے عقیدہ کی تردید ہے ان کا عقیدہ ہے کہ کفار کو عذاب دینا حکمت کے مطابق اللہ پر واجب ہے تو اللہ تعالیٰ نے الا ما شاء الله فرما کر واضح کر دیا کہ مجھ پر واجب نہیں۔ کیونکہ وجوب کی وجہ سے مجبوری کا شائبہ پیدا ہوتا ہے۔ عذاب دینا اللہ پر واجب نہیں بلکہ یہ اللہ تعالیٰ کا عدل و انصاف ہے اور تھوڑے عمل پر زیادہ اور بے حساب ثواب عطا کرنا اس کا فضل ہے اللہ تعالیٰ اپنے قانون جزا و سزا کی پابندی تو کرتا ہے لیکن پابند نہیں کیونکہ اللہ تعالیٰ کے علاوہ کوئی اور ایسی ہستی ہے ہی نہیں جس کے سامنے اللہ تعالیٰ جوابدہ ہو۔ لہذا استثناء کا یہ مطلب نہیں کہ کفار کو عذاب سے نکالیں گے بلکہ ہمیشہ کی جحیم ان کا مقدر ہے۔

﴿وإن يروا كلاً آية لا يؤمنوا بها﴾ اور اگر وہ لوگ تمام دلائل کو دیکھ لیں ان پر بھی ایمان نہ آویں۔

اس آیت مبارکہ سے معلوم ہوا کہ کسی دلیل پر بھی ایمان نہیں لائے۔ لیکن ایک آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ بعض آیات پر ضرور ایمان لاتے ہیں۔ ارشاد باری تعالیٰ ہے ﴿إن نشاء ننزل عليهم من السماء آية فظلت أعناقهم لها خاضعين﴾ اگر ہم چاہیں تو ان پر آسمان سے ایک بڑی نشانی نازل کر دیں پھر ان کی گردنیں اس نشانی سے پست ہو جائیں۔ (سورة الشعراء: ۴۰)۔

تطبیق: علامہ آلوسی فرماتے ہیں: ونقل عن بعضهم انه لا بد من تخصيص الآية بغير الملحنة دفعا للمخالفة بين هذا وقوله تعالى ﴿إن نشاء ننزل عليهم من السماء آية فظلت أعناقهم لها خاضعين﴾. آیات میں رفع تعارض کے لئے بعض سے منقول ہے کہ آیت میں بلا مجبوری کی قید ضروری ہے یعنی کسی نشانی کو دیکھ کر اس پر ایمان نہ لانا کسی مجبوری کی وجہ سے نہ تھا واکتفی بعضهم بحمل الايمان على الايمان بالاختيار و الفرق بينه وبين خضوع الأعناق فليفهم. بعض نے آیت مبارکہ کو اس پر محمول کیا ہے کہ نفی ایمان اختیاری کی ہے اس اختیاری ایمان اور بے اختیار گردنوں کا پست ہو جانا دونوں میں فرق ہے۔

ایک اور توجیہ بھی ذکر کی ہے۔ وخص شيخ الاسلام الآية بما كان من الآيات القرآنية أي: وإن يروا شيئاً من ذلك بأن: شاهدوا بسماعه لا يؤمنوا به. شيخ الاسلام فرماتے ہیں کہ اس آیت مبارکہ میں کل آیت سے آیت قرآنیہ مراد ہے

ان آیات کا سننے سے مشاہدہ ہو جاتا ہے لیکن اس پر ایمان نہیں لاتے۔ (تفسیر روح المعانی: 126/7)۔

حکیم الامت مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں: منفی ایمان اختیاری ہے جو کہ شرع میں مطلوب ہے اور مثبت ایمان اضطراری ہے جو شرع میں مقبول نہیں۔ (بیان القرآن: 86/3)۔

﴿ثم رددوا إلى الله مولاهم الحق﴾ پھر سب اپنے مالک حقیقی کی طرف لائیں جاویں گے۔ اس آیت مبارکہ سے ثابت ہوا کہ اللہ تعالیٰ کافروں کا بھی مولیٰ ہے لیکن ایک آیت میں اس کے خلاف ہے ارشاد باری تعالیٰ ہے ﴿ذلك بأن الله مولى الذين آمنوا وإن الكافرين لا مولى لهم﴾ یہ سب اس سبب سے کہ اللہ تعالیٰ مسلمانوں کا کارساز ہے اور کافروں کا کوئی کارساز نہیں۔ (سورة محمد: ۱۱) اس آیت مبارکہ سے معلوم ہوا کہ اللہ تعالیٰ کافروں کا مولیٰ نہیں۔

تطبیق: علامہ زحمری تفسیر میں فرماتے ہیں: مولاهم مالکهم الذی یلی علیہم أمرهم۔ کافروں کا مولیٰ یعنی ان کا مالک جو ان کے تمام امور میں متصرف ہو۔ (الکشاف: 33/2)۔

سورة محمد میں علامہ زحمری لا مولی لهم کی تفسیر میں لکھتے ہیں: فان قلت قوله تعالى: ﴿ورددوا إلى الله مولاهم الحق﴾ مناقض لهذه الآية قلت: لا تناقض لأن الله تعالى مولی عبادہ جمیعاً علی معنی أنه ربهم ومالک أمرهم وأما علی معنی الناصر فهو مول المؤمنین خاصة، آیتوں میں تناقض نہیں۔

جہاں کافروں کا مولیٰ ہے اس سے مراد مالکِ حقیقی ہے جہاں یہ کہا کہ مسلمانوں کا مولیٰ ہے اس سے مراد ناصر و مددگار اور دوست ہے۔ (الکشاف: 319/4)۔

قاضی بیضاوی فرماتے ہیں: مولیٰ اللذین امنوا ناصرہم علی أعدائہم، مسلمانوں کا مددگار ہے ان کے دشمنوں کے خلاف، آگے لکھتے ہیں وہو لا یخالف قولہ تعالیٰ: ﴿وَرَدَّوَالسَّيِّئَاتِ السَّالِمَةَ مَوْلَانَهُمُ الْحَقُّ﴾ فان المولى فیہ بمعنی الممالک۔ آیتوں میں منافاة نہیں۔ کیونکہ کافروں کا مولیٰ ہونا باعتبار مالک ہے اس معنی میں تمام انسانوں کا مالک ہے۔ (تفسیر بیضاوی: 302/2)

تعارض: 71 سورة الأنعام

آیت: 61

﴿تَوَفَّنَا رَحْمَتُكَ وَأَنْتَ أَعْلَمُ الْغُيُوبِ﴾ "قبضہ میں لے لیتے ہیں اس کو ہمارے بھیجے ہوئے فرشتے اور وہ کوتاہی نہیں کرتے" اس آیت مبارکہ میں اس بات کا ذکر ہے کہ ارواح فرشتوں کی جماعت قبضہ کرتی ہیں۔ دوسری جگہ ارشاد باری تعالیٰ ہے ﴿اللَّهُ يَتَوَفَّى الْأَنْفُسَ حِينَ مَوْتِهَا﴾ "اللہ تعالیٰ ہی قبضہ کرتا ہے جانوں کو ان کی موت کے وقت" (سورۃ الزمر: ۴۲) اس سے معلوم ہوا کہ اللہ تعالیٰ خود ارواح قبض کرتا ہے۔ ﴿فَلْيَتَوَفَّكُم مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِي وُكِّلَ بِكُمْ﴾ "آپ فرمادیجئے کہ تمہاری جان موت کا فرشتہ قبض کرتا ہے جو تم پر متعین ہے" اس آیت مبارکہ میں قبض ارواح کی نسبت ملک الموت کی طرف ہے۔ تین نسبتیں الگ الگ ہیں لہذا آیتوں میں تضاد ہوا۔

تعلیق: تینوں کی طرف قبض ارواح کی نسبت صحیح ہے۔ اللہ تعالیٰ تو قبض ارواح کا حقیقی قائل ہے۔ ملک الموت علیہ السلام اس کی طرف سے قبض ارواح پر مقرر ہے جیسے لفظ ﴿وُكِّلَ بِكُمْ﴾ سے معلوم ہوتا ہے۔ اور فرشتوں کی جماعت ملک الموت علیہ السلام

کے اعوان اور مددگار ہیں۔ فرشتوں کو اللہ تعالیٰ نے اپنے اذن سے مقرر کیا ہے۔ ارشاد باری تعالیٰ ہے ﴿وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تَمُوتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ كَتَابًا مُّوجَّلاً﴾ "اور کسی شخص کو موت آنا ممکن نہیں بدون حکم خداوندی کے اس طور سے کہ اس کی میعاد معین لکھی ہوئی رہتی ہے۔ ﴿سورة ال عمران﴾

علامہ زنجیزی فرماتے ہیں: وعن قتادة: يتوفاهم ومعه أعوان من الملائكة وقيل: ملك الموت يدعو الأرواح فتجيبه ثم يأمر أعوانها بقبضها، ملك الموت کے ساتھ اعوان ہوتے ہیں۔ ایک قول یہ ہے کہ ملک الموت ارواح کو پکارتا ہے وہ لبیک کہتی ہیں پھر ملک الموت علیہ السلام اپنے اعوان ملائک کو قبض ارواح کا حکم دیتا ہے۔ (الکشاف: 509/3)۔

ابن الجوزی ﴿توفئہ رسلنا﴾ اور ﴿فل يتوفئکم ملک الموت﴾ کی تلبیق میں دو قول ذکر کرتے ہیں:

(1)۔ يجوز أن يرید بالرسول ملك الموت وحده وقد يقع الجمع على الواحد، اس سے صرف ملک الموت علیہ السلام مراد لینا صحیح ہے۔ اس لئے کہ کبھی جمع کا اطلاق واحد پر ہوتا ہے۔

(2)۔ ان اعوان ملك الموت يفعلون باسره فاضيف الكل الى فعله، مددگار فرشتے ملک الموت کے حکم سے ارواح قبض کرتے ہیں اس لئے سب کی طرف نسبت صحیح ہے۔ اس کے بعد تینوں نسبتوں کی تلبیق کرتے ہیں۔ توفی اعوان مسلک الموت بالنزع وتوفی ملک الموت بان يأمر الأرواح فتجيب ويسدعوها فتخرج وتوفی اللہ بأن یخلق الموت فی المیت۔ "ملک الموت ارواح کو پکارتا ہے اور اعوان روح نکالتے ہیں اور اللہ تعالیٰ میت میں موت پیدا کر دیتے ہے"۔ (زاد المسیر ج: 3/65)

﴿لا تدركه الأبصار﴾ "اس کو تو کسی کی نگاہ محیط نہیں ہو سکتی" اس آیت مبارکہ سے معلوم ہوتا ہے کہ اللہ تعالیٰ کو نگاہ نہیں دیکھ سکتی حالانکہ بعض آیات مبارکہ سے معلوم ہوتا ہے کہ اللہ تعالیٰ کو دیکھنا ممکن ہے۔ ارشاد باری تعالیٰ ہے۔ ﴿وجوه يومئذ ناضرة الی ربها ناظرة﴾ "بہت سے چہرے تو اس روز بارونق ہوں گے اپنے پروردگار کی طرف دیکھتے ہوں گے" (سورة القيامة: ۲۳)۔ معلوم ہوا کہ آنکھیں اللہ تعالیٰ کو دیکھ سکتی ہے۔

تطبیق: ایک ادراک ہے اور ایک رویت۔ آیت مبارکہ میں ادراک کی نفی ہے رویت کی نہیں ادراک خاص ہے اور رویت عام۔ خاص کے نفی کے ساتھ عام کی نفی نہیں ہوتی۔ ادراک کا معنی ہے کسی چیز کی حقیقت کو معلوم کرنے کے لئے ہر لحاظ سے اس کا احاطہ کرنا۔

ظاہرات ہے اللہ تعالیٰ کا ادراک ناممکن بلکہ محال ہے۔ قاضی بیضاوی فرماتے ہیں: لا تدركه لا تحيط به، اللہ تعالیٰ کی ذات کا کوئی احاطہ نہیں کر سکتا۔ (بیضاوی: 265/1)۔

امام قرطبی فرماتے ہیں: وقال ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما: لا تدركه الأبصار فی الدنيا ویراه المؤمنون فی الآخرة لاخبار اللہ بہا وجوه يومئذ ناضرة الی ربها ناظرة. دنیا میں رویت کی نفی ہے آخرت میں اثبات۔ (قرطبی: 54/7)۔

ابن کثیر فرماتے ہیں: وقال الآخرون: لا منافاة بین اثبات الرویة ونفی

الادراک اخص من الرویة فین الادراک لا یلزم من نفی الاخص انتفاء الأعم. نفی اور اثبات میں تلافی نہیں ہے۔ ادراک خاص ہے۔ خاص کے انتفاء کے ساتھ عام کی نفی نہیں ہوتی۔ (تفسیر ابن کثیر: 74/3)۔ حافظ ابن کثیر اور امام قرطبی نے رویت کو ادراک سے عام ٹھہرایا ہے۔ ابن کثیر فرماتے ہیں: لا تدركه فی الدنيا وان كانت فی الآخرة كما تواترت به الأخبار. دنیا میں اللہ تعالیٰ کو نہیں دیکھا جاسکتا اور آخرت میں اس کا دیکھنا تواتر سے ثابت ہے۔

ابن الجوزی فرماتے ہیں: وقال الزجاج: معنی الآیة الاحاطة بحقیقته وليس فیها دفع الرویة. آیت کا معنی ہے اللہ تعالیٰ کی حقیقت کا احاطہ ناممکن ہے اس سے رویت کی نفی لازم نہیں آتی۔ (زاد المسیر: 98/3)

﴿ولا تسبوا الذین یدعون من دون اللہ فیسبوا اللہ عدواً بغیر علم﴾ "اور دشنام مت دو ان کو جن کی یہ لوگ خدا کو چھوڑ کر عبادت کرتے ہیں کیونکہ پھر وہ براہ جہل حد سے گزر کر اللہ تعالیٰ کی شان میں گستاخی کریں گے" اس آیت مبارکہ سے معلوم ہوا کہ بتوں کی مذمت منع ہے لیکن بعض آیات سے بتوں کی مذمت معلوم ہوتی ہے۔ ارشاد باری تعالیٰ ہے۔ ﴿انکم وما تعبدون من دون اللہ حسب حہنکم﴾ "بلاشبہ تم اور جن کو تم خدا کو چھوڑ کر پوج رہے ہو سب تمہنم میں جھوٹے جاؤ گے" (سورة الانبیاء: ۹۸)۔ دوسری جگہ ارشاد باری تعالیٰ ہے ﴿ضعف الطالب والمطلوب﴾ "ایسا طالب بھی لپڑ اور ایسا مطلوب بھی لپڑ" (سورة الحج: ۷۳)۔

تطبیق: الہیہ باطلہ کی مذمت اور توہین فی نفسہ جائز ہے مطلقاً منع نہیں۔ ان کی برائی بیان کرنا اطاعت ہے لیکن اگر کسی طاعت سے بڑا مفسدہ پیدا ہو جائے تو پھر وہ طاعت منع ہے۔

علامہ زنجیزی فرماتے ہیں: رب طاعة علم، أنها تكون مفسدة فتخرج عن أن تكون طاعة فيجب النهي عنها لأنها معصية، جب کسی طاعت کے بارے میں پتہ چل جائے کہ اس سے مفسدہ پیدا ہو رہا ہے تو اب یہ طاعت معصیت بن گئی اس سے اجتناب واجب ہے۔ (الکشاف: 56/2)۔

علامہ آلوسی فرماتے ہیں: ان النهی فی الحقیقة انما هو عن العدول عن الدعوة الی السب، حقیقت میں اس سے منع ہے کہ بجائے دعوت دینے کے آدمی سب و شتم پر اتر آئے۔ (تفسیر روح المعانی: 252/7)۔

حکیم الامت مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں: اور قرآن مجید کی بعض آیات میں جو معبودان باطلہ کی تحقیر مذکور ہے وہ بقصد سب و شتم نہیں بلکہ مناظرہ میں بطور تحقیق مطلوب و استدلال و الزام خصم کے ہیں جو مناظرات میں مستعمل ہے قرآن سے مخاطب کو فرق معلوم ہو جاتا ہے کہ تحقیق مقصود ہے یا تحقیر اول جائز دوسرا ناجائز۔ (تفسیر بیان القرآن: 119/3)۔

سورة الأنعام

تعارض: 74

آیت: 108

﴿كَذَلِكَ زَيْنَ لِكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلُهُمْ﴾ "اسی طرح ہم نے مزین کر دیا ہر ایک فرقہ کی نظر میں ان کے اعمال" دوسری آیت مبارکہ میں فرمان باری تعالیٰ ہے ﴿وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ زَيْنَا لَهُمْ أَعْمَالُهُمْ فَيَعْمَهُونَ﴾ "جو لوگ

آخرت پر ایمان نہیں رکھتے ہم ان کے اعمال ان کی نظر میں مرغوب کر رکھتے ہیں بھٹکتے پھرتے ہیں" (سورة النمل: ۴) ایک اور فرمان خداوندی ہے ﴿وَإِذْ زَيْنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ﴾ "جب شیطان ان کے اعمال خوش نما کر کے دکھائے" (سورة الأنفال: ۴۸)۔ ان مختلف آیات سے پتہ نہیں چلتا کہ تزئین اعمال کا فاعل کون ہے کیونکہ تزئین اعمال کی نسبت کبھی شیطان کی طرف ہوتی ہے کبھی اللہ تعالیٰ کی طرف۔

تطبیق: امارازی فرماتے ہیں: التزین من الشيطان بالاغواء والاضلال والبوسوسة وایراد الشبه ومن اللہ تعالیٰ بخلق جميع ذالك فصحت الاضافتان. شیطان اغواء، اضلال، وسوسہ اور شبہات کے ذریعہ گمراہ کرتا ہے اور اللہ تعالیٰ ان سب اشیاء کا خالق ہے تو دونوں کے طرف اضافت صحیح ہے۔ (مسائل الرازی: 88)۔

ابن السعود العمدی فرماتے ہیں: ﴿زین﴾ ای: من جهة اللہ تعالیٰ بطریق الخلق عند احياء الشيطان أو من جهة الشيطان بطریق الزخرفة والتسويل. اعمال کی تزین اللہ تعالیٰ کی طرف سے بطریق الخلق ہے اور شیطان کی طرف سے بطریق البوسوسة اور ملتصق سازی کے ذریعے ہے۔ (تفسیر ابی السعود: 132/2)

سورة الأنعام

تعارض: 75

آیت: 130

﴿يَسْمَعُونَ الْحَنَ وَالْإِنْسَ أَلَمَ بِأَنْكُمْ رَسُولَ مِنْكُمْ﴾ "اے جماعت

جنات اور انسانوں کی کیا تمہارے پاس تم ہی میں کے پیغمبر نہیں آئے تھے ۳۴ آیت مبارکہ سے بظاہر یہ معلوم ہوتا ہے کہ جنات میں بھی رسول آئے تھے لیکن بعض آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ رسول صرف انسانوں میں مبعوث ہوئے ہیں۔ ارشاد باری تعالیٰ ہے۔ ﴿وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِحَالًا نَوْحِي الْبِهْمِ﴾ اور ہم نے آپ سے پہلے مختلف بستی والوں میں جتنے بھیجے سب آدمی ہی تھے جن کے پاس ہم وحی بھیجتے تھے۔ (سورۃ یوسف: ۱۰۹)۔

تطبیق: علامہ زبیر فرماتے ہیں: وقال آخرون الرسل من الإنس خاصة وإنما قيل رسل منكم لأنه جمع الثقلان في الخطاب صح ذلك وإن كان من أحدهما كقوله تعالى: ﴿يُخْرِجُ مِنْهُمَا السُّلُولَ وَالْمَرْحَانَ﴾۔ رسول صرف انسانوں میں تھے ﴿رسل منكم﴾ اس لئے فرمایا کہ اس سے قبل جنات اور انسانوں کو خطاب تھا تو ﴿منكم﴾ سب سے کہنا صحیح ہے جیسے اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے ”ان دونوں سے موتی اور مونگا برآمد ہوتا ہے“ (الکشاف: 66/2)۔ سورۃ زمر میں ٹیٹھے اور کھارے پانی کا ذکر ہے تو موتی اور مونگے صرف آب شور سے پیدا ہوتے ہیں لیکن نسبت آب شور اور آب شیریں دونوں کی طرف ہوئی۔

حافظ ابن تیمیہ فرماتے ہیں: ومعلوم أن السُّلُولَ وَالْمَرْحَانَ إِنَّمَا لِيَخْرُجَا مِنَ الْمَلْحِ لَا مِنَ الْحَلْوِ. موتی اور مونگے ٹیٹھے پانی سے نہیں بلکہ کھارے پانی سے نکلتے ہیں۔

امام قرطبی فرماتے ہیں: فمعنى ”منكم“ اى: من احدكم وکان هذا جازلاً لأن ذكرهما سبق، ”منكم“ کا معنی یہ ہے کہ تمہارے ایک جنس سے رسول بھیجا ہوا اور ”منكم“ میں سب کو مخاطب کرنا اس لئے جائز ہے کہ پہلے سب کا ذکر ہوا۔ (قرطبی: 86/7)۔

حافظ ابن کثیر فرماتے ہیں: اى: من جملتکم والرسول من الإنس فقط وليس من الجن رسل، ”تمہارے مجموعے سے رسولوں کو بھیجا اور رسول فقط انسانوں میں آئے ہیں جنات سے کوئی رسول نہیں آیا“ (تفسیر ابن کثیر: 102/3)

امام فراء فرماتے ہیں: فكانك قلت ويخرج من بعضها ومن أحدهما. (معانی القرآن: 354/1)۔

امام فراء فرماتے ہیں: کہ اگر کوئی سوال کرے کہ رسول تو صرف انسانوں میں آئے ہیں تو ﴿منكم﴾ میں سب سے کیونکر خطاب کیا جواب دیتے ہے کہ یہ صحیح ہے جیسے ﴿يُخْرِجُ مِنْهُمَا السُّلُولَ وَالْمَرْحَانَ﴾ ہے معنی یہ کہ موتی اور مونگے بعض یا ایک سے نکلتے ہیں ہر پانی سے نہیں لیکن سما کی ضمیر دونوں قسم کے پانی کی طرف راجع ہے۔

تعارض: 76 سورة الأنعام

آیت: 131

﴿ذَلِكَ إِنْ لَمْ يَكُنْ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا غَافِلُونَ﴾ ”یہ اس وجہ سے کہ آپ کا رب کسی بستی والوں کو کفر کے سبب ایسی حالت میں ہلاک نہیں کرتا کہ اس بستی کے رہنے والے بے خبر ہوں“ معلوم ہوا کہ غفلت کے ہوتے ہوئے عذاب نہیں آتا لیکن بعض آیات میں ہے کہ غفلت کے وقت جب سب انسان غافل ہوں تو اللہ تعالیٰ کے عذاب آئے ہیں۔ ارشاد باری تعالیٰ ہے ﴿وَكَمْ مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا فَجَاءَهَا بَأْسُنَا بَيَاتًا أَوْ هُمْ فَائِلُونَ﴾ ”اور کتنی ہی بستیاں ہے کہ ان کو ہم نے جاہ کر دیا اور ان پر ہمارا عذاب رات کے وقت پہنچا یا ایسی حالت میں کہ وہ دوپہر کے وقت آرام کر رہے تھے۔ (سورۃ الاعراف: ۴) معلوم ہوا کہ عذاب الہی

اچانک آتا ہے۔

امام نیشاپوری فرماتے ہیں: انما خصص وقت البیات والقبولۃ لانہما وقتا الغفلة. عذاب اس لئے رات اور قبولہ کے وقت آتا ہے کہ دونوں وقت غفلت کے ہوتے ہیں۔

تطبیق: غفلت کی دو قسمیں ہیں۔ شریعت سے غافل ہونا اور عذاب الہی کا غفلت میں آنا۔ جس غفلت کی نفی مراد ہے اس کا مطلب یہ ہے کہ عذاب جب آتا ہے تو اس وقت انسان نبی کی مبعوثیت اور شریعت سے خبردار ہوتا ہے۔ جس قوم کو اللہ تعالیٰ نے ہلاک کیا ہے اول انبیاء کرام علیہم الصلاۃ والسلامیت بھیجے، شریعت سے خبردار کیا پھر عذاب آیا۔ اور جن آیات میں آیا ہے کہ غفلت کے وقت عذاب آتا ہے وہ انسانوں کی عذاب الہی سے غفلت ہوتی ہے کسی معذب قوم کو پتہ نہیں چلتا کہ عذاب کب اور کس وقت آئے گا۔

علامہ زختری فرماتے ہیں: انه لو اهلكهم وهم غافلون لم ينبهوا برسول وكتاب، ایسی حالت میں ہلاک نہیں کرتا کہ لوگ کتاب اور رسول سے بے خبر ہوں۔ (الکشاف: 67/2)۔

قبل ارسال الرسل اليهم فيقولوا ما جاءنا من بشير ولا نذير، رسولوں کے بھیجنے سے قبل ہلاک نہیں کرتا کہ پھر یہ کہیں کہ ہمارے پاس کوئی بشیر اور نذیر نہیں آیا۔ (تفسیر قرطبی: 87/7)۔

قاضی ثناء اللہ پانی پٹی فرماتے ہیں: لم يشهوا برسول، اللہ تعالیٰ ہلاک نہیں کرتا جب تک رسولوں کے ذریعے ہستی والوں کو متنبہ نہ کر دے۔ (تفسیر مظہری: 290/3)۔

﴿سيقول الذين اشركوا لو شاء الله ما اشركنا﴾ ”یہ مشرکین یوں کہنے کو ہیں کہ اگر اللہ تعالیٰ کو منظور ہوتا تو نہ ہم شرک کرتے“ ایک اور ارشاد باری تعالیٰ ہے ﴿وقالوا لو شاء الرحمن ما عبدناهم﴾ ”اور وہ لوگ یوں کہتے ہیں کہ اگر اللہ تعالیٰ چاہتا تو ہم ان کی عبادت نہ کرتے“ (سورۃ الزخرف: ۲۰)۔

ان آیات سے بظاہر معلوم ہوتا ہے کہ کفار اپنے اس قول میں سچے ہیں کیونکہ سب کچھ اللہ تعالیٰ کے قبضے میں ہے اور کفار کے قول کی تائید بھی بعض آیات سے ہوتی ہے۔ ارشاد باری تعالیٰ ہے ﴿وما تشاءون الا ان يشاء الله رب العالمين﴾ ”اور تم بدون خدائے رب العالمین کے چاہے کہ کچھ نہیں چاہ سکتے“ (سورۃ التکویر: ۲۹) دوسری جگہ ارشاد باری تعالیٰ ہے ﴿ولو شاء الله ما اشركوا﴾ ”اور اگر اللہ تعالیٰ کو منظور ہوتا تو یہ شرک نہ کرتے“ (سورۃ الأنعام: ۱۰۷)۔ اس آیت میں تو تصریح ہے کہ اگر اللہ تعالیٰ نہ چاہے تو وہ شرک نہ کریں اور کفار نے بھی بعینہ یہی کہا لیکن کفار کے اس قول کی اللہ تعالیٰ نے تردید کر دی ہے ﴿ما لهم بذلك من علم ان هم الا يخرصون﴾ ”ان کو اس کی کچھ تحقیق نہیں محض بے تحقیق بات کر رہے ہیں“ (الزخرف: ۲۰) ایک اور جگہ ارشاد باری تعالیٰ ہے ﴿ان تستمعون الا الظن وان انتم الا تخرصون﴾ ”تم لوگ محض خیالی باتوں پر چلتے ہو اور تم بالکل بالکل سے باتیں بناتے ہو“ (سورۃ الأنعام: ۱۴۸) اس تعارض کا مطلب یہ ہے کہ عیاذ باللہ اللہ تعالیٰ اپنے حق کلام کی تردید کر رہا ہے۔

تطبیق: اللہ تعالیٰ کی مشیت کی دو قسمیں ہیں۔ تکوینی اور تشریحی دنیا میں کفر و شرک اور تمام معاصی اور جملہ امور اس کی تکوینی مشیت کے تابع ہیں جس کی حکمت وہی علام اور خیر جانتا ہے۔ وہ حکیم علی الاطلاق ہے۔ ایک ذرہ اس کی مشیت کے بغیر ہل نہیں سکتا

۔ عقائد کا مسئلہ بھی ہے اور حدیث بھی ہے۔ ماننا، اللہ کان و مالہ یسأ۔ لم یکن جو اللہ تعالیٰ چاہے وہ ہوگا جو نہ چاہے وہ نہ ہوگا۔ دوسری مشیت تشریحی ہے۔ اس مشیت کی وجہ سے انسان کو مکلف بنایا۔ تکوینی مشیت میں ہر شئی محتاج ہے۔ تشریحی مشیت میں مکلف خود مختار اور ارادہ کا مالک ہے۔ تشریحی مشیت میں اللہ تعالیٰ کفر و شرک اور جملہ معاصی کو ناپسند کرتا ہے۔ ارشاد باری تعالیٰ ہے ﴿لَا يَرْضَى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ وَإِن تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ﴾ اور وہ اپنے بندوں کے لئے کفر کو پسند نہیں کرتا اور اگر تم شکر کرو گے تو اس کو تمہارے لئے پسند کرتا ہے“ (سورۃ الزمر: ۷) کفر و شرک سے ممانعت ایک تشریحی حکم ہے جس میں انسان خود مختار ہوتا ہے۔ کفار نے تکوینی امر پر قیاس کر کے کہا ﴿لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَوْ شَاءَ الرَّحْمَنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ﴾ حالانکہ جب اللہ ایک بات کا حکم کر دے اور کسی بات سے روک دے تو اس کے مطابق عمل ضروری ہے پھر اسی طرح بات اللہ تعالیٰ کی مشیت پر نال کر اپنے کفر و شرک کو جواز کی سند دینا تار عنکبوت کا سہارا لینا ہے۔

ابن الجوزی فرماتے ہیں: فعلى العبد اتباع الامر وليس له ان يتعلل بالمشية بعد ورود الامر. ”بندہ کو چاہئے کہ اتباع امر کرے ورنہ امر کے بعد مشیت تلاش کرنا غلط ہے۔ (زاد المسیر ج: 3/145)۔

﴿لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكُوا﴾ ایک حق کلمہ ہے لیکن کفار نے اس سے باطل کا ارادہ کیا ہے۔ اللہ تعالیٰ کا کہنا کہ اگر اللہ تعالیٰ چاہتا تو کفار شرک نہ کرتے یہ تکوینی ارادہ اور مشیت ہے تشریحی امور میں اللہ تعالیٰ کبھی بھی نہیں چاہتے کہ کوئی شرک اور گناہ کا ارتکاب کرے لیکن کفار کو یہ بات زیب نہیں دیتی کہ وہ یہ کہیں کہ اگر اللہ تعالیٰ نہ چاہتے تو ہم شرک نہ کرتے کیونکہ وہ ترک شرک پر مکلف تھے اختیاری بات کو غیر اختیاری بات پر قیاس کر دیا۔ اختیاری امور میں غلطی کرنے کے بعد کسی کو یہ حق حاصل نہیں کہ وہ

یوں کہے کہ اللہ تعالیٰ کو ایسا منظور تھا اور وہ کہہ بھی دے تو اس کو کوئی معاف نہیں کرتا، دنیا کے اندر کتنے جرائم رونما ہوتے ہیں سب کے لئے کوئی نہ کوئی سزا ہوتی ہے اگر کفار کے اس قول کو صحیح کہہ دیا جائے تو پوری دنیا کے اندر جو روش جاری ہے وہ غلط ہو جائے گی تمام انبیاء کرام کی تکذیب ہو جائیگی ارسال رسل اور کتب پر کار ہو جائیں گی۔ تمام شریعت یکسر بے کار ہو کر رہ جائیگی۔ مسلمان بھی کہتا ہے کہ سب کچھ اللہ تعالیٰ کرتا ہے لیکن ایمان کی وجہ سے کہتا ہے کفار اس کو استہزاء کہا کرتے تھے۔

امام قرطبی فرماتے ہیں کفار کا قول: ﴿لَوْ شَاءَ الرَّحْمَنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ﴾ استہزاء کے طور پر تھا و لهذا منهم كلمة حق اريد بها الباطل. کفار بتوں کی عبادت کرتے تھے ملائکہ کو بنات اللہ کہتے تھے تو اس کے بدلے میں اللہ تعالیٰ نے فرمایا ﴿مَا لَهُمْ بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ﴾ (تفسیر قرطبی: 73/16)۔

ابن الجوزی فرماتے ہیں: کہ ﴿سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا﴾ کے سیاق و سباق سے معلوم ہوتا ہے کہ کفار نے یہ بات اس وقت کہی کہ ان پر حق بات واضح ہو گئی تھی و انما قالوا مستهزئين فرماتے ہیں۔ بعض المفسرين يقول: انما اشار بقوله: ﴿مَا لَهُمْ بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ اذعانهم ان الملائكة انا قال: ولم يتعرض لقولهم ﴿لَوْ شَاءَ الرَّحْمَنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ﴾ لانه قول صحيح. اللہ تعالیٰ نے ان کے دعوے کی تردید کی ہے الملائكة بنات الله. اللہ تعالیٰ نے مشرکین کے قول: ﴿لَوْ شَاءَ الرَّحْمَنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ﴾ کی تردید نہیں کی کیونکہ یہ قول صحیح اور حق ہے۔ (زاد المسیر ج: 3/135) مشرکین کا ایک قول تھا۔

اسی طرح ﴿لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا﴾ اور ایک ان کا دعویٰ کے ملائکہ اللہ تعالیٰ کی بیٹیاں ہیں اور بت معبود ہے۔ تو ان کا دعویٰ غلط اور نفس قول صحیح تھا اس لئے تردید صرف ان کے دعویٰ کی ہوئی ہے ان کے اقوال کی نہیں ہوئی۔ ایک کلام کا مدلول ہوتا

ہے ایک غرض کلام اللہ تعالیٰ نے ﴿ان ہم الا یخسر صون﴾ سے ان کے قول ﴿ولو شاء الرحمن ما عبدناہم﴾ کی تردید اور تغلیظ نہیں کی۔ کیونکہ کفار کے اس قول کا مدلول بالکل صحیح ہے کہ اگر اللہ تعالیٰ چاہیں تو کفار شرک نہ کریں بلکہ اللہ تعالیٰ نے کفار کے اس کلام کی تغلیظ ان کے غرض کے اعتبار سے کی ہے اس لئے ان کی غرض اپنے شرک کے جواز اور استہزاء کی تھی تو اللہ تعالیٰ نے اس غرض کے اعتبار سے فرمایا ﴿ان ہم الا یخسر صون﴾ اس کی ایک نظیر سورۃ لیس میں ہے۔ ﴿واذا قیل لہم انفقوا مما رزقکم اللہ قال الذین کفروا للذین آمنوا انظعم من لو یشاء اللہ اطلعہم ان انتم الا فی ضلل مسین﴾ اور جب ان سے کہا جاتا ہے کہ اللہ تعالیٰ نے جو کچھ تم کو دیا ہے اس میں سے خرچ کرو تو یہ کفار مسلمانوں سے یوں کہتے ہیں کہ ہم ایسے لوگوں کو کھانے کو دیں جن کو اگر خدا چاہے تو کھانے کو دیدے تم تو صریح غلطی میں ہو۔ (آیت ۴۷) اس آیت مبارکہ میں کفار کے قول ﴿من لو یشاء اللہ اطعمہ﴾ کا مدلول صحیح ہے لیکن غرض ان کی شرارت تھی تو اس شرارت کے اعتبار سے اللہ تعالیٰ نے فرمایا کہ تم نری صریح غلطی میں ہو اللہ تعالیٰ نے کفار کے کلام کے مدلول کی نفی اور تردید نہیں کی۔

قاضی بیضاوی فرماتے ہیں: ﴿وقالوا لو شاء الرحمن ما عبدناہم﴾ ای: لو شاء عدم عبادۃ الملائکۃ ما عبدناہم فاستدلوا بنفی مشیتہ عدم العبادۃ علی امتناع النهی عنہا او علی حُسنتها وذلك باطل لأن المشیۃ ترجیح بعض الممكنات علی بعض مأموراً کان او منہیاً حسناً کان او غیرہ ولذلك جہلہم فقال ما لہم بذلك من علم۔ "اگر اللہ تعالیٰ ملائکہ کی عبادت نہ چاہتے تو ہم ملائکہ کی عبادت نہ کرتے۔ کفار نے اس عدم مشیت سے دلیل پکڑ لی کہ ملائکہ کی عبادت منع نہیں یا اس کے اندر حسن ہے حالانکہ یہ بات غلط ہے کیونکہ مشیت کا تعلق ممکنات

کے ساتھ ہے ایک ممکن کو دوسرے پر ترجیح دینا خواہ وہ ممکن مأمور بہ ہو یا منہی عنہ حسن ہو یا قبیح اس لئے اللہ تعالیٰ نے کفار کو جہل کی طرف منسوب کر کے فرمایا ان کو اس کی کچھ تحقیق نہیں" (تفسیر بیضاوی: 280/2)۔

قاضی بیضاوی کی توجیہ کا حاصل یہ ہے کہ کفار کا خیال تھا کہ مشیت کا تعلق صرف جائز کام کے ساتھ ہے جو کام جائز ہیں۔ وہاں صرف مشیت باری ہوگی۔ حالانکہ مشیت کا تعلق جائز اور ناجائز دونوں کے ساتھ ہے۔ جب کفار نے مشیت کو صرف جواز کے دائرے میں خاص کر دیا تاکہ اللہ تعالیٰ پہلے ملائکہ کی عبادت کرنا صحیح ہو جائے تو اللہ تعالیٰ نے ان کے جہل کو آشکارا کر دیا کہ کفار کا قول ﴿لو شاء الرحمن ما عبدناہم﴾ ایک بے سند بات ہے۔

تعارض: 78: سورة الانعام

آیت: 160

﴿من جاء بالحسنة فله عشر امثالها﴾ "جو شخص نیک کام کریگا اس کو اس کے دس حصے ملیں گے" اس آیت مبارکہ سے معلوم ہوا کہ ایک نیکی کا اجر دس نیکیوں کے برابر ہے جبکہ دیگر آیات سے سات سوا اس سے بھی زیادہ اجر معلوم ہوتا ہے۔ ارشاد باری تعالیٰ ہے ﴿مثل الذین ینفقون اموالہم فی سبیل کمثل حبة انبت سبع مسابیل فی کل منبلة مائة حبة واللہ ینضعف لمن یشاء﴾ "جو لوگ اللہ تعالیٰ کی راہ میں اپنے مالوں کو خرچ کرتے ہیں ان کے خرچ کئے ہوئے مالوں کی حالت ایسی ہے جیسے ایک دانہ کی حالت جس سے سات بالیں ہمیں ہر بال کے اندر سو دانے ہوں اور یہ افزونی خدا تعالیٰ جس کو چاہتا ہے عطا فرماتا ہے" (سورۃ البقرۃ: ۲۶۱) اس آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ سات سو تک نیکیوں کا اجر ملتا ہے۔

تطبیق: علامہ آلوسی فرماتے ہیں: وهذا اقل ما وعد من الاضعاف وقد جاء

الوعد بسبعين وسبعمانه وبغير حساب ولذلك قيل: المراد بالحشر الكثرة لا الحصر في العدد الخاص. اللہ تعالیٰ نے زیادہ نیکیاں اجر میں دینے کا جو وعدہ کیا ہے تو دس نیکیوں کا اجر ملنا اس میں اقل درجہ ہے۔ اللہ تعالیٰ نے تو ستر اور سات سو کا اور بلا حساب عطا کرنے کا بھی وعدہ کیا ہے اس لئے کہا گیا ہے کہ عشرہ سے خاص عدد مراد نہیں بلکہ کثرت مراد ہے۔ (تفسیر روح المعانی: 69/8)۔

امام قرطبی فرماتے ہیں: ولہذا قال البعض العلماء: العشر لسائر الحسنات والسبعمانه للنفقة في سبيل اللہ والخاص والعام فيه سواء وقال بعضهم: يكون للعوام عشرة. وللخواص سبعمانه وأكثر الى ما لا يحصى. وهذا يحتاج الى توقيف. والأول أصح. بعض علماء کرام فرماتے ہیں کہ عام نیکیوں کا اجر دس گنا ہے اور فی سبیل اللہ خرچ کرنے پر سات سو گنا ہے۔ اس میں عام و خاص سب برابر ہیں۔ بعض کہتے ہیں کہ عوام کو دس گنا اجر ملتا ہے اور خواص کو سات سو گنا سے لیکر لامحدود اجر ملتا ہے۔ لیکن یہ قول دلیل سمعی کا محتاج ہے اول قول صحیح ہے کیونکہ ایک حدیث شریف میں ہے: (أما حسنة بعشر فمن عمل حسنة فله عشر أمثالها وأما حسنة بسبعمانه فالنفقة في سبيل اللہ - (تفسیر قرطبی: 151/7)۔

امام رازنی فرماتے ہیں: قال بعضهم: التقدير بالعشرة ليس المراد منه التحديد بل الأداة الاضعاف مطلقاً "بعض فرماتے ہیں کہ عشرہ سے تحدید مراد نہیں بلکہ مطلقاً افزونی مراد ہے" تھوڑا آگے چل کر لکھتے ہیں: والدليل على أنه لا يمكن حمله على التحديد قوله تعالى: ﴿مِثْلَ الَّذِينَ بَنُوا قُرُونَ﴾ - اللهم في سبيل اللہ ﴿اس بات کی دلیل کہ عشرہ میں تحدید مطلوب نہیں یہ آیت ہے جو آدمی اللہ تعالیٰ کے راستے میں اپنے اموال خرچ۔۔۔ (تفسیر کبیر: 9/14)۔

قاضی بیضاوی فرماتے ہیں: المراد بالعشرة الكثرة دون العدد "عشرہ سے کثرت مراد ہے عدد نہیں۔ (تفسیر بیضاوی: 276/1)۔

حکیم الامت مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں: ادنی درجہ کے اخلاص کے ساتھ اس کا ثواب دس حصے ملتا ہے ﴿من جاء بالحسنة فله عشر أمثالها﴾ میں اسی ادنی درجہ کا بیان ہے۔ تیسرے زیادہ اخلاص یعنی اس کے اوسط یا اعلیٰ درجے کے ساتھ اس کے لئے اس آیت میں وعدہ ہے کہ سات سو تک علی حسب تفاوت المراتب۔ (تفسیر بیان القرآن: 157/1)۔

علامہ شبیر احمد عثمانی فرماتے ہیں: کہ جس نے ایک نیکی کمائی تو کم از کم دس نیکیوں کا ثواب ملے گا زائد کی حد نہیں ﴿واللہ یضاعف لمن یشاء﴾ (تفسیر عثمانی: ص 193)۔

سورة الاعراف

تعارض 79

آیت 15

﴿قَالَ انظروني الي يوم يبعثون قال انك من المنظرين﴾ وہ کہنے لگا مجھ کو مہلت دیجئے قیامت کے دن تک اللہ تعالیٰ نے فرمایا کہ تجھ کو مہلت دی گئی ہے۔ معلوم ہوا کہ کافر کی دعا بھی قبول ہوتی ہے کیونکہ ابلیس کافر ہے حالانکہ بعض آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ کافر کی دعا قبول نہیں ہوتی۔ (ومساعداء الكافرين الا في ضلال)۔ سورة المؤمنون آیت / 50 ﴿اور کافروں کی دعا محض بے اثر ہے۔

بالکل اسی طرح آیت سورة الرعد میں ہے۔ (آیت 14) قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں۔

﴿وفيه دليل على ان احابة الدعاء غير مختص باهل الاسلام والطاعة﴾ (مکتبہ
ج ۳/ص ۳۳۳).

علامہ آلوسی بھی فرماتے ہیں کہ ظاہر یہی ہے کہ کافر کی دعا قبول ہوتی ہے حکیم الامت
مولانا اشرف علی تھانویؒ فرماتے ہیں دنیا میں کافر کی دعا قبول ہو سکتی ہے جیسا ابلیس نے
عمر طویل مانگی اور منظور کی گئی۔ ﴿بیان القرآن ج ۱۰/ص ۳۳﴾.

تطبیق :- بعض مفسرین کے نزدیک شیطان کی دعا قبول نہیں ہوتی۔ وہ جملہ انک من
المنظرین کو خبر پر محمول کرتے ہیں۔ یہ اللہ نے اپنے تقدیری فیصلہ کی خبر دی
ہے۔ علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔ قال بعض المحققين الحملة اخبار عن كونه
من المنظرين في قضاء الله تعالى من غير ترتيب على دعائه. بعض محققین
فرماتے ہیں کہ جملہ اللہ تعالیٰ کی تقدیری فیصلہ کی خبر ہے۔ یہ جملہ شیطان کی دعا کی
اجابت نہیں۔ ﴿روح المعانی ج ۸/ص ۹۲﴾ اس تشریح کے ساتھ آیات کے مابین
بالکل تضاد نہیں رہتا۔

جن مفسرین کے نزدیک کافر کی دعا دنیا میں قبول ہوتی ہے تو وہ دفع تعارض میں
فرماتے ہیں کہ کافر کی دعا آخرت میں قبول نہیں ہوتی۔ مولانا تھانویؒ کی یہی تحقیق
ہے۔ سورۃ المؤمنون میں تصریح ہے کہ کفار آخرت میں پکاریں گے لیکن ان کی یہ
پکار بے اثر ہوگی لیکن سورۃ الرعد میں جو ذکر ہے کہ کفار کی دعا بے اثر ہے وہ دنیا میں
ہے۔ کیونکہ گزشتہ آیات جو اس آیت کے ساتھ ملی ہوئی ہیں۔ یہی معلوم ہوتا ہے کہ
ان کی پکار بے اثر ہے۔ کفار بتوں کو پکارتے ہیں وہ جواب نہیں دیتے۔ اور پھر فرمایا
کہ کفار کی دعا محض بے اثر ہے۔ والذین يدعون من دونه لا يستجيبون لهم
﴿سورۃ الرعد آیت ۱۳﴾

عدم اجابت اگر بتوں کی طرف سے ہے تو پھر کوئی تعارض نہیں رہتا۔ کیونکہ کفار کی

دعا بے اثر چلی گئی۔ اور کافر کی دعا دنیا میں قبول نہ ہوئی۔ الرعدم اجابت کی نسبت اللہ
کی طرف کی جائے تو تعارض باقی رہتا ہے۔ امام نیشاپوری فرماتے ہیں ان کی
دعا قبول کیوں نہیں ہوتی۔ وجہ لکھتے ہیں "لا يستجيبهم لحقارة امرهم" حقارۃ
کفار کو جواب نہیں ملتا کیونکہ ان کی پکار غلط ہے۔ اس صورت میں انک من
المنظرین سے تعارض رہے گا۔ کیونکہ مہلت دینے سے معلوم ہوا کہ دنیا میں
دعا قبول کرتا ہے۔ اور لا يستجيبون لہم سے معلوم ہوا کہ اللہ ان کی پکار کو قبول نہیں
کرتا۔ اس کا یا تو یہ جواب ہے۔ عدم اجابت بتوں کی طرف سے ہے جیسے ابو جعفر طبری
نے لکھا ہے ای هذا الذي يدعون من دون الله هذا الوثن
وهذا الحجر لا يستجيب له بشئ ابداً. جو پتھر کے بت کو پکارتا ہے وہ بت اس
کو کبھی بھی جواب نہ دے گا۔ (تفسیر طبری ج ۱۳/ص ۸۷).

اور اگر عدم اجابت اللہ کی طرف سے ہو تو دفع تعارض کیلئے یہ توجیہ کافی ہے کہ اللہ
تعالیٰ ہر کافر کی دعا قبول نہیں کرتا۔ بلکہ کبھی کبھار ایک آدھ کافر کی دعا قبول
کرتا ہے۔ کیونکہ اکثر کافروں کی دعا بے اثر ہوتی ہے جو دعا قبول کرتا ہے۔ وہ بھی
بطور استدراج کے ہوتا ہے جس میں کافر کا فائدہ نہیں ہوتا اس لئے فرمایا کہ کافروں
کی دعا بے اثر ہے۔

قل ان الله لا يامر بالفحشاء. آپ کہہ دیجئے کہ اللہ تعالیٰ فحش بات کی تعلیم نہیں دیتا۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ اللہ تعالیٰ کسی کو گناہ کا حکم نہیں دیتا لیکن ایک اور آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ اللہ تعالیٰ اپنے بندوں کو فسق کا حکم دیتا ہے۔ ارشاد بانی ہے واذ اردنا ان نهلك قرية امرنا متر فيها ففسقوا فيها. اور جب ہم کسی بستی کو ہلاک کرنا چاہتے ہیں تو اس کے خوش عیش لوگوں کو حکم دیتے ہیں پھر وہ لوگ وہاں شرارت مچاتے ہیں۔ (سورة بنی اسرائیل آیت ۱۳)۔

تفہیم:- جلال الدین سیوطی فرماتے ہیں بالطاعة على لسان رسولنا لوگوں کو انبیاء کرام کے ذریعہ اپنی اطاعت کا حکم دیا تھا۔ (جلالین ص ۲۳۱)

امام رازی فرماتے ہیں. والحق ما ذكر الكل وهو ان المعنى امرناهم بالاعمال الصالحة وهي الايمان والطاعة والقوم خالفوا ذلك الامر عندنا وادقوا على الفسق. حق بات وہی ہے جو سب نے ذکر کی ہے۔ کہ ان اعمال صالحہ یعنی ایمان اور اطاعت کا حکم ملا تھا لیکن انہوں نے عناد کی وجہ سے مخالفت کر کے فسق کا اقدام کیا۔ (کبیر ج ۲۰/ص ۱۷۵)۔

اکثر مفسرین نے یہی لکھا ہے کیونکہ اس سے اگلی آیت میں اللہ فرماتے ہیں کہ کسی قوم کو عذاب نہیں دیتا جب تک ان کے پاس رسول نہ بھیجوں تو رسول کا کام ہی لوگوں کو ایمان اور اطاعت کی طرف بلانا ہے۔

اگر امر فسق کا دیا تھا تو اس کے بارے میں علامہ زنجیری کی توجیہ یہ ہے فرماتے ہیں کہ ان کو حقیقتاً فسق کا امر نہیں کیا گیا ورنہ اللہ تعالیٰ یوں ارشاد فرماتے فسقوا ثم فسق کرو۔ امر کا اطلاق یہاں مجازاً ہے مجاز کی صورت یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے ان

پر جو انعامات کئے ان کے غلط استعمال کی وجہ سے وہ فسق کا ذریعہ بن گئے۔ اسی سبب کے درجے میں یوں لگتا ہے کہ گویا وہ فسق پر مامور تھے فرماتے ہیں 'ووجه المجاز انه صب عليهم النعمة صبا ف جعلوها ذريعة الى المعاصي واتباع الشهوات فكانهم مامورون بذلك لتسبب ايلاء النعمة فيه. (الکشاف ج ۲/ص ۲۵۴)۔

علامہ زنجیری نے دوسری توجیہ بھی کی ہے۔ وقد فسر بعضهم امرنا بكثرنا ہم نے خوش عیش لوگوں کی تعداد بڑھا دی۔

حافظ ابن کثیر فرماتے ہیں. اكثرنا عدد هم. ہم ان کی تعداد بڑھا دیتے ہیں۔ امام رازی فرماتے ہیں. قال الواحدى العرب تقول امر القوم اذا كثروا و امرهم الله اذا كثروهم. عرب قوم کی کثرت کی وجہ سے کہتے ہیں امر القوم. جب اللہ قوم کو زیادہ کر دیتا ہے تو کہتے ہیں امرهم الله. حدیث ہر قتل میں ہے بھی لقد امر امر ابن ابی كبشة اى كثر.

امام فراء فرماتے ہیں معنی امرنا بالمد اكثرنا. مد کیساتھ کثرت کے معنی میں ہے۔ امام فراء فرماتے ہیں امرنا متر فيها و هو موافق لتفسير ابن عباس وذلك انه قال سلطان رؤساءها ففسقوا فيها. امرنا شد کیساتھ ہے یعنی امیر مقرر کرنا۔ ہم نے قوم پر بڑے بڑے سردار مسلط کر دئے۔ انہوں نے شہر میں فسق شروع کیا۔ (معانی القرآن ج ۲/ص ۱۱۹)

تجربہ اس پر شاہد ہے کہ مال قتنہ ہے اور حدیث میں بھی مال کو قتنہ کہا ہے۔ جہاں کہیں خوش عیش لوگوں کے ہاتھ میں اقتدار آتا ہے تو اللہ اور رسول سے بغاوت شروع کر دیتے ہیں فسق کے اصل بانی یہ رؤساء ہوتے ہیں۔

قاضی بیضاوی فرماتے ہیں کہ خوش عیش لوگوں کا قوم اتباع شروع کر دیتی ہے اور وہ

نشد دولت اور اقتدار کی وجہ سے حماقت پر اتر آتے ہیں۔ (بیضاوی ج ۱/ص ۳۵۹)۔
اس کا لازمی نتیجہ ہر طرف فسق و فجور ہوتا ہے۔ حافظ ابن کثیر فرماتے ہیں ان کو فسق کا حکم
تشریح نہیں دیا گیا۔ بلکہ تکوینی امر ہے۔ معناه امرنا متر فیہا ففسقوا فیہا امرأ
قدربا۔ کقولہ تعالیٰ اناہما امرنا لیللا اور نہارا، دن میں یارات میں اس پر
ہمارا امر آیا۔ (سورۃ یونس آیت ۲۳)۔

آگے لکھتے ہیں معناه انه سخرهم الی فعل الفواحش فاستحقوا العذاب۔ ان
کے لئے فحش افعال مسخر ہو گئے۔ جس کی وجہ سے عذاب کے مستحق ہو گئے (ابن
کثیر ج ۳/ص ۲۹۵)۔

اس تکوینی امر کی قرآن مجید میں کئی مثالیں ملتی ہیں۔ ارشاد ہے۔ فلما جاء امرنا
نجینا صالحا سو جب ہمارا حکم آپہنچا ہم نے صالح کو نجات دی۔ (سورۃ ہود آیت
۶۶)۔ فلما جاء امرنا جعلنا عالیہا سافلہا سو جب ہمارا حکم آپہنچا تو ہم نے اس
زمین کا اوپر کا تختہ تو نیچے کر دیا۔ (سورۃ ہود آیت ۸۲) ان آیتوں میں تکوینی
امر کا ذکر ہے اسی طرح امرنا متر فیہا میں تکوینی امر ہے۔ ان کو تشریحی طور پر نہیں
کہا کہ فسق کرو فسق تو انہوں نے خود کیا لیکن ارتکاب فسق کے بعد اس
پر ایجاد اور تخلیق امر کا اطلاق صحیح ہے۔ والعلم عند اللہ

سورة الاعراف

تعارض 81

آیت 51

فالیوم ننتسأهم کما نسأو القاء یومہم ہذا۔ سو ہم بھی آج کے روز ان کا نام نہ
لیں گے جیسا کہ انہوں نے اس دن کا نام تک نہ لیا۔
وقیل الیوم ننتسأکم کما نسئتم لقاء یومکم ہذا۔ اور کہا جاوے گا کہ آج ہم تم کو بھلا دیتے ہیں

جیسا کہ تم نے اپنے اس دن کے آنے کو بھلا رکھا ہے۔ (سورۃ الجاثیہ آیت ۳۴)۔
اس طرح کی اور بھی آیتیں ہیں جن سے بظاہر یہ معلوم ہوتا ہے کہ اللہ بھولتا ہے اس
لئے تو آخرت میں مجرمین وغیرہ کو بھلا دیا جائیگا۔ لیکن سورۃ طہ کی آیت لا یضل
ربی ولا ینسی! سے صراحتاً معلوم ہوتا ہے۔ کہ اللہ تعالیٰ پر نسیان اور بھول طاری نہیں
ہوتا۔ آیت کا معنی یہ ہے۔ میرا رب نہ غلطی کرتا ہی اور نہ بھولتا ہے۔ (آیت ۵۲)۔

تطبیق: جن آیات میں اللہ تعالیٰ نے مجرمین کے عذاب کا ذکر کیا ہے اور اس
کے ساتھ نسیان کی اپنی طرف نسبت کی ہے تو ان آیات میں نسیان بمعنی ترک
ہے۔ یعنی ہم تم کو یوں ہی چھوڑ دیں گے تمہارا کوئی پرسان حال نہ ہوگا۔ ہماری عام
بول چال میں بھی یوں کہا جاتا ہے جب کوئی جان بوجھ کر کسی کی خبر گیری نہیں
کرتا تو وہ آدمی شکوۃ اس کو کہتا ہے کہ ہمیں بھلا کر رکھ دیا۔ اسی لئے تمام تفاسیر میں
جہاں جہاں اللہ تعالیٰ نے مجرمین کی سزا کے وقت نسیان کی نسبت اپنی طرف کی ہے
اس کا معنی ترک ہے۔ یہاں صرف ایک تفسیر کے حوالہ پر اکتفاء کیا جاتا ہے۔ علامہ
زختری فرماتے ہیں بترککم فی العذاب کما ترکتم عدۃ (الکشاف ج ۴ ص ۲۹۳)۔
ہم تم کو عذاب میں چھوڑ دیں گے جس طرح تم نے میرے وعدے کا پاس
چھوڑ دیا تھا۔

سورة الاعراف

تعارض: 82

54

الآلۃ الخلق ولہ الامر۔ یاد رکھو اللہ ہی کے لئے خاص ہے خالق ہونا اور حاکم
ہونا۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ خلق کی طرح امر بھی اللہ کا خاصہ ہے حالانکہ دیگر آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ غیر اللہ بھی امر کرتے ہیں۔ ارشاد باری ہے ”تاسمروا بالمعروف“ حکم کرتے ہو جیسے کاموں کا۔ (آل عمران 110)۔

”وامر اهلك بالصلوة“ اور حکم کراپنے گھر والوں کو نماز کا (ظہ 132)

تطبیق:..... امام رازی فرماتے ہیں۔ المراد بالامر ہنا قولہ تعالیٰ (کن) عند خلق الاشياء وهد الامر الذي به الخلق مخصوص به كالخلق. اس آیت میں امر سے مراد (کن) ہے اور امر بایں معنی خلق کی طرح اللہ تعالیٰ کے ساتھ مختص ہے۔ (مسائل الرازی ص 94)

علامہ زبیری فرماتے ہیں ای هو الذي خلق الاشياء كلها وهو الذي صرفها على حسب ارادته. اللہ ہر چیز کا خالق ہے اور اپنے ارادہ کے مطابق اس میں تصرف کرتا ہے (اکشاف ج 2 ص 110) امر سے مراد تصرف اور تخییر ہے۔ ابن الجوزی فرماتے ہیں۔ ”وقبل الامر القضاء“ امر سے مراد قضا ہے۔ (زاد المسیر ج 3 ص 214)۔

ابن السعد والعمادی فرماتے ہیں ”فانه موجد لكل والمتصرف فيه على الاطلاق“ وہ علی الاطلاق متصرف ہے۔ (تفسیر ابن السعد ج 2 ص 169) امر سے متصرف مراد ہے۔

سورة الاعراف

تعارض: 83

آیت 78

”فأخذتهم الرجفة“ پھر آپکڑا ان کو زلزلہ نے۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ قوم

شعیب کا عذاب زلزلہ تھا۔ ایک آیت میں فرمایا ”فأخذهم عذاب يوم الظلة“ پھر ان کو سائبان کے واقعہ نے آپکڑا (سورة الشعراء آیت ۱۸۹) ایک اور ارشاد ہے ”وأخذت الذین ظلموا الصیحة“ اور ان ظالموں کو ایک سخت آواز نے آپکڑا (سورة هود آیت ۹۴)۔

تین قسم کے عذاب کا ذکر ہے تیوں میں بظاہر تعارض ہے۔

تطبیق:..... تیوں قسم کا عذاب ان پر نازل ہوا تھا۔ حافظ ابن کثیر فرماتے ہیں ”وقد اجتمع علیهم ذلك كله اصابهم عذاب يوم الظلة وهي محابة اظلتهم فيها شرر من نار ولهب ووهج عظیم ثم جاتتهم صیحة من السماء ورجفة من الارض“ تیوں قسم کا عذاب ان پر جمع ہوا۔ سائبان کا عذاب آگیا ایک بادل آیا جن میں چنگاریاں اور آگ کے بڑے بڑے شعلے اور زبردست بھڑک تھی پھر آسمان سے آواز اور زمین سے زلزلہ آیا (ابن کثیر ج 3 ص 198)۔

علامہ آلوسی فرماتے ہیں ”ولعلها من مبادئ الرجفة فاسند اهلاکهم الی السبب القریب تارة والی البعد اخری“ جبرئیل کی آواز زلزلہ کے عذاب کے مبادیات میں سے ہے اس کے بعد زلزلہ آیا نسبت کبھی سبب قریب کی طرف ہوتی ہے کبھی سبب بعید کی طرف۔

(2) ”وقال بعضهم ان القصة غیر واحدة فان شعيبا علیه السلام

بعث الی امتین اهل مدین واهل الایكة فاهلکت احدهما بالرجفة والآخری بالصیحة“ بعض فرماتے ہیں کہ عذاب کا واقعہ ایک سے زیادہ مرتبہ پیش آیا کیونکہ شعیب علیہ السلام کی بعثت دو امتوں کی طرف ہوئی تھی اہل مدین اور اہل ایكة۔ ایک امت زلزلے سے ہلاک ہوئی اور دوسری آواز سے۔

”والمروری عن قتادة انهم الذین اهلکوا بها وان اهل الایكة

اهلكوا بالظلمة“ حضرت قتادة سے مروی ہے کہ اہل مدین رجفہ اور صبحہ کے عذاب سے ہلاک ہوئے اور اہل ایکہ ظلمہ کے عذاب سے ہلاک ہوئے۔ (روح المعانی ج 9 ص 6)۔

امام قرطبی نے بھی یہی لکھا ہے ”واصحاب الايكة اهلكوا بالظلمة (قرطبی ج 7 ص 251)

سورة الاعراف

تعارض: 84

آیت 94

”ولقد حشتمو نافرادی“ اور تم ہمارے پاس تمہا تمہا آگئے۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ ہر آدمی اللہ کے پاس تمہا جائے گا لیکن حشر والی آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ تمہا نہیں ہوں گے کیونکہ سب کا حشر ایک ساتھ ہوگا ارشاد ہے ”ویوم نحشرهم جمیعاً“ اور جس روز اللہ تعالیٰ ان سب کو جمع فرمائے گا (سورة السبا آیت 40)

تطبیق: قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں ”یوم موتم او یوم القیامة والسیاق يقتضی یوم الموت“ موت کے دن یا قیامت کے دن تمہا آو گے لیکن سیاق کے مناسب موت کا دن ہے۔ (منظہری ج 3 ص 270)۔

ظاہر ہے کہ ہر آدمی تمہا مرتا ہے اور تمہا اللہ کے پاس جا رہا ہے۔ سب کا جمع ہونا حشر میں قیامت کے بعد ہوگا اس لئے حشر میں تو سب اکٹھے ہوں گے لیکن موت کے وقت سب تمہا ہیں۔ قاضی بیضاوی فرماتے ہیں۔ ”عن الاعوان والاثوان“ نہ کوئی مددگار ہوگا نہ بت۔ تمہا رہ جائیگا۔ (بیضاوی ج 1 ص 263) نفسا نفسی کے عالم میں ہر آدمی ایک تمہا ہوگا۔ اگرچہ حشر کے لحاظ سے سب یکجا ہوں۔ دونوں میں کوئی تضاد نہیں

امام غیشا پوری فرماتے ہیں ”والمراد التوبیخ والتقريع لانهم بذلوا واجهدهم وصرّفوا کدهم فی الدنیالی تحصیل امرین احدهما المال والجاه والثانی انهم عبدوا الاصنام“ آیت کا مقصد کفار کو ڈانٹ پلانا ہے اس لئے کہ انہوں نے ساری زندگی مال و جاہ کے حصول اور بتوں کی عبادت میں کھپادی (غرائب القرآن ج 7 ص 194 حاشیہ طبری)

سورة الاعراف

تعارض: 85

آیت (107)

”فالسقى عصاه فاذا هوى ثعبان مبین“ پس آپ نے عصا ڈال دیا پس دفعتاً وہ صاف ایک اژدھا بن گیا۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ موسیٰ علیہ السلام کے عصا سے بہت بڑا سانپ بنا تھا۔ ارشاد ربانی ہے ”فلما رآها نهتزّ كانها حان“ سو جب انہوں نے اس کو اس طرح حرت کرتے دیکھا جیسے سانپ۔ (سورة النمل آیت 10) جان چھوٹے سانپ کو کہتے ہیں۔

تطبیق: قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں ”الثعبان الذکر العظیم من الحجة وکان يتحرك كانها حان ای حية صغيرة ولهذا اقال فی موضع آخر كانها حان“ ثعبان بڑے سانپ کو کہتے ہیں لیکن حرکت میں چھوٹے سانپ کی طرح تیز تھا۔ اسی لئے دوسرے مقام پر اس کو جان یعنی چھوٹا سانپ کہا گیا۔ (منظہری ج 3 ص 390)۔

علامہ آلوسی فرماتے ہیں تعارض نہیں کیونکہ یہ واقعہ کئی مرتبہ ہوا ”ان القصصة غیر واحدہ“ ممکن ہے کبھی جان اور کبھی ثعبان بنا ہو۔

(2) اوان المقصود فی ذلک تشبیہاً فی الختہ الحریکة بالجان لایبان جتھا“ دونوں آیتوں میں سانپ کی جسامت بیان کرنا مقصود نہیں بلکہ اژدھا کو تیز حرکت میں چھوٹے سانپ کیساتھ تشبیہ دی گئی ہے۔

(3) انها انقلب حانوا وصارت ثعباناً فحکیت الحالان فی آیتین“ عصا پہلے چھوٹا سانپ بنا پھر بڑا سانپ بن گیا۔ دو حالتیں ہوئیں۔ ایک آیت میں ایک حالت (چھوٹا سانپ) بیان ہوئی اور دوسری آیت میں دوسری حالت (اژدھا) کا بیان ہوا۔

تعارف: 86 سورة الاعراف

آیت 109

”قال الملا من قوم فرعون ان هذا الساحر علیم“ قوم فرعون میں جو سردار لوگ تھے انہوں نے کہا واقعی وہ شخص بڑا ماہر جادوگر ہے۔

اس سورت میں اس کلام کی نسبت قوم فرعون کے سرداروں کی طرف ہوئی ہے اور سورة الشعراء میں اس کلام کی نسبت فرعون کی طرف ہوئی ہے فرمان باری ہے۔ ”قال للملا حوله ان هذا الساحر علیم“ فرعون نے اہل دربار سے جو اس کے آس پاس تھے کہا کہا اس میں کوئی شک نہیں کہ یہ شخص بڑا جادوگر ہے۔ (آیت

34)

تطبیق: امام رازی اس کے دو جواب دیتے ہیں۔

الاول: لا یمتنع انه قد قاله هو وقالوه هم فحکی اللہ تعالیٰ قوله ثم وقولهم هنا“ ممکن ہے یہ قول پہلے فرعون نے کیا ہو پھر قوم فرعون کے سرداروں نے۔ اللہ نے پہلے فرعون کے قول کی مطابق حکایت کی پھر قوم فرعون کے

سرداروں کی۔

والثانی: لعل فرعون قاله ابتداء فتلقتہ الملا منه فقالوه لغيره او قالوه عنه لسائر الناس علی طریق التبلیغ فان الملوك اذاروا واریا ذکره للخاصة وهم یدکرونه للعامۃ فکذا هنا“ یہ کلام اول فرعون نے کیا ہوا اور اس سے سرداروں نے سن کر اوروں سے کیا ہو۔ یا سب لوگوں کو بطریق تبلیغ کہا ہو جیسا کہ بادشاہ جب کوئی رائے قائم کرتا ہے تو اول خاص لوگوں کے سامنے ذکر کرتا ہے پھر وہ خاص لوگ عام لوگوں کو بطریق تبلیغ خبردار کرتے ہیں۔ (تفسیر کبیر ج 14 ص 196)

علامہ زنجیری نے بھی یہی لکھا ہے۔ (الکشاف ج 2 ص 139)

ابی السعود العمادی فرماتے ہیں ”قالوه تصدیقاً لفرعون وتقریراً للكلامه فان هذا القول بعینه معزی فی سورة الشعراء الیه“ سرداران قوم نے یہ کلام فرعون کی بات کی تصدیق اور اثبات کے لئے کہا تھا کیونکہ سورة الشعراء میں صراحتاً اسی کلام کی نسبت فرعون کی طرف ہوئی ہے۔ (تفسیر ابی السعود ج 2 ص 188)

تاج القراء الکرمانی فرماتے ہیں ”قال الملا من قوم فرعون وفرعون بعض لبعض فحذف فرعون لاشتمال الملا من آل فرعون علی اسمہ کما قال (واغرقنا آل فرعون) ای آل فرعون وفرعون فحذف فرعون لان ال فرعون اشتمل علی اسمہ فالفائل هو فرعون وحده“

قال الملا من قوم فرعون میں ایک لفظ فرعون حذف ہے۔ کیونکہ آل فرعون میں فرعون داخل ہے جس طرح (اغرقنا آل فرعون) میں فرعون داخل ہے۔ پس قائل صرف فرعون ہے یعنی فرعون نے صرف کہا تھا کہ موسیٰ علیہ السلام

تعارض: 87 سورة الاعراف

آیت 137

”ودمرنا ما كان يصنع فرعون وقومه وما كانوا يعرشون“ اور اس قوم کے ساختہ پر داختہ کارخانوں کو اور جو کچھ وہ اونچی اونچی عمارتیں بنواتے تھے سب کو درہم برہم کر دیا (آیت)

اس آیت سے معلوم ہوا کہ فرعون کے کارخانے اور عمارات تباہ و برباد ہو گئے۔ لیکن سورة الشعراء کی آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ کارخانے اور عمارات صحیح سالم تھے۔ ”فرمان باری ہے“ فاسخر جنهم من جنت و عیون و کنوز و مقام کریم كذلك اور ثناہا بنی اسرائیل“ غرض ہم نے ان کو باغوں سے اور چشموں سے اور خزانوں سے اور عمدہ مکانات سے نکال باہر کیا یوں کیا ویران کے بعد بنی اسرائیل کو ان کا مالک بنایا (آیت 57' 58' 59)

تطبیق: مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں کہ اس کا جواب احقر کے نزدیک یہ ہے کہ قبضہ میں تو بعینہ آئے لیکن چونکہ دوسری سلطنت ہمیشہ عادتاً پہلی سلطنت کے انتظامات کو متغیر و متبدل کر دیتی ہے اس لئے دمرنا فرمایا گیا اور یہ جواب میری نظر سے نہیں گزرا (بیان القرآن ج 4 ص 38)

ابو حیان الاندلسی فرماتے ہیں ”وقبل ما كان يصنع من التدبير فسي امر موسى عليه السلام واحماد كلمته“ تدبیر سے مراد یہ ہے کہ فرعون نے موسیٰ علیہ السلام کے بارے میں جو حکیم بنائی تھی اس کو اللہ نے قیل کر دیا۔

”وقبل المراد اهلاك اهل القصور والمواضع المتبعة و اذاهلك

الساکن هلك المسکون“ یا تدبیر سے ان عمارتوں کے مکینوں کی ہلاکت مراد ہے۔ کیونکہ مکین کی موت مکان کی ہلاکت ہے۔ (المحرر المحیط ج 4 ص 377)

ابو حیان الاندلسی کی ان دو تفسیروں کے ساتھ تعارض باقی نہیں رہتا۔

امام رازی نے بھی مسائل الرازی میں یہ جواب دیا ہے۔ البتہ ایک اور توجیہ بھی کی

ہے۔ ”وقبل هو على ظاهره لان الله تعالى اورث بنی اسرائیل

مدة ثم دمره جميعاً“ یا تدبیر کا معنی ہلاکت اور تباہی ہی ہے۔ لیکن معنی یہ ہے کہ

اللہ نے بنی اسرائیل کو کچھ عرصہ کیلئے اس کا مالک بنا دیا پھر سب کچھ ختم کر دیا۔ (مسائل

الرازی ص 98)

تعارض: 88 سورة الاعراف

آیت 157

”ويحل لهم الطيبات ويحرم عليهم الجبائت“ اور پاکیزہ چیزوں کو ان کے

کے لئے حلال بتائے ہیں اور گندی چیزوں کو حرام بتائے ہیں۔

اس آیت سے بظاہر معلوم ہوتا ہے کہ حضور ﷺ کو بھی شارع حقیقی اللہ تعالیٰ کی

طرح تحلیل و تحریم کا حق حاصل ہے۔ حالانکہ شارع حقیقی صرف اللہ ہے۔ تحلیل و تحریم

کا حق صرف اللہ تعالیٰ کو حاصل ہے۔ ارشاد ہے واصل اللہ البصیح و جرم الربوا۔ حالانکہ اللہ

نے بیع کو حلال فرمایا ہے۔ اور سود کو حرام کر دیا ہے۔ (سورة البقرة آیت 275)

ارشاد ہے ”يا أيها النبی لم تحرم ما احل الله لك“ اے نبی جس چیز کو اللہ

نے آپ کے لئے حلال کیا ہے آپ اس کو کیوں حرام فرماتے ہیں۔ (سورة التحريم

آیت 1)

ایک جگہ ارشاد ہے۔ ”نشرع لكم من الدين“ اللہ تعالیٰ نے تم لوگوں کے واسطے

تطبیق:..... اس میں کوئی شک نہیں کہ شارع حقیقی صرف اللہ ہے۔ تحلیل و تحریم اللہ تعالیٰ کا حق ہے بنی اللہام التحریر میں فرماتے ہیں: "الحاکم لا خلاف فی انہ اللہ رب العلمین" اس میں کسی کا خلاف نہیں کہ حاکم صرف اللہ رب العلمین ہے۔ مسلم الثبوت میں ہے "لا حکم الا من اللہ" نصوص قطعی طور پر اللہ تعالیٰ کے شارع حقیقی ہونے پر دال ہیں۔ حضور ﷺ اور انبیاء جب اللہ تعالیٰ کی حلال کردہ اور حرام اشیاء کا بیان کرتے ہیں تو یہ ان اشیاء کے حلت اور حرمت کی قطعی اور یقینی نشانی ہوتی ہے اور بعض اشیاء میں مجتہدین کا حلت اور حرمت کا قول جو ملتا ہے وہ ان اشیاء کی حلت اور حرمت پر قطعی طور پر دال ہوتا ہے۔ اس لئے تحلیل اور تحریم کی نسبت کبھی نبی ﷺ اور مجتہد کی طرف ہوتی ہے اس کا یہ مطلب نہیں ہوتا کہ انبیاء کرام اور مجتہدین حضرات کی حیثیت مستقل شارع کی ہے۔

امام نیشاپوری فرماتے ہیں: "یعنی الاشیاء الّتی حکم اللہ تعالیٰ بحلّها" نبی ان اشیاء کو حلال بتاتا ہے جن کے بارے میں اللہ حکم دے چکا ہوتا ہے۔ (غرائب القرآن حاشیہ طبری ج 9 ص 56)۔

علامہ آلوسی "ولا یحرمون ما حرم اللہ ورسولہ" کی تفسیر میں لکھتے ہیں: "ای ما ثبت تحریمہ بالسوحی متلو أو غیر متلو" جس کی حرمت وحی متلو اور غیر متلو سے ثابت ہے۔ (روح المعانی ج 10 ص 78)۔

معلوم ہوا کہ نبی صرف وحی متلو اور غیر متلو کا بیان کرتا ہے۔ مولانا اشرف علی تھانوی نے آیت کے ترجمہ میں جو فرمایا ہے کہ حلال بتاتے ہیں حرام بتاتے ہیں۔ اس ترجمہ سے تعارض کا اشکال خود بخود دور ہو جاتا ہے۔ نبی حرام اور حلال صرف بتاتا ہے بنانا نہیں۔

"ولقد ذرنا للجهنم کثیرا من الحسن والانس" اور ہم نے بہت سے جن اور انسان دوزخ کیلئے پیدا کئے ہیں۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ انسان اور جنات کی تخلیق آگ کیلئے ہے جبکہ ایک آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ جنات اور انسانوں کی تخلیق کا مقصد عبادت ہے۔ ارشاد ہے "وما خلقت الجن والانس الا ليعبدون" اور میں نے جن اور انس کو اسی واسطے پیدا کیا ہے کہ میری عبادت کیا کریں۔ (سورۃ الذاریات آیت 56)

تطبیق:..... مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں: وہ غایت تشریحی ہے اور یہ غایت تکوینی پس دونوں میں کوئی تعارض نہیں۔ (بیان القرآن ج 4 ص 54)۔ سورۃ ذاریات میں انسان اور جن کی تخلیق کا جو ذکر ہے وہ تشریحی مقصد ہے۔ انسان اور جن دونوں کو عبادت کا حکم دیا ہے۔

علامہ زنجیری فرماتے ہیں "ہم المطبوع علی قلوبہم الذین علم اللہ انہ لالطف لہم سورۃ" سورۃ اعراف میں جس تخلیق کا ذکر ہے وہ لوگ ہیں جن کے بارے میں اللہ کو علم ہے کہ ان کیلئے کوئی لطف و کرم نہیں۔ (الکشاف ج 2 ص 179) قاضی بیضاوی فرماتے ہیں یعنی المصرین علی الکفر فی علم اللہ "وہ لوگ ہیں جن کے بارے میں اللہ کو علم ہے کہ کفر پر قائم رہیں گے (بیضاوی ج 1 ص 304)۔

ابن الجوزی فرماتے ہیں "لجہنم ہذہ اللام یسمیہا بعض اہل المعانی لام العاقبۃ کقولہ لیكون لہم عدو أو حزنا" لجہنم میں لام عاقبت کیلئے ہے۔

شاعر کا قول نقل کیا ہے۔

اموالنا نفوی المیراث یجمعنا

وذورنا الخراب اللہ ربنا بیہا

مال وراثتوں کے لئے جمع کرتے ہیں اور گھر اڑانے کے لئے بناتے ہیں۔

مال کی کمائی اور مکان بنانے میں کسی کی ہرگز یہ غرض نہیں ہوتی۔ لیکن دونوں کا انجام اور انتہا اسی پر ہے کہ مال بالآخر وراثت کو ملتا ہے اور گھر طبعی عمر پوری کر کے زمین بوس ہو جاتا ہے اسی طرح بعض جنات اور انسانوں کا آخری انجام دوزخ ہے۔ قاضی بیضاوی نے اس توجیہ کو پسند نہیں کیا اور کہا ہے کہ یہ عدول عن الظاہر ہے۔ (زاد المسیر ج 3 ص 292)۔

قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں آجوں میں کوئی تضاد نہیں دونوں میں تخلیق کی غرض اور حیثیت جدا ہے۔ جنات اور انسانوں کو اصل تخلیق اور حکمت کے لحاظ سے عبادت کے لئے پیدا کیا ہے اس تخلیق میں اس کا لحاظ نہیں رکھا کہ ان میں کون کفر کے راستے پر چلے گا اسی طرح بہت سے جنات اور انسانوں کو پیدا کیا اس لحاظ سے کہ ان کے بارے میں اللہ کو علم تھا کہ کفر اختیار کریں گے اور اللہ کا قول ہے کہ میں جہنم کو بہت سے جنات اور انسانوں سے ضرور بھر دوں گا۔ لکھتے ہیں ”خلق الجن والانس کلہم للعبادة من حیث نفس الخلق واصل الحکمة فی خلق العالم من غیر ملاحظہ علم اللہ فیہم اختیار الکفر وخلق کثیر من الجن والانس لجهنم نظر الی انہ تعالیٰ علم منہم اختیار الکفر وحق القول منہ لاملئن جہنم من الحنۃ والناس اجمعین ولا منافاة بین الحیثیتین (مظہری ج 3 ص 435)۔

وما خلقت الجن والانس میں تمام جنات اور انسانوں کا ذکر ہے اور اول نقد

ذرائع الجہنم میں ”من تجزیہ ہے سب کی تکوینی عایت الکی نہیں جیسے لاملئن جہنم میں من تجزیہ ذکر کیا ہے۔

تعارض 90 سورة الأنفال

آیت 2

”انما المؤمنون الذین اذا ذکر اللہ وجلت قلوبہم“ پس ایمان والے تو ایسے ہوتے ہیں کہ جب اللہ تعالیٰ کا ذکر آتا ہے تو ان کے قلوب ڈر جاتے ہیں اس آیت سے معلوم ہوا کہ ذکر کے وقت دل گھبرا جاتے ہیں لیکن بعض آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ اللہ کے ذکر سے دل مطمئن ہو جاتے ہیں۔ ”الابد ذکر اللہ تطمئن القلوب“ خوب سمجھ لو کہ اللہ کے ذکر سے دلوں کا الطمیان ہو جاتا ہے۔ (سورة الرعد آیت 28) الطمیان اور خوف میں تضاد ہے۔

تطیق: علامہ زنجیری فرماتے ہیں۔ ”فزعت لذکرہ استعظاما لہ ونہیباً من جلالہ وعزۃ سلطانیہ وبطشہ بالعصاة عقابہ وهذا الذکر خلاف الذکر فی قولہ ثم تلین جلودہم وقلوب الی ذکر اللہ لان ذلك ذکر رحمة ورفقة وثوابہ“ ذکر کی دو قسمیں ہیں دل کا گھبرانا اللہ کی عظمت جبروت اور ہیبت کی وجہ سے اور ایک ذکر رحمت اور ثواب والا ہے جس سے دل موم ہو جاتے ہیں۔ (الکشاف ج 2 ص 196)۔

قاضی بیضاوی فرماتے ہیں ”وقیل هو الرجل یہم بمعصیة فیقال لہ اتق اللہ فیقرع عنہ خوفا عقابہ“ اس ذکر سے مراد یہ ہے کہ جب کوئی آدمی گناہ کا ارادہ کر لے اور اس کو کوئی کہہ دے کہ اللہ سے ڈرو وہ آدمی اللہ کے عقاب سے گھبرا جاتا ہے۔ (بیضاوی ج 1 ص 309)۔ جو ذکر زبان سے کیا جائے وہ باعث

اطمینان ہے۔ علامہ آلوسی فرماتے ہیں ”والاطمینان المذكور فی قوله سبحانه
تعالیٰ الابد کر اللہ تطمئن القلوب لا ینافی الوجہ والخوف لانه عبارة
عن تلج الفؤاد شرح الصدور بنور المعرفة والتوحيد وهو یجامع الخوف
“دل کا ذکر سے مطمئن ہونا خوف کے منافی نہیں کیونکہ اطمینان کا معنی اللہ کی معرفت
اور توحید کیساتھ دلی سرور اور شرح صدر مراد ہے اور یہ ممکن ہے کہ دل میں اللہ
کا خوف بھی ہو اور شرح صدر اور دلی اطمینان بھی ہو۔ (روح المعانی ج 9
ص 165)۔

امام قرطبی فرماتے ہیں ”ای تسکن فی نفوسہم من حیث الیقین الی اللہ
وان کانوا یحسبون اللہ“ اللہ کی ذات پر یقین کے اعتبار سے دلی سکون
اور خوف الہی جمع ہو سکتا ہے۔ (قرطبی ج 7 ص 366)۔ دل میں اللہ کی ذات
کا یقین اور اس کا خوف جمع ہو سکتے ہیں۔

جس شخص کا اللہ کی ذات پر یقین ہو اور اللہ کی صفات کا کچھ نہ کچھ علم رکھتا ہو اس کے
سامنے جب اللہ کی عظمت و جبروت بیان کی جائے اس کی قہاریت اور جبروت
کا تذکرہ ہو تو ظاہر بات ہے کہ دل اس کے خوف سے کانپ اٹھتا ہے اور کبھی اللہ
کے نام کا ورد کرتا ہے یا اس کے اسماء جمالیہ کا تذکرہ سنتا ہے تو دل میں انتہائی
سرور اور چین محسوس کرتا ہے گویا یہ مختلف کیفیتیں ہیں جو ذکر اللہ کے وقت انسان
پر طاری ہوتی ہیں بعض اوقات دل پر خوف الہی کا غلبہ ہو جاتا ہے اور بعض اوقات
سرور اور چین ہوتا ہے۔ اور عام طور پر مطمئن رہتا ہے۔ واللہ اعلم عند اللہ۔

وماکان اللہ لیعذبہم وانت فیہم“ اور اللہ تعالیٰ ایسا نہ کریں گے کہ ان میں
آپ کے ہوتے ہوئے ان کو عذاب دیں حضور کے ہوتے ہوئے ان پر عذاب
نہ آئے گا۔ دوسری آیت میں ارشاد ہے کہ آپ کے ہوتے ہوئے بلکہ آپ کے
ہاتھ سے ان پر عذاب اُتے گا۔ ”فانلوہم یعذبہم اللہ بایدکم“ ان سے
لڑو اللہ تعالیٰ ان کو تمہارے ہاتھوں سے سزا دے گا۔ (سورة توبہ آیت 14) ایک
اور آیت سے بھی تعارض ہے ”ومالہم الایعذبہم اللہ وہم یصدون عن
مسجد الحرام“ اور ان کو کیا اتھتاق ہے کہ ان کو اللہ تعالیٰ سزا نہ دے حالانکہ وہ
لوگ مسجد حرام سے روکتے ہیں۔ (سورة الانفال آیت 34) اس آیت میں کفار کے
عذاب کا اثبات ہے۔

تطبیق:..... سورة توبہ کی آیت سے جو تعارض ہے اس کے بارے میں امام رازی
فرماتے ہیں۔ ”المراد من عذاب الاستیصال ومن الثانی العذاب الحاصل
بالمحاربة والمقاتلة“ جس عذاب کی نفی ہے اس سے مراد کفار کا بالکلہ استیصال
ہے اور جس کا اثبات ہے اس سے مراد کفار سے قتال اور جنگ ہے۔ (کبیر ج 15
ص 158)۔ سورة انفال کی آیتوں میں جو تعارض ہے اس کے بارے میں امام
رازی فرماتے ہیں ”قال ابن عباس هذا العذاب هو عذاب الآخرة والذی
نصفاه عنہم عذاب الدنیا“ جس عذاب کا اثبات ہے وہ آخرت کا عذاب ہے
اور جس کی نفی ہوئی ہے وہ دنیا کا عذاب ہے۔ (کبیر ج 15 ص 159)۔

ابن الجوزی فرماتے ہیں کہ عذاب نہ دینا دو باتوں پر موقوف تھا حضور ﷺ
کا وجود اور ان کے مابین مسلمانوں کا استغفار جب حضور ﷺ اور صحابہ کرام ہجرت

فرمائے تو دونوں مانع زائل ہو گئے تو بدر کا عذاب آیا فرماتے ہیں ”فلمّا وقع التّمييز بالهجرة وقع العذاب بالباقيين يوم بدر“ (زاد المسير ج 3 ص 352)۔

ابن الجوزی نے دوسرا جواب بھی دیا ہے۔ ”ان العذاب الثاني قتل بعضهم يوم بدر والاول استيصال الكل“۔

جس عذاب کا اثبات ہے وہ بدر کا عذاب ہے اور جس کی نفی کی ہے وہ ان کا کلی استیصال ہے۔ اللہ تعالیٰ سب کفار کو یکدم عذاب سے ختم نہ کریں گے کیونکہ حضور ﷺ کی امت دعوت میں شامل ہیں۔ نہ جانے ان کی نسلوں میں کون کون اسلام کی روشنی سے منور ہوگا۔

تعارض 92

سورة الانفال

آیت 72

والذین آمنوا ولم يهاجروا مالم يهاجروا من ذمتهم من شيء حتى يهاجروا“ اور جو لوگ ایمان تولائے اور ہجرت نہیں کی تمہارا ان سے میراث کا کوئی تعلق نہیں جب تک وہ ہجرت نہ کریں۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ جس نے ہجرت نہیں کی اس کے اور مسلمانوں کے مابین ولایت منقطع ہے۔ حالانکہ ایک آیت میں حکم اس کے خلاف ہے ارشاد ہے ”والمؤمنون والمؤمنات بعضهم اولياء بعض“ اور مسلمان مرد اور مسلمان عورتیں آپس میں ایک دوسرے کے رفیق ہیں۔ (سورة التوبة آیت 71) اس آیت میں یہ مذکور ہے کہ مسلمانوں کی آپس میں ولایت ثابت ہے ہجرت کی ہو یا نہ کی ہو۔

تطبیق: سورة انفال میں جو ولایت کی نفی ہے اس سے مراد میراث ہے۔ علامہ زنجیری فرماتے ہیں ”ای يتولى بعضهم بعضا من الميراث“ یہ ولایت ایک دوسرے کی میراث میں ہوگی۔ (الکشاف ج 2 ص 238)

امام فراء فرماتے ہیں ”یرید من موارثهم (معانی القرآن ج 1 ص 418) ابن الجوزی فرماتے ہیں کہ بعض کے نزدیک یہ ولایت مدد اور محبت کی ہے لیکن یہ ولایت اس آیت سے منسوخ ہوگئی۔ ”والمؤمنون والمؤمنات بعضهم اولياء بعض (زاد المسير ج 3 ص 385) سورة توبہ میں جس ولایت کا اثبات ہے اس کے بارے میں ابن الجوزی فرماتے ہیں ”بعضهم يوالي بعضا فهم بدواحدة“ سب مسلمان ایک ہاتھ کی طرح متحد ہیں۔ (زاد المسير ج 3 ص 468)۔

امام قرظی اس ولایت کے بارے میں فرماتے ہیں ”ای قلوبهم متحدة فی التوادد والتحاب والتعاطف“ ان کے دل ایک دوسرے کی محبت اور الفت میں متحد ہیں۔ (قرظی ج 8 ص 203) جس ولایت کی نفی ہے وہ میراث ہے اور جس ولایت کا اثبات ہے وہ دوستی اور محبت ہے۔

تعارض 93

سورة براءة

آیت 30

وقالت اليهود عذريز. ابن الله وقالت النصارى المسيح ابن الله“ اور یہود نے کہا کہ عزیر اللہ کا بیٹا ہے۔ اور نصاریٰ نے کہا کہ مسیح اللہ کا بیٹا ہے۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ یہود اور عیسائی بھی مشرک تھے۔ اس کے بعد فرمان ہے ”سبحانه عما يشركون“ وہ پاک ہے ان کے شریک بتلانے سے۔ معلوم ہوا کہ

اصل کتاب شرک کیا کرتے تھے لیکن قرآن مجید میں ان کا ذکر جب مشرکین کیساتھ ہوتا ہے تو ان کو اہل کتاب کہہ کر پکارا جاتا ہے۔ مشرکین اور اہل کتاب کو حروف عاطفہ کیساتھ ذکر کیا جاتا ہے۔ اور عطف میں مغایرت کا تقاضا ہوتا ہے۔ جس سے معلوم ہوتا ہے کہ اہل کتاب مشرک نہیں ارشاد باری ہے۔ لیس یکن الذین کفرو امن اهل الكتاب والمشرکین“ نہ تھے وہ لوگ جو منکر ہیں اہل کتاب اور مشرک (سورۃ البینۃ آیت 1) اسی طرح ایک اور ارشاد ہے۔ ”ماید الذین کفرو امن اهل الكتاب ولا المشرکین“ دل نہیں چاہتا ان لوگوں کا جو کافر ہیں اہل کتاب میں اور مشرکوں میں۔ (سورۃ البقرۃ آیت 105)۔

ان آیات سے بظاہر معلوم ہوتا ہے کہ اہل کتاب اور مشرکین غیر غیر ہیں اہل کتاب مشرک نہیں۔

تطبیق:..... ممکنہ میسرہ تقاسیر میں اپنی بساط کے مطابق چھان بین کی لیکن مفسرین کے اقوال اس بارے میں نہ مل سکے۔ اور نہ یہ کوئی ایسا تضاد ہے کہ عیاذ باللہ قرآن مجید پر دہبہ لگنے کا احتمال ہو۔ دراصل مشرکین کی قسمیں ہیں۔ ایک قسم یہ ہے کہ کسی قسم کا دین سادی نہ ہو اور اللہ کو چھوڑ کر بتوں کی پوجا کرتے ہوں۔ جیسے مشرکین عرب تھے معبود برحق کے مقابلہ میں معبودان باطلہ کی پوجا کرتے تھے۔ ایک وہ قوم تھی جن کے پاس دین سادی تھا جیسے یہود اور عیسائی۔ لیکن پھر بھی شرکی افعال کا ارتکاب کرتے تھے۔ عزیر علیہ السلام اور سح علیہ السلام کو امین اللہ کہا۔

تحریم اور تحلیل میں اپنے احبار اور رہبان کے تابع تھے۔ اور اپنے شرک کو شرک نہ سمجھتے تھے۔ ان کا گمان تھا کہ ہم موحد ہیں۔ قرآن مجید میں ہے ”یا اهل الكتاب تعالوا الی کلمۃ سواء بیننا و بینکم“ اے اہل کتاب آؤ ایسی بات کی طرف جو کہ ہمارے اور تمہاری درمیان برابر ہے (سورۃ آل عمران)۔

ہمارے اور ان کے درمیان جو بات برابر ہے وہ توحید ہے۔ یہ ان کے گمان کے مطابق کہا گیا ہے۔ کیونکہ وہ اپنے شرک کو خلاف توحید نہ سمجھتے تھے۔ مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں۔ اجمالاً اور کلیاً اہل کتاب بھی اس کو مانتے ہیں کہ توحید فرض ہے اور شرک کفر ہے۔ (بیان القرآن ج 2 ص 28)

اس وجہ سے اہل کتاب کا ذکر مشرکین کے مقابلے میں ہوتا ہے۔ اگرچہ مشرکین عرب کی طرح خالص مشرک نہ تھے لیکن خاص مشرک ضرور ہیں۔ خلاصہ یہ ہوا کہ وہ خود کو موحد کہتے تھے۔ اور شرک کو توحید سمجھتے تھے۔ اور مدعی کتاب تھے لہذا ان کے گمان کے مطابق قرآن مجید ان کو اہل کتاب کے لفظ سے پکارتا ہے۔ والعلیم عند اللہ۔

تعارض 94 سورۃ براءۃ

آیت 41

”انفروا خفافاً وثقالاً“ نکل پڑو تھوڑے سامان سے اور زیادہ سامان سے۔ معلوم ہوا کہ ہر حالت میں جہاد کے لئے نکلنے کا حکم ہے۔ لیکن بعض آیات میں اس کے خلاف حکم ہے۔ بعض حالات میں نہ نکلنے کی گنجائش ہے۔ ارشاد باری ہے۔ ”لیس علی الضعفاء ولا علی المرضی ولا علی الذین لایجدون ماینبغون حرج“ کم طاقت لوگوں پر کوئی گناہ نہیں اور نہ بیمار پر اور نہ ان لوگوں پر جن کو خرچ کرنے کو میسر نہیں (سورۃ براءۃ آیت 91)

تطبیق:..... علامہ زبخری فرماتے ہیں۔ ”نسخت بقولہ لیس علی الضعفاء ولا علی المرضی“ انفروا خفافاً وثقالاً منسوخ ہے۔ (الکشاف ج 2 ص 273)۔

امام قرطبی فرماتے ہیں ”والصحيح انها ليست بمنسوخة“ صحیح یہ ہے کہ آیت

منسوخ نہیں آگے چل کر فرماتے ہیں۔ ”وقد تكون حالة يجب فيها نفي الكل“ بعض حالات میں نفي عام ہوتا ہے۔

مفسرین نے خفا و ثقلا میں جتنے اقوال ذکر کئے ہیں اور روایات کا جو ذکر کیا ہے ان سے بھی معلوم ہوتا ہے کہ آیت منسوخ نہیں۔ حالات کے مطابق اس پر حکم ہوگا۔ بالکل منسوخ نہیں کہہ سکتے۔ امام رازی فرماتے ہیں جس کو حضور ﷺ جہاد میں نکلنے کا حکم دیں وہ ضرور نکلے گا اور جس کو ٹھہرنے کا حکم دے وہ ٹھہرے گا۔ فرماتے ہیں ”وعلی هذا التقدير فلا حاجة الى التزام النسخ“ (کبیر ج 16 ص 70)۔

علامہ آلوسی بھی عدم نسخ کے قائل ہیں فرماتے ہیں۔ ”ويفهم من بعض الروايات ان لا نسخ“ بعض روایات سے معلوم ہوتا ہے کہ آیت منسوخ نہیں۔ (روح المعانی ج 10 ص 104)

بعض حالات میں آیت پر عمل ہوگا صحابہ کرام کے حالات اس آیت کی تفسیر میں قابل دید و عبرت ہیں۔

سورة التوبة

تعارض 95

آیت 43

”عفا الله عنك لم اذن لهم“ اللہ تعالیٰ نے آپ کو معاف کر دیا آپ نے ان کو اجازت کیوں دی۔

اس آیت میں مؤمنین کے استیذان کی نفی ہے۔ اور سورۃ نور میں مؤمنین کی لئے استیذان کو ثابت فرمایا ہے۔ ارشاد ہے ”فاذا استاذنوك لبعض شأنهم فاذن لمن شئت منهم“ اور جب لوگ اپنے کسی کام کے لئے آپ سے اجازت طلب کریں

توان میں سے آپ جس کے لئے چاہیں اجازت دے دیا کریں۔ (سورۃ النور آیت 62)

تطبیق:..... استیذان کی مطلقاً نفی نہیں فرمائی بلکہ مقید تھی۔ اسی آیت کے آخر سے معلوم ہوتا ہے کہ نفی مقید ہے۔ ارشاد ہے حتی يتبين لك الذين صدقوا وتعلم الكذابين“ یہاں تک کہ ظاہر ہو جائے تجھ پر سچ کہنے والے اور جان لے تو جھوٹوں کو اگر اجازت لینے والوں کا عذر قوی اور صحیح ہے تو حضورؐ اجازت دے سکتے ہیں۔ اگر عذر قوی اور صحیح نہیں تو اجازت نہ دیں۔

قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں ”فاذن لمن علمت ان له عذر“ انکو اجازت دے جن کے بارے میں تو جان لے کہ معذور ہے۔ (مظہری ج 6 ص 567)

مولانا اشرف علی تھانوی دونوں آیتوں کے دفع تعارض میں فرماتے ہیں۔ اور سورۃ نور کے اخیر میں جو مؤمنین کے لئے استیذان کو ثابت فرمایا ہے۔ ”للم يذهبوا حتى يستاذنوا“ سو وہ استیذان بالعذر ہے۔ اور یہاں نفی استیذان بلا عذر کی ہے پس کوئی تعارض نہیں۔ (بیان القرآن ج 4 ص 114)

امام قرطبی نے ایک یہ جواب دیا ہے۔ ”وقال قتادة فاذن لمن شئت منهم منسوخة بقوله عفا الله عنك لم اذن لهم“ (قرطبی ج 16 ص 321)

استیذان کا حکم منسوخ ہے۔ مولانا اشرف علی تھانوی سورۃ النور کی تفسیر میں فرماتے ہیں۔ پس جو استیذان علامت اطاعت کی ہے وہ مؤمن کے لئے ثابت ہے۔ اور منافق سے منفی ہے۔ اور جو استیذان علامت اعراض کی ہے وہ منافق کے لئے ثابت اور مؤمن سے منفی ہے۔ (بیان القرآن ج 8 ص 37)

لا تعلمهم نحن نعلمهم. آپ ان کو نہیں جانتے ان کو ہم جانتے ہیں۔

اس آیت میں اس بات کا ذکر ہے کہ آپ منافقین کو نہیں جانتے لیکن ایک آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ آپ منافقین کو جانتے ہیں۔ فرمان باری ہے ”ولتعرفنہم فی لحن القول“ اور آپ ان کو طرز کلام سے ضرور پہچان لیں گے۔ (سورة محمد آیت 30)

تطبیق:..... ابن الجوزی فرماتے ہیں۔ والشائی لا تعلم عواقبہم لا تعلمہم کا دوسرا معنی یہ ہے کہ آپ ان کے انجام کو نہیں جانتے۔ اس معنی کیساتھ ولتعرفنہم کا تعارض باقی نہیں رہتا۔ (زاد المسیر ج 3 ص 492)

امام رازی فرماتے ہیں ”ہذہ الآیة نزلت قبل تلك الآیة فلا تناقض لانه نفسی علمہ لہم فی زمان ثم اثبتہ بعد ذلك فی زمان آخر“ سورة توبہ کی آیت سورة محمد کی آیت سے قبل نازل ہوئی ہے لہذا کوئی تعارض نہیں کیونکہ ایک زمانہ میں علم کی نفی ہے اور دوسرے میں اثبات۔ (مسائل الرازی ص 123)

نفاق کا تعلق دل کے ساتھ ہے۔ اور دلوں کا راز اللہ جانتے ہیں اس لئے حضور ﷺ سے فرمایا کہ آپ ان منافقین کو نہیں جانتے ہیں کیونکہ اپنے انتہائی نفاق کی وجہ سے استاد کے درجہ پر قائم ہیں۔ اور سورة محمد میں جو فرمایا کہ آپ ان کو طرز کلام سے جانتے ہیں تو یہ اللہ کے بتلانے کیساتھ ہے اس لئے کہ اس سے قبل فرمان باری ہے ”ولونشاء لا تعلمکم“ اور اگر ہم چاہتے تو آپ کو ان کا پورا پورا پتہ بتلا دیتے۔ واللہ اعلم۔

وبقولون هولاء شفعاء ناعند اللہ۔ اور کہتے ہیں کہ یہ اللہ کے پاس ہمارے سفارشی ہیں۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ کفار کو قیامت کا یقین ہے۔ اور معاد کو مانتے ہیں اس لئے تو کہا کہ بت ہماری قیامت کے دن اللہ کے یہاں سفارش کریں گے۔ لیکن دیگر آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ ان کو دوبارہ جی اٹھنے کی امید ہی نہیں۔ ارشاد ہے۔ وما نحن بمشترین۔ اور ہم دوبارے زندہ نہ ہوں گے۔ (سورة الدخان آیت 35)

ایک اور ارشاد ہے ”وما نحن بمبعوثین“ اور ہم زندہ نہ کئے جاویں گے۔ (سورة الانعام آیت 29)

تطبیق:..... قاضی بیضاوی فرماتے ہیں ”تشبیح لسا فیما ہیمننا فی امور الدنیا“ دنیاوی اہم امور میں ہماری سفارش کریں گے۔ اس توجیہ کی وجہ سے تعارض ختم ہو جاتا ہے۔ کیونکہ معاد پر تو ان کا یقین نہیں۔ دوسری توجیہ یہ ہے۔ ”اوفی الآخرة ان یسکن بعثاً“ آخرت میں سفارشی ہوں گے اگر دوبارہ زندہ ہوئے۔ ان کا یہ کہنا علی سبیل الفرض ہے کیونکہ ان کا گمان دوبارہ زندہ نہ ہونے کا ہے۔ (بیضاوی ج 1 ص 356)۔

علامہ آلوسی فرماتے ہیں ”ولعل ذلك علی سبیل الفرض والتقدیر ای ان كان بعثاً كما زعمتم فہولاء شفعاء لنا کفار کا یہ قول بطور فرض کے ہے کہ اول تو معاد ہے نہیں۔ اور اگر ہے جیسا کہ تمہارا زعم ہے تو پھر یہ ہمارے سفارشی ہوں گے۔

علامہ آلوسی دوسری توجیہ بھی کرتے ہیں۔ اس سے مراد ان کی امور معاش کی اصلاح ہے لیکن اس کے بارے میں فرماتے ہیں کہ والحججہم علی الاول جمہور کا قول

اول توجیہ کے بارے میں ہے کہ ان کی مراد آخرت کی سفارش ہے۔ (روح المعانی ج 11 ص 88)

لفظ عند اللہ سے بھی معلوم ہوتا ہے کہ آخرت کی سفارش مراد ہے کفار کا آخرت کے بارے میں شک تھا۔ حافظ ابن کثیر و مسنری معکم شفعا کم کی تفسیر میں لکھتے ہیں۔ ظانین انہا تنفعہم فی معاشہم و معادہم ان کان ان کا خیال تھا کہ امور معاش میں بت نفع دیتے ہیں یا معاد میں اگر ہوئی بعض آیات سے بھی معلوم ہوتا ہے کہ آخرت کے بارے میں ان کا تردد تھا۔ ارشاد باری ہے "لئن رددت الی ربی لا جدد حیرا منہا منقلباً" اور اگر میں اپنے رب کے پاس پہنچایا گیا تو ضرور اس باغ سے بہت زیادہ اچھی جگہ ملے گی۔ (سورۃ کشف آیت 36)۔

تعارض 98 سورۃ یونس

آیت 58

"فبذک فلیفرحوا" اس انعام اور رحمت پر خوش ہونا چاہیے۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ خوش ہونا یا خوشی منانا جائز ہے لیکن بعض آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ فرح (خوشی) کو اللہ پسند نہیں کرتا۔ "ان اللہ لا یحب الفرحین" واقعی اللہ اترانے والے کو پسند نہیں کرتا (سورۃ القصص آیت 76)

مضمون کے ساتھ مناسبت کی وجہ سے مولانا اشرف علی تھانوی نے فرح کا ترجمہ اترانا کیا ہے۔

تعلیق: امام راغب الاصفہانی فرماتے ہیں "الفرح انسراح الصدر بلذۃ عاجلۃ و اکثر ما یکون فی لذات البدنیۃ" کسی عامل نفع پر جی کے کھل اٹھنے کو فرح کہتے ہیں لفظ فرح کا اکثر استعمال بدنی لذتوں میں ہوتا ہے۔ (مفردات القرآن

ص 375)۔

بدنی لذتوں میں انہماک اور اس پر خوشی اور پھر اترانا شریعت میں پسندیدہ نہیں۔ اس کے مقابلہ میں روحانی خوشی جائز ہے جس خوشی کا جواز ہے اس سے مراد یہی روحانی خوشی ہے۔ علامہ زحمری فرماتے ہیں۔ "وایحباب اختصاص الفضل والرحمة بالفرح دون ما عداہما من فوائد الدنیا" رحمت اور فضل کے علاوہ دنیاوی امور میں خوشی صحیح نہیں۔ (الکشاف ج 2 ص 353)۔

امام نیشاپوری فرماتے ہیں "ان الفرح انما یحب ان یکون بالروحانیات الباقیات لا بالحسومات الزائلات" باقی رہنے والے روحانی امور پر خوش ہونا واجب ہے نہ کہ جسمانی زائل ہونے والے امور میں۔ (غرائب القرآن حاشیہ طبری ج 11 ص 92)۔

مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں اور "فرحوا بھا" میں اس فرح کی مذمت ہے جو براہ بطر ہو۔ اور سورۃ یونس میں فلیرحوا میں اس فرح کا امر ہے جو بطور شکر ہو پس ان میں کچھ تعارض نہیں۔ (بیان القرآن ج 9 ص 10)

تعارض 99 سورۃ یونس

آیت 98

"لما آمنوا کشفنا عنهم عذاب الحزی فی الحیوۃ الدنیا" وہ ایمان لے آئے تو ہم نے رسوائی کے عذاب کو دنیوی زندگی میں ان پر سے نال دیا۔

یونس علیہ السلام کی قوم عذاب الہی کے آثار دیکھ کر ایمان لے آئی تو ایمان مقبول ہوا اور عذاب ٹل گیا۔ ان کو ان کے اس وقت کے ایمان نے نفع دیا حالانکہ عذاب الہی نظر آنے کے بعد اگر کوئی ایمان لائے تو نفع نہیں ملتا۔ ارشاد ہے "فلسم یکن

ينفعهم ايمانهم لماراؤ باسنا“ سوان کوان کا یہ ایمان لانا نافع نہ ہو جب انہوں نے ہمارا عذاب دیکھ لیا۔ (سورۃ المؤمن آیت 85)

تطبیق:..... مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں۔ اور ان آثار سے نزول عذاب ظننا یا بدون معائنہ ملائکہ و انکشاف آخرت کے معلوم ہوا تھا اس لئے لم یلک ینفعهم ايمانهم لماراؤ باسنا کے منافی نہیں۔ (بیان القرآن ج 5 ص 31)۔

حافظ ابن کثیر فرماتے ہیں۔ ایک قول یہ ہے کہ قوم یونس کو صرف دنیا کے عذاب سے بچنے کا نفع ملا آخرت میں سزا ہوگی۔ ”انما کان ذالک فی حیوۃ الدنیا كما هو مفید فی هذه الآیة“ آیت میں بھی دنیا کی زندگی کی قید لگی ہے۔ (ابن کثیر ج 3 ص 530)

آخرت کی سزا ہوگی جس آیت میں ہے کہ ایسے وقت میں ایمان نفع نہیں دیتا اس کا یہی مطلب ہے کہ آخرت میں نفع نہیں دیتا۔ ابن الجوزی فرماتے ہیں ”ان ذلک لخاصالہم“ یہ حکم صرف قوم یونس کے لئے تھا۔

(۲) هؤلاء دناسمہم ولم یباشرہم فکانوا کالمریض یخاف الموت ویرجو العافیۃ فاما الذی یعانین فلا توبۃ“ عذاب الہی کے صرف قریب ہوئے تھے اس میں مبتلی نہ ہوئے تھے ان کی مثال اس مریض کی طرح تھی جس کو موت کا خوف ہوتا ہے اور صحت کی امید عذاب کا معائنہ کے بعد توبہ قبول نہیں ہوتی۔

(۳) ان اللہ تعالیٰ علم منہم صدق النیات بخلاف من تقدم فی الہالکین۔ اللہ تعالیٰ نے ان کی صحیح نیت کو جان لیا تھا بخلاف دیگر قوموں کے (زاد المسیر ج 4 ص 67)۔

یہ آخری توجیہ کمزور معلوم ہوتی ہے۔ کیونکہ عذاب کا معائنہ کے بعد عذاب لانا نہیں

اور نہ نفع دیتا ہے۔ اکثر مفسرین نے لکھا ہے کہ عذاب کا معائنہ کیا تھا اس لئے علامہ آلوسی فرماتے ہیں ”ونفع الايمان لهم بعد المشاهدة من خصوصياتهم“ عذاب کے مشاہدہ کے بعد ایمان کا نفع دینا قوم یونس کی خصوصیات میں سے ہے۔ (روح المعانی ج 11 ص 193)

تعارض 100 سورة یونس

آیت 101

”قل انظروا ماذا فی السموات والارض“ آپ کہہ دیجئے کہ تم غور کرو کیا کیا چیزیں آسمانوں اور زمین میں ہیں۔ اس آیت کے عموم سے معلوم ہوتا ہے کہ غور و فکر کے لئے کائنات کی ہر چیز کی طرف دیکھنا جائز ہے۔ کائنات کی من جملة اشیاء سے غیر محرم عورت بھی ایک شیء ہے لہذا اس کی طرف دیکھنا بھی جائز ہوگا۔ حالانکہ غیر محرم عورت کی طرف دیکھنا جائز ہے۔ ارشاد ہے ”قل للمؤمنین یغضوا من ابصارہم“ آپ مسلمان مردوں سے کہہ دیجئے کہ اپنی نگاہیں نیچی رکھیں۔ (سورۃ النور آیت 30)

تطبیق:..... آیت میں غور و فکر کی دعوت ہے جس میں ضروری نہیں کہ آدمی اس کی طرف دیکھے۔ اس کو نظر عبرت کہتے ہیں۔ اس میں ضروری نہیں کہ آنکھوں کے سامنے کوئی شیء موجود ہو غور و فکر اندھا بھی کر سکتا ہے۔ اگر اس میں دیکھنا ضروری ہوتا تو اندھا کیسے کائنات پر عبرت کی نظر ڈالتا۔ بند کمرے اور رات کی تاریکی میں بھی یہ نظر ممکن ہے۔ غیر محرم عورتوں کی طرف دیکھنا نظر گناہ ہے۔ اس کا تعلق ظاہری آنکھوں سے ہے۔ تاہم اس سے مستثنیٰ ہے نظر کا معنی جس طرح ظاہر آنکھ سے دیکھنا ہے اس طرح نظر کا استعمال غور و فکر کے لئے بھی ہوتا ہے۔ امام راغب فرماتے ہیں ”وفی تیراد

به التامل والتمعن. قل انظروا ما فى السموات والارض اى
تاملوا. (المفردات فى غريب القرآن ص 497).

غیر محرم عورت کی طرف دیکھنا زنا کی پہلی سیرمی ہے۔ حافظ ابن کثیر فرماتے ہیں
”یرشدتعالیٰ عباده الی التفکر فی آلالہ وما خلق اللہ فی السموات
والارض من الآیات الباهرة لغوی الالباب“ اس آیت میں اللہ تعالیٰ نے
اپنے بندوں کو زمین و آسمان کی مخلوق میں غور و فکر کی ہدایت کی ہے۔ کائنات میں عقل
مندوں کے لئے کھلی کتابیں ہیں (ابن کثیر ج 3 ص 531)

ابن الجوزی فرماتے ہیں ”قال المفسرون قل للمشركين الذين يستلونك
الآيات على توحيد الله انظروا بالتفكير والاعتبار ما ذاقى السموات
والارض من الآيات والعبير“ مفسرین فرماتے ہیں اس آیت میں ان مشرکین سے
خطاب ہے جو حضورؐ سے اللہ کی توحید پر کتابیں طلب کرتے ہیں وہ کائنات میں
نظر عبرت دوڑائیں تاکہ اللہ کی وحدانیت کو جان لیں۔ (زاد المسیر ج 3 ص 68)
آیت میں جب خطاب مشرکین سے ہوا تو مسلمان اس سے نکل گئے اور جس آیت
میں غیر محرم کی طرف دیکھنا منع ہے وہ خطاب مسلمانوں سے ہے لہذا کوئی تعارض
نہیں۔

ان دو آیتوں کے مابین تعارض کو دور کرنے کے لئے اصول فقہ کے مطابق جواب
بہت آسان ہے۔ اصول فقہ کا قاعدہ ہے کہ ظاہر اور نص میں جب تعارض ہو تو ترجیح
نص کو دی جائے گی۔ کیونکہ نص ظاہر کی نسبت اعلیٰ اور اقویٰ ہے۔ ”قل انظروا ما ذاقى
السموات والارض“ ظاہر ہے اس آیت سے ہر چیز کی طرف دیکھنے کا جواز معلوم
ہوتا ہے۔ لیکن قل للمؤمنین بغضوا من ابصارهم بنفس ہے نص اس کو کہتے ہیں
جس میں ظاہر کے مقابلہ میں وضوح و انکشاف زیادہ ہو اور حکم اپنے معنی مراد کے

لئے کلام کو ذکر کرتا ہے۔ اگرچہ بظاہر اس سے کوئی دوسری بات بھی معلوم ہوتی ہو اس
لئے ظاہر قرآن کو ترک کر دیا جائے گا اور نص قرآن پر عمل کیا جائے گا۔

تعارض 101 سورة هود

آیت 15

”من كان يريد الحياة الدنيا وزينتها نوف اليهم اعمالهم“ جو شخص محض حیات
دنیوی اور اس کی رونق چاہتا ہے تو ہم ان لوگوں کے اعمال ان کو دنیا میں پورے
طور سے جھگٹا دیتے ہیں۔ معلوم ہوا کہ کفار کو اپنے اعمال کا اجر دنیا میں ملتا ہے لیکن بعض
آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ ان کے اعمال دنیا میں ضائع ہو جاتے ہیں ان کو کیسے
اجر ملے گا۔ ارشاد باری ہے ”اولئك الذين حبطت اعمالهم فى
الدنيا والاخرة“ یہ وہ لوگ ہیں کہ ان کے سب اعمال غارت ہو گئے دنیا میں
اور آخرت میں۔ (سورة آل عمران آیت 22)

تطبیق: علامہ زنجری فرماتے ہیں۔ نوف اليهم توصل اليهم اعمالهم واقية
كاملة من غير بعض فى الدنيا وهو ما يرزقون فيها من الصحة
والرزق“ ان کو دنیا میں اپنے اعمال کا پورا پورا اجر ملتا ہے اور وہ برزق اور صحت
وغیرہ ہے۔ (الکشاف ج 2 ص 384)

امام نیثا پوری فرماتے ہیں ”وهو ما ينالون من الصحة والكفاف
وسائر اللذات والمنافع“ دنیا کے اندر ان کو صحت اور دنیاوی لذتیں اور منافع ملتے
ہیں۔ (غرائب القرآن حاشیہ طبری ج 11 ص 14)۔ اعمال سے مراد دنیاوی
فوائد ہیں اور جملہ اعمال سے مراد یہ ہے کہ ان کو کوئی مسلمان نہیں سمجھتا۔ نیک اعمال کے
ثمرات مرتب نہیں ہوتے۔

علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔ ”بطلت اعمالهم وسقطت عن حيز الاعتبار و خلت عن الثمرة في الدنيا حيث لم تحقق دماء هم و اموالهم ولم يستحقوا بها مدحا“ جہ اعمال کا مطلب یہ ہے کہ ان کے اعمال کی اللہ کے نزدیک کوئی وقعت نہیں ہوتی دنیا میں ان اعمال پر کوئی ثمرہ مرتب نہیں ہوتا ان کی جان و مال محفوظ نہیں ہوتا اور نہ کسی تعریف کے مستحق ہوتے ہیں۔ (روح المعانی ج 3 ص 109)

مولانا اشرف علی فرماتے ہیں۔ دنیا میں غارت ہونا یہ ہے کہ ان کے ساتھ معاملہ اہل اسلام کا سنا ہوگا۔ (بیان القرآن ج 2 ص 8)

ابو حیان اندلسی فرماتے ہیں۔ ”حبوط الاعمال في الدنيا وهو بطلانہ في الدنيا باستحقاق قتله والحاقه في الاحكام بالكفار وفي الآخرة بما يدل عليه من العقاب السرمدي“ جہ اعمال یہ ہے کہ قتل کا مستحق ہوتا ہے احکام کے اعتبار سے کافر ہوتا ہے اور آخرت میں ابدی عذاب ہوگا۔ (حاشیہ البحر المحیط ج 2 ص 150)

اجراعمال اور جہ اعمال دونوں غیر غیر ہوئے لہذا کوئی منافاة نہیں۔ ابو حیان اندلسی نے جہ اعمال کا ایک اور معنی بھی بیان کیا ہے۔ ”وقيل حبوط اعمالهم في الدنيا وهو عدم بلوغهم ما يريدون بالمسلمين من الاضرار بهم ومكائدهم فلا يحصلون من ذلك على شيء لان الله اعز دينه بانصاره“ جہ اعمال دنیا میں یہ ہے کہ کفار مسلمانوں کو ضرر پہنچانے کیلئے جس مکر و فریب سے کام لیتے ہیں اس میں کامیاب نہیں ہوتے کیونکہ اللہ تعالیٰ نے اپنے دین کو اس کے انصار کے ساتھ عزت دی ہے (ج 2 ص 150) اس توجیہ کے ساتھ بھی تعارض باقی نہیں

”يضعف لهم العذاب“ ایسوں کو دینی سزا ہوگی۔

اس سے اگلی آیت میں ذکر ہے کہ جو لوگ دوسروں کو راہ خدا سے روکتے ہیں اور اس میں کجی تلاش کرتے ہیں اور آخرت کے بھی منکر ہیں ان کو ذہل سزا دی جائے گی۔ حالانکہ دوسری آیت سے معلوم ہوتا ہے ہزبا لکل عمل کے مماثل ہوگی یعنی برے عمل اور سزا میں برابری ہوگی۔ ارشاد خداوندی ہے۔ ”ومن جاء بالسبي فليحزى الامثله او هم لا يظلمون“ اور جو شخص برا کام کرے گا سوا اس کو اس کے برابر ہی سزا ملے گی اور ان لوگوں پر ظلم نہ ہوگا۔ (الانعام 160)

تطبیق:..... مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں۔ وجہ دفع ظاہر ہے کہ مماثلت تو عمل کے ساتھ ہے اور مضاعفت اوروں کے اعتبار سے ہے۔ وجہ مضاعفت عمل کے (ان کا عمل دوتا ہے یعنی عمل میں تعدد ہے ایک خود گمراہ ہیں اور دوسرا عمل اوروں کو گمراہ کرنا)

دوسرا جواب ذکر فرماتے ہیں۔ اور اگر یصدون کو صدود بمعنی الاعراض سے لیا جاوے جس میں دوسروں کو گمراہ کرنا ماخوذ و معتبر نہیں تو مضاعفت وجہ تعدد عمل کے نہیں بلکہ وجہ شدت عمل صدود کے ہے۔ کہ وہ شدت خود متقاضی از یاد عذاب کو ہے اس اعتبار سے مماثلت محفوظ ہے خوب سمجھ لو۔ (بیان القرآن ج 5 ص 42)

در اصل ان کے عمل میں تعدد ہے اس لئے ان کو دینی سزا دی جائے گی اس قسم کی ایک اور آیت ہے۔ ”الذين كفروا و صدوا عن سبيل الله زدناهم عذابا فوق العذاب بما كانوا يفسدون“ جو لوگ کفر کرتے ہیں اور اللہ کی راہ سے روکتے ہیں

ان کے لئے ہم نے ایک سزا پر دوسری سزا بمقابلہ ان کے فساد کے بڑھادیں گے۔ (النحل 88) اس آیت میں ان کے عمل کا تعدد مذکور ہے کفر اور صدود اور ذلیل سزا بھی مذکور ہے۔

امام قرطبی فرماتے ہیں (بضعاف لهم العذاب) ای علی قدر کفرهم و معاصمهم ان کو دونی سزا ان کے کفر اور دیگر معاصی پر دی جائے گی۔ (تفسیر قرطبی ج 9 ص 19) ایک ان کا کفر ہے اور کفر کے بعد دیگر معاصی۔

برائی اور سزا میں مماثلت ہے یعنی اللہ تعالیٰ برائی کے مطابق اور مماثل سزا دینے لگے۔ جیسے کافر کی سزا مخلد فی النار ہے اس لئے کہ کافر زندگی بھر کافر رہتا ہے اگر اس کی زندگی کو طول مل جائے تو پھر بھی اپنے کفر پر قائم رہے گا۔ اس کا ارادہ کفر کا عمر بھر کا ہوتا ہے۔ اس طرح سزا بھی ابدی ہے۔ آیت میں صرف ایک سیبہ کا ذکر ہے من جاء بالسیبہ اگر سیبہ سے سینات بن جائیں تو ہر سیبہ کے مقابل میں سزا ہوگی۔ جب سینات بڑھ جائیں تو سزائیں بھی زیادہ ہو جائیں گے۔ لہذا ہر سیبہ کے مقابلہ میں ایک سزا ہو تو مماثلت قائم رہے گی۔ اس آیت میں سزا کی مضاعفت مذکور ہے۔ اس لئے کہ ان کی سینات متعدد ہیں مثلاً ان کا جھوٹ اللہ پر اللہ کے راستہ سے روکنا اللہ کے راستہ میں کجی تلاش کرنا اور آخرت کا انکار اس لئے دونی سزا کا ذکر ہے۔

تعارض 103
سورة هود
آیت 45

”ففسال رب ان ابسی من اهلی“ اور عرض کیا کہ اے میرے رب میرا یہ بیٹا میرے گھروالوں میں سے ہے۔ اس کے بعد اس کے خلاف حکم ہے۔ ارشاد ہے

”یا نوح انه لبس من اهلك“ اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا کہ اے نوح یہ شخص تمہارے گھروالوں میں سے نہیں۔ (سورة هود آیت 46)

تطبیق:..... قرابت کی دو قسمیں ہیں قرابت نسبی اور قرابت دینی نوح علیہ السلام نے جو اپنے بیٹے کے بارے میں کہا کہ میرے اہل سے ہے تو قرابت نسبی مراد ہے۔ اور جب اللہ تعالیٰ نے کہا کہ یہ تیرے اہل سے نہیں تو قرابت دینی مراد ہے۔ ابن الجوزی فرماتے ہیں ”ای لبس من دینک“ تیزی اس کے ساتھ دینی قرابت نہیں۔ دوسرا قول یہ ہے ”لبس من اهل الذین وعدتک نجاتهم“ جن کی نجات کا آپ کے ساتھ وعدہ کیا تھا ان میں سے نہیں۔

قاضی بیضاوی فرماتے ہیں: ”لقطع الولاية بين المؤمنین و الکفار“ نوح علیہ السلام کے اہل سے نفی اس لئے ہوئی کہ مسلمانوں اور کافروں کے مابین ولایت اور دوستی کا رشتہ منقطع ہے۔ (بیضاوی ج 1 ص 377)

تعارض 104
سورة هود
آیت 118

”ولو شاء ربك لجعل الناس امة واحدة ولا يزالون مختلفين“ اور اگر اللہ کو منظور ہوتا تو سب آدمیوں کو ایک ہی طریقہ کا بنادیتا اور ہمیشہ اختلاف کرتے رہیں گے۔ اس آیت سے لوگوں کا اختلاف معلوم ہوتا ہے کہ لوگ ہمیشہ مختلف رہیں گے۔ لیکن دوسری آیت سے عدم اختلاف معلوم ہوتا ہے۔ ارشاد باری تعالیٰ ہے

”كان الناس امة واحدة سب آدمی ایک ہی طریق کے تھے۔ (سورة البقرة آیت 213) یعنی ابتدا میں اختلاف نہ تھا۔ لیکن پہلی آیت بتا رہی ہے کہ شروع سے اختلاف تھا دونوں میں تعارض ہے۔

تطبیق:.....سورہ ہود میں جس اختلاف کا ذکر ہے یہ ابتدائی نہیں بلکہ اتفاق کے بعد پیدا ہوا علامہ زنجیری نے ایک قرأت ذکر کی ہے: "كان الناس امة واحدة فاختلغو فبعث الله" ابتدا میں لوگ دین واحد اسلام پر متفق تھے۔ بعد میں لوگوں نے اختلاف کیا تو اللہ نے پھر رسول بھیجے۔

مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں۔ مراد اس اختلاف سے اختلاف بعد اتفاق ہے۔ پس آیت "كان الناس امة واحدة" سے اس آیت کا کچھ تعارض نہیں کہ ایک سے اختلاف اور دوسری سے عدم اختلاف معلوم ہوتا ہے وجہ عدم تعارض تغاير دونوں زمانوں کا ہے۔ (بیان القرآن ج 5 ص 67)

محمد بن علی الشوکانی فرماتے ہیں "وقبل مختلفين في الرزق فهذا غنى وهذا فقير اختلاف في الرزق" مراد ہے کوئی غنی ہے کوئی فقیر۔ (فتح القدير ج 2 ص 534 'تفسیر قرطبی ج 9 ص 114)۔

اختلاف سے جب اختلاف فی الرزق مراد لیا تو دونوں آیتوں میں کوئی منافات نہیں۔ کیونکہ سورہ ہود میں اختلاف فی الرزق ہے۔ اور سورہ بقرہ میں اتفاق علی دین الاسلام ہے۔

علامہ آلوسی فرماتے ہیں "ان المراد من الوحدة الوحدة في الدين الحق ومن الاختلاف الاختلاف فيه على معنى المخالفة له" وحدت سے دین حق کی وحدت مراد ہے اور اختلاف سے مراد دین کی مخالفت ہے۔ اور اس قول کی طرف محققین نے ذہاب کیا ہے۔ (روح المعانی ج 12 ص 247)

ولايزنون مختلفين الامن رحم ربك ولذلك خلقهم" اور ہمیشہ اختلاف کرتے رہیں گے۔ مگر جس پر آپ کے رب کی رحمت ہو اور اللہ تعالیٰ نے ان لوگوں کو اسی واسطے پیدا کیا ہے۔

اس آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ لوگوں کو اختلاف کے لئے پیدا کیا ہے۔ لیکن دوسری آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ عبادت کے لئے پیدا کیا ہے۔ ارشاد باری ہے "وما خلقت الجن والانس الا ليعبدون" اور میں نے جن اور انس کو اسی واسطے پیدا کیا ہے کہ میری عبادت کیا کرو۔ (الذاریات 56)۔

تطبیق:.....مولانا اشرف علی تھانوی مسائل السلوک میں فرماتے ہیں "ولا منافاة بينه وبين قوله تعالى وما خلقت الجن والانس الا ليعبدون لان الاول غاية تكويثية والثاني غاية تشريعية" دونوں میں منافات نہیں اول سے مراد غایت تکوینی ہے اور دوسری سے مراد غایت تشریحی ہے (بیان القرآن ج 5)۔

امام قرطبی فرماتے ہیں "وقال ابن عباس ومجاهد وقتادة وضحاك ولرحمته خلقهم" لوگوں کو اپنی رحمت کے لئے پیدا کیا ہے۔ ذالک کا مشار الیہ رحمت ہے۔ "وقيل الاشارة بذلك للاختلاف والرحمة" ذلک کے ساتھ رحمت اور اختلاف دونوں کی طرف اشارہ ہے۔

اس پر اعتراض ہوتا ہے کہ ذالک مفرد ہے اور مرجع ثنیہ۔ جواب میں فرماتے ہیں کہ قرآن مجید میں ایسا بعض مقامات میں مذکور ہے ہے دو شخصین کی طرف مفرد کی ضمیر راجع ہو۔ مثلاً "الافاض ولا بكر عوان بين ذلك" فاض اور بكر کی طرف ذلک کی ضمیر کیساتھ اشارہ کیا ہے۔

"قل بفضل الله وبرحمته فبذلك فليفرحوا" فضل اور رحمت کی طرف ذلک مفرد کے ساتھ اشارہ ہے۔ "وروي عن ابن عباس خلقهم فریقین فریقاً برحمه

و فریقاً لایرحمہ، لوگوں کو دو فرقے بنا کر پیدا کیا ایک پر رحم کیا دوسرے پر رحم نہ کرے گا۔ ایک اور قول نقل کیا ہے، "وقیل ہو متعلق بقولہ ذلک یوم مجموع لہ الناس و ذلک یوم مشہود و المعنی و لشہود ذلک الیوم خلقہم،" ذلک کی ضمیر شہود یوم کی طرف راجع ہے یعنی اس دن کی حاضری کے لئے پیدا کیا ہے (تفسیر قرطبی ج 9 ص 115)۔

حافظ ابن کثیر فرماتے ہیں "و لذلک خلقہم قال للرحمة و قال قوم للاختلاف" ذلک ضمیر رحمت اور اختلاف دونوں کی طرف بنا بر اختلاف اقوال ص 3 ج 3 ص 587)۔

تعارض سے بچنے کی اہل صورت یہ ہے کہ ولذک میں لام عاقبتہ کے لئے ہے علامہ آلوسی فرماتے ہیں "و السلام لام العاقبة و الصیرورة (روح المعانی ج 12 ص 249) یعنی تخلیق کا انجام یہ ہوا کہ لوگ مختلف ہو گئے۔

تعارض 106 سورة هود

آیت 119

"لا ملئین جہنم من الجنة و الناس اجمعین" کہ میں جہنم کو جنات اور انسانوں سے دونوں سے بھردوں گا۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ جہنم ضرور بڑھ ہوگی اور بڑھ ہونے کا معنی یہ ہے کہ اس میں مزید گنجائش نہ ہوگی۔ لیکن سورۃ ق کی آیت "یسوم نقول لجنہم هل امتلت و تقول هل من مزید" جس دن کہ ہم دوزخ سے کہیں گے کہ تو بھر گئی اور وہ کہے گی کچھ اور بھی (آیت 30) سے معلوم ہوتا ہے کہ جہنم نہیں بھرتی بلکہ اس میں گنجائش رہتی ہے۔

تطبیق: اللہ تعالیٰ نے وعدہ کیا ہے کہ جہنم کو جنات اور انسانوں سے

ضرور بھروں گا۔ تو اللہ تعالیٰ اپنے ایفائے عہد کے لئے جہنم سے سوال کرے گا کہ بھر گئی تو وہ کہے گی ہل من مزید۔ تو اللہ تعالیٰ جب اپنی شان کے مطابق اس پر قدم رکھے تو جہنم بڑھ ہونے کا اقرار کرے گی۔

حکیم الامت حضرت تھانوی ان دونوں آیات کے تعارض کو دور کرنے کے لئے فرماتے ہیں۔ لا ملئین عام ہے ابتدا اور انتہاء کو پس انتہاء بھر جانے پر بھی لا ملئین صادق آتا ہے۔ (بیان القرآن ج 11 ص 55)

احقر کے نزدیک ہل من مزید ایک شبہ کا جواب ہے اس میں کوئی شک نہیں کہ اللہ تعالیٰ جہنم کو ضرور بھر دیں گے لیکن کسی مجرم کے دل میں یہ خیال آئے کہ شاید جہنم بھر جائے اور اس میں مزید وسعت اور گنجائش نہ ہو لہذا جہنم سے باہر رہ جاؤں گا۔ دنیاوی جیلوں میں بعض اوقات ایسا ہی ہوتا ہے کہ اس میں تمام مجرمین کے سامنے کی گنجائش نہیں ہوتی لیکن اللہ تعالیٰ نے اس شبہ کو دور کر دیا کہ جہنم کی جیل کو دنیاوی جیلوں پر قیاس نہ کرو۔ بلکہ میری جیل بڑی وسیع ہے کوئی مجرم اس سے بچ نہیں سکتا باوجود اس وسعت کے اللہ اس کو بھروں گے۔ جب تفسیر کشاف دیکھی تو اس تشریح کی تائید مل گئی فالحمد للہ علی ذلک۔

علامہ زبیر فرماتے ہیں "و یحوزان ہل من مزید استکثار اللدخالین فیہا و استبداعا (استبعاداً) للزیادة علیہم لفرط کثرتہم" (الکشاف ج 4 ص 389) یعنی کوئی اس کو بعید نہ جانے کہ اس میں داخل ہونے والے تو انتہائی کثرت کیساتھ ہیں، کیسے اس میں سائیں گے۔

”وَكَلَّا نَقْصَ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الرُّسُلِ“ اور پیغمبروں کے قصوں میں سے ہم یہ سارے قصے آپ سے بیان کرتے ہیں۔ اس آیت سے بظاہر معلوم ہوتا ہے کہ تمام رسولوں کے قصے مراد ہیں حالانکہ دیگر آیات میں تصریح ہے کہ بعض انبیاء کے قصے سنائے گئے ہیں اور بعض کے نہیں فرمان باری ہے ”وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَنْ لَمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ“ اور ہم نے آپ سے پہلے بہت سے پیغمبر بھیجے جن میں بعض تو وہ ہیں کہ ان کا قصہ ہم نے آپ سے بیان کیا ہے اور بعض وہ ہیں جن کا ہم نے آپ سے بیان نہیں کیا۔ (سورۃ المؤمنون آیت

(78)

تطبیق:..... امام رازی فرماتے ہیں، معناه و کل نباء نقص عليك من انباء الرسل هو ما ثبت به فؤادك فمافي موضع رفع خبر لمبتدأ محذوف فلا يقتضى اللفظ قص انبياء جميع الانبياء فلان تناقض بين الآيتين“ مطلب یہ ہے کہ ہر وہ قصہ جو انبیاء کے قصوں سے ہم آپ سے بیان کرتے ہیں اس سے آپ کے دل کو تقویت دیتے ہیں۔ (ما) مبتدأ محذوف کی خبر ہے۔ الفاظ سے معلوم نہیں ہوتا کہ تمام انبیاء کے قصے سنائے مقصود ہیں۔ لہذا دونوں آیتوں میں کوئی تناقض نہیں۔ (۲) ان المراد بالكل هنا البعض. كل سے یہاں بعض مراد ہے۔ اس کی قرآن میں مثالیں موجود ہیں: ”ثم اجعل على كل جبل منهن جزء“ تمام پہاڑ مراد نہیں۔ ”واوتيت من كل شيء“ ہر شئی مراد نہیں۔ بلکہ بعض ضروری اشیاء مراد ہیں۔

لمبید کا شعر ہے۔ الاكل شي ما جعل الله باطل. اللہ کے ماسوی ہر شے باطل

ہے۔ حالانکہ ہر شے باطل نہیں ہو سکتی جیسے جنت، دوزخ، ایمان، قرآن، حضور وغیرہ۔ اس شعر کے بارے میں حضور کا فرمان ”اصدق كلمة قالها شاعر كلمة لمبید. شاعر لمبید نے سب سے سچا کلمہ کہا ہے۔ (مسائل الرازی ص 145)

ابن الجوزی فرماتے ہیں: ”المعنى كل الذي يحتاج اليه من انباء الرسل نقص عليك“ انبیاء کرام کے قصوں میں سے جن کی طرف آپ محتاج ہیں اس کو ہم بیان کریں گے۔ (زاد المسیر ج 4 ص 173)

علامہ آلوسی فرماتے ہیں ”ای نقص عليك من انباء الرسل الاشياء التي ثبت بها فؤادك جميعاً“ (روح المعانی ج 12 ص 167).

ولما بلغ اشدہ آتینہ حکما وعلما“ اور جب وہ اپنی جوانی کو پہنچے تو ہم نے ان کو علم و حکمت دیدی۔

یوسف علیہ السلام کو حکم اور علم سن بلوغ یا کمال شباب کے وقت ملا حالانکہ دوسری آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ بلوغ سے قبل وحی آچکی ہے ”و او حینا الیہ لتنبئنہم بامرہم ہذا وہم لایشعرون“ اور ہم نے ان کے پاس وحی بھیجی کہ تم ان لوگوں کو یہ بھی جتلاؤ گے کہ اور وہ تم کو پہچانیں گی بھی نہیں۔ (آیت 15)

تطیق:..... مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں اور او حینا الیہ الخ میں قبل بلوغ جس وحی کا ذکر چکا ہے وہ ایک خاص واقعہ کے متعلق ہے وہ علوم دیدیہ سے نہیں جو علم و حکمت سے مراد ہے۔ پس دونوں آیتوں میں تعارض نہیں۔ (بیان القرآن ج 5 ص 75)

علاء الدین البغدادی فرماتے ہیں ”وقیل المراد من قولہ و او حینا الیہ وحی الہام“ یہ الہام تھا لیکن اس قول کو غیر اولیٰ کہا ہے۔ (خازن ج 3 ص 219)

یا یوسف علیہ السلام کو خاص نبوت حالت حضر میں ملی تھی جیسے اوحینا سے معلوم ہوتا ہے اور لما بلغ اشدہ کا معنی یہ ہوگا کہ بعد میں فہم اور علم کو زیادہ کر دیا۔

ابن عبید اللہ الانصاری القرطبی فرماتے ہیں۔ ومن قال او تسی النبوة صبیبا قال لم يبلغ اشدہ زدناہ فہما وعلما۔ (تفسیر قرطبی ج 9 ص 162)

علامہ آلوسی نے ایک قول مجاہد کا نقل کیا ہے کہ اوحینا سے الہام مراد ہے۔ ”وکان ذلك علی ماروی عن مجاہد بالہام (روح المعانی ج 6 ص 297)۔

مولانا اشرف علی تھانوی کا جواب واضح معلوم ہوتا ہے کہ اوحینا میں وحی ایک

خاص واقعہ کے متعلق ہے اس لئے کہ لتنبئنہم بامرہم ہذا سے یہی معلوم ہوتا ہے۔

”قال اجعلنی علی خزائن الارض انی حفیظ علیہ السلام نے فرمایا کہ ملکی خزانون پر مجھ کو مامور کرو میں حفاظت رکھوں گا اور خوب واقف ہوں۔ اس آیت سے ثابت ہوا کہ حضرت یوسف علیہ السلام نے اپنے آپ کو حفیظ اور علیم کہہ کر اپنی تعریف کی اور اپنی پاکیزگی بیان کی حالانکہ ہر انسان کے تقویٰ اور دین داری کو اللہ جانتے ہیں۔ ارشاد ہے ”فلاترکوا انفسکم“ تم اپنے آپ کو مقدس نہ سمجھا کرو (سورة التہم آیت 32)

اس آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ اپنی پاکیزگی بیان کرنا صحیح نہیں۔

تطیق:..... اظہار پاکیزگی بطور تشکر اعتراف نعمت اور بوقت ضرورت جائز ہے لیکن بطور تکبر بلا ضرورت اور ریا کے ناجائز ہے۔

علامہ زنجیری فرماتے ہیں ”وہذا اذا کان علی الاعجاب او الریاء فامان اعتقدان ماعملہ من العمل الصالح من اللہ و توفیقہ و تائیدہ ولم یقصد بہ التمدح لم یکن المزکین انفسہم لان المسرة بالطاعة طاعة و ذکرہا شکر“ اظہار پاکیزگی بطور تکبر اور ریا کے منح ہے جب یہ اعتقاد ہو کہ نیکی اللہ کی تائید اور توفیق سے کی اور مقصود اپنی تعریف نہ ہو تو جائز ہے۔ کیونکہ طاعت پر خوش ہونا بھی طاعت ہے اور اس کا ذکر شکر ہے۔ (الکشاف ج 4 ص 426)۔

جلال الدین المحلي فرماتے ہیں ”فلاترکوا انفسکم لاتمدحواہای علی

سبیل الاعجاب اعلیٰ سبیل الاعتراف بالنعمة فحسن " اپنی تعریف بطور تکبر منع ہے۔ اعترافِ نعمت کے طور پر اچھی بات ہے۔ (جلالین ص 439)

امام رازی فرماتے ہیں "قلاترکوا انفسکم ریاء وخیلاء ولا تقولوا الا حرا ناً خیر منک وانا ازکى منک واتقوا فان الامر عند الله" ریا اور تکبر کے طور پر پاکیزگی کا اظہار نہ کرو ایک دوسرے سے یوں نہ کہو کہ میں تمھ سے بہتر ہوں تمھ سے زیادہ صوفی ہوں اور بڑا متقی ہوں کیونکہ اللہ سب کچھ جانتے ہیں۔ (تفسیر کبیر ج 29 ص 10)

یعنی غیر کے مقابلہ میں اپنی پاکیزگی کا اظہار صحیح نہیں۔ فی نفسہ بوقت ضرورت بطور اعترافِ نعمت اور بطور تشکر اظہار پاکیزگی جائز ہے۔ یوسف علیہ السلام کا اظہار فی نفسہ تھا اور ضرورت کے طور پر تھا۔

تعارض 110

سورة يوسف

آیت 100

"وجاء بکم من البدو" اور تم سب کو باہر سے لے آیا اس آیت سے معلوم ہوا کہ بعض انبیاء کرام بدوی (دیہاتی) بھی تھے۔ حالانکہ تمام انبیاء کرام شہری تھے۔ ارشاد ہے "وما ارسلنا من قبلك الا رجالا نوحی الیہم من اهل القری" اور تم نے آپ سے پہلے مختلف بستیوں والوں میں سے جتنے بھیجے سب آدمی تھے جن کے پاس ہم وحی بھیجتے تھے (سورة یوسف آیت 109) اس آیت سے معلوم ہوا کہ تمام انبیاء کرام شہری تھے۔ مفسرین نے بھی اس بات کی تصریح کی ہے کہ اللہ تعالیٰ نے تمام انبیاء کرام کو شہروں میں پیدا کیا ہے۔ اس کی وجہ تطبیق میں ذکر ہوگی۔

تطبیق:..... علامہ زمری فرماتے ہیں انبیاء کرام کو شہروں میں پیدا کیا اور دیہات میں کیوں پیدا نہ کیا؟ لانہم اعلم واحلم واهل البوادى فیہم الجہل والحقاء القسوة، شہریوں میں علم اور علم زیادہ ہوتا ہے اور دیہاتوں میں جھل جھا اور سنگ دلی ہوتی ہے۔ (الکشاف ج 2 ص 509)

وزعم بعضهم ان یعقوب علیہ السلام اتم تحول الی البادية بعد النبوة لان الله لم یبعث نبیاً من البادية " بعض کا خیال ہے کہ یعقوب علیہ السلام دیہات کی طرف منتقل ہو گئے تھے۔ کیونکہ اللہ نے کسی نبی کو دیہات میں مبعوث نہیں کیا۔

(۲) قال ابن الانبارى ان بعد اسم موضع معروف "بدایک جگہ کا نام ہے اس سے مراد دیہات نہیں۔ (روح المعانی ج 13 ص 60)

امام قرطبی فرماتے ہیں "کان یعقوب تحول الی البادية وسکنها وان الله لم یبعث نبیاً من اهل البادية وقيل انه كان حرج الی بداء هو موضع یعقوب علیہ السلام نے دیہات کی طرف منتقل ہو کر سکونت اختیار کی۔ (قرطبی ج 9 ص 267)

تعارض 111

سورة الرعد

آیت 42

"وقدم مکور الذین من قبلہم" اور ان سے پہلے جو لوگ ہو چکے ہیں انہوں نے تدبیریں کیں۔

اس آیت میں غیر اللہ کے لئے مکر کا اثبات ہے مگر اسی آیت میں اس کے بعد مذکور ہے جس سے معلوم ہوتا ہے کہ غیر اللہ سے مکر منافی ہے۔ ارشاد باری ہے۔ فلله العکر جمیعاً" سو اصل تدبیر تو خدا ہی کی ہے۔ (آیت 42)

تطبیق:..... امام رازی فرماتے ہیں، "معناه ان مکر الما کرین مخلوق له ولا یبصر الا بارادته فی هذه الجهة صحت اضافة مکرهم الیه" ما کرین کا مکر اللہ کی مخلوق ہے مخلوق کا مکر اللہ کے ارادے سے کام کرتا ہے اس لئے مکر کی اضافت غیر اللہ کی طرف صحیح ہے۔

"السانی انه جعل مکرهم کلامکر بالاضافة الی مکره" ان کا مکر بمنزلہ عدم مکر ہے۔ کیونکہ مکر کی اضافت اللہ نے خود اپنی طرف کی ہے فرماتے ہیں "فانسانه لهم باعتبار الکسب و یغیه عنهم باعتبار العلق" مخلوق کے لئے اثبات مکر بطور کسب ہے اور اللہ کے لئے بطور خلق ہے۔ (مسائل الرازی ص 157)

تفسیر کبیر میں ایک اور معنی نقل کیا ہے فلنہ جزاء المکر مکر کا بدلہ اللہ کیلئے ہے۔ (ج 19 ص 68) کیونکہ ان کے مکر کے وبال کا مزہ ان کو چکھائے گا۔

ابن الجوزی فرماتے ہیں (ف الله المکر جمیعا) یعنی ان مکر الما کرین مخلوق له ولا یبصر الا بارادته "ما کرین کا مکر اللہ کی مخلوق ہے اس کے ارادہ کے بغیر کسی کا مکر کسی کو نقصان نہیں پہنچا سکتا۔ (زاد المسیر ج 4 ص 341)

تعارض 112

سورة ابراهيم

آیت 9

"الم یأتکم نبؤ الذین من قبلکم قوم نوح و عاد و ثمود الذین من بعدهم لا یعلمهم الا الله" کیا تم کو ان لوگوں کی خبر نہیں پہنچی جو تم سے پہلے ہو گزرے ہیں یعنی قوم نوح اور عاد اور ثمود اور جو لوگ ان کے بعد ہوئے ہیں جن کو بجز اللہ کے کوئی نہیں جانتا۔

لم یأتکم سے کفار مکہ کو اس واقعہ کا علم معلوم ہوتا ہے اور لا یعلمہم سے عدم علم معلوم

ہوتا ہے۔

تطبیق:..... مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں اول (یعنی علم) باعتبار اجمال کے اور دوسرا (عدم علم) باعتبار تفصیل کے۔ (بیان القرآن ج 6 ص 6)

یہ جواب بھی ممکن ہے کہ واللذین من بعدہم مبتدا ہو اور لا یعلمہم اس کی خبر یہ تو مطلب یہ ہوگا کیا تم کو قوم نوح، عاد، ثمود اور ان کے بعد وہ لوگ جن کی تعداد صرف اللہ کو معلوم ہے کی خبر نہیں پہنچی۔ یعنی لا یعلمہم کا تعلق صرف والذین من بعدہم کیساتھ ہوگا۔ علامہ آلوسی کی عبارت کی یہی مطلب نکلتا ہے فرماتے ہیں "الم یأتکم نبأ هؤلاء ومن لا یحصى عددهم" آگے فرماتے ہیں "وفیه لطف لا یہام الجمع بین الاجمال والتفصیل" اجمال اور تفصیل جمع ہے۔ (روح المعانی ج 7 ص 277)

تعارض 113

سورة ابراهيم

آیت 17

ویاتیه الموت من کل مکان" اور ہر طرف سے اس پر موت کی آمد ہوگی۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ کافر کو آگ میں موت آئے گی۔ حالانکہ اس سے متصل اس بات کا ذکر ہے کہ موت نہیں آئے گی۔ ارشاد ہے وما ہو بمیت۔ اور وہ کسی طرح مرے گا نہیں۔

تطبیق:..... ایک موت ہے اور ایک موت کے اسباب موت روح کے نکلنے کو کہتے ہیں آیت میں موت کے اسباب مراد ہیں حقیقتاً موت مراد نہیں۔

علامہ زکریا فرماتے ہیں کسان اسباب الموت واصنافہ کلہا فقد تالبت علیہ واحاطت بہ من جمیع الجهات" موت کے تمام اسباب اس پر جمع

ہو کر ہر طرف سے احاطہ کر لیں گے۔ (الکشاف ج 2 ص 546)

علامہ آلوسی فرماتے ہیں ای اسبابہ من الشدائد و انواع العذاب فالکلام علی المجاز موت کے اسباب یعنی ہر قسم کی تکلیف اور عذاب اس کا احاطہ کریں گے۔ اس کو مجازاً موت کہا گیا۔ (روح المعانی ج 13 ص 202)

تعارض 114

سورة ابراهيم

آیت 36

رب انهن اضللن كثير من الناس "اے میرے پروردگار ان بتوں نے بہتر سے آدمیوں کو گمراہ کر دیا۔

گمراہی ایک ضرر ہے اس آیت سے معلوم ہوا کہ بت نقصان پہنچا سکتے ہیں لیکن دیگر آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ یہ بت کسی کو نفع یا نقصان نہیں پہنچا سکتے۔ ارشاد باری ہے "ويعبدون من دون الله مالا يضرهم ولا ينفعهم"

تطبیق:..... امام رازی فرماتے ہیں "اضافة الاضلال اليها مجاز بطريق المشابهة ووجه انهم لما ضلوا بسببها فكانها اضلتهم كما يقال فتننتهم الدنيا وغرتهم" بتوں کی طرف اضلال کی اضافت مجازاً ہے کیونکہ یہ سبب کے درجہ میں ہیں۔ مثالیں دے کر فرماتے ہیں "ومعناه حصول هذه الآثار بسبب هذه الاشياء وفاعل الآثار هو الله تعالى" اسباب پر اثرات مرتب ہوتے ہیں لیکن آثار اور اسباب کا فاعل اللہ ہے۔ (مسائل الرازی ص 164).

علامہ زنجیری فرماتے ہیں "انما جعلن مضلات لان الناس ضلوا بسببهن فكانهن اضللنهم كما تقول فتنهم الدنيا وغرتهم ای

افتنوا بهما واغتروا بسببها" سبب کے درجہ میں اضلال کی نسبت بتوں کی طرف ہوئی ہے جیسے تو کہے اس کو دنیا نے دھوکہ دیا یعنی دنیا کی وجہ سے دھوکہ میں پڑ گیا۔ (الکشاف ج 2 ص 558)

تعارض 115

سورة ابراهيم

آیت 43

"مهطعين مقنعي رؤسهم لا يرتد اليهم طرفهم" دوڑتے ہوئے ہوں گے اپنے سر اوپر اٹھا رکھے ہوں گے۔ ان کی نظر ان کی طرف ہٹ کر نہ آوے گی۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ ان کی نظریں اوپر کی طرف اٹھی ہوئی ہوں گی۔ لیکن ایک آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ ان کی نظریں جھکی ہوں گی۔ ارشاد ہے حشعاً ابصارهم "ان کی آنکھیں جھکی ہوئی ہوں گی (سورة القمر آیت 7)۔

تطبیق:..... حکیم الامت مولانا تھانوی فرماتے ہیں "سوتطبیق یہ ہے کہ وہاں مختلف حالتیں ہوں گی کبھی حیرت اور اس کے آثار کا غلبہ ہوگا۔ (بیان القرآن ج 11 ص 81)

حیرت میں اوپر اور سامنے دیکھیں گے اور بیت اور زلت میں نظریں جھک جاویں گے۔

تعارض 116

سورة الحجر

آیت 18

الامن استرق السمع فاتبعه شهاب مبین" ہاں مگر کوئی بات چوری چھپے سن

بھاگے تو اس کے پیچھے ایک روشن شعلہ ہو لیتا ہے۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ شیاطین کچھ سن لیتے ہیں لیکن دوسری آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ شیاطین نہیں سن سکتے۔ ارشاد ہے "انہم عن السمع لمعزولون" کیونکہ وہ شیاطین سننے سے روک دئے گئے ہیں۔ (سورۃ الشعراء آیت 212)

تطبیق:..... مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں۔ اور آیت انہم عن السمع لمعزولون باعتبار سموات کے ہو اور استراق السمع باعتبار سماب کے ہو۔ (بیان القرآن ج 6 ص 24)

علامہ زختری فرماتے ہیں معزولون عن استماع کلام اهل السماء "اہل سماء کے کلام کے سننے سے شیاطین معزول ہیں۔ (الکشاف ج 3 ص 329)

تعارض 117

سورۃ النحل

آیت 25

"لیحملوا ووزارہم کاملۃ یوم القیامۃ ومن اوزار الذین یضلو نہم" نتیجہ اس کا یہ ہوگا کہ ان لوگوں کو قیامت کے دن اپنے گناہوں کا پورا بوجھ اور جن کو یہ لوگ بے عملی سے گمراہ کر رہے ہیں ان کے گناہوں کا بھی کچھ بوجھ اپنے اوپر اٹھانا پڑے گا۔ اور ایک اور ارشاد ہے "ولیحملن انقالہم واثقالہم مع انقالہم" اور البتہ اٹھائیں گے اپنے بوجھ اور کتنے بوجھ ساتھ اپنے بوجھ کے (سورۃ العنکبوت آیت 13) اس آیت میں اس بات کی دلالت ہے کہ گمراہ اپنے گناہوں کا بوجھ بھی اٹھائیں گے اور اپنے گمراہ قہقہوں کا بھی۔ حالانکہ بعض آیات میں صاف مذکور ہے کہ کوئی نفس کسی دوسرے کا بوجھ نہیں اٹھائے گا۔ ارشاد ہے "ولانزروا زرة و زر اعری" اور

کوئی دوسرے کا بوجھ نہ اٹھائے گا۔ (سورۃ فاطر آیت 18)

تطبیق:..... گناہ کی دو قسمیں ہیں۔ ضلال خود گمراہ ہونا اور اضلال دوسرے کو گمراہ کرنا جیسے بیماریاں دو قسم کی ہیں۔ متعدی جو دوسروں کو لگے اور غیر متعدی کا ضرر مریض سے کسی اور کی طرف تباہی کرے۔ جس طرح خود گمراہ ہونا ایک گناہ ہے۔ اس کی سزا پانا ضروری ہے اسی طرح اضلال دوسروں کو گمراہ کرنا بھی ایک گناہ ہے۔ اس کی سزا بھی ملے گی۔ اضلال کا گناہ بڑا خطرناک ہے۔ اس کے اضلال کی وجہ سے جتنے لوگ اس گناہ کا ارتکاب کریں گے یہ ان میں برابر کا شریک ہوگا۔ قہقہوں کے گناہ کا بوجھ بھی اس پر ڈالا جائے گا۔ تابع گناہ کا مرتکب ہو اور یہ اضلال کا۔ یہ ایسا گناہ ہے کہ دونوں اس میں شریک ہیں۔ آیت میں یہ ذکر ہے کہ دوسرے کے گناہ کا بوجھ کس پر نہ ڈالا جائے گا تو اس سے مراد ضلال ہے وہ گناہ جس کا اثر اس مرتکب سے دوسروں کی طرف تباہی کرے۔ اور جس آیت میں یہ مذکور ہے کہ دوسروں کے گناہوں کا بوجھ اس پر ڈالا جائے گا تو اس سے مراد اضلال ہے ایسا گناہ جس کی وجہ سے اور لوگ گمراہ ہوئے۔

علامہ زختری فرماتے ہیں فحملوا ووزار اضلالہم وبعض اوزار من حمل بضلالہم وهو وزر الاضلال لان المضل والضال شریکان فی ہذا یفعلہ و ہذا یطاعہ علی اضلالہ فیتحملان الوزر (الکشاف ج 2 ص 601)

اپنے گناہ کا بوجھ اٹھائیں گے اور ان کا جن کو انہوں نے گمراہ کیا جو اضلال کا بوجھ ہے کیونکہ ضال اور مضل دونوں اس گناہ میں شریک ہیں۔ ایک گناہ کرتا ہے دوسرا اس کی اتباع کرتا ہے تو دونوں یہ بوجھ اٹھائیں گے۔

علامہ زختری فرماتے ہیں "فان قلت کیف توفیق بین ہذا و بین قولہ لیحملن انقالہم و انقال مع انقالہم قلت تلک الآیۃ فی الضالین المضلین وانہم

يحملون انقال اضلال الناس مع انقال اضلالهم وذلك كله اوزارهم

ما فيها شئ من وذر غيرهم“

اگر تو ان آیتوں کی تطبیق کے بارے میں پوچھے تو میں کہوں گا کہ ولیحملن انقالہم ضال مضل کے بارے میں ہے یہ لوگ کو گمراہ کرنے کا اور اپنا بوجھ اٹھائیں گے اس طرح یہ سارا اپنا بوجھ ہوا اس میں ان پر کسی غیر کا بوجھ نہیں لادایا گیا۔ (الکشاف ج 3 ص 606)

امام قرطبی نے ایک حدیث ذکر کی ہے اس کے نقل کرنے سے تمام آیتوں کا صحیح اور واضح مفہوم سامنے آجائے گا۔ ”من دعالی ہدی فاتبیع علیہ و عمل بہ فله مثل اجور من اتبعہ ولا ینقص ذلك من اجورہم شیئا وایماداع دعالی ضلالة فاتبع علیہا و عمل بہا بعدہ فعلیہ مثل اوزار من عمل بہا من اتبعہ لا ینقص ذلك من اجورہم شیئا (قرطبی ج 13 ص 331)۔“

جن نے کسی کو ہدایت کی طرف بلایا پھر کسی نے اس کی پیروی کر کے اس ہدایت پر عمل کیا تو داعی کو پیروی کرنے والا جتنا اجر ملے گا اور خود اس کے اجر میں ذرا بھی کمی نہ کی جائے گی اور کسی نے کسی کو گمراہی کی طرف بلایا اور اس کی اتباع کی تو اتباع کرنے والے کی طرح داعی کو بھی گناہ ملے گا اور تعین کے گناہوں سے کمی نہ کی جائے گی۔

”ولقد بعثنا فی کل امة رسولا“ اور ہم ہر امت میں کوئی نہ کوئی رسول بھیجتے رہے

”انما انت منذر ولكل قوم هاد“ آپ صرف ڈرانے والے ہیں اور ہر قوم کے لئے ہادی ہوتے چلے آئے ہیں۔ (سورة الرعد آیت 7)۔ ”وان من امة الا خلا فیہا نذیر“ اور کوئی امت ایسی نہیں جس میں کوئی ڈرانے والا نہ گزرا ہو (سورة فاطر آیت 24) ان آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ اللہ تعالیٰ نے ہر امت اور قوم کی طرف ہر زمانے میں ہادی اور نذیر بھیجے ہیں لیکن بعض آیات اس کے خلاف معلوم ہوتا ہے۔ ارشاد ہے ”لئنذر قوم ما ما انذر ابا نهم“ تاکہ آپ ایسے لوگوں کو ڈرائیں جس کے باپ دادا انہیں ڈرائے گئے تھے ایک اور ارشاد ہے ”یا اهل الکتاب قد جاءکم رسولنا یبیین لکم علی فترۃ من الرسل ان تقولوا ما جاءنا من بشیر ولا نذیر (سورة المائدة آیت ۶۹) فترۃ کا زمانہ بغیر بشیر نذیر کے ہوتا ہے ایک اور ارشاد ہے ”لئنذر قوم ما ما آتیہم من نذیر من قبلک“ تو ڈرنا تو اسے ان لوگوں کو جن کے پاس نہیں آیا کوئی ڈرانے والا تجھ سے پہلے۔ (سورة السجدة آیت 3) ان آیات سے معلوم ہوا کہ بعض زمانے اور قومیں ایسی گزری ہیں جو نذیر ہادی او بشیر سے خالی تھیں۔

تطبیق..... مولانا اشرف علی تھانوی ”بعثنا فی کل امة رسولا“ اور لئنذر قوم ما ما آتیہم من نذیر“ میں تعارض دور کرنے کے لئے فرماتے ہیں اس کے تعارض کا شبہ ہو تو دو طرح سے مدفوع ہو سکتا ہے ایک یہ کہ کل امة میں لفظ کل تکثیر کے لئے ہو دوسرے یہ کہ ہر امت اور قوم کے اوائل میں ایک رسول آگئے ہوں اس طرح کہ اگر وہ لوگ اس شریعت کا سلسلہ قائم و باقی رکھنا چاہتے تو ممکن ہوتا اور ضرورت اس قدر سے مرتفع ہو سکتی ہے اور اوائل میں رسول آنے کی ضرورت نہیں رہتی گو اوائل کی تفصیر سے اوائل تک وہ سلسلہ نہ پہنچا ہو۔ پس حکم بعثت کا کل اسم میں باعتبار اوائل کے ہو اور ما آتیہم من نذیر باعتبار اوائل کے ہو۔ (بیان

علامہ آلوسی فرماتے ہیں "فالمعنى ما انذر آياتهم رسول اى لم يباشرهم بالانذار لانه لم ينذرهم اصلا فيجوز ان يكون قد انذرهم من ليس نبى كزيد ابن عمرو بن نفيل وقس بن ساعدة فلا منافاة بين ما ههنا وقوله تعالى وان من امة الا خلا فيها نذير"

اس کا مطلب کہ ان کے اباؤں کے پاس نذیر نہیں آیا ہے کہ بلا واسطہ ان کے پاس نذیر نہیں آیا۔ یہ مطلب نہیں کہ ان کے پاس بالکل سرے سے نذیر ہی نہیں آیا۔ گویا بلا واسطہ نذیر آیا ہے جو نذیر ہو اور نبی نہ ہو جیسے عمرو بن نفیل اور قس بن ساعدہ لہذا آیات کے مابین تافی نہیں فرماتے ہیں اس سے زمانہ فترۃ کا انکار لازم نہیں ہوتا۔ لانه فترۃ ارسال وانقطاعها زمانا لفترۃ انذار مطلقاً۔

فترۃ کے زمانے میں صرف ارسال کا سلسلہ بند تھا ایسا نہ تھا کہ سرے سے انذار کا سلسلہ ہی نہ تھا۔

ابن عطیہ فرماتے ہیں لتنذر قوماً میں "بحتمل ان تكون مامصدرية نعتاً لمصدر مؤكداً اى لتنذر قوماً انذار مثل انذار الرسل آباء هم الابعدين" مامصدریہ ہے معنی یہ ہوگا تاکہ آپ قوم کو ایسا ڈرائیں جیسے کہ رسولوں نے ان کے گذشتہ باپ دادا کو ڈرایا تھا۔ (روح المعانی ج 22 ص 213)۔

مانافیہ نہ ہوگا تعارض اس صورت میں تھا جب مانافیہ تھا امام رازی فرماتے ہیں "ان تكون موصولة معناه لتنذر قوماً الذين انذر آباءهم" ماموصولہ ہے معنی یہ ہوگا تاکہ آپ اس قوم کو ڈرائیں جن کے آباء کو ڈرایا گیا تھا۔ (تفسیر کبیر ج 26 ص 42)۔

ومن ثمرات النخيل والاعصاب تتخذون منه سكرأ ورزقاً حسناً" اور کھجور اور انگور کے پھلوں سے تم لوگ نشہ کی چیز اور عمدہ کھانے کی چیز بناتے ہو۔

سکر اور رزق حسن کے بنانے کو اللہ نے بطور امتنان اور احسان کے ذکر کیا ہے جس سے معلوم ہوتا ہے کہ شراب حلال ہے۔ حالانکہ نصوص میں شراب کی قطعی حرمت ہے۔

ارشاد ہے۔ "انما الخمر والميسر والانصاب والازلام رجس من عمل الشيطان فاجتنبوه" بات یہی ہے کہ شراب اور جو اور بت وغیرہ اور قرعہ کے تیریہ سب گندی باتیں شیطانی کام ہیں۔ سوان سے بالکل الگ رہو (سورة المائدة آیت

(90)

تطيق: علامہ زنجبیری فرماتے ہیں "وفيه وجهان احدهما ان تكون

منسوخة" یعنی تتخذون منه سكراً منسوخ ہے۔ "والثاني ان يجمع بين العتاب والمنة" اس آیت میں اللہ تعالیٰ نے عتاب اور احسان کو جمع کیا ہے۔ شراب پر عتاب اور رزق حسن کا ذکر بطور امتنان ہے۔ وقيل السكر النبيذ يا سكر سے مراد نبيذ ہے اور نبيذ حلال ہے۔ (الكشاف ج 2 ص 617)

علامہ آلوسی نے سکر میں اقوال ذکر کئے ہیں۔

(۱) السكر الخل بلغة الحبشة. جمشی لغت میں سکر مرکہ کو کہتے ہیں۔

(۲) السكر المطعوم المتفككه به سکر وہ کھانا ہے جو تفلکہ کے

طور پر کھایا جائے۔ (روح المعانی ج 14 ص 180)

امام قرطبی فرماتے ہیں۔ قال ابن عباس نزلت هذه الآية قبل تحريم الخمر شراب کی حرمت سے قبل یہ آیت نازل ہوئی اس کا حاصل بھی نسخ ہے۔ وقيل

السكر العصير الحلو الحلال 'سكر بیٹھے حلال' جوں کو کہتے ہیں۔ (قرطبی ج 10 ص 128)

ابن الجوزی فرماتے ہیں۔ السكر هو الحل بلغة اليمن، یعنی لغت میں سکر مرکہ کو کہتے ہیں۔ یہ نہجاک کا قول ہے۔ یا سکر بمعنی طعم ہے۔

وانشدوا جعلت عيب الاكرمين سكرًا.

تو نیک لوگوں کے عیوب مزے لے کر بیان کرتا ہے۔ (زاد المیسر ج 4 ص 464)

تعارض: 120

سورة النحل

آیت 100

انما سلطانہ علی الذین یتولونہ، پس اس کا قابو تو صرف ان ہی لوگوں پر چلتا ہے۔ جو اس سے تعلق رکھتے ہیں۔ اسی آیت سے معلوم ہوا کہ شیطان کا اپنے دوستوں پر تسلط ہے لیکن بعض آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ شیطان کا کسی پر بھی تسلط نہیں ارشاد ہے۔

وقال الشيطان لسا قضی الامر ان الله وعدكم وعد الحق ووعدتكم فاخلفتكم وما كان علی علیکم من سلطان، اور جب تمام مقدمات فیصل ہو چکیں گے تو شیطان کہے گا کہ اللہ تعالیٰ نے تم سے وعدے کئے تھے اور میں نے بھی تم سے وعدے کئے تھے۔ سو میں نے وہ وعدے تم سے خلاف کئے تھے اور میرا تم پر اور تو کچھ زور نہ چلتا تھا۔ (سورة ابراہیم آیت 22)

تطبیق: جس آیت میں شیطان کے تسلط کا ذکر ہے اس کا مطلب یہ ہے کہ شیطان صرف برے اعمال کو مزین کر کے اپنے دوست پر پیش کرتا ہے۔ الا ان دعونکم سے بھی معلوم ہوتا ہے کہ صرف باطل کی دعوت دیتا ہے اور جس آیت میں شیطان کے

تسلط کی نفی کا ذکر ہے اس کا مطلب یہ ہے کہ کسی پر جبر نہیں کر سکتا۔ قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں۔ ای بحیونہ و یطیعونہ فیجعلونہ مسلطاً علی انفسہم باختیارہم من غیر ان یکون لہ علیہم سلطان یضطرہم الی اتباعہ فلانما فاة بین ہذا و بین قولہ ماکان لہ علیہم من سلطانہ، لوگ شیطان کی پیروی اور اس کی محبت کی وجہ سے بے اختیار خود شیطان کو اپنے اوپر مسلط کر دیتے ہیں۔ ایسا نہیں کہ شیطان ان کو اپنی اتباع پر مجبور کر دیتا ہے لہذا آیات کے مابین تعارض نہیں۔ (منظہری ج 5 ص 372)

قاضی بیضاوی فرماتے ہیں۔ ماکان لہ علیکم من سلطان تسلط فالجنکم الی الکفر والمعاصی۔ میرے ساتھ ایسا تسلط نہیں کہ تم کو کفر اور گناہوں کی طرف مجبور کر دوں۔ (بیضاوی ج 1 ص 422)

انما سلطانہ علی الذین یتولونہ میں سلطان سے مراد دلیل ہے۔ شیطان صرف دلائل باطلہ سے انسان کو گمراہ کرتا ہے۔ زور نہیں چلا سکتا۔ قرآن مجید میں دلیل پر سلطان کا اطلاق ہوا ہے۔ ارشاد باری ہے۔ ان عندکم من سلطان بہذا تمہارے پاس اس پر کوئی دلیل نہیں۔ (سورة یونس آیت)

پتہ چلا کہ سلطان کا معنی دلیل بھی ہے۔ جس تسلط کی نفی ہے وہ غلبہ ہے اور جس تسلط کا اثبات ہے اس سے مراد دلیل ہے۔ یعنی صرف باطل پر دلائل پیش کر سکتا ہے۔

سورة بنی اسرائیل

تعارض: 121

آیت 14

اقرأ کتبک کفی بنفسک الیوم علیک حسیبا، اپنا نامہ اعمال پڑھ لے آج تو خود اپنا آپ ہی محاسب کافی ہے۔

اس آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ انسان اپنا حساب خود لے گا اور یہ خود محاسب ہوگا لیکن دیگر آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ محاسب اللہ ہوں گے فرمان باری تعالیٰ ہے و کفی بنا حاسبین۔

تطبیق: ابن الجوزی فرماتے ہیں جیسا کہ تین معانی ہیں ایک معنی شہدا بھی ہے جیسا کہ معنی شہدا کیا جائے تو تعارض نہیں رہتا۔ (زاد المسیر ج 5 ص 16) ابو حیان الاندلسی فرماتے ہیں۔ قال مقاتل بید بنفسہ جوارحہ تشهد علیہ اذ انکر نفس سے مراد انسان کے جوارح ہیں جو اس کے خلاف گواہی دیں گے۔ (البحر المحیط ج 6 ص 16)

امام رازی تفسیر کبیر میں فرماتے ہیں۔ قال السدی بقول الکافر یومئذ انک قضیت انک لست بظلام للعبید فاجعلی احساب نفسی فیقال له اقرأ کتابک کفی بنفسک الیوم علیک حسیباً کافر اس دن کہے گا کہ اے اللہ تو ظلام نہیں مجھے اپنا محاسب خود مقرر کر۔ اللہ فرمائے گا چلو خود محاسب بن جاؤ۔ (ج 20 ص 169)

امام رازی مسائل الرازی میں فرماتے ہیں۔ مواقف القيامة مختلفة ففی موقف یکل اللہ حسابهم الی انفسهم و علمہ محیط بہ۔ وفی موقف یحسابهم هو۔ قیامت میں مختلف مواقف ہوں گے بعض مواقف میں اللہ باوجودیکہ علم رکھتے ہیں ان سے کہیں گے اپنا محاسب خود کرو اور بعض مواقف میں خود محاسب ہوں گے۔

وقیل هو الذی یحاکم لا غیرہ اللہ صرف محاسب ہوں گے کئی بنفسک الیوم جیسا کہ معنی یہ ہے کہ آج تو اپنے گناہوں پر گواہ اور موقف ہے۔ زجر اس سے کہا جائے گا کہ محاسب بن (ص 185)

تعارض: 122: سورة بنی اسرائیل

آیت 15

وما کننا معذبین حتی نبعث رسولاً اور ہم سزا نہیں دیتے جب تک کسی رسول کو بھیج نہیں دیتے۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ اصحابِ فترۃ کوزہ نہیں ملے گا جس زمانہ میں کوئی نبی نہ ہو اور اس دوران جو کفر پر مر جائے تو اس کو سزا نہیں ملنی چاہیے۔ جیسے عیسیٰ علیہ السلام اور حضور کے بائین فترۃ کا زمانہ تھا حالانکہ بعض آیات کے عموم سے معلوم ہوتا ہے کہ ان کو سزا ملے گی۔ ارشاد ہے ان اللہ لا یغفران یشرک بہ ویغفر ما دون ذلک لیس یشاء۔ بے شک اللہ تعالیٰ اس بات کو نہ بخشیں گے کہ ان کے ساتھ کسی کو شریک قرار دیا جائے۔ اور اس کے سوا اور جتنے گناہ ہیں جس کے لئے منظور ہوگا وہ گناہ بخش دیں گے۔ (سورة نساء آیت 48)

ایک اور ارشاد ہے۔ ان الذین کفروا و ماتوا وهم کفار فلن یقبل من احدہم مثل الارض ذہباً۔ بے شک جو لوگ کافر ہوئے اور وہ بھی مر گئے حالت کفر ہی میں سوان میں کسی کا زمین بھر سونا بھی نہ لیا جائے گا۔ (سورة آل عمران آیت 91) اس آیت کے عموم سے بھی معلوم ہوتا ہے کہ زمانہ فترۃ کے کافر کو سزا ملے گی۔

تطبیق: وما کننا معذبین میں جس عذاب کی نفی ہے وہ دنیا کا عذاب ہے اللہ تعالیٰ دنیا میں کسی قوم کو اس وقت تک عذاب میں مبتلا نہیں کرتے جب تک پیغمبر نہ بھیج دے۔ جن آیات سے کفار کا معذب ہونا معلوم ہوتا ہے وہ آخرت کا عذاب ہے یعنی زمانہ فترۃ کے کفار کو آخرت میں عذاب ہوگا۔ امام قرطبی فرماتے ہیں۔ والجمہور علی ان ہذا فی حکم الدنیای ان اللہ لا یهلك امة بعد ذاب الا بعد الرسل الیہم والانذار۔ کسی امت کو معذب کرنا جمہور کے نزدیک دنیا میں

اللہ صرف رسالت اور انداز کے بعد ہلاک کرتا ہے۔ (قرطبی ج 10 ص 231)۔
 امام رازی فرماتے ہیں: حتی نبعث رسولاً میں رسول سے مراد عقل ہے۔ اگر عقل
 نہ ہو تو نبی کی تصدیق بھی مشکل ہو جائے بلکہ اصلی رسول عقل ہے۔ لکھتے ہیں:
 وما كنا معذبين حتى نبعث رسول العقل. عقل کے رسول کی بعثت کے بعد عذاب
 کے بعد عذاب دیتے ہیں۔ ایک اور توجیہ بیان کرتے ہیں: ان نخصص عموم
 الآية وما كنا معذبين في الاعمال التي لا سبيل الي معرفة
 وجوبها الا بالشرع الا اي بعدم جبي الشرع. آیت میں تخصیص ہے صرف ان
 اعمال پر سزا ملے جن کا جاننا شریعت پر موقوف ہو۔ (کبیر 20 ص 172) رہے وہ
 اعمال جو عقل کے ذریعے معلوم کئے جاسکتے ہیں ان کا جاننا شریعت پر موقوف نہ ہو ان
 کی خلاف ورزی پر سزا ملے گی۔ مثلاً وجود صانع قاضی شاء اللہ پانی پتی فرماتے
 ہیں: فالاولی ان يقال ان عدم التعذيب قبل البعثة مخصوص بالمعاصی
 دون الشرك حيث قال ان الله لا يغفر ان يشرك الخ.

فالتقديراً ما كنا معذبين على المعاصی حتى نبعث رسولاً یبین لهم
 ما یغفون. بہتر یہ کہ یوں کہا جائے کہ زمانہ فترتہ کے مجرم کو صرف شرک کی سزا ملے
 گی۔ بقیہ گناہوں کی سزا اس وقت دیتے ہیں جب رسول کو بھیج دیں۔ اور وہ ان کو ان
 گناہوں سے بچنے کے لئے کہے لیکن اس امت پر عمل نہ کرے۔ وقيل المراد
 بالرسول اعم من البشر والعقل فان العقل ايضاً رسول من الله يدرك به
 السخرو والشرف ما يدركه العقل ويكفي في ادراكه من الواجبات يعذب الله
 العاقل عليها على عدم اتباعها.

یا رسول عام ہے بشر ہو یا عقل کیونکہ عقل بھی اللہ کی طرف ایسا رسول ہے جو خیر اور شر

معلوم کر سکتا ہے۔ جس چیز کے ادراک کے لئے عقل کافی ہو اس پر عمل واجب ہوگا۔
 عمل نہ کرنے کی صورت میں اس کو عذاب ملے گا۔ (مظہری ج 5 ص 424)۔
 دنیا میں آج بھی بہت سارے ایسے ممالک ہیں جن کے پاس یا تو کسی نبی کی
 تعلیمات نہیں یا سرے سے کسی نبی کی تعلیمات کی ضرورت محسوس نہیں کرتے انہوں
 نے اپنی عقل سے خیر اور شر میں خطا امتیاز قائم کیا ہوا ہے۔ ہر قوم میں خیر اور شر
 کا تصور موجود ہے۔ سزا اور جزا کا نظام ہے۔ جس کے مطابق وہ زندگی بسر کرتے ہیں
 مثلاً بچ کو سب پسند کرتے ہیں۔ جھوٹ سے نفرت کرتے ہیں۔ گالی کو کوئی بھی اچھا نہیں
 سمجھتا۔ قتل و قتال لڑائی جھگڑے وغیرہ عقلی امور ہیں۔ بہت سی ایسی باتیں ہیں
 جو شریعت کے بغیر معلوم نہیں کی جاسکتیں۔ مثلاً محرمات کے ساتھ شادی پانچ نمازیں
 رمضان کے روزے حج وغیرہ بے شمار احکامات ایسے ہیں جن کو عقل کے ذریعے
 معلوم نہیں کیا جاسکتا۔

سورة بنی اسرائیل

تعارف: 123

آیت 85

وما اوتيتهم من العلم الا قليلاً. اور تم کو بہت تھوڑا علم دیا گیا ہے۔ اس آیت میں علم
 کو قلیل فرمایا۔ انسان کو بہت کم علم عطا کیا گیا ہے۔ لیکن دوسری آیت میں علم کو خیر کثیر
 فرما دیا گیا ہے۔ ارشاد باری ہے: ومن يؤت الحكمة فقد اوتى خيراً كثيراً.
 اور جس کو دین کا فہم مل جاوے اس کو بڑی خیر کی چیز مل گئی۔ (سورة البقرة آیت
 269)

تفہیم: مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں اور یہاں جو علم کو قلیل فرمایا تو بہ نسبت
 علم الہی کے اور دوسری آیت میں جو علم کو خیر کثیر فرمایا تو بہ نسبت متاع دنیا کے پس

دونوں میں تصادم نہیں اور یہ بھی کہا جاسکتا کہ قلت صفت علم کی ہے اور کثرت صفت خیر کی اور علم اگرچہ قلیل ہو وہ بھی خیر کثیر ہے۔ اس صورت میں تصادم کا شہ ہی نہیں ہو سکتا۔ (بیان القرآن ج 6 ص 99)۔

علامہ زختری فرماتے ہیں۔ لان القلة والكثرة تدوران مع الاضافة فيوصف الشيء بالقلة مضافا الى ما فوقه وبالكثرة مضافا الى ما تحته فالحكمة التي اوتيتها العبد خیر کثیر فی نفسها الا انها اذا اضيفت الى علم الله فهي قليلة قلت اور کثرة امور اضافیہ سے ہیں کبھی شی مانوق کے اعتبار سے قلیل ہوتی ہے اور ماتحت کے اعتبار سے کثیر پس بندہ کو جو حکمت دی جائے تو وہ فی نفسہ خیر کثیر ہے لیکن اللہ کے علم کے مقابلہ میں قلیل ہے۔

دوسرا جواب دیتے ہیں۔ وقيل هو خطاب لليهود خاصة لانهم قالوا للنبي ﷺ قداوتينا التوراة وفيها الحكمة وقد نلوت (ومن يؤتى الحكمة فقد اوتى خیرا کثیرا) فقيل لهم ان علم التوراة قليل في جنب الله. یا یہ خطاب خاص یہود کو ہے انہوں نے حضور ﷺ سے کہا کہ ہمیں تورات دی گئی ہے۔ اور اس میں حکمت ہے۔ اور آپ بھی اس آیت کو پڑھتے ہیں کہ جس کو حکمت ملی اس کو خیر کثیر ملا۔ تو ان یہود کو جواب ملا کہ تورات کا علم اللہ کے علم کے مقابلہ میں بہت قلیل ہے۔ (الکشاف ج 2 ص 691)

تعارض: 124

سورة الكهف

آیت 20

انهم ان يظهروا عليكم بجمعوكم او يعبدوكم في ملتهم و ان تفلحو اذا ابدا. اگر وہ لوگ کہیں تمہاری خیر پائیں گے تو تم کو تو پتھروں سے

مار ڈالیں گے۔ یا تم کو اپنے طریقہ پر پھر کریں گے۔ اور ایسا ہوا کہ تو تم کو فلاح نہ ہوگی۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ کفر پر مجبور کامیاب نہ ہوگا مگر ایک آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ کفر پر مجبور کامیاب ہے جبکہ جبکہ دل میں ایمان ہو۔ ارشاد ہے۔ الامن اکره و قلبه مطمئن بالايمان ولكن من شرح بالكفر صدرا. مگر جس شخص پر زبردستی کی جائے بشرطیکہ اس کا قلب ایمان پر مطمئن ہو لیکن ہاں جو جی کھول کر کفر کرے (سورۃ النحل آیت 104)

تفہیم: دل جب ایمان پر مطمئن ہو کفر مجبوری کی حالت میں نقصان دہ نہیں اگر ایمان کی جگہ کفر نے لے لی تو نقصان ہوگا۔ جب کفر حقیقہ دل کے اندر داخل ہو جائے علامہ آلوسی فرماتے ہیں ای ان دخلتم فيها حقیقة ولو بالکفره والالحاء؛ جب ان کی ملت میں حقیقہ داخل ہو جائیں اگرچہ یہ داخلہ مجبوراً ہوا ہو۔ آگے فرماتے ہیں ان الاکراه علی الکفر قد یكون سببا لاستدراج الشیطان الی استحسانه والاستمرار علیہ۔ کبھی مجبور علی الکفر آدمی کو شیطان کفر اچھا دکھا کر اس کو کفر پر قائم کر دیتا ہے۔ (روح المعانی ج 15 ص 232) امام رازی نے بھی یہ سوال اٹھایا ہے کہ آدمی کفر پر مجبور ہو کر اس کا اظہار کرے تو مسخر نہیں پھر لیں تفلحو اذا ابدا کا کیا مطلب۔ جواب دیتے ہیں۔ یحتمل ان یكون المراد انهم لو ردوا هؤلاء المسلمین الی الکفر علی سبیل الاکراه بقوا مظهرین لذلك الکفر ملدۃ فانه یعمل قلبهم الی ذلك الکفر ویصیرون کافرین فی الحقیقة۔ یہ لوگ کفر میں مجبور ہو کر اگر کچھ عرصہ اس پر قائم رہے تو ممکن ہے ان کے دل کفر کی طرف میلان کر کے حقیقہ کافر بن جائیں۔ (کبیر ج 21 ص 104)

ظاہر بات ہے ایسی حالت میں کامیابی نہیں مل سکتی۔

وانتل ما او حسی البک من کتاب ربک لامبدل لکلنته. اور آپ کے پاس جو آپ کے رب کی کتاب وحی کے ذریعے سے آئی ہے وہ پڑھ دیا کیجئے اس کی باتوں کو کوئی بدل نہیں سکتا۔

بظاہر معلوم ہوا کہ قرآن میں کسی قسم کی تبدیلی واقع نہیں ہو سکتی حالانکہ قرآن مجید میں تبدیلی ناسخ منسوخ کے ذریعے آتی ہے۔ ارشاد باری ہے، واذابذلنا آية مکان آية واللہ اعلم بما ينزل. اور جب ہم کسی آیت کو بجائے دوسری آیت کے بدلتے ہیں اور حالانکہ اللہ تعالیٰ جو حکم بھیجتا ہے اس کو وہی خوب جانتا ہے (سورة النحل آیت ۱۰۱) تطبیق: امام رازی فرماتے ہیں، معنی الاول لامغير للقرآن من البشر وهو جواب لقولهم للنبي ﷺ انت بقرآن غير هذا وبدله.

لامبدل کا معنی یہ ہے کہ کوئی بشر اس کے کلام کو بدل نہیں سکتا اور یہ کفار کے قول کا جواب ہے، انہوں نے مطالبہ کیا کہ اس قرآن کی جگہ دوسرا قرآن لاو یا اس کے اندر تبدیلی کرو۔

الثانی ان معناه لاخلف لحواعیده ولا مغیر لحکمہ، یا لامبدل کا معنی یہ ہے کہ وہ وعدہ خلاف نہیں اور اس کو اپنے حکم سے کوئی پھیر نہیں سکتا، معنی الثانی اور جس آیت میں تبدیلی کا ذکر ہے اس کا معنی ہے، النسخ والتبدل من اللہ تعالیٰ فلا تنافی بينهما، نسخ اور تبدیلی اللہ کی طرف سے ہی لہذا آیات میں کوئی مناقات نہیں (مسائل الرازی ص 199)

ابن الجوزی سورة الانعام کی آیت (115) کی تفسیر میں لکھتے ہیں،

لامبدل لکلنته قولان، احدهما لا يقدر ان المفترون على الزيادة

فيها والنقصان منها. مفتری اور جھوٹے لوگ ان کلمات میں کمی و زیادتی نہیں کر سکتے (زاوالسیر ج 3 ص 111) علامہ زنجیری فرماتے ہیں، ای لا يقدر احد على تبديلها وتغيرها انما يقدر على ذلك هو وحده، اللہ کے سوا کوئی قرآن میں تغیر و تبدیلی نہیں لاسکتا، (الکشاف ج 2 ص 716)۔

فمن شاء فليؤمن ومن شاء فليكفر، جو جس کا جی چاہے ایمان لے آوے اور جس کا جی چاہے کافر رہے، اس آیت سے بظاہر کفر کی اباحت معلوم ہوتی ہے، حالانکہ دیگر آیات میں صراحتاً کافر بننے سے ممانعت ہے، ارشاد باری تعالیٰ ہے، يا ايها الناس اعبدوا ربكم الذي خلقكم، اے لوگو عبادت اختیار کرو اپنے پروردگار کی جس نے تم کو پیدا کیا، (سورة البقرة آیت 21) تفسیر خازن میں ہے (اعبدوا ربكم) قال ابن عباس وحده واربكم، خدا کسی تو حید کو اپنا و (ج 1 ص 33)

تطبیق: امام رازی فرماتے ہیں معناه (فمن شاء فليؤمن ومن شاء فليكفر) یعنی لا ایمان ولا کفر الا بمشيئته، کفر اور ایمان کا تعلق اللہ کی مشیت کیساتھ ہے،

الثانی: انه تهدید ووعید، دوسرا معنی اس کی ڈانٹ اور وعید ہے،

الثالث: ان معناه لا تنفعون الله بايمانكم ولا تضرونه بكفركم فهو اظهر للنفي لا اطلاق الكفر، تم اپنے ایمان کیساتھ اللہ کو نفع نہیں دے سکتے اور کفر کے وجہ سے اس کو نقصان نہیں پہنچا سکتے، لہذا آیت میں اس کی بے پرواہی ہے

نیازی اور بے احتیاجی کا ذکر ہے نہ کہ کفر کی اجازت. (مسائل الرازی ص 200)
ابن الجوزی فرماتے ہیں انہ وعیدوا نذار. ولینس بأمر قاله الرجاج. زجاج فرماتے
ہیں یہ وعید اور انذار ہے امر نہیں. (زاد المسیر ج 5 ص 135)

علامہ آلوسی فرماتے ہیں. و ذکر الحفاجی ان الامر بالکفر غیر مراد و هو استعارة
للخذلان و التخلية لتشبيه حال من هو كذلك بحال المأمور بالمخالفة.
امر بالکفر مراد نہیں بلکہ یہ خذلان (نا مرادی) سے استعارہ ہے جو آدمی مخالف رہے
اس کی یہ حالت ہوگی. (روح المعانی ج 15 ص 266)

تعارض: 127 سورة الكهف

آیت 49

مال هذا الكتاب لا يغادر صغيرة ولا كبيرة الا احصها. اس نامہ اعمال کی عجیب
حالت ہے کہ بے قلمبند کئے ہوئے نہ کوئی چھوٹا گناہ چھوڑا نہ بڑا.

اس آیت سے بظاہر معلوم ہوتا ہے کہ چھوٹے بڑے سب گناہ قیامت تک محفوظ رہیں
گے اور کوئی گناہ محو نہ ہوگا لیکن دیگر آیات سے پتہ چلتا ہے کہ چھوٹے گناہ دنیا میں محو
ہو جاتے ہیں. ارشاد باری ہے. ان تحسبوا کثیر ما تنهون عنه نکفر عنکم
سبائکم. جن کاموں سے تم کو منع کیا جاتا ہے ان میں جو بھاری بھاری کام ہیں
اگر تم ان سے بچتے رہو تو ہم تمہاری خفیف برائیاں تم سے دور فرماویں گے. (سورة
النساء آیت 31)

تطبیق: امام رازی فرماتے ہیں. الآية الاول فی حق الکافرین بدلیل قوله
تعالیٰ فتري المحرمین والمراد بهم ههنا الکافرون. پہلی آیت کفار کے حق میں
ہے اور فتري الحرمین اس پر دال ہے کیونکہ مجرمین سے مراد کفار ہیں.

والآية الثانية المراد بها المؤمنون لان احتساب الكبائر لا يكون متحققا مع
وجود الكفر. اور دوسری آیت میں مؤمنین کا ذکر ہے. کیونکہ کبار سے بچ کر صغیرہ
گناہوں کے لئے کفارہ ہونا کافر کے حق میں نہیں ہو سکتا.

الثاني لو ثبت ان المراد بالمحرم مطلق المذنب لم يلزم التناقض لجواز ان
تكتسب الصغائر ليشاهد العيد يوم القيامة ثم تكفر عنه فيعلم قدر نعمة
العفو فان اكثر ذنوب العبد ينساها خصوصا الصغائر.

یا مجرم میں عموم ہے کافر ہو یا مسلمان پھر بھی تقاض نہیں کیونکہ صغائر تو قیامت تک
لکھے ہوں گے تاکہ گنہگار بندہ اس کا مشاہدہ کر لے پھر اللہ ان کو ختم کر دیں گے تاکہ
اللہ کے عفو کی نعمت کی قدر معلوم ہو. اکثر چھوٹے گناہ بندہ کو یاد نہیں رہتے. (مسائل
الرازی ص 202)

ابن الجوزی فرماتے ہیں. وقال ابو سليمان الصحيح عند المحققين ان
صغائر المؤمنين الذين وعدوا العفو عنها اذا احتسبوا الكبائر انما يعفى عنها في
الآخرة بعد ان يراها صاحبها.

صحیح یہ ہے کہ جن صغائر کی معافی کا وعدہ بشرط اجتناب الكبائر ہوا ہے ان کو صاحب
اعمال پہلے دیکھ لے گا پھر اللہ معاف کر دیں گے. (زاد المسیر ج 5 ص 153)

تعارض: 128 سورة الكهف

آیت 50

واذ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا الا ابليس كان من الجن. اور جبکہ ہم
نے ملائکہ کو حکم دیا کہ آدم کے سامنے سجدہ کرو سو سب نے سجدہ کیا بجز ابلیس کے وہ
جنات میں سے تھا.

الایلیس کسان من الجن سے معلوم ہوتا ہے کہ ایلیس جنات میں سے ہے اور واذقلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا الا ابليس سے معلوم ہوتا ہے کہ ایلیس ملائکہ میں سے ہے سورۃ البقرۃ میں مذکور ہے کیف اجمع.

تطبیق: امام رازی فرماتے ہیں انہ من الجن حقیقۃ عملاً بظاہر ہذہ الآیۃ ابلیس حقیقۃ جنات میں سے ہے فعلیٰ ہذا یكون استثناء من الملائکۃ استثناء من غیر الجنس. یہ استثناء من غیر ایلیس ہے اور یکنہ استثناء من جنس المامورین بالسجود لا من جنس الملائکۃ یہ استثناء مامورین کی جنس سے ہے. مامورین مختلف الجنس تھے لہذا ایلیس جنس ہے ملائکہ نہیں معنی یہ ہوگا کہ ہم نے ملائکہ اور ایلیس کو جہدہ کا حکم دیا ایلیس نے انکار کر دیا.

القبول الثانی انہ کسان من الملائکۃ قبل ان یعصى اللہ تعالیٰ فلما عصاه مسخه شیطاناً.

پہلے ایلیس ملائکہ میں سے تھا جب اللہ کی نافرمانی کی تو اس کو شیطان کی شکل میں بدل دیا اس تفسیر کے مطابق کان بمعنی صار ہوگا ایک روایت ہے. انہ کسان من حیزان الجنة وہم جماعة من الملائکۃ یسمون الجن. جنت کے خزانچوں میں سے تھا اور یہ ملائکہ کی جماعت جو جن کے ساتھ مسی ہے. (مسائل الرازی ص 203).

و یجوز ان یکون منقطعاً متشقی منقطعاً ہے.

ابن الجوزی فرماتے ہیں انہ کسان من الملائکۃ وانما قبل من الجن لانه کسان قبل من الملائکۃ یقال لہم الجن قالہ ابن عباس.

ابن عباس کا قول ہے کہ ایلیس ملائکہ کے ایک قبیلہ سے تھا جن جن کہتے ہیں. (زاد المسیر ج 5 ص 153) دیگر مفسرین نے بھی تقریباً یہی لکھا ہے.

و یوم یقول نادوا اشرکائی الذین زعمتم فدعوہم فلم یتجیبوہم. اور اس دن کو یاد کرو کہ حق تعالیٰ فرما دے گا کہ جن کو تم ہمارا شریک سمجھا کرتے تھے ان کو پکارو پس وہ ان کو پکاریں گے سو وہ ان کو جواب ہی نہ دیں گے.

اس آیت سے بظاہر معلوم ہوتا ہے کہ شرکاء سے نطق بالکل منفی ہے حالانکہ دوسری آیت سے شرکاء کا نطق ثابت ہے. ارشاد باری ہے واذار الذین اشرکوا اشرکاء ہم قالوا ربنا ہولاء شرکاء نالذی کنا ندعو من دونک فالقوا الیہم القول انکم لکذیبون. اور جب مشرک لوگ اپنے شریکوں کو دیکھیں گے تو کہیں گے کہ اے ہمارے پروردگار وہ ہمارے شریک بھی ہیں کہ آپ کو چھوڑ کر ہم ان کو پوجا کرتے تھے سو وہ (شرکاء) ان کی طرف کلام کو متوجہ کریں گے کہ تم جھوٹے ہو. (سورۃ النحل آیت 86)

تطبیق: امام رازی فرماتے ہیں (نادوا اشرکائی الذی) ای نادوہم للشفاعة لکم او لدفع العذاب عنکم فدعوہم لم یجیبوہم الذلک فنفی عنہم النطق بالاحیاء الی الشفاعة ورفع العذاب عنہم. مشرک شرکاء کو شفاعت یا دفع عذاب کے لئے پکاریں گے لیکن وہ ان کو جواب نہ دیں گے. یہاں شفاعت اور دفع عذاب کے نطق کی نفی ہے ونفی سورۃ النحل اثبت لہم النطق بتکذیب المشرکین فی دعویٰ عبادتہم. اور سورۃ النحل میں جو اثبات نطق ہے وہ یہ ہے کہ شرکاء ان کے دعویٰ عبادت کی تکذیب کریں گے. فلا تنقض بین العنقی و المشقی. لہذا منفی اور مثبت میں تناقض نہیں. (مسائل الرازی ص 204)

ابن الجوزی فرماتے ہیں. نادوہم لدفع العذاب عنکم او الشفاعة لکم ان

کورنغ عذاب یا شفاعت کے لئے پکارو۔ (زاد المسیر ج 5 ص 155)

تعارض: 130 سورة الكهف

آیت 53

ورأى المجرمون النار. اور دیکھیں گے گناہگار آگ کو اس آیت سے معلوم ہوا کہ مجرمین کی نظر لگے گی لیکن سورۃ طہ کی آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ مجرمین اندھے ہوں گے۔ ارشاد باری ہے۔ قال رب لم حشرتني اعمى. وہ کہے گا اے میرے رب آپ نے مجھ کو اندھا کیوں اٹھایا۔ (آیت 125) امام فراء فرماتے ہیں انہ بحرج من قبره بصيرا فعمى في حشره. (معانی القرآن ج 2 ص 194)

تطبیق: ابن الجوزی فرماتے ہیں اذا اخرج من القبر خرج بصيرا فاذا سبق اليه المحشر عمى. (زاد المسیر ج 5 ص 332) قبر سے نکلنے وقت بصیر (دیکھنے والا) ہوگا جب محشر کی طرف لے جایا جائے تو اندھا ہوگا۔

امام رازی فرماتے ہیں۔ لعلهم يسكونون في الابتداء هكذا هم يجعلون عميا و لعل هذا في قوم و ذلك في قوم آخر. (کبیر ج 2 ص 182)

اس عبارت میں امام رازی نے ایک زمانہ تو جیہ لکھی ہے کہ شاید اندھا ہونا ایک قوم کے بارے میں ہو اور بصیر ہونا دوسری قوم کے بارے میں یعنی کچھ لوگ اندھے اور کچھ بصیر ہوں گے۔

سورۃ بنی اسرائیل کی ایک آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ سب کے ساتھ ایک جیسا سلوک ہوگا۔ و نوحشهم يوم القيمة على وحوهم عميا وكميا وصما. اٹھائیں گے ہم ان کو قیامت کے دن چلائیں گے منہ کے بل اندھے اور گونگے بہرے (آیت)

علامہ شبیر احمد عثمانی فرماتے ہیں۔ یہ قیامت کے بعض مواطن میں ہوگا کہ کافر منہ کے بل اندھے گونگے کر کے چلائیں گے۔ (تفسیر عثمانی ص 378)

تعارض: 131 سورة مريم

آیت 71

وان منكم الا وادها كما ان على ربك حتما مقضيا. اور تم میں سے کوئی بھی نہیں جس کا اس پر گزرنہ ہو یہ آپ کے رب کے اعتبار سے لازم ہے جو پورا ہو کر رہے گا اس آیت سے معلوم ہوا کہ ہر شخص کا آگ پرورد اور گزر اللہ کا حتمی فیصلہ ہے۔ لیکن ایک آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ اللہ تعالیٰ کے نیک بندے آگ سے دور رہیں گے۔ ارشاد ہے ان الذين سبق لهم من الحسنی اولئك عنها مبعدون لا يسمعون حسیها۔ جن کے لئے ہماری طرف سے بھلائی مقدر ہو چکی ہے وہ لوگ اس سے دور رکھے جائیں گے۔ اس کی آہٹ بھی نہ سکیں گے۔ (سورۃ الانبیاء آیت 102)۔

تطبیق: علامہ زبیر فرماتے ہیں۔ لا یبقی بر ولا فاجر الا دخلها فتكون على المؤمنین بردا و سلاما کما كانت على ابراهیم حتى للنار ضحیحا من بردها۔ نیک اور بد سب آگ میں داخل ہوں گے لیکن آگ مؤمنین کیلئے ٹھنڈی اور سلامتی والی بن جائے گی جیسے حضرت ابراہیم کے لئے ہوئی تھی۔ و اما قوله تعالیٰ اولئك عنها مبعدون فالمراد عنها عذابها. عنها مبعدون کا معنی ہے آگ کے عذاب سے دور رہیں گے۔

دوسرا جواب: عن ابن مسعود هو الجواز علی الصراط لان الصراط مسدود علیها ابن مسعود فرماتے ہیں کہ ورود سے مراد پہل صراط پر گزرتا ہے۔ کیونکہ

پل صراط آگ کے اوپر ہے

تیسرا جواب: عن ابن عباس قدیرد الشئ الشئ ولا یدخله کقولہ
ولما ورد ماء مدین وورد کالمغنی دخول نہیں اور جب مدین کے پانی پر پہنچے یہاں
دخول ماء مراد نہیں۔

چوتھا جواب: وعن مجاہد وورد المؤمن النار من الحمی جسدہ فی
الدنیا لقولہ علیہ السلام الحمی من فیح جہنم وفی الحدیث الحمی حظ
کل مؤمن من النار مجاہد فرماتے ہیں کہ مؤمن کا ورود اس کے بدن کا دنیا میں
بیمار ہونا ہے حضور کا فرمان ہے بیماری جہنم کا جوش ہے حدیث میں ہے کہ ہر مؤمن
کی بیماری آگ سے ہے۔

پانچواں جواب: ویسجوزان یراد بالورود حیوہم حولہا جائز ہے کہ ورود
سے مراد ان کا جہنم کے ارد گرد ہونا ہو۔

چھٹا جواب: وان ارید الکفار خاصة فالمعنی بین اگر یہ ورود صرف
کفار کیلئے ہو تو پھر کوئی اشکال نہیں (الکشاف ج 3 ص 35)

قرآن مجید میں لفظ ورود دخول کیلئے استعمال ہوا ہے انتم لہا واردون تم سب اس
میں داخل ہو گے (سورۃ الانبیاء 98) فصار دہم النار اور پھر ان کو دوزخ میں
جاتا رہے گا (سورۃ صود آیت 98)

علامہ آلوسی فرماتے ہیں ورود المسلمین المرور علی الحسبین ظہریہا
وورد المشرکین ان یدخلوہا مسلمانوں کا ورود جہنم کے پل کے
اوپر گزرنا ہے اور مشرکین کا ورود آگ میں داخل ہونا ہے کیونکہ ورود کا معنی عدم
دخول بھی ہے تیسی ولما ورد ماء مدین میں مؤمن کا ورود
مرور ہے اور کافر کا ورود دخول ہے فرماتے ہیں لامنافاة بین هذه الآیة و بین

اولئک عنہا مبعدون لان المراد مبعدون عن عذابہا دونوں آیتوں میں کوئی
تعارض نہیں کیونکہ جس آیت میں اس بات کا ذکر ہے کہ مؤمن آگ سے دور ہوں
گے مراد اس سے آگ کے عذاب سے دور ہونا ہے وفیل المراد ابعادہم
عنہا بعد ان یکون قریباً منہ یا یہ مطلب ہے کہ ان کو آگ کے قریب کر کے
دور کر دیا جائے گا (روح المعانی ج 16 ص 122)

امام قرطبی فرماتے ہیں وان منکم میں خطاب کفار سے ہے یا عام ہے اکثریت کے
نزدیک یہ خطاب عام ہے سب داخل ہوں گے لیکن مؤمن کو آگ نقصان نہ دے
گی حدیث ہے تفول النار للمؤمن یوم القیامۃ حزیامو من فقد اظفا نورک
لہیسی قیامت کے دن آگ مؤمن سے کہے گی اے مؤمن جلدی گزرتیرے
نور نے میرے شعلے کو بجھا دیا (قرطبی ج 11 ص 141)

تعارض: 132 سورة مریم
آیت 85

یوم نحشر المستقین الی الرحمن وفدا جس روز ہم متقیوں کو رحمان کی طرف
مہمان بنا کر جمع کریں گے۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ متقی لوگ اپنے رب کی طرف سے بڑے اعزاز و اکرام
کے ساتھ تشریف لے جائیں گے لیکن ایک آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ جنت کی
طرف بانگے جائیں گے ارشاد ہے و من الذین اتقوا ربہم الی الحنۃ
زمیرا اور بانگے جائیں وہ لوگ جو ڈرتے رہے اپنے رب سے جنت کو گروہ
گروہ (سورۃ الزمر آیت 73)

اس آیت سے بظاہر معلوم ہوتا ہے کہ متقی لوگوں کی توہین ہے اس لئے کہ کفار بھی

ہانکے جائیں گے، حالانکہ مؤمنین معزز ہوں گے۔
 تظلیق: کفار اور متقین کے سوق میں فرق ہے، امام قرطبی فرماتے ہیں، فسوق
 اهل النار طردہم الیہا بالخری والیہوان کما یفعل بالاساری والنحارجین
 علی السلطان اذامسوقوا الی حبس او قتل وسوق اهل الجنان سوق
 مراکبہم الی دار الکرامة والرضوان لانه لا یذهب بہم الاراکیبن
 کما یفعل بمن یشرف ویکرم من الواقدین علی بعض الملوک فشتان
 مابین السوقین، دوزخیوں کا ہانکنا ایسا ہوگا جیسا کہ ایک بادشاہ کے باغی یا قیدی
 کو جیل یا قتل کی طرف ذلت اور رسوائی کے ساتھ ہانکا جاتا ہے، اور جنتیوں
 کا ہانکنا یہ ہے کہ ان کی سوار یوں کو عزت اور رضامندی والے گھر کی طرف لے
 جایا جائے گا، کیونکہ وہ جنت کی طرف سوار ہو کر ہی جائیں گے جیسا کہ ایک عزت
 مند وفد کے ساتھ بادشاہ ہوں کے دربار میں ہوتا ہے، (قرطبی ج 15 ص 284)۔
 یورپ کے شاہی خاندان کے افراد اب بھی اعلیٰ اور قیمتی تاگوں میں سوار ہو کر محلات
 کی طرف جاتے ہیں، ایک ملک کا معزز وفد جب کسی ملک میں تشریف لے جائے تو
 سرکاری پروٹوکول کے ساتھ ان کو اعلیٰ ترین گاڑیوں میں بٹھا کر اعلیٰ محلات کی
 طرف لے جایا جاتا ہے۔

علامہ زبیری فرماتے ہیں، ان المراد هنا سوقہم سوق مراکبہم لانه یذهب
 بہم الازاکین، سوق سے مراد ان کا سوار یوں کا سوق ہے، کیونکہ جنت والے جنت
 میں سوار ہو کر ہی جائیں گے، (الکشاف ج 3 ص 358)

علامہ آلوسی فرماتے ہیں، والسائق للمتقین شوقہم الی مولاہم، جنتیوں کے
 سوق کا فاعل ان کا شوق ہے، یعنی ان پر دیدار خداوندی کا شوق اتنا سوار ہوگا کہ
 دیکھنے والا تجھے شاید ان کو کوئی ہانک رہا ہے، دنیا میں اس قسم کے مظاہر بہت موقعوں

پر دیکھنے میں آتے ہیں۔

لکھتے ہیں، والمراد بالسوق هنا الحث علی المسیر لا سراغ ای بخلاف
 ما تقدم فانه لاهانة الکفيرة وتعمیلہم الی العتاب والالام
 واختیر للمشاكلة سوق سے مراد جنتیوں کا اپنا شوق ہے جو ان کو تیزی سے
 دوڑائے گا، بخلاف کفار کا سوق، ان کو عذاب کی طرف جلدی سے لہانے کے لئے
 پٹکایا جائے گا، سوق میں ظاہر صرف مشاکلت ہے، (روح المعانی ج 25 ص 33
 34)

مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں ان کو یہ معلوم نہ ہوگا کہ جنت میں بھی رویت
 ہوگی، اس لئے جنت میں جاتے ہوئے متردد ہوں گے پس فرشتوں کو سوق کی نوبت
 آئے گی، اور بعض نے کہا ہے کہ سوق کا فاعل شوق ہے جب ان کو معلوم ہوگا کہ جنت
 میں رویت ہوگی، تو اس شوق میں دوڑے ہوئے چلے جائیں گے، (بیان القرآن
 حاشیہ مسائل السلوک ج 10 ص 32)

تعارض: 133

سورة مریم

آیت 91

تکاد السموات بتفطرون منه وتنشق الارض وتخر الارض هذا اس کے سبب
 کچھ بعید نہیں کہ آسمان پھٹ پڑیں اور زمین کے ٹکڑے اڑ جائیں، اور پہاڑ ٹوٹ
 کر گر پڑیں۔

اس آیت سے کلمہ شرک کی قوت اور شدت معلوم ہوتی ہے، حالانکہ دوسری آیت
 سے کلمہ الشرک کی کمزوری اور خفت معلوم ہوتی ہے، ارشاد باری ہے، ومثل کلمة
 حبیة کشعرة، حبیة اختنت من فوق الارض ما لها من قرار، اور گندہ کلمہ کی

مثال ایسی ہے جیسے ایک درخت ہو کہ وہ زمین کے اوپر ہی اوپر سے اکھاڑ لیا جاوے اس کو کچھ ثبات نہ ہو۔ (سورۃ ابراہیم آیت 26)

تطبیق: امام رازی فرماتے ہیں، وصف کلمۃ الشکر فی سورۃ ابراہیم علیہ السلام بالضعف وھنا بالفتح فہی فی غایۃ الضعف و فی غایۃ الفصح والفظاۃ فلا تنافس بینھما۔ سورۃ ابراہیم میں کلمۃ الشکر کے ضعف کا بیان ہے اور سورۃ مریم میں کلمۃ الشکر کے فتح کا بیان ہے کلمۃ الشکر انتہائی ضعیف ہونے کے ساتھ انتہائی قوی بھی ہے۔ ضعف اور قوت میں منافات نہیں۔ (مسائل الرازی ص 217)

علامہ زنجیری فرماتے ہیں۔ ان یكون استعظاما للكلمة وتنبؤا لمن فظاعتها وتصوير الاثرها في الدين كلمۃ الشکر کی برائی اور قوت اور دین کی خرابی میں اس کا ایسا اثر ہوگا۔ (الکشاف ج 3 ص 45) سورۃ ابراہیم کی آیت میں کلمۃ نبیہ کی تفسیر میں علامہ زنجیری فرماتے ہیں، شبه بها القول الذی لم یصح فہو داحض غیر ثابت شجرہ نبیہ کے ساتھ بے دلیل قول کی تشبیہ دی کہ اس کوئی قرار نہیں۔ (الکشاف ج 2 ص 554) کلمۃ الشکر کی کمزوری کا بیان ہے۔

تعارض: 134

سورۃ طہ

آیت 15

ان الساعۃ آتیۃ اکاد احفیہا بلاشبہ قیامت آنے والی ہے میں اس کو پوشیدہ رکھنا چاہتا ہوں، کاد افعال متاثر بہت ہے۔ اس آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ اللہ تعالیٰ نے قیامت کے علم کو بالکل چھپایا نہیں، بلکہ ابھی چھپانے کے قریب ہیں، حالانکہ بعض

آیات میں تصریح ہے کہ قیامت کا علم اللہ تعالیٰ کے پاس مخفی ہے، ارشاد باری ہے، قل الساعۃ لعنۃ من لدن اللہ والیوم الاہو، آپ فرمادیتے ہیں کہ اس کا علم صرف میرے رب ہی کے پاس ہے، اس کے وقت پر اس کو سوا اللہ کے کوئی اور ظاہر نہ کرے گا۔ (سورۃ الاعراف آیت 187)

تطبیق: اللہ نے قیامت کے علم کو مخفی کر رکھا ہے، صرف علامات قیامت بتادی ہیں، علامہ زنجیری فرماتے ہیں، احفیہا بالفتح من حفاء اذا اظہرہ ای قرب اظہارھا کقولہ تعالیٰ اقتربت الساعۃ، احفیہا کو ہمزہ کے فتح کیساتھ پڑھا جائے تو اس کا معنی اظہار ہے معنی یہ ہوگا کہ قریب ہے کہ قیامت کے علم کو ظاہر کر دوں، جیسے یہ فرمان باری ہے قیامت نزدیک آئیگی۔ (الکشاف ج 3 ص 56)

اخفاء سے اظہار کا معنی اس لئے صحیح ہے کہ ابوحیان اندلسی فرماتے ہیں، اخفی من الاضداد بمعنی الاظہار ومعنی السر، اخفاء اضداد سے ہے، اس کا معنی اظہار اور سر دونوں آتے ہیں، امام قرطبی کہتے ہیں کہ آیۃ مشککہ مشکل آیت ہے، کافی بحث کی ہے، سعید بن جبیر کا قول نقل کیا ہے، قد اخفاھا یعنی قیامت کے علم کو مخفی کر رکھا ہے، لکھتے ہیں، وهذا علی ان کاد اذ الہی ان الساعۃ آتیۃ احفیہا، کاد لاند ہے، اور معنی یہ، کہ قیامت آئے گی لیکن اس کے علم کو میں نے مخفی کر رکھا ہے، کاد زائد ہونے کی صورت میں یہ مفہوم نکلے گا۔ (قرطبی ج 12 ص 185)

علامہ آلوسی فرماتے ہیں، وحاصلہ اکاد ابالیغ فی اخفاءھا، آیت کا حاصل یہ ہے کہ قریب ہے کہ قیامت کے اخفاء میں مبالغہ سے کام لوں۔

ابن عباس کا قول نقل کرتے ہیں، ان الساعۃ اکاد احفیہا من نفسی قریب ہے کہ قیامت کے علم کو اپنے آپ سے چھپالوں، عرب کی عادت ہے کہ جب کسی بات

کو چھپانے میں مبالغہ سے کام لیتے ہیں تو یوں کہتے ہیں، کدت اخفیه من نفسی قریب ہے کہ اپنے آپ سے یہ بات چھپالوں تاکہ کسی کو پتہ نہ چلے۔ (روح المعانی ج 16 ص 172) امام نیشاپوری فرماتے ہیں، وقال ابو الفتح الموصِل الهمزة للسلب ای اکاد اظہرہا معناه قرب ظہورہا کقولہ اقتربت الساعة ابو الفتح موصلی کہتے ہیں کہ انھیما میں ہمزه سلب ماخذ کیلئے ہے۔ معنی یہ ہوگا قریب ہے کہ قیامت کو ظاہر کر دوں جیسے یہ قول ہے اقتربت الساعة۔ (غرائب القرآن ج 16 ص 86 حاشیہ طبری) انھیما میں ہمزه سلب کے لئے ہو تو اخفاء اضداد سے نہ ہوگا۔

تفسیر قرطبی میں مذکور ہے کہ ابو علی فرماتے ہیں، هذا من باب السلب وليس من باب الاضداد۔ (قرطبی ج 11 ص 184)

اخفاء میں جب ہمزه سلب کا ہو تو اضداد کے باب سے نہ ہوگا کہ اخفاء کے دونوں معنی لئے جائیں اظہار اور سلب۔

تعارض: 135 سورة طه

آیت 22

واضمم يدك الي نحتاحك اور تم اپنا ہاتھ اپنے بغل میں دے لو۔ دوسری آیت میں ہے اسلک يدک فی حبیبک تم اپنا ہاتھ گریبان کے اندر ڈالو۔ (سورة القصص 32) ایک اور آیت میں ہے وادخل يدک فی حبیبک اور تم اپنا ہاتھ اپنے گریبان کے اندر لے جاؤ۔ (سورة النمل 12) بغل اور گریبان میں تعارض ہے

تطبیق: علامہ آلوسی فرماتے ہیں، والمراد ادخل يدک الیمنی من طون مدرعتک واجعلها تحت ایبط الیسری او تحت عنقه عند الابط

او تحتها عندہ فلا منافاة بین ما هنا وقوله تعالیٰ ادخل يدک فی حبیبک۔ دونوں آیتوں میں منافاة نہیں کیونکہ مطلب یہ ہے کہ اپنا دایاں ہاتھ قیص کے گریبان میں ڈال کر بائیں بغل یا بازو کے نیچے لے جاؤ۔ (روح المعانی ج 16 ص 179) امام رازی ان آیات کے دفع تعارض میں فرماتے ہیں، لانه اذا دخل يده فی حبیبه كان قد ضم يده الی جناحه موسی علیہ السلام جب اپنا ہاتھ گریبان میں ڈالتے تو اس کو بغل کیساتھ ملا دیتے تھے۔ (تفسیر کبیر ج 22 ص 30)

تعارض: 136 سورة طه

آیت 27

واحلل عقدة من لساني۔ اور میری زبان پر سے بستگی ہٹا دیجئے۔

موسی علیہ السلام نے زبان کی بستگی دور ہونے کی دعا کی اور اللہ تعالیٰ کا فرمان ہے۔ قد اوتيت مسؤلک یا موسیٰ۔ آپ کی درخواست منظور کی گئی ہے اے موسیٰ (ط آیت 36)

اس آیت سے معلوم ہوا کہ دعا قبول ہوئی تھی لیکن بعض آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ زبان کی بستگی دور نہیں ہوئی فرعون نے موسیٰ علیہ السلام کے بارے میں کہا ولا یكاد یبین اور قوت بیانیہ بھی نہیں رکھتا (سورة الزخرف آیت 52)۔

ایک اور ارشاد ہے، واخسی ہارون ہوا فصیح منی لسانا۔ اور میرے بھائی ہارون کی زبان مجھ سے زیادہ رواں ہے۔ (سورة القصص آیت 32)۔

تطبیق: پیغمبر مستجاب الدعوات ہوتے ہیں ان کی دعائیں قبول ہوتی ہیں حضرت موسیٰ علیہ السلام کی دعا بھی قبول ہوئی ہے لیکن موسیٰ علیہ السلام نے مطلقاً گہ کھلنے کی دعائیں نہیں کی بلکہ ساتھ قید لگائی، یغشھو اقوالی، کہ لوگ میری بات سمجھ سکیں اور یہ

دعا قبول ہوئی ہے۔ قاضی بیضاوی فرماتے ہیں سنانہ لم یسئل حل عقدۃ لسانہ مطلقاً بل عقدۃ تمنع الافہام مطلقاً گرہ کھولنے کی دعا نہیں کی بلکہ ایسی گرہ جو افہام میں مانع ہو۔ (بیضاوی ج 2 ص 18)

علامہ زبشری فرماتے ہیں۔ انہ طلب حل بعضها ارادة ان يفهم عنه فہما جیداً ولم یطلب فصاحة الکاملة ومن لسانی صفة للعقدۃ کأنہ قیل عقدۃ من عقد لسانی عقدہ نکرہ بعض گرہ کھلنے کے دعا کی تھی اور یہ خواہش تھی کہ لوگ میرے کلام کو اچھی طرح سمجھیں فصاحت کا ملہ طلب نہیں کی تھی۔ ان کا سوال گویا یوں تھا۔ زبان کی گروہوں سے ایک گرہ کھول دے۔ (الکشاف ج 3 ص 61)

تعارض: 137 سورة طه

آیت 104

یستخفون بئہم ان لبتہم الا عشراً۔ چپکے چپکے آپس میں باتیں کرتے ہوں گے کہ تم لوگ صرف دس روز رہے ہوں گے۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ کفار کہیں گے کہ قبروں میں صرف دس روز رہے ہیں لیکن دوسری آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ صرف ایک ساعت کا اقرار کریں گے۔ دس روز اور ایک ساعت میں منافا ہے۔ ارشاد ربانی ہے۔ ویوم تقوم الساعة بقسم المحرمون ما لیسوا غیر ساعة۔ اور جس روز قیامت قائم ہوگی مجرم لوگ قسم کھائیں گے کہ وہ لوگ ایک ساعت سے زیادہ نہیں رہے۔ (سورۃ الروم/ ۵۵)

تعلیق: دس روز سے تحدید مراد نہیں کہ بعینہ دس دن مراد لئے جائیں۔ بلکہ مراد تھوڑی مدت ہے۔ ابن الجوزی فرماتے ہیں۔ ما لیسوا غیر لیل و هذا علی طریق التقلیل لاعلی وجہ التحدید۔ (زاد المسیر ج 5 ص 321)۔

کفار اپنی قبروں یا دنیا کی زندگی کے بارے میں کبھی ایک دن کا ذکر کرتے ہیں کبھی دس دن کا کبھی ایک ساعت کا کہ ان مذکورہ اوقات کے مطابق دنیا یا قبر میں رہے ہیں۔ کیونکہ آخرت کی جولنا کی اتنی سخت ہوگی کہ اپنا گذشتہ زمانہ سرور بھول جاویں گے۔

علامہ زبشری فرماتے ہیں۔ وانما یقندرون وقت لبتہم بذلک علی وجہ استعسارہم لہ اویسوں اویکذبون اویحمنون۔ دنیا یا قبر کے لبت کے بارے میں ان کا وقت مقدر کرنا یا تو اس لئے ہے کہ اس وقت کو کم جائیں گے یا بھول جائیں گے یا جھوٹ بولتے ہیں یا پھر تخمیناً بول رہے ہیں۔ (تفسیر کشاف ج 3 ص 487)

ایک قول کفار کا یہ بھی ہے۔ ان لبتہم الا یوماً۔ علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔ فالمراد الا زماناً قلیلاً۔ مراد تھوڑی مدت ہے۔ (روح المعانی ج 16 ص 261)

تعارض: 138 سورة طه

آیت 115

ولقد عهدنا الی آدم من قبل فتنی۔ اور اس سے پہلے ہم آدم کو ایک حکم دے چکے تھے سو اس سے غفلت ہوگئی۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ حضرت آدم علیہ السلام سے بھول ہوئی جس کی وجہ سے ان کو معذرت سمجھا جاوے گا۔ اس کو عاصی نہیں کہیں گے لیکن دوسری آیت سے میں ان کو اس چوک پر عاصی کہا گیا ہے۔ وعصی آدم ربہ فعوی۔ اور آدم سے اپنے رب کا قصور ہو گیا سو غلطی میں پڑ گئے۔ (سورۃ طه آیت 121) معلوم ہوا انسان نہیں تھا بلکہ قصور وار تھے۔

تطبیق: نسیان کا غیر ماخوذ ہونا اس امت کی خصوصیت ہے۔ حضرت آدم علیہ السلام کے لئے نسیان بھی قصور تھا۔ امام قرطبی فرماتے ہیں وان كان النسيان من اليوم مرفوعا. لہذا آدم علیہ السلام کے لئے نسیان اور قصور ایک معنی میں ہے۔ دوسرا جواب مفسرین یہ ذکر کرتے ہیں کہ نسیان کا معنی ترک ہے یعنی حضرت آدم علیہ السلام نے ترک عہد کیا۔ ظاہر ہے ترک عہد غلطی ہے۔

علامہ زنجیزی فرماتے ہیں، وان سراد الترك وانه ترك ما وحي به من الاحتراس عن الشجرة واكل ثمرتها نسيان سے ترک مراد لیں۔ ان کو درخت اور اس کے پھل سے منع کیا تھا۔ اس کی پابندی نہ کر سکے۔ (الکشاف ج 3 ص 91)۔

امام قرطبی فرماتے ہیں معناه ترک۔ (قرطبی ج 11 ص 251)۔

علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔ فالنسيان محاذ عن الترك نسيان ترک کی جگہ مجازاً آیا ہے۔ جب نسیان کا معنی ترک ہو تو ترک عہد اور عصیان دونوں ایک معنی میں ہو گئے۔ کیونکہ دونوں کا معنی غلطی کرنا ہے لہذا کوئی تعارض نہیں۔

تعارض: 139 سورة الانبياء

آیت 81

ولسليمن الريح عاصفة تحرى بامرہ الى الارض التي باركنا فيها. اور ہم نے سلیمان کا زور کی ہوا کو تابع بنا دیا تھا کہ ان کے حکم سے اس سرزمین کی طرف چلتی ہے جس میں ہم نے برکت کر رکھی ہے۔ اس آیت میں ہوا کی صفت عاصف کے ساتھ بیان ہوئی یعنی زور کی ہوا تھی۔ لیکن سورۃ ص ص کی آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ یہ ہوا نرم تھی۔ ہوا کو رخا کے ساتھ ذکر کیا ہے۔ ارشاد باری ہے فسخرنا له الريح تحرى بامرہ رخاء حيث اصاب. سو ہم نے ہوا کو ان کے تابع کر دیا کہ وہ ان

کے حکم سے جہاں وہ چاہتا تھی سے چلتی۔ (آیت 36)۔

تطبیق: رخاء کا ایک معنی مطیعة ہے۔ تا بعد اس معنی کے لحاظ سے کوئی تعارض نہیں۔ ابن الجوزی دفع تعارض میں فرماتے ہیں۔ فالجواب ان المفسرين قائلون ان الامر العاصف قارون بامر الرحاء أخری کبھی زور کی ہوا کو حکم دیتے کبھی نرم ہوا کو۔

دوسرا جواب ذکر کرتے ہیں۔ کساست تشتت اذا اراد وتلين اذا اراد. جب چاہتے ہو اشدت اختیار کر لیتی کبھی نرم ہوا کا ارادہ کر لیتے۔ (زاد المسیر ج 7 ص 140)۔

ابن جریر طبری فرماتے ہیں کہ تحت تیار ہونے کے بعد جب اس پر سوار ہو جاتے امر العاصف من السريح فدخلت تحت ذلك الخشب فاحتلمته حتى اذا استقلت امر الرحاء. زور کی ہوا کو حکم دیتے وہ تخت کے نیچے داخل ہو کر ہوا اس کو اٹھاتی جب تخت بلند ہو جاتا پھر نرم ہوا کو حکم دیتے اس طرح تخت ہوا میں اڑتا تھا۔ (تفسیر ابن جریر طبری ج 17 ص 55)۔

اس کی مثال موٹر اور گاڑی وغیرہ کی ہے۔ موٹر چلانے کے لئے ڈرائیور پہلے فٹ گیر لگاتا ہے جس کی طاقت زیادہ ہوتی ہے۔ گویا گاڑی کی ابتدائی روانگی زیادہ زور اور قوت چاہتی ہے جب گاڑی سڑک پر چل پڑتی ہے پھر ڈرائیور ٹاپ گیر لگاتا ہے۔ جس میں اول گیر کے مقابلہ میں قوت کم ہوتی ہے۔ اور گاڑی تیز چلتی ہے۔

علامہ زنجیزی فرماتے ہیں۔ ان تسكون رحاء في نفسها وعاصفة في عسلها. ہوائی نرم تھی لیکن عمل کے اعتبار سے زور والی تھی۔

دوسرا جواب ذکر کرتے ہیں۔ وقيل كاست في وقت رحاء وفي وقت عاصف ليسوا بعاصفي حسب ارادته. کسی وقت ہوا نرم ہوتی اور کسی وقت زور والی کیونکہ سلیمان علیہ السلام کے ارادہ اور خواہش کے مطابق چلتی تھی۔ (تفسیر کشاف

ج 3 ص 130) جس طرح ڈرائیور کبھی گاڑی تیز چلاتا ہے کبھی آہستہ۔
مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں: یا باتبارتا شیر فی البدن اور اکب کو حرکت نہ
ہونے کے رخصا کی صفت رکھتی تھی اور یا تبار سرعت سیر اور قطع مسافت کے عاصف
کا حکم رکھتی تھی (بیان القرآن ج 7 ص 54)

تعارف 140

سورة المؤمنون

آیت 12

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سَلْمَةَ مِنْ طِينٍ. اور ہم نے انسان کو مٹی کے خلائصہ سے
بنایا۔ اس آیت میں اس بات کا ذکر ہے کہ انسان کو اللہ پاک نے مٹی سے بنایا جبکہ
دوسری آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ انسان کو اللہ تعالیٰ نے نطفہ سے بنایا ہے۔ چنانچہ
ارشاد باری ہے: ثُمَّ جَعَلْنَا نَسْلَهُ مِنْ سَلْمَةَ مِنْ مَاءٍ مَهِينٍ. پھر اس کی نسل کو خلائصہ
اخلاصہ یعنی ایک بے قدر پانی سے بنایا۔ (سورة السجدة آیت 8)
تطبیق: امام رازی فرماتے ہیں سورة المؤمنون میں الانسان سے مراد آدم علیہ
السلام ہے۔ وَالسَّارِدِ مِنْهُ آدَمُ عَلَيْهِ السَّلَامُ فَادَمُ مِنْ طِينٍ وَخَلَقَتْ ذُرِّيَّتَهُ
مِنْ مَاءٍ مَهِينٍ. آدم علیہ السلام کو مٹی سے نکالا اور اس کی اولاد کو بے قدر پانی سے
پیدا کیا۔

اور ایک جواب ذکر کرتے ہیں: وَقِيلَ الْأَحْمَرُونَ الْإِنْسَانَ هَبْأَوْ لِدَادِمُ وَالطَّيْنِ
هَذَا اس آدم علیہ السلام بعض نے کہا ہے کہ انسان سے مراد بنی آدم میں اور طین سے
آدم علیہ السلام کا نام ہے۔ (تفسیر کبیر ج 23 ص 84)

سورة مؤمنون میں الانسان سے مراد آدم علیہ السلام لیں تو اس معنی کی تائید سورة
السجدة کی آیت سے ہوتی ہے: ارشاد باری ہے: وَبَدَأَ خَلْقَ الْإِنْسَانِ مِنْ طِينٍ ثُمَّ

جعل نسله. انسان کی پیدائش مٹی سے شروع کی پھر اس کی نسل کو خلائصہ اخلاصہ سے۔
تقاضی بیناوی فرماتے ہیں: وَقِيلَ السَّارِدِ بِالطَّيْنِ آدَمُ لِأَنَّهُ خَلِقَ مِنْهُ وَالسَّلَامَةَ
نَطْفَةُ طِينٍ سَ مِنْهُ آدَمُ عَلَيْهِ السَّلَامُ هَبْ كَيْونَكَ وَهُوَ مِثْلِي سَ مِنْهُ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ
سَ مِنْهُ آدَمُ عَلَيْهِ السَّلَامُ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ
سَ مِنْهُ آدَمُ عَلَيْهِ السَّلَامُ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ هَبْ HEB
(تفسیر بیناوی ج 2 ص 61)

اس تفسیر کے مطابق معنی ہوگا کہ انسان کو آدم علیہ السلام کے نطفہ سے پیدا کیا ہے۔
ابو السعد فرماتے ہیں: وَالسَّارِدِ بِالطَّيْنِ آدَمُ لِأَنَّهُ خَلِقَ مِنْهُ وَالسَّلَامَةَ
الْإِنْسَانَ فِي ضَمَنِ خَلْقِ آدَمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ حَلْفًا أَحْمَالِيَا. انسان سے مراد جنس
انسان ہے۔ ہم نے جنس انسان کو اجمالی طور پر آدم علیہ السلام کے ضمن میں پیدا کیا ہے
(تفسیر ابو السعد ج 4 ص 29)

ادفع بالتي هي احسن السنة. آپ ان کی بدی کا دفعیہ ایسے برتاؤ سے کر دیا کیجئے جو بہت ہی اچھا ہو۔ اس آیت کا جہاد کی آیت کے ساتھ تعارض ہے۔ کیونکہ آیات جہاد میں قتل اور خون بہانے کا حکم ہے۔

تطبیق: مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں۔ اور آیت ارفع الجہاد کی معارض نہیں کیونکہ جہاد حقوق دین کے لئے ہوتا ہے۔ اور یہ آیت حقوق نفس کے بارے میں ہے۔ (بیان القرآن ج 7 ص 99)۔

علامہ زختری فرماتے ہیں۔ وقيل هي منسوخة بأية السيف. آیات سيف کیساتھ منسوخ وقيل محكمة لان المداراة محتوث علیہا ما لم تود الی نلم دین وازراء بمرؤة. یا آیت محکم ہے کیونکہ ظاہر داری کی ترغیب دی گئی ہے جب تک دین میں رخنہ نہ پڑے اور خلاف مرؤت نہ ہو۔ (الکشاف ج 3 ص 202)۔

قاضی بیضاوی فرماتے ہیں۔ وقيل هي كلمة التوحيد والسنة الشرك یعنی شرک کا جواب کلمہ توحید سے دو اس معنی کی وجہ سے تعارض پیدا نہیں ہوتا۔ وقيل الامر بالمعروف والسنة المنكر احسن طریقہ سے امر بالمعروف مراد ہے۔ اور السنة سے منکر یعنی منکر کا معروف کے ساتھ ازالہ کرو۔ (بیضاوی ص 460)

فاذا انفخ في الصور فلانساب بينهم. پھر جب صور پھونکا جائیگا تو ان میں باہمی

رشتے ناٹے اس روز نہ رہیں۔

معلوم ہوا کہ رشتے ختم ہو جائیں گے۔ لیکن بعض آیات سے ثابت ہوتا ہے کہ نسبی رشتے ختم نہ ہوں گے۔ ارشاد ہے۔ يوم يفر المرء من اخيه. جس روز میں آدمی اپنے بھائی سے بھاگے گا۔ (سورة عبس آیت 34)۔ معلوم ہوا کہ نسب برقرار رہے گا۔

تطبیق: علامہ آلوسی فرماتے ہیں ان المراد انه لا يفتخر يومئذ بالانساب كسابقه يفتخر بهافي الدنيا. جیسے دنیا میں نسب پر فخر کرتا ہے وہاں ایسا فخر نہ کر سکے گا۔ گویا اس کا نسب ہے ہی نہیں۔ فلانساب من باب المحاز مجازاً نسب کی نفی ہوئی ہے۔ (روح المعانی ج 18 ص 65)۔

ابن الجوزی فرماتے ہیں لانساب بينهم يومئذ يتفاحرون بها. ایک دوسرے پر فخر کرنے کے لئے نسب نہ ہوگا۔ (زاد المسیر ج 5 ص 490) یہ مطلب نہیں کہ نسب بالکل یہ منقطع ہو جائے گا۔ بلکہ وہ نسب جس کا فائدہ حاصل ہو سکتا ہے وہ نہ ہوگا۔

علامہ زختری فرماتے ہیں التناكر عند النفخة الاولى فاذا كانت الثانية تاموا فتعارفوا. نخہ اولی میں ایک دوسرے کو نہ پہچانیں گے گویا نسب نہیں بخیر ثانیہ میں ایک دوسرے سے تعارف کریں گے۔ (الکشاف ج 3 ص 203)

فلانساب بينهم يومئذ ولا يتساءلون. ان میں سے باہم رشتے ناٹے اس روز نہ رہیں گے۔ اور نہ کوئی کسی کو پوچھے گا۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ اس روز کفار ایک دوسرے نہ پوچھیں گے۔ لیکن بعض آیات سے معلوم ثابت ہوتا ہے۔ ایک دوسرے

سے پوچھیں گے۔ و اقبل بعضهم على بعض يتساءلون. اور وہ ایک دوسرے کی طرف متوجہ ہو کر جواب و سوال کرنے لگیں گے۔ (سورة الطُّفَّت آیت 27)

تطليق: علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔ فان تسأل الكفيرة المنفى في موطن وتسالهم المثبت في موطن آخر. ایک دوسرے سے نہ پوچھنا ایک میدان میں ہوگا اور پوچھنا دوسرے میدان میں ہوگا۔

وقد يقال ان التساءل المنفى هنا تسأل التعارف تعارف كيلئے ایک دوسرے سے نہ پوچھیں گے۔ والتساءل لاهل النار تساءل وراء ذلك.

ابن عباس فرماتے ہیں۔ ان نفى التساءل في النفخة الاولى حين لا يبقى على وجه الارض شئ. نفخه اولی کے وقت جب زمین پر کوئی باقی نہ رہے گا تو اس وقت میں تسأل کی نفی ہے۔ واثباته في النفخة الثانية نفخه ثانیہ کے وقت ایک دوسرے پوچھیں گے۔ (روح المعانی ج 18 ص 66)

علامہ زنجیری فرماتے ہیں۔ فيه جوابان احدهما ان يوم القيامة مقداره خمسون الف سنة ففيه ازمة واحوال مختلفة يتساءلون قیامت کے 50 ہزار سال کے دن میں بہت زمانے ہیں ہر زمانے کے مختلف احوال ہیں بعض ازمہ میں ایک دوسرے سے پوچھیں گے اور بعض میں ایک دوسرے سے کلام نہ کریں گے۔ (الکشاف ج 3 ص 203)

ابن الجوزی فرماتے ہیں۔ لا يتساءلون بلا انساب نسب کے بارے میں ایک دوسرے سے نہ پوچھیں گے۔

والثانی: لا يسأل بعضهم بعضاً عن شأنه. ایک دوسرے کی خیر خیریت دریافت کرنے کیلئے ایک دوسرے سے نہ پوچھ سکیں گے۔

والثالث: لا يسأل بعضهم بعضاً من اي قبيل انت كما تفعل

العرب. ایک دوسرے سے یہ نہ پوچھیں گے کہ تو کس قبیلے کا ہے جیسے عرب کی عادت ہے اس طرح پوچھ گچھ سے آدمی کی قدر معلوم ہوتی ہے۔ (زاد المسیر ج 5 ص 491). مذکورہ قسم کے سوالات ایک دوسرے سے نہ کر سکیں گے۔ اس کے علاوہ آپس میں گفتگو کر سکیں گے۔

تعارض: 144 سورة النور

آیت 3

الزانی لا ينكح الا زانية او مشرکة والزانية لا ينكحها الا زان او مشرک و حرم ذلك على المؤمنين. زانی نکاح بھی کسی کے ساتھ نہیں کرتا بجز زانیہ یا مشرک کے اور زانیہ کے ساتھ بھی اور کوئی نکاح نہیں کرتا بجز زانی یا مشرک کے اور یہ مسلمانوں پر حرام کیا گیا ہے۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ پاک دامن کا زانیہ کیساتھ نکاح اور عقیفہ کا زانی کے ساتھ نکاح ناجائز ہے۔ لیکن بعض آیات کے عموم سے معلوم ہوتا ہے کہ ان کا آپس میں نکاح صحیح ہے ارشاد ہے۔ والنکحوا الايامی منکم. اور تم میں سے جو بے نکاح ہوں تم ان کا نکاح کر دیا کرو۔ (سورة النور آیت 32)

ایک اور ارشاد ہے۔ واحلل لکم ما وراء ذلكم. اور ان عورتوں کے سوا اور عورتیں تمہارے لئے حلال کی گئی ہے۔ غیر محرم عورتوں میں زانیہ داخل ہے معلوم ہوا کہ عقیفہ زانیہ کے ساتھ نکاح کر سکتا ہے۔

تطليق: اس آیت کا یہ مطلب نہیں کہ زانیہ کا زانی کے ساتھ عقیفہ کا زانی کے ساتھ یا عقیفہ کا زانیہ کے ساتھ نکاح صحیح نہیں کیونکہ جن محرمات کا ذکر ہوا ان میں یہ عورتیں داخل نہیں اس آیت میں صرف زانی اور زانیہ کی گندی طبیعت کا ذکر ہے

زنا کے عادی اور خوگر لوگوں کا میلان ہی اس قسم کی گندی طبیعت والوں کی طرف ہوتا ہے۔ اس برے وصف کے وجہ سے ہم جنس بن جاتے ہیں۔ ایسے لوگوں کے ذہن میں یہ نہیں ہوتا کہ نکاح کے مقاصد حاصل ہوں مقصد صرف شہوت رانی ہوتی ہے۔ ان لوگوں کو اگر زنا کے مواقع نکاح کے بغیر میسر نہ ہوتے ہوں تو ان گندی عورتوں کے علاوہ کسی اور کھبیوی بنانا بھی پسند نہیں کرتے۔

زانی کو زانیہ کی اور زانیہ کو زانی کی تلاش ہوتی ہے۔ اور اس برے مقصد کے حصول کے اتنے جنونی ہوتے ہیں کہ نکاح کے وقت مذہب کا پاس بھی نہیں رکھتے۔ بلکہ زانیہ اور زانی اگر شرک کا ارتکاب کرتے ہوں تو ان کے ساتھ بھی نکاح کے لئے تیار ہو جاتے ہیں۔ حالانکہ مسلمان اور مشرک کا نکاح منعقد ہی نہیں ہوتا۔ اور زنا تو ویسے بھی حرام ہے۔ ایک شادی شدہ جوڑا ہے دونوں پاک دامن ہیں۔ ان میں سے ایک زنا کا ارتکاب شروع کرے تو نکاح پر کچھ اثر نہیں پڑتا۔ ہاں زانیہ عورت کا خاوند بے غیرت اور دیوث ضرور بن جائے گا۔

اس بات کی دلیل کہ اس آیت میں زانی اور زانیہ کی صرف گندی طبیعت اور رغبت الی الزنا کا ذکر ہے۔ اور عقیف اور زانیہ کے عدم جواز نکاح کا کوئی ذکر نہیں ہے۔ یہ ہے کہ زانی مشرک کیساتھ بھی نکاح کے لئے تیار ہو جاتا ہے آیت میں مشرک کا ذکر ہے حالانکہ مشرک کے ساتھ سرے سے نکاح منعقد ہی نہیں ہوتا۔ نکاح کی اس بحث میں مشرک عورت کے ذکر کی ضرورت نہ تھی لیکن پھر بھی ذکر کر دیا معلوم ہوا کہ یہاں بحث نکاح کے جواز اور عدم جواز کی نہیں بلکہ صرف ان لوگوں کی گندی طبیعت کا ذکر ہے اور زنا کی حرمت کی بھی ذکر ہے اس صورت میں آیت محکم ہوگی۔

اگر اس آیت سے یہ مفہوم نکالا جائے کہ عقیف اور زانیہ کا نکاح صحیح نہیں تو پھر یہ آیت منسوخ ہے۔ ابو بکر الجصاص فرماتے ہیں قدس سرہ فی الآیۃ النبی

بعدها وانکحو الانامی منکم (الاحکام القرآن ج ۳ ص ۲۶۶)۔

قاضی بیضاوی فرماتے ہیں لکن المراد بیان احوال الرجال فی الرغبة فیہن۔ آیت میں گندی طبیعت والے مردوں کا بیان ہے کہ ان رغبت اس قسم کی عورتوں کی طرف ہوتی ہے۔ (بیضاوی ج ۲ ص ۷۳)۔

یا الزانی لاینکح میں نکاح سے مراد جماع ہے۔ ابو بکر الجصاص فرماتے ہیں یعنی بہ الجماع حین یرتی۔ معنی ہوگا لایزنی حین یرتی الاہزانیہ مثله۔ زنا کے لئے ہم مثل کی تلاش کرتا ہے۔

فرماتے ہیں فحکمه تعالیٰ فی ذلك مساواتہما فی الزنا مساوات فی الزنا مراد ہے۔ خلاصہ یہ ہوا کہ آیت میں دو باتوں کا بیان ہے۔ زنا اور نکاح میں ان لوگوں کو ہم مثل کی تلاش ہوتی ہے۔ ابو بکر الجصاص فرماتے ہیں۔ وفسقہ الامصار متفقون علی جواز النکاح وان الزنا لا یوجب تحریمہا علی الزوج ولا یوجب الفرقة بینہما۔ نکاح ان کے ساتھ جائز ہے۔ زنا سے میاں بیوی کے نکاح پر اثر نہیں پڑتا۔ اس پر فقہاء کا اتفاق ہے۔ ابو جعفر طبری فرماتے ہیں واولی الاقوال فی ذلك عندی بالصواب قول من قال عسی بالنکاح فی هذا الموضع الوطی صحیح اور بہتر قول میرے نزدیک یہ ہے کہ یہاں نکاح سے وطلی مراد ہے۔ اس کا حاصل بھی وہی مساوات فی الزنا ہے۔ مزید فرماتے ہیں لم یعن بالآیۃ ان الزانی من المؤمنین لا یعقد عقد نکاح علی عقیفۃ من المسلمین۔ آیت کا یہ مطلب نہیں کہ مؤمن زانی مسلم عقیفہ سے نکاح نہیں کر سکتا۔ (طبری ج 18 ص 58)

البتہ حافظ ابن کثیر نے امام احمد کا مذہب نقل کیا ہے کہ عقیفہ کا زانیہ کیساتھ نکاح صحیح نہیں ہاں تو یہ کہ بعد صحیح ہے۔ (ابن کثیر ج 2 ص 51)۔

یوم نشهد علیہم السنہم جس روز ان کے خلاف ان کی زبانیں گواہی دیں گی۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ کفار منہ اور زبان سے گواہی دیں گے حالانکہ سورۃ یس کی آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ مونہوں پر مہر لگی ہوگی تو زبان اور منہ سے کیسے گواہی دیں گے اور ارشاد ربانی ہے الیوم نحتم علی افواہہم آج ہم ان کے مونہوں پر مہر لگائیں گے۔

تطیق: اس السجوزی فرماتے ہیں و هؤلاء غیر الذین یحتم علی افواہہم جن لوگوں کی زبانیں گواہی دیں گی وہ ان کے علاوہ ہیں جن کے مونہوں پر مہر لگی ہوگی۔ (زاد المیسر ج 6 ص 26)

ابن جریر طبری فرماتے ہوئے سوال ذکر کرتے ہیں کہ جب مونہوں پر مہر لگ جائے تو زبان کیسے گواہی دے گی جواب ذکر کرتے ہیں عنی بذلك ان السنۃ بعضہم تشهد علی بعض لان السنۃم تنطق وقد حتم علی الافواہ۔

بعض کی زبانیں بعض کے بارے میں گواہی دیں گی ایسا نہیں کہ ان کے مونہوں پر مہر لگی ہو اور ان کی زبانیں بولنا شروع کر دیں۔ (تفسیر طبری ج 18 ص 105)۔

علاء الدین بغدادی فرماتے ہیں (یوم نشهد علیہم السنہم) ہذا قبل ان یحتم علی افواہہم زبانوں کی یہ گواہی مونہوں پر مہر لگنے سے پہلے کی ہے۔ (تفسیر خازن ج 4 ص 53)

مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں اور شہادت السنۃ منافی نہیں ختم علی الافواہ کے کیونکہ ختم علی الافواہ سے معذرت نافذ کی نفی ہے اور شہادت اس قول مسترکاً اذات ہے نیز شہادت میں زمان خود متکلم ہوگی متکلم کا آلہ نہ ہوگی یہ مراد ہے ختم

جس طرح جملہ اعضاء گواہی دیں گے اسی طرح زبان بھی بدن کا ایک عضو ہے اس لحاظ سے زبان گواہی دی گی اس وقت زبان بولنے کا آلہ نہ ہوگی۔

علامہ آلوسی تعارض ذکر کرنے کے بعد فرماتے ہیں بان المراد من السحتم علی الافواہ متعہم عن التکلم باللسنۃ الی فیہا وذلك لا ینافی نطق اللسنۃ نفسہا الذی هو المراد من الشہادۃ بما اشرنا الیہ فان اللسنۃ فی الاول آلۃ للفصل وفی الثانی فاعلہ فیجتمع الحتم علی الافواہ وشہادۃ اللسن بان یمنعوا عن التکلم باللسنۃ وتجعل اللسنۃ نفسہا ناطقۃ متکلمۃ ختم علی الافواہ سے مراد زبانوں کا تکلم سے رُک جانا ہے اور یہ زبان کے خود متکلم ہونے کے منافی نہیں زبان کی شہادت سے یہی مراد ہے کہ وہ خود متکلم ہوگی کیونکہ انسان کے تکلم کے وقت زبان اسکے لئے آلہ ہوتی ہے اور ختم علی الافواہ کے بعد زبان خود قائل بن کر تکلم کرے گی نہ کہ آلہ بن کر اس لحاظ سے ختم علی الافواہ اور شہادۃ السنۃ میں جمع ممکن ہے۔ (روح المعانی ج 18 ص 129)

ایک اور جواب ذکر کرتے ہیں وقیل فی التوفیق یحوزان یکون کل من السحتم والشہادۃ موطن وحال یعنی کسی موطن اور حال میں زبان متکلم ہو اور کسی موطن اور حال میں زبان پر مہر لگی ہو۔ وان یکون الشہادۃ فی حق الرامین والسحتم فی حق الکفۃرۃ زبان کی شہادت قاذف کے بارے میں ہے اور ختم علی الافواہ کفار کے حق میں ہو قاذف کی زبان خود اس کے خلاف گواہی دے گی جس طرح قاذف نے کس معصوم پر تہمت لگائی تھی تو اس کی زبان خود اس کے خلاف گواہی بن جائے گی تاکہ جزاء من جنس العمل ہو جائے تفسیر قرطبی میں بھی یہی لکھا ہے فرماتے ہیں یوم تشهد السنۃ بعضہم علی بعض بما کانوا یعملون فی

سورة النور

تعارض: 146

آیت 26

الخبیثات للخبیثین و الخبیثون للخبیثات و الطیبات للطیبین و الطیبون للطیبات. گندی عورتیں گندے مردوں کے لائق ہوتی ہیں اور گندے مرد گندی عورتوں کے لائق ہوتے ہیں اور ستھری عورتیں ستھرے مردوں کے لائق ہوتے ہیں اور ستھرے مرد ستھری عورتوں کے لائق ہوتے ہیں اس آیت سے معلوم ہوا کہ میاں بیوی میں مناسبت ضروری ہے یا دونوں پاک ہوں یا دونوں ناپاک لیکن بعض آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ مناسبت ضروری نہیں نوح علیہ السلام پاک تھا اور بیوی ناپاک اس طرح لوط علیہ السلام ارشاد ربانی ہے و ضرب اللہ مثل اللذین کفرو المرأة نوح و امرأة لوط اللہ تعالیٰ کافروں کے لئے نوح کی بیوی اور لوط کی بی بی کا حال بیان کرتے ہیں۔ (سورة التحريم آیت 10)۔

یہ دونوں کافرہ تھیں اور ان کے شوہر انبیاء تھے اس طرح ارشاد ہے و ضرب اللہ مثل اللذین آمنوا المرأة فرعون اور اللہ تعالیٰ مسلمان کے لئے فرعون کی بی بی کا حال بیان کرتے ہیں۔ (سورة التحريم آیت 11) فرعون کی بیوی مسلمان تھی اور فرعون کافر۔

تطبیق: آیت میں خبیثات اور طیبات سے اقوال مراد ہیں اس لئے کوئی تعارض نہیں ابن کثیر فرماتے ہیں قال ابن عباس الخبیثات من القول للخبیثین من الرجال و الخبیثون من الرجال للخبیثات من القول و الطیبات من القول للطیبین من الرجال و الطیبون من الرجال للطیبات من القول۔

ابن عباس فرماتے ہیں کہ گندے اقوال گندے مردوں کے اور گندہ مرد گندے اقوال کے اور چھ اقوال ستھرے مردوں کے اور ستھرے مرد چھ اقوال کے مناسب ہیں۔ (ابن کثیر ج 5 ص 79)

جب خبیثات اور طیبات سے عورتیں مراد لیں جائیں تو پھر تعارض بنتا ہے بہت سے مفسرین نے یہی مراد لیا ہے ابن الجوزی فرماتے ہیں الخبیثات من النساء للخبیثین من الرجال و الطیبات من النساء للطیبین من الرجال (زاد المسیر ج 5 ص 27)

علامہ شقیطی نے ان آیات میں تعارض ذکر کر کے جواب دیا ہے کہ طیبات اور خبیثات مراد اقوال بھی ہیں لہذا کوئی تعارض نہیں لیکن اگر ان سے مراد عورتیں لی جائیں تو تعارض رہے گا ممکنہ میسرہ تفاسیر کی ورق گردانی سے ان کے مابین تعارض اور تطبیق کا ذکر کہیں نہیں ملا معلوم ہوتا ہے کہ ان میں تعارض نہیں لیکن عدم تعارض کی وجہ کسی نے ذکر نہیں کی احقر کے نزدیک اگر تعارض مان لیں تو تطبیق یوں ہوگی۔

قباحت اور خبیثت کے دو قسمیں ہیں خبیثت فی العقیدہ اور خبیثت فی الاخلاق نوح علیہ السلام اور لوط علیہ السلام کی بیبیوں میں عقیدہ کی خبیثت تھی اخلاقی قباحت اور خبیثت نہ تھی تمام انبیاء کرام کی بیبیاں پاک دامن تھیں کس نے کبھی زنا کا ارتکاب نہیں کیا حافظ ابن کثیر فرماتے ہیں وقال ابن عباس و غیرہ احد من السلف مازنت امرأة نبی قط ابن عباس اور اسلاف فرماتے ہیں کہ کسی نبی کی بیوی نے کبھی زنا نہیں کیا۔ (ابن کثیر ج 3 ص 556)۔

ابوبکر الجصاص فرماتے ہیں قال ابن عباس کانتا منافقتین مازنت امرأة نبی قط نوح علیہ السلام اور لوط علیہ السلام کی بیبیاں منافق تھیں انہوں نے کبھی زنا کا ارتکاب نہیں کیا۔ (الادکام القرآن للجصاص ج 3 ص 467)۔

ضرر بھی جرم ہے اور زنا بھی جرم ہے لیکن کفر یا غیرت جرم ہے اور زنا بے غیرت جرم ہے۔ زنا کار کا خاوندیہ مٹ ہوتا ہے۔ خاص کسی نبی کی غیرت یہ کبھی برداشت نہیں کر سکتی کہ اس کی بی بی زنا کار ہو۔ اس کے مقابلے میں کفر ایک ایسا جرم ہے کہ اس میں بے غیرتی نہیں۔ جس کا جو عقیدہ ہو اس کو حق اور اچھا سمجھتا ہے اگرچہ فی نفسہ عقیدہ غلط ہو۔ کحل حرب بسالذہبم فرعون۔ ہر گروہ کے پاس جو دین ہے وہ اس سے خوش ہے (سورۃ المؤمنون آیت 53)۔ لیکن زنا ایسا گناہ ہے کہ ہر ملک و مذہب میں کسی نہ کسی درجہ میں جرم تصور کیا جاتا ہے۔ بعض ممالک میں زنا قانوناً جائز ہے لیکن بالبرہنا جائز ہے۔ شادی شدہ عورت کے لئے ناجائز ہوتا ہے۔ اس لئے نہیں کہ ایک اخلاقی یا مذہبی جرم ہے بلکہ اس لئے کہ خاوند کا حق مارا جاتا ہے۔

اس تشریح کی تائید علامہ زنجیری کی عبارت سے مل گئی واللہ علی ذالک۔ فرماتے ہیں۔ ولا یجوز ان یراد بالخیانۃ الفجور لانه سمح فی الطباع نقیصہ عند کل احد بخلاف الکفر فان الکفار لا یسمحونہ بل یستحسنونہ ویسبونہ حقاً۔ خیانت سے مراد فہور (زنا) نہیں کیونکہ ہر آدمی کی طبیعت اس کو برا جانتی ہے بخلاف کفر کے۔ کفار اپنے کفر کو برا نہیں جانتے بلکہ اس کو اچھا سمجھتے ہیں اور اپنے کفر کو حق قرار دیتے ہیں۔ (الکشاف ج 4 ص 572) جب نبی کی بیوی زنا سے پاک ہوئی تو طیبہ بن گئی اور نبی طیب تھا۔ طیبہ طیبہ کہل گئی رہا ان کے مابین اختلاف دینیوں کی بات تو وہ انکی شریعت کا معاملہ تھا۔ واللہ اعلم عند اللہ۔

سورۃ الفرقان

تعارض: 147

آیت 69

یضعف لہ العذاب یوم القیامۃ۔ کہ قیامت کے روز اس کا عذاب

بڑھتا چلا جاوے گا۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ نیکی کی طرح اللہ گناہ کا عذاب بڑھا دین گے۔ حالانکہ دوسری آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ گناہ اور اس کی سزا میں مماثلت ہے یعنی گناہ کے برابر سزا ملے گی۔ سزا بڑھا کر نہیں دی جائے گی۔ ارشاد باری ہے۔ ومن جاء بالسیئۃ فلا یجزی الامثلہا۔ اور جو شخص برا کام کرے گا اس کو اس کے برابر ہی سزا ملے گی۔ (سورۃ الانعام آیت 160)

تطبیق: علامہ زنجیری فرماتے ہیں۔ اذا ارتکب المشرك معاصی مع الشرك عذب علی الشرك وعلی المعاصی حمیلاً فتضاعف العقوبۃ لمضاعفۃ المعاصی علیہ۔ مشرک جب گناہ کرتا ہے تو اس کو اس کے شرک اور گناہ دونوں پر عذاب ملتا ہے عذاب کا بڑھنا گناہ کے بڑھنے کی وجہ سے۔ (الکشاف ج 3 ص 294)

قاضی بیضاوی فرماتے ہیں۔ ومضاعفۃ العذاب لانضمام المعصیۃ الی الکفر۔ عذاب اس لئے بڑھتا ہے کہ کفر کے ساتھ معصیت بھی ہوتی ہے۔ (تفسیر بیضاوی ص 484)۔

علامہ آلوسی فرماتے ہیں کہ بعض مفسرین کے نزدیک یہ مطلب نہیں کہ ایک گناہ کا دو گنا یا زیادہ عذاب ملے بلکہ ایضاً عذاب کا لازم معنی مجازاً مراد ہے۔ اور مضاعفۃ کا لازم معنی شدت ہے۔ یعنی عذاب کی شدت مراد ہے فرماتے ہیں بل المراد لازم ذالک وهو الشدة فکانہ قیل ومن یفعل ذالک یعذب عذاباً شدیداً ویكون ذالک العذاب الشدید جزء کمل من تلك الافعال ومماثل لہ۔ لازم معنی شدت مراد ہے گویا یوں کہا گیا ہے کہ جو کوئی ان افعال قبیحہ کا ارتکاب کرے گا اس کو سخت عذاب دیا جائے گا۔ اور یہ سخت عذاب ان گناہ کے مماثل اور برابر ہے۔ (روح

مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں۔ بضاعف لہ العذاب پر شہ تعارض آیۃ من حاء بالمسنة فلا یجزی الامثلها کانه کیا جاوے کیونکہ مماثلت باعتبار کیت کے ہے کہ ایک گناہ کا ایک ہی لکھا جاتا ہے وویا زیادہ نہیں لکھے جاتے پھر اگر وہ ایک ہی کیفیت میں ایسا شدید ہو کہ مقتضی تضاعف بمعنی زیادہ کو ہو تو یہ مماثلت کے خلاف نہیں بلکہ یہ بھی معنا مماثلت ہے۔ (بیان القرآن ج 8 ص 59)

تعارض: 148 سورة الفرقان

آیت 75

اولئک یحسرون العرفة ایسے لوگوں کو بالا خانے ملیں گے۔ اس آیت میں غرفہ واحد ہے معلوم ہوتا ہے کہ ایک غرفہ ملے گا۔ حالانکہ دیگر آیات میں ہے کہ ایک نہیں بلکہ زیادہ بالا خانے ملیں گے۔ ارشاد ہے۔ لہم غرف من فوقہا غرف مبنیۃ۔ ان کے لئے بالا خانے ہیں جن کے اوپر اور بالا خانے ہیں جو بنے بنائے تیار ہیں۔ (سورۃ الزمر آیت 20)

ایک اور ارشاد ہے وہم فی الغرفات آمنون۔ اور وہ بالا خانوں میں چین سے ہوں گے۔ (سورۃ السبا آیت 37)

تعلیق: جنتیوں کو ایک نہیں بلکہ زیادہ بالا خانے ملیں گے۔ اس آیت میں جنس غرفہ مراد ہے۔ اسی لئے مولانا اشرف علی تھانوی نے ترجمہ میں ”بالا خانے“ جمع کا لفظ استعمال کیا ہے۔ علامہ مختصری فرماتے ہیں۔ المراد یحسرون الغرفات وہی العالی فی الحنة فوجد اقتصاراً علی الواحد الدال علی الجنس والدلیل علی ذلك وہم فی الغرفات آمنون۔ غرفہ سے غرفات مراد ہیں۔ غرفہ جنت میں

ایک اونچا درجہ ہے۔ مفرد پر جنس کی دلالت کی وجہ سے اکتفاء کیا۔ جنس غرفہ مراد لینے کی دلیل یہ آیت ہے وہم فی الغرفات آمنون (الکشاف ج 3 ص 296)۔

یا غرفہ سے مراد جنت ہے اس طرح تعارض کا اشکال باقی نہیں رہتا۔ ابن الجوزی فرماتے ہیں قبائل ابن عباس یعنی الحنة۔ آگے فرماتے ہیں والمراد الجنة۔ (زاد المسیر ج 6 ص 112)

حافظ ابن کثیر بھی فرماتے ہیں کہ غرفہ سے مراد جنت ہے۔ اس آیت میں دو مرتبہ فیھا کی مؤنث ضمیر جنت کی طرف لوثائی ہے۔ کہ غرفہ سے مراد اونچا درجہ ہے۔ اس توجیہ کے ساتھ بھی اشکال باقی نہیں رہتا۔ فرماتے ہیں الغرفة الدرجة الرفیعة وہی اعلى منازل الحنة۔ غرفہ اونچا درجہ ہے جو جنت کا اعلیٰ مقام ہے (قرطبی ج 13 ص 83)

تعارض: 149 سورة الشعراء

آیت 145

وما اسئلكم علیہ من اجر ان اجرى الاعلی رب العلمین۔ اور میں تم سے اس پر کوئی صلہ نہیں مانگتا۔ پس میرا صلہ تو رب العلمین کے ذمہ ہے۔ قل ما اسئلكم علیہ من اجر وما انا من المستغفین آپ کہہ دیجئے کہ میں اس قرآن پر نہ کچھ معاوضہ چاہتا ہوں اور نہ میں بناوٹ کرنے والوں میں ہوں۔ (سورۃ ص ۸۶)

اس طرح اور آیات بھی ہیں جن سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ حضور اپنے تبلیغی مشن پر اجرت اور معاوضہ طلب نہیں کیا کرتے تھے۔ لیکن ایک آیت سے اس کے خلاف معلوم ہوتا ہے۔ کہ آپ نے اجرت طلب کی ہے۔ ارشاد باری ہے قل لا اسئلكم علیہ اجر الا اللوذة فی القرآنی۔ آپ یوں کہہ دیجئے کہ میں تم سے اور کچھ مطلب نہیں چاہتا۔ بجز رشتہ داری کے

محبت کے (سورۃ الشوریٰ آیت 23)

تطبیق: یہ بات مسلمات میں سے ہے کہ حضور ﷺ نے تبلیغ دین پر نہ اجرت طلب کی ہے اور نہ لی ہے۔ تفسیر کشاف میں ہے کہ مشرکین جمع ہوئے بعض نے بعض سے کہا کہ محمدؐ جو کچھ دے رہے ہیں اس پر اجرت طلب کرتے ہیں تو الا المودۃ فی القربی والی آیت نازل ہوئی۔

علامہ زختری فرماتے ہیں جب مستثنیٰ متصل ہو تو معنی اس طرح ہوگا۔ لا اسئلكم احرا الا هذا وهو ان تودوا اهل قرابتی ولم یکن هذا احرا فی الحقیقة لان قرابتہ قرابتہم فكانت صلئتهم لازمة لهم فی المرؤۃ۔ میں تم سے اجر طلب نہیں کرتا مگر یہ یعنی میری قرابت کی محبت اور یہ حقیقت میں اجرت نہیں کیونکہ حضور ﷺ اور ان کی قرابت ایک تھی۔ مرؤت کے لحاظ سے ان کفار کے لئے صلہ رجمی لازم تھی۔

یا مستثنیٰ منقطع ہے ای لا اسئلكم احرا قاطب ولكن اسئلكم ان تودوا قرابتی الذین ہم قرابتکم ولا تودوہم۔ میں تم سے کبھی بھی اجرت نہیں مانگتا لیکن تم سے اپنی قرابت مانگتا ہوں۔ میری رشتہ داری تمہاری رشتہ داری ہے ان کو ایذا نہ دو۔ (الکشاف ج 4 ص 209)

امام قرطبی اور امام فراء نے اس آیت کے شان نزول میں لکھا ہے کہ انصار نے حضور ﷺ کے لئے چندہ کیا کہ آپ کی وجہ سے اللہ نے ہم کو ہدایت دی ہے آپ اس رقم سے کام چلائیں حضور ﷺ نے اس کو قبول نہ کیا اس وقت یہ آیت نازل ہوئی۔ آیت کا مطلب یہ ہے کہ حضور ﷺ نے ان کفار سے کہا کہ میں تم سے اجرت نہیں لیتا اگر میری مدد نہیں کرتے تو اتنا کرو کہ میرے اور تمہارے مابین جو قرابت کا رشتہ ہے اس کی وجہ سے مجھے تکلیف نہ دو۔ قاضی ثناء اللہ پانی پتی نے امام بغوی کا ایک قول نقل کیا ہے کہ الا المودۃ فی القربی منسوخ ہے لیکن بعد میں کہتے ہیں کہ نسخ

کا قول ٹھیک نہیں کیونکہ حضور ﷺ کی قرابت کی محبت محکم فریضہ ہے فرماتے ہیں یسکن ان یقال ان المنسوخ انما هو ما امر اللہ تعالیٰ ورسولہ سوال الاحر ممکن ہے کہ نسخ سے یہ مراد لیا جائے کہ اللہ نے رسول کو جو اجر کے سوال کا حکم دیا تھا صرف حصہ منسوخ ہے قرابت کی محبت منسوخ نہیں۔ (مظہری ج 8 ص 318) قاضی بیضاوی فرماتے ہیں وقیل القربی التقریب الی اللہ ای الا ان تودوا اللہ ورسولہ فی تقریبکم الیہ بالطاعة والعمل الصالح۔ (بیضاوی ج 2 ص 274)

قریبی سے مراد رشتہ داری نہیں بلکہ اللہ کا قرب ہے۔ اللہ کی اطاعت اور عمل صالح کے ساتھ تقرب حاصل کر کے اللہ اور اس کے رسول کی محبت حاصل کرو۔

اور یہ بالکل ظاہر ہے کہ اللہ اور اس کے رسول کی محبت ان کی اطاعت اور عمل صالح اجرت نہیں بلکہ ایسے اعمال ہیں کہ ان کا فائدہ ان ہی کو پہنچے گا۔

امام رازی فرماتے ہیں ہوا استثناء من غیر الحسن تقدیرہ لکن اذکر کم المودۃ فی القربی۔ یہ استثناء من غیر جنس سے ہے۔ (مسائل الرازی ص 247) جس اجر کی نفی ہے وہ غیر ہے اس اجر سے جس کا اثبات ہے۔

تعارض: 150 سورة النمل

آیت 4

ان الذین لا یؤمنون بالاخرة زینالہم اعمالہم فہم یعمہون۔ جو لوگ آخرت پر ایمان نہیں رکھتے ہم نے ان کے اعمال ان کی نظر میں مرغوب کر رکھے ہیں۔ اس آیت میں تین اعمال کی نسبت اللہ کی طرف ہوئی ہے حالانکہ تین اعمال شیطان کا کام ہے ارشاد ہے۔ زمین لہم الشیطان اعمالہم۔ (سورۃ العنکبوت آیت

۳۸) اور شیطان نے ان کے اعمال کو ان کی نظر میں مستحسن کر رکھا ہے۔

اس آیت میں تین اعمال کی نسبت شیطان کی طرف ہے۔

تطبیق: اگر اعمال سے مراد نیک اعمال ہوں تو کوئی اشکال نہیں کیونکہ اللہ تعالیٰ نیک اعمال مزین کرتا ہے لیکن کفار اپنے کفر کی وجہ سے اس کے حسن کو نہیں جانتے اور شیطان برے اعمال مزین کرتا ہے لیکن اکثر مفسرین نے اعمال سے نیک اور بد دونوں مراد لئے ہیں۔

علامہ آلوسی فرماتے ہیں کہ اعمالہم اعمال حسنا لینا بعید ہے کیونکہ اس میں ہضم کی ضمیر کفار کی طرف راجع ہے اور کفار کا کوئی عمل حسن نہیں طیبی کا قول نقل کیا ہے ان الذین لا یؤمنون بالآخرة کقولہ ان الذین کفرو و قولہ سبحانہ زینالہم اعمال کقولہ حل و علا حتم اللہ علی قلوبہم جس طرح اللہ تعالیٰ نے کفار کے کفر کی وجہ سے ان کے دلوں پر مہر لگا دی اس طرح ان کے کفر کی وجہ سے ان کے اعمال بد کو ان کی نظر میں مزین کر دیا تاکہ حیران و پریشان رہیں (روح المعانی ج 19 ص 157)

امام قرطبی نے زجاج کا قول نقل کیا ہے جس کا حاصل بھی تقریباً یہی ہے قال الزجاج جعلنا جزائہم علی کفرہم ان زینا لہم اعمالہم ان کے کفر کے جزاء کے بدلہ میں ہم نے ان کے اعمال کو ان کی نظروں میں اچھا کر دیا (قرطبی ج 13 ص 155)

علامہ آلوسی فرماتے ہیں ونسبہ التزیین الیہ عزو حل عند الجماعۃ حقیقۃ تزیین اعمال کی نسبت اللہ کی طرف حقیقتاً ہے۔

علامہ زحشری لکھتے ہیں کہ تین اعمال کی نسبت شیطان کی طرف حقیقی ہے اور اللہ کی طرف مجازاً ہے لیکن اہل سنت اس توجیہ کو پسند نہیں کرتے کیونکہ اس توجیہ کی بنیاد

معتزلہ کا ایک قاعدہ ہے کہ اللہ پر واجب ہے کہ وہی کام کرے گا جو بندوں کے حق میں بہتر اور مصلحت آمیز ہو۔ وہ اس لئے اہل سنت کے نزدیک تین اعمال کی نسبت اللہ کی طرف حقیقی ہے امام رازی نے معتزلہ کے دلائل کا خوب تعاقب کیا ہے پھر فرماتے ہیں، والمراد من التزیین ہوان یخلق فی قلبہ العلم لمافیہ من المناقع والذات ولا یخلق فی قلبہ لمافیہ من المضار والآفات فقد ثبت بہذہ الدلائل القاطعۃ العقلیۃ وجوب اجراء ہذہ الآیۃ علی ظاہرہا۔

تین اعمال کا یہ مطلب ہے کہ اللہ کسی کے دل میں یہ خیال پیدا کریں کہ اس میں نفع اور لذت ہے اور کسی ضرر کا خیال دل میں پیدا نہ کرے ان عقلی قطعی دلائل سے ثابت ہوا کہ آیت اپنے ظاہر پر محمول ہے (تفسیر کبیر ج 23 ص 179)

تعارض: 151 سورة النمل

آیت 83

ویوم نحشر من کل امۃ فوج ممن یکذب بآیننا اور جس دن ہم ہر امت میں سے ایک ایک گروہ ان لوگوں کا جمع کریں گے جو میری آیتوں کو جھٹلایا کرتے تھے اس آیت میں اس بات کی دلیل ہے کہ حشر خاص اس گروہ مکذبین کا ہوگا لیکن دیگر نصوص میں ہے کہ حشر عام ہوگا ارشاد باری ہے کل اتوہ داخرین اور سب کے سب اس کے سامنے دبے جھکے حاضر ہوں گے (سورۃ النمل آیت 87)

تطبیق: اس میں کوئی شک نہیں کہ حشر عام ہے ساری مخلوقات حشر کے میدان میں جمع ہوں گی لیکن اس آیت میں ایک خاص حشر کا ذکر ہے مسمومہ موجودہ تفاسیر میں چھان بین کے بعد صرف روح المعانی میں یہ توجیہ لکھی ہوئی دیکھی کہ حشر کی دو قسمیں ہیں حشر کلی اور حشر خاص اس آیت میں اس خاص گروہ مکذبین کے

حشر کا ذکر ہے۔ ہماری مخلوق کے حشر کے بعد ان کا خاص حشر ہوگا تاکہ ان کو خوب ڈانٹ پلائی جائے اور خوب رسوا ہوں کیونکہ یہ بڑے بڑے رؤساء وہ لوگ ہوں گے جو گمراہی کے بانی تھے اور لوگوں کو گمراہ کیا کرتے تھے۔ علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔
والمراد بهذا الحشر الحشر للتوبيخ والعذاب بعد الحشر الكلي الشامل
لكافة الخلق (روح المعانی ج 20 ص 26)

تعارض: 152 سورة القصص
آیت 56

انك لانهدي من احببت. آپ جس کو چاہیں ہدایت نہیں کر سکتے۔

اس آیت میں حضور سے ہدایت کی نفی ہوئی ہے لیکن دیگر آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ آپ ہدایت کر سکتے تھے۔ بلکہ ہادی آپ کی صفت ہے۔ ارشاد باری ہے۔ وانك لتهدى الى صراط مستقيم اور اس میں کوئی شک نہیں کہ آپ ایک سیدھے رستہ کی ہدایت کر رہے ہیں۔ (سورۃ الشوریٰ آیت 52)

تطبیق: ہدایت کے اثبات اور نفی میں تعارض اس وقت پیدا ہوتا ہے جب ذہن میں ہدایت کا ایک معنی ہو۔ حالانکہ ایسا نہیں ہدایت کا استعمال قرآن مجید میں چار معانی کے لئے ہوا ہے۔ امام راغب الاصفہانی نے مفردات الفاظ القرآن میں لفظ ہدی کے ذیل میں بڑی تفصیل اور وضاحت کیساتھ اس کے معانی اور مواقع استعمال بیان کئے ہیں۔

(۱) ہدایت۔ عقل۔ ذہانت۔ سمجھ بوجھ شعور وغیرہ اس قسم کی ہدایت تقریباً کائنات کی ہر شے کو دی ہے ارشاد ہے اعطی کل شیء خلقه ثم ہدی ہر چیز کو اس کے مناسب بناوٹ عطا فرمائی پھر رہنمائی فرمائی۔ (سورۃ طہ آیت 50)

(۲) قرآن مجید اور انبیاء کرام لوگوں کو صحیح راستہ کی طرف بلانا۔ وجعلنا منهم ائمة یهدون بامرنا۔ اور ہم نے ان کو مقتدا بنایا کہ ہمارے حکم سے ہدایت کیا کرتے رہیں۔ (سورۃ الانبیاء آیت 73)

(۳) التوفیق الذی یحتص بہ بمعنی توفیق جو اللہ تعالیٰ کا خاصہ ہے۔ ومن یؤمن باللہ ینزلہ علیہ اور جو شخص اللہ پر ایمان رکھتا ہے اللہ تعالیٰ اس کے قلب کو راہ دکھا دیتا ہے۔ (سورۃ التغابن آیت 11)

(۴) آخرت میں جنت کا راستہ دکھانا۔ الحمد للہ الذی ہدانا لهذا اللہ کالاکھ لاکھ احسان ہے جس نے ہم کو اس مقام تک پہنچایا (سورۃ الاعراف آیت 43)
مفردات الفاظ القرآن ص 538

انبیاء کرام کا کام ہے راہ دکھانا حق اور باطل کھول کھول کر بیان کرنا تاکہ خلق خدا اسکے مطابق چلیں۔ اس راہ پر چلانا اللہ تعالیٰ کا کام ہے جس کو توفیق کہتے ہیں۔ انسان انبیاء کرام کی ہدایات پر عمل کرتا ہے تو اللہ تعالیٰ اس کو حق راہ پر چلنے کی توفیق دے کر منزل مقصود تک پہنچا دیتے ہیں۔

جہاں اللہ تعالیٰ حضور سے ہدایت کی نفی کرتے ہیں اس کا یہ مطلب ہوتا ہے کہ آپ کسی کو توفیق نہیں دے سکتے کیونکہ توفیق میرے قبضہ میں ہے۔ اور جہاں حضور کے لئے ہدایت کا اثبات ہے اس کا معنی یہ ہے کہ آپ لوگوں کو صرف حق راستہ دکھاتے ہیں۔

ابن الجوزی فرماتے ہیں۔ وانك لتهدى ای لتدعو۔ تو بلاتا ہے لوگوں کو سیدھے راستہ کی طرف۔ (زاد المسیر ج 7 ص 300)

علامہ آلوسی انک لانهدي کی تفسیر میں فرماتے ہیں۔ ہدایۃ موصلة الی البغیۃ لامحالة تو منزل مقصود تک جتنا نہیں پہنچا سکتا (روح المعانی ج 20 ص 95)

لفظ ہدایت کی اس مذکورہ تشریح کیساتھ ان آیات کا تعارض بھی ختم ہو جاتا ہے کہ ایک طرف تو اللہ تمام لوگوں کو ہدایت دیتے ہیں لیکن ظالم اور فاسق سے ہدایت کی نفی کی ہے قرآن مجید میں اکثر مقامات پر موجود ہے کہ ظالم اور فاسق کو ہدایت نہیں دیتا اس کا بھی مطلب ہے کہ ظالم اور فاسق کفر اور شرک کے ساتھ اپنی فطری صحیح استعداد کو ضائع کر دیتے ہیں تو اللہ تعالیٰ ان کو راہ حق پر چلنے کی توفیق نہیں دیتے۔ قرآن مجید میں ظالم اور فاسق سے کافر مراد ہیں۔ یہ معنی نہیں کہ ان کو حق و باطل کے بارے میں بالکل نہیں بتایا بلکہ ان کو عقل و شعور دیا انبیاء بھیجے حق اور باطل کھول کھول کر بیان کر دیا اس کے بعد بھی وہ لوگ کفر اور شرک پر اڑے رہے تو اللہ تعالیٰ نے ان سے توفیق سلب کر لی اس سلب توفیق سے تعبیر عدم ہدایت کیساتھ کی۔

سورة القصص

آیت 63

تعارض: 153

قال الذين حق عليهم القول ربنا هؤلاء الذين اغويننا اغويناهم كما غويننا تبرأنا اليك ما كانوا ايانا يعبدون جن پر خدا کا فرمودہ ثابت ہو چکا ہو گا وہ بول اٹھیں گے کہ اے ہمارے پروردگار بے شک یہ وہی لوگ ہیں جن کو ہم نے بہکایا ہم نے ان کو ویسا ہی بہکایا جیسا ہم خود بہکے تھے اور ہم آپ کی پیشی میں ان سے دست برداری کرتے ہیں یہ لوگ ہم کو نہ پوجتے تھے۔

آیت کے اول اور آخر میں تعارض ہے اغوینا سے معلوم ہوتا ہے کہ شیاطین اپنے قبیحین کو گمراہ کرنے کا اقرار کرتے ہیں لیکن ماکانوا ايانا يعبدون سے معلوم ہوتا ہے کہ انکار کر دیں گے۔

تعلیق: شیاطین اپنے قبیحین کو اغواء کرنے کے منکر نہیں بلکہ اقرار کرتے ہیں انکار

کا مطلب یہ ہے کہ ان کی گمراہی میں صرف ہماری غلط دعوت شامل نہیں بلکہ ان کی اپنی خواہش کا بھی دخل ہے ہم نے ان کو غلط راستے کی دعوت دی یہ اپنے اختیار اور خواہش سے اس پر چل پڑے کما اغوینا سے معلوم ہوتا ہے کہ شیاطین نے قبیحین کی گمراہی کو اپنی گمراہی کے ساتھ تشبیہ دی ہے کہ جس طرح ہم اپنی خواہش اور اختیار سے گمراہ ہوئے ہیں بالکل اس طرح ہمارے قبیحین کی گمراہی ہے ماکانوا ايانا يعبدون کا مطلب یہ ہے کہ صرف ہماری ہی پوجا نہیں کی بلکہ ہماری پوجا میں ان کی خواہش بھی شامل ہے نفی اپنی پوجا کی نہیں بلکہ صرف اپنے اختیار کی نفی ہے کہ ہمارا ان قبیحین پر زور نہیں چلتا تھا مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں۔

یہ لوگ درحقیقت بالتحصیص محض ہم کو ہی نہ پوجتے تھے اس عبارت کا وہی مطلب نکلتا ہے جو اوپر بیان ہوا علامہ زبخری فرماتے ہیں (ماکانوا ايانا يعبدون) انما کانوا يعبدون) احواء ہم و یطیعون شہواتہم۔ یہ لوگ اپنی خواہشات اور شہوات کی عبادت اور اطاعت کرتے تھے۔ (الکشاف ج 3 ص 426)

علامہ آلوسی فرماتے ہیں ای ماکانوا يعبدوننا انما کانوا يعبدون فی نفس الامر و المال احوالہم ہماری عبادت نہیں کرتے تھے بلکہ نفس الامر میں اپنی خواہشات کی عبادت کرتے تھے۔ (روح المعانی ج 10 ص 150)

سورة العنكبوت

تعارض: 154

آیت 24

فما كان جواب قومہ الا ان قالوا اقتلوه او حرقوه سوان کی قوم کو جواب پس یہ تھا کہ کہنے لگے ان کو یا تو قتل کر ڈالو یا ان کو جلادو۔

اس سورت میں حضرت ابراہیم علیہ السلام کو قتل یا جلانے کا ذکر ہے جبکہ دوسری آیت

میں صرف حرقہ مذکور ہے۔ ارشاد ہے قالوا حرقوه وہ لوگ کہنے لگے کہ ان کو آگ میں جلا دو۔ (الانبیاء آیت 68)

تطیق: الشيخ احمد الصاوی فرماتے ہیں ان ماہنا حکایة عن اصل تشاورهم و صافی الانبیاء عن عزمهم و تصمیمهم علی ما فعلوه بتکبوت میں صرف ابراہیم کے مشورے کا ذکر ہے کہ حضرت ابراہیم علیہ السلام کو قتل کریں یا جلادیں اور الانبیاء میں ان کے عزم مصمم کا ذکر ہے کہ آخری فیصلہ کیا کہ جلاؤ الو۔ (حاشیہ الصاوی علی الجلالین ج 3 ص 234)

امام قرطبی فرماتے ہیں ثم اتفقوا علی تحریقه پھر حضرت ابراہیم علیہ السلام کو جلانے پر متفق ہو گئے۔ (تفسیر قرطبی ج 13 ص 338) دونوں باتوں کے مشورہ کے بعد اس کے جلانے پر اتفاق کیا۔

تعارض: 155

سورة العنکبوت

آیت 27

و جعلنا فی ذریته النبوة و الکتاب اور ہم نے ان کی نسل میں نبوت اور کتاب کو قائم رکھا۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ نبوت اور کتاب حضرت ابراہیم علیہ السلام کی اولاد کا خاصہ ہے لیکن سورة الحدید میں ارشاد باری ہے۔ و لقد ارسلنا نوحا و ابراہیم و جعلنا فی ذریتهما النبوة و الکتاب اور ہم نے نوح اور ابراہیم کو پیغمبر بنا کر بھیجا اور ہم نے ان کی اولاد میں پیغمبری اور کتاب جاری رکھی۔ (آیت 26)

اس آیت سے معلوم ہوا کہ نبوت اور کتاب حضرت ابراہیم کی اولاد کا خاصہ نہیں بلکہ حضرت نوح علیہ السلام کی اولاد میں بھی یہ دونوں چیزیں جاری رہیں۔

تطیق: حضرت نوح اور حضرت ابراہیم علیہ السلام دونوں کی اولاد میں نبوت اور کتاب کا سلسلہ جاری رہا۔ حضرت ابراہیم علیہ السلام کی اولاد بھی حضرت نوح علیہ السلام کی اولاد ہے اس لئے یہ کہنا صحیح نہیں کہ اس آیت میں صرف حضرت ابراہیم کی اولاد کا ذکر ہے۔

حضرت ابراہیم کا ذکر اس لئے ہوا کہ ان کے بعد صرف ان کی اولاد میں نبوت اور کتاب قائم رہی یہ معنی نہیں کہ حضرت نوح علیہ السلام کی اولاد میں یہ دونوں سلسلے نہیں تھے ابن الجوزی فرماتے ہیں۔ و ذلك ان لله تعالیٰ لم یبعث نبیاً بعد ابراہیم الامن صلیہ (زاد المسیر ج 6 ص 268)

جلالین میں ہے فکل الانبیاء بعد ابراہیم من ذریته (ص 337) ابراہیم علیہ السلام کے بعد تمام انبیاء ان کی اولاد میں تھے۔ اس آیت کا حاصل یہ ہے کہ حضرت ابراہیم علیہ السلام کے بعد کا ذکر ہے اور ان سے قبل کا ذکر سورة الحدید کی آیت میں ہے۔

تعارض: 156

سورة الروم

آیت 45

لیحزنی الذین آمنوا و عملوا الصالحات من فضله جس کا حاصل یہ ہوگا کہ اللہ تعالیٰ ان لوگوں کو اپنے فضل سے جزا دے گا جو ایمان لائے اور انہوں نے اچھے عمل کئے۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ جزا اور جنت اللہ کے فضل سے ملے گی ایمان اور عمل کے بدلے نہیں ملے گی لیکن اکثر نصوص میں جنت کے داخلہ کو ایمان اور عمل پر موقوف کیا ہے۔ ارشاد ہے ان الذین آمنوا و عملوا الصالحات لهم جنت تجری من

تحتھا الانہر۔ بے شک جو لوگ ایمان لائے اور انہوں نے نیک عمل کئے ان کے لئے باغ ہیں جن کے نیچے نہریں جاری ہوں گی۔ (سورۃ البروج آیت 11)

ایک اور ارشاد باری ہے و نودوا ان تلکم الحنة اور تمہوہا بما کنتم تعلمون۔ اور ان سے پکار کر کہا جاویگا کہ یہ جنت تم کو دی گئی ہی تمہارے اعمال کے بدلے (سورۃ الاعراف آیت 43)

اس آیت سے صراحت معلوم ہوا کہ جنت اعمال کا بدلہ ہے۔ حدیث میں بھی آتا ہے کہ کسی کا عمل اس کو جنت میں داخل نہیں کر سکتا پوچھا گیا اور آپ یا رسول اللہ فرمایا مجھے بھی جب اللہ کی رحمت اپنے فضل میں ڈھانپ لے۔

تطبیق: درحقیقت انسان اللہ تعالیٰ کے فضل سے جنت میں داخل ہوگا۔ نیک عمل صرف اس کی ایک نشانی اور علامت ہے۔ شیخ الہند مولانا محمود حسن ایک مثال کے ذریعہ تطبیق فرماتے ہیں مثال دینے کے بعد فرماتے ہیں گاڑی تو رحمت الہیہ کے زور سے چلتی ہے عمل وہ جھنڈی ہے جس کے اشارہ پر چلاتے ہیں اور روکتے ہیں۔ (تفسیر عثمانی ص 21)

دیکھنے والا سمجھتا ہے کہ ریل گاڑی کے گاڑی کی ہری جھنڈی سے گاڑی چل پڑی اور سرخ جھنڈی سے رک گئی۔ لیکن گاڑی کا چلنا اور رکنا اصل میں انجن کی وجہ سے ہوتا ہے۔ اسی طرح جنت میں اللہ کے فضل سے جائے گا اور نیک عمل اس کے لئے بڑی جھنڈی کی طرح ایک علامت ہے دوزخ میں اللہ کے غضب کی وجہ سے جائے گا لیکن برا عمل سرخ جھنڈی کی ایک نشانی ہے۔

احقر کے ذہن میں آیات کے مابین تطبیق کے لئے یہ توجیہ آئی کہ تباہی اس لئے نہیں کہ نیک عمل کی توفیق اللہ تعالیٰ دیتا ہے۔ اور توفیق اس کا فضل ہے اب یہ کہہ سکتے ہیں کہ جنت میں داخلہ اللہ کے فضل اور نیک اعمال کی وجہ سے ہوا۔ بعد میں دیکھا

تو امام نیشاپوری نے بعینہ یہ لکھا تھا فرماتے ہیں۔ لہذا کان الموفق للعمل الصالح هو اللہ تعالیٰ کان دخول الحنة ذلك بفضلہ و جعل العمل امارۃ علی ذلك۔ نیک عمل کی توفیق اللہ دیتا ہے تو دخول جنت اس کے فضل سے ہوا اور نیک عمل دخول جنت کی ایک نشانی ہے۔ (غرائب القرآن تفسیر طبری ج 8 ص 96)

امام رازی نے بھی اشکال ذکر کرنے کے بعد لکھا ہے۔ ان العمل لا یوجب دخول الحنة لذاتہ وانما یوجبہ لاجل ان اللہ تعالیٰ بفضلہ جعلہ علامۃ علیہ ومعرفۃ لہ۔ عمل بالذات موجب داخلہ جنت نہیں صرف دخول جنت کی علامت ہے فرماتے ہیں و ایضا لہذا کان الموفق للعمل الصالح هو اللہ تعالیٰ کان دخول الحنة فی الحقیقۃ لیس الا بفضل اللہ عمل کی توفیق اللہ دیتا ہے تو دخول جنت حقیقت میں اللہ کے فضل سے ہے۔ (تفسیر کبیر ج 14 ص 82)

سورۃ الاحزاب

تعارض: 157

آیت 6

واذواجہ امہاتہم اور آپ کی بیبیاں ان کی مائیں ہیں۔ اس آیت میں اس بات کا ذکر ہے کہ ازواج مطہرات امت کی مائیں ہیں۔ لیکن ایک مقام پر ارشاد ہے جو اس کے معارض ہے ان امہاتہم الا الٰسی ولدنہم ان کی مائیں تو بس وہی ہیں جنہوں نے ان کو جنما ہے۔ (سورۃ المحادۃ آیت 2)

تطبیق: مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں ازواج کا امہات ہونا باعتبار تعظیم ہے۔ (بیان القرآن ج 9 ص 36)۔

علامہ زبیری فرماتے ہیں تشبیہ لہن بالامہات فی بعض الاحکام وهو وجوب تعظیمہن واحترامہن وتحريم نکاحہن وھن فی مارواہ

ذلك الاجنبیات (الكشاف ج 3 ص 523) بعض احکام کے لحاظ سے ازواج مطہرات کو ماؤں کے ساتھ تشبیہ دی گئی ہے تعظیم، احترام اور حرمت نکاح کے اعتبار سے ازواج مطہرات امت کی مائیں ہیں ان احکام کے علاوہ ان کا حکم انہی عورتوں کی طرح ہے۔

ابن الجوزی فرماتے ہیں وازواجہ امہاتہم ای فی تحریم نکاحہن علی التابید ووجوب اجلالہن وتعظیمہن ولا تحری علیہن احکام الامہات فی کل شیء اذلو کان كذلك لهما جاز لاحد ان يتزوج بناتهن ولو رثن المسلمین ولحارات الخلوۃ بہن (زاد المسیر ج 6 ص 353) ہمیشہ کیلئے حرمت نکاح اور تعظیم کے لحاظ سے مائیں ہیں ہر اعتبار سے مائیں نہیں ورنہ ان کی بیٹیوں کے ساتھ کس کا نکاح جائز نہ ہوتا اور تمام مسلمان ان کے وارث ہوتے لہذا کانت شفقتہن علیہم کشفقة الامہات انزلن منزلة الامہات (قرطبی ج 14 ص 123)

جب ازواج مطہرات کی شفقت امت پر حقیقی ماؤں جیسی تھی تو اللہ تعالیٰ نے ان کو بمنزلہ ماں کے قرار دے دیا۔

سورة السبا

تعارض: 158

آیت ۱۷

وہل نجسزی الا الکفور اور ہم ایسی سزا بڑے ناسپاس ہی کو دیا کرتے ہیں اس آیت سے معلوم ہوا کہ اللہ تعالیٰ کافر کے سوا کسی کو سزا نہیں دیتے حالانکہ دیگر آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ مسلمان گناہگاروں کو بھی سزا ان کے عمل کے مطابق دی جائے گی ارشاد باری ہے ومن یشمل مثقال ذرۃ شرأیرہ اور جو شخص ذرہ برابر بدی کرے

گاہ اس کو دیکھ لے گا

تطبیق: کافر اور مؤمن دونوں کو جزا ملے گی لیکن دونوں کی جزا میں فرق ہے کافر کو جزا جو دی جاتی ہے وہ عقاب ہے اور ہیل نجسزی میں بھی عقاب مراد ہے علامہ زنجیری فرماتے ہیں۔ وہل نجازی الا الکفور بمعنی وہل یعاقب وهو الوجه الصحیح۔ مزید لکھتے ہیں کہ جزاء کافر اور مؤمن دونوں کو ہوتی ہے لیکن یہاں جزاء سے خاص عقاب مراد ہے فرماتے ہیں لانہ لم یرد الجزاء العام وانما اراد الخاص وهو العقاب (الكشاف ج 3 ص 576)

مؤمن اور کافر کی جزا میں یہ فرق ہے کہ کافر کو تو حقیقتاً گناہ کی سزا ملتی ہے تاکہ اس کو صرف تکلیف پہنچے لیکن مؤمن کو گناہ بدلہ جو ملتا ہے اس کا مقصد صرف تکلیف پہنچانا نہیں ہوتا بلکہ مؤمن کی تطہیر مقصود ہوتی ہے۔ علامہ آلوسی فرماتے ہیں ای مانحازی مثل هذا الجزاء الشدید المستاصل الالمبالغ فی الکفور او الکفر فلا یتوجه علی الحصر اشکال ان المؤمن قد یعاقب فی العاجل و فی الکشف لا یراد ان المؤمن ایضا یعاقب فانہ لیس بعقاب علی الحقیقۃ بل تمحیص ایسی سخت سزا صرف کافر کو دی جاتی ہے لہذا حصر پر اشکال نہیں کہ کبھی مؤمن کو بھی علی الفور سزا ملتی ہے اور کشف میں ہے کہ یوں نہ کہا جائے کہ مؤمن کو بھی سزا ملتی ہے وہ حقیقت میں سزا نہیں بلکہ مؤمن کی تطہیر ہے۔ (روح المعانی ج 22 ص 128)

ابن جریر طبری فرماتے ہیں ان المجازاة فی هذا الموضع المكافاة مجازاة سے مراد یہاں پورا پورا بدلہ دینا ہے آگے فرماتے ہیں والمکافاة لاهل الکبائر والکفر، مکافاة عمل صرف اہل کبیرہ والوں اور کفار کے لئے ہے والجزاء لاهل الایمان مع التفضل اور اہل ایمان کو صرف جزا ملتی ہے (تفسیر طبری ج 22

ص 82 مفسرین جزاء اور مجازاۃ میں فرق بھی کرتے ہیں ابو حیان فرماتے ہیں اکثر ما يستعمل الجزاء في الحبر والمجازاة في الشر لكن في تفيدهما قد يقع كل واحد منهما موقع الآخر. جزاء کا اکثر استعمال خیر میں ہوتا ہے اور مجازاۃ کا شر میں لیکن ان کو مقید کیا جائے تو ایک دوسرے کی جگہ ان کا استعمال درست ہے۔ (الحر المحیط ج 7 ص 271) ابو حیان کے مذکورہ قول کے مطابق تجزی مجازاۃ کی تخصیص صرف کفار کے ساتھ ہے۔ اگر کسی مؤمن عاصی کو اللہ عذاب تطہیر دیں تو وہ اس کے آیت منافی نہیں۔

سورة السبا

تعارض: 159

آیت 41

بل كانوا يعبدون الحن اكثرهم بهم مؤمنون. بلکہ یہ لوگ شیاطین کو پوجا کرتے ہیں ان میں اکثر لوگ انہیں کے معقد تھے۔
کانوا يعبدون سے معلوم ہوتا ہے سب شیاطین کے معقد تھے لیکن آخر میں ذکر ہوا کہ اکثر معقد تھے نہ کہ کل۔

تطبيق: قاضی بیضاوی فرماتے ہیں اکثرهم بهم مؤمنون الضمير الاول للانس او المشركين والاکثر بمعنی الكل والثانی للحن اکثر بمعنی کل ہے۔ (بیضاوی ص 571)۔

جب اکثر کل کے معنی میں ہوا اکثر کے ساتھ تعارض نہ رہا۔ علامہ آلوسی فرماتے ہیں انهم لم يدعوا الاحاطة اذ يكون في الكفار من لم يطلع الله تعالى الملائكة عليهم السلام عليهم. ملائکہ اس بات کے مدعی نہ تھے کہ سب مشرکین اور کفار جنات کے معقدین ہیں اس لئے کے ایسے کفار بھی تھے جن کی حالت پر اللہ تعالیٰ

نے ملائکہ کو مطلع نہیں کیا تھا اور انہم حکمو اعلى الاكثر بايمانهم بالحن لان الايمان من اعمال القلب فلم يذكرو الاطلاع على عمل جميع قلوبهم لان ذلك الله عز وجل فرشتوں نے اکثر ہم اس لئے کہ ایمان قلبی چیز ہے قلوب کی اطلاع صرف اللہ تعالیٰ کو ہوتی ہے لہذا سب کفار پر معتقد ہونے کا حکم نہیں لگایا۔ (روح المعانی ج 11 ص 222)۔ یا اکثر ہم ہم میں ہم کی ضمیر فرشتوں کی طرف راجع ہے معنی یہ ہوگا کہ ان کفار میں اکثر کا عقیدہ ملائکہ کے بارے میں یہ ہے کہ یہ بنات اللہ ہیں، علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔ وقيل مصدقون انهم بنات الله اس بات کی تصدیق کرتے ہیں کہ ملائکہ اللہ کی بیٹیاں ہیں۔

يعبدون میں ضمیر مشرکین کی طرف راجع ہوئی اور ہم میں ملائکہ کی طرف اس طرح کوئی تعارض نہیں کیونکہ معنی یہ ہوگا کہ سب مشرک جنات کی عبادت کرتے تھے اور اکثر مشرکین کا یہ عقیدہ تھا کہ ملائکہ اللہ تعالیٰ کی بیٹیاں ہیں۔

سورة فاطر

تعارض: 160

آیت 3

هل من خالق غير الله. کیا اللہ تعالیٰ کے سوا کوئی خالق ہے۔
اس آیت سے معلوم ہوا کہ غیر اللہ خالق ہو سکتا ہے۔ ارشاد ربانی ہے فبشرک الله احسن الخالقین سو کیسی بڑی شان ہے اللہ کی جو تمام صناعات سے بڑھ کر ہے
(سورة المؤمنون آیت 14)

اس آیت میں خالقین جمع ذکر کیا اور سب سے بہتر اصلہ القصدیر المستقیم ویستد من فی ابداع الشیء من غیر اصل ولاحتذاء. خلق کا معنی ہے کہ صحیح صحیح اندازہ لگانا اس کا استعمال وہاں ہوتا ہے جب کسی شی کو بغیر اصل اور نمونہ کے

بنایا جائے۔ لوگوں کی یہی لفظ خلق کا استعمال دو معنوں میں ہو سکتا ہے۔ احدہما فی
معنی التقدير والثانی فی الکذب کقولہ وتحلقون افکاً۔

(۱) اندازہ لگاتا۔

(۲) جھوٹ بنانا اگر کوئی کہے کہ احسن الخالقین میں غیر اللہ خلق کیساتھ موصوف
ہوا ہے تو اس کو جواب دیا جائے گا کہ معناه احسن المقدرین سب سے بہتر اندازہ
کرنے والا یا خالقین کا ذکر اس لئے ہوا کہ مخاطبین کا خیال تھا کہ غیر اللہ بھی اللہ
تعالیٰ کی طرح تخلیق کر سکتا ہے تو ان کے اعتقاد کے مطابق کہا کہ سب سے بہتر موجد
اور خالق اللہ ہے۔ (مفردات القرآن 157) ابن الجوزی فرماتے ہیں۔ فان قيل
كيف الجمع بين قوله احسن الخالقين وقوله هل من خالق غير الله
فالجواب ان الخلق يكون بمعنى التقدير فهذا المراد ههنا ان ابن آدم
قد يصورون ويقدرون يصنعون الشيء فالله خبير المصورين والمقدرين
آیات کے مابین تعارض کو دور کرنے کیلئے جواب یہ ہوگا کہ یہاں خلق بمعنی اندازہ
کرنے کے ہے ابن آدم کبھی تصویر اندازہ کر کے بناتا ہے چیزیں بناتا ہے تو اللہ تعالیٰ
سب سے بہتر مصور اور اندازہ کرنے والا ہے۔ انفس فرماتے ہیں خالقین سے یہاں
صانعین مراد ہیں۔ سب سے بہتر صنّاع ہے۔ (زاد المسیر ج 5 ص 64، 463)

امام قرطبی فرماتے ہیں اتقن الصانعين يقال لمن صنع شيئاً خلقه. سب سے
مضبوط صانع جب کوئی چیز بنائے تو اس کو کہتے ہیں خلقہ فرماتے ہیں ولا تنفي
اللفظة عن البشر في معنى الصنع. صنّع کے معنی ہیں خلق کا اطلاق بشر پر ہو سکتا ہے
والتماهي منقبة بمعنى الاختراع والايحاد من العدم. اختراع اور کمی شی کو عدم
سے وجود میں لانے کے معنی میں غیر اللہ پر اس کا اطلاق نہیں ہوتا۔ (قرطبی ج 12

ص 110)

تعارض: 161 سورة فاطر

آیت 24

انارسلناك بالحق بشيرا ونذيرا. ہم ہی نے آپ کو حق دیکر خوش خبری سنانے والا
اور ڈر سنانے والا بنا کر بھیجا۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ آپؐ بشیر اور نذیر تھے لیکن اس
سے قبل آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ آپؐ صرف نذیر تھے ارشاد باری ہے ان انت
الانذیر آپؐ تو صرف ڈرانے والے ہیں۔

تفہیم: حضرت مولانا اشرف علی تھانویؒ فرماتے ہیں پس اس حصر سے یا تو بشیر
کی نفی اصلاً مقصود ہو بلکہ مقصود آپ کے مسئول عنہ ہونے کی نفی ہو کما قال تعالیٰ
ولا تسئل عن اصحاب الحجیم اور یا بشیر کی نفی باعتبار کفار کے ہو۔ (بیان
القرآن (ج 9 ص 97)

تعارض: 162 سورة يس

آیت 51

ونفخ في الصور فاذا هم من الاحداث الي ربهم ينسلون. اور صور پھونکا جائے
گا سو وہ سب یکا یک قبروں سے اپنے رب کی طرف جلدی جلدی چلنے لگیں گے۔
اس آیت میں اس بات کا ذکر ہے کہ جب دوسری بار صور پھونکا جائے تو سب زندہ
ہو کر قبروں سے اٹھ کھڑے ہوں گے اور میدان حشر کی طرف دوڑتے ہوئے
جائیں گے یہی مفہوم سورة المعارج میں بھی ہے۔ يوم يسخر حون من الاحداث
سراعا كالهم الي نصب يوفضون. جس دن نکل پڑیں گے قبروں سے دوڑتے
ہوئے جیسے کسی نشانی پر دوڑتے جاتے ہیں۔ (آیت ۴۳ سورة المعارج) لیکن سورة
الزمر میں ارشاد باری ہے ثم نفخ فيه اخرى فاذا هم قيام ينظرون. پھر پھونکی

جائے دوسری بار تو فوراً وہ کھڑے ہو جائیں ہر طرف دیکھتے پہلی آیت میں ہے
دوڑے گے اور دوسری آیت میں حج ان کھڑے ہوں گے دونوں میں تعارض ہے
الکشاف وغیرہ میں ہے کہ یہ دونوں کام نئے ثابت ہوئے۔

تطبیق: علامہ آلوسی فرماتے ہیں ولا منافاة بین ہاہ الاية وقوله تعالى
فذا هم قيام ينظرون نحو اجتماع القيام والنظر وحسب وبقا اب زمان
القيام نظرين و زمان الاسراع غير المحض (روم - معانی ج 23 ص 32)

ان آیات میں تعارض نہیں کیونکہ قیام نظر اومشی ایک ساتھ جمع ہو سکتے ہیں یا زمان
قیام اور دوڑنے کے زمانے میں بہت کم وقت ہے یوں معلوم ہوگا جیسے سب کے ایک
وقت میں ہو علامہ آلوسی کی پہلی تہذیب میں اللام اشکار ہے یہ کیسے ممکن ہے کہ قیام
اور دوڑنے دونوں جمع ہو جائیں کیونکہ قیام میں سون ہے اور شمش میں حرکت تو حرکت
اور سکون کیسے جمع ہو سکتے ہیں یہ اشکال امام رازی کی تہذیب سے حل ہو جاتا ہے فرمایا
ہیں ان القيام لا ينافي المشي السريع لان الصائم قادم ولا ينافي المشي قيام
تيز دوڑنے کے معارض نہیں کہ کیونکہ چلنے والہ قائم ہوتا ہے اور دوڑتے ہوئے آدمی
ادھر ادھر دیکھ سکتا ہے تو دوڑنا قیام اور دوڑنا سب ایک ساتھ جمع ہو سکتے ہاں
خیال میں تیز چلنے کی قسمیں من جائیں گے بیٹھے بیٹھے تیز چلنا کھڑے کھڑے چلنا
اور بیٹھے ہوئے تیز چلنا آرز کل دنیا کے اندر فونی مشقوں میں ان تینوں کی عملی مثالیں
موجود ہیں امام رازی دوسرا جواب دیتے ہیں ان المسئلة محض الامور كسكان
الكل في زمان واحد (تفسیر تیسر ج ۲۴ ص ۸۸) اور جلدی کا مطلب یہ ہے سب
امور سب کو پیش آئیں گویا سب ایک زمانہ میں ہیں یعنی قبروں سے دھن کھڑے
ہونا دوڑتے اور ادھر ادھر دیکھنا ایسے امور ہیں۔

گویا عرفان کے بارے میں یہ کہا جاسکتا ہے کہ سب امور ایک زمانہ اور وقت میں

ہوئے جیسے کسی میدان میں مختلف کھیلوں کے لئے ایک گھنٹہ مقرر کیا جائے تو یہ کہہ
سکتے ہیں کہ سب کھیل ایک وقت میں کھیلے گئے حضرت اقدس تھانوی فرماتے ہیں
اور یہاں نثر ثانیہ کے وقت یسعون فرمایا اور جگہ ارشاد ہے فاذا هم قيام ينظرون
سوممكن ہے کہ اول وہلہ میں حیرت زدہ کھڑے رہیں پھر فرشتوں کے ہانکنے سے
دوڑنا شروع کر دیں (بیان القرآن ج 9 ص 115)۔

تعارض: 163 سورة يس

آیت 28

وما انزلنا على قومہ من بعده من جن من السماء وما كنا منزلين اور ہم نے
اس کی قوم پر اس کے بعد کوئی لشکر آسمان سے نہیں اتارا اور نہ ہم کو اتارنے کی
ضرورت تھی اس آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ فرشتوں کا نزول کبھی ہوا ہے نہ اس کی
ضرورت تھی حالانکہ دیگر آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ فرشتوں کا نزول ہوا ہے جیسے
پدر کے موقع پر ارشاد خداوندی ہے اذ تقول للمؤمنين ان يكفیکم ان بعدکم
رسکم بثلاثة الاف من الجنائکة منزلين جبکہ آپ مسلمانوں سے یوں فرما رہے
تھے کہ کیا تم کو یہ امر کافی نہ ہوگا کہ تمہارا رب تمہاری امداد کرے تین ہزار فرشتوں
کے ساتھ جو اتارے جاویں گے (سورۃ آل عمران)

تطبیق: ابن الجوزی وما كنا منزلين كما ايك معنى بيان كونه هم وقيل
المعنى ما بعثنا اليهم بعده نبيا ولا انزلنا عليهم رسالا ہم نے اس کے بعد اس

قوم کی طرف نبی اور رسالت نہیں بھیجی (زاوالمسیر ج 7 ص 14)

اس تفسیر کی بنا پر عدم انزال سے عدم نزول ملا کہ نہیں بلکہ عدم ارسال رسل ہے اس
تفسیر کے مطابق کوئی تعارض باقی نہیں رہتا۔

علامہ آلوسی فرماتے ہیں بحوزہ ان تکون مازائدہ ہو اور معنی یہ ہو کہ ان کے علاوہ دیگر قوموں پر ہم غیر ہم جنہم من السماء مازائدہ ہو اور معنی یہ ہو کہ ان کے علاوہ دیگر قوموں پر ہم آسمان سے فرشتوں کا لشکر اتار چکے ہیں۔ (روح المعانی ج 23 ص 2)

امام رازی فرماتے ہیں کہ ہم (اللہ) انزال جند کے محتاج ہیں بلکہ اس کے بغیر بھی ان کو ہلاک کر سکتے ہیں۔ (تفسیر کبیر ج 26 ص 62)

آیت کا مطلب یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ فرماتے ہیں کہ اس قوم کی ہلاکت کے لئے ہم کسی جند کے محتاج نہیں اس لئے کہ قوموں کی ہلاکت کے لئے ایک فرشتہ صرف اپنا پر ہلاک توہ بھی کافی ہے یہ مطلب نہیں کہ کسی اور غرض کے لئے بھی اللہ فرشتوں کو آسمانوں سے نازل نہ فرمائیں گے بلکہ حضور کی تکریم اور تسکین قلب کے لئے نزول ہوا ہے ارشاد باری ہے وما جعلہ اللہ الا بشری ولتطمئن به قلوبکم۔

اسی لئے حکیم الامت مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں و ما کننا منزلین پر نزول ملا لکہ یوم بدر لقتال الکفار سے شبہ نہ کیا جاوے کیونکہ اس سے مقصود نفی احتیاج ہے نہ یہ کہ دوسری حکمتوں سے بھی نزول نہ ہوگا۔ پس ممکن ہے کہ قصہ ہذا میں کوئی حکمت مقتضی نزول ملا لکہ کو نہ ہو اور بدر میں ہو۔ (بیان القرآن ج 9 ص 109)

سورة و الصلوة

تعارض: 164

آیت 41

اولئک لہم رزق معلوم ان کے واسطے ایسی غذا نہیں ہیں جن کا حال معلوم ہے۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ رزق معلوم ہے اور یرزقون فیہا بغیر حساب سے معلوم ہوتا ہے کہ معلوم نہیں کیونکہ بلا حساب ملے گا۔

تعلیق: الشیخ احمد الصاوی فرماتے ہیں (لہم رزق معلوم) ای اوقاتہ

وصفاته فلا یسافی آية یرزقون فیہا بغیر حساب فان المراد غیر معلوم المقدار۔ (رزق معلوم کا مطلب یہ ہے کہ رزق کے اوقات اور صفات معلوم ہوں گے اور مقدار غیر معلوم ہے۔) (حاشیہ الصاوی ج 3 ص 337)

ایک آیت میں ہے ولہم رزقہم فیہا بکرة وعشیا یعنی صبح اور شام رزق ملے گا۔ علامہ زبخری نے ایک قول نقل کیا ہے فرماتے ہیں وعن فسادة الرزق المعلوم الحسنہ۔ رزق معلوم سے مراد جنت ہے (اکتشاف ج 4 ص 42) اس قول کے بنا پر کوئی تعارض نہیں کیونکہ رزق معلوم سے مراد جنت ہوگی اور یرزقون سے مراد کھانے پینے کی اشیاء۔

سورة الزمر

تعارض: 165

آیت 53

قل یا عبادی الذین اسرفوا علی انفسہم لا تنظتوا من رحمة اللہ آپ کہہ دیجئے کہ اے میرے بندوں جنہوں نے اپنے اوپر زیادتیاں کی ہیں تم خدا تعالیٰ کی رحمت سے ناامید نہ ہونا۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ سرفین اللہ کی رحمت سے ناامید نہیں ہوتے لیکن ایک مقام پر ارشاد باری ہے سرفین کی ناامیدی تو درکنار وہ تو دوزخ والے ہیں وان المسرفین اصحاب النار اور جو لوگ دائرہ نکل رہے ہیں وہ سب دوزخی ہوں گے (سورة المؤمن آیت 43)

تعلیق: اسراف کہتے ہیں حد سے گزرنے والے کو کبھی آدمی گناہ کرتا ہے لیکن کفر کی حد و تک نہیں پہنچتا کبھی گناہوں کیساتھ کفر کی حد و تک پہنچ جاتا ہے اس لئے اسراف علی انفسہم میں صرف گناہ کبیرہ مراد ہے۔ قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں انہ اراد

بالاسراف الکبائر یا اسراف سے کفر اور معاصی دونوں مراد ہیں لیکن پھر آیت میں ایمان اور توبہ کی شرط لگانے کی ضروری ہے اور یہ قید ایماحا مراد ہے فرماتے ہیں اذا ائتمم وتتم عن الشرك وهذا القيد ثابت بالاجماع. جب آدمی ایمان لائے اور توبہ کرے تو اللہ سے ناامید نہ ہو. (منظہری ج 8 ص 222) اور ان المسرفین کسی تفسیر میں فرماتے ہیں فی الضلالة الطغیان بالاشراك (منظہری ج 8 ص 260).

جب شرک کی وجہ سے گمراہ اور سرکش بن جائے ظاہر بات ہے کہ شرک کی حدوں کو چھوٹنے والا دوزخ ہی میں جائے گا۔

علامہ زنجیزی فرماتے ہیں وعن فتاوة المشرکین (الکشاف ج 4 ص 170) ان المسرفین میں مسرفین سے مراد مشرکین ہیں اور اسرفوا علی انفسهم کی تفسیر میں فرماتے ہیں. جنوا علیہما باسراف المعاصی والغلو فیہما. اپنی جانوں پر معاصی کی وجہ سے زیادتی کی ہو یعنی مسلمان گناہگار ہو (ج 4 ص 135) حافظ ابن کثیر فرماتے ہیں. یا عبادی الذین میں تمام انسانوں کو دعوت توبہ و رجوع دی ہے کافر ہو یا مسلمان خواہ کس درجہ کا مجرم ہو توبہ کرے اور ناامید نہ بنے۔

هذه الآية دعوة لجميع العصابة من الكفرة وغيرهم الى التوبة والانساب. (ابن کثیر ج 6 ص 100) ہر قسم کا گناہ گار کافر یا غیر کافر سب کو توبہ اور رجوع الی اللہ کی دعوت ہے۔

تعارض: 166

سورة الزمر

آیت 68

وتنفيح في الصور فمضغ من في السموات ومن في الارض الا من شاء الله.

اور صور میں پھونک ماری جاوے گی سو تمام آسمان وزمین والوں کے ہوش اڑ جائیں گے مگر جس کو خدا چاہے۔

جہا لیلین میں صبح کا معنی مات سے کیا ہے یعنی سب مرجاویں گے. استثناء سے معلوم ہوتا ہے کہ بعض نہیں مرے گا حالانکہ دوسری آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ موت بلا استثناء سب کے لئے ارشاد باری ہے کل نفس ذائقة الموت ہر جاندار موت کا مزہ چکھے گا. (الانبیاء آیت 35)

تطبیق: موت کا قانون ہر ذی روح کے لئے ہے موت سب پر واقع ہوگی استثناء کا یہ مطلب نہیں کہ بعض افراد موت سے بچ جائیں گے بلکہ آیت میں فتح اولی کا ذکر ہے کہ اس وقت سب مرجاویں گے بجز جبرئیل میکائیل اسرافیل و ملک الموت اور حاملان عرش کے. اس کے بعد یہ سب مرجائیں گے۔ بغیر اثر فتح کے صرف اللہ کی ذات باقی رہے گی جیسے ارشاد ہے کل شیء هالك الا وجهه سب چیزیں فنا ہونے والی ہیں بجز اس کی ذات کے (عنکبوت)۔

لہذا استثناء ایک خاص وقت کیلئے ہے۔ موت اور فنا کے قانون سے بجز ذات باری تعالیٰ کے کوئی مستثنیٰ نہیں۔

تعارض: 167

سورة المؤمن

آیت 7

ويستغفرون للذين آمنوا. اور ایمان والوں کے لئے استغفار کیا کرتے ہیں اس آیت میں اللہ تعالیٰ فرماتے ہیں کہ حاملین عرش صرف مسلمانوں کے لئے استغفار کرتے ہیں لیکن سورة الشوریٰ کی آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ مؤمنین کی تخصیص نہیں بلکہ تمام اہل زمین کے لئے استغفار کرتے ہیں. ارشاد ہے. ويستغفرون لمن فی

الارض اور اہل زمین کے لئے معافی مانگتے ہیں۔ (آیت ۵)

تطبیق: ابن کثیر فرماتے ہیں يستغفرون للذین آمنوا ای من اهل الارض
من آمنوا اهل زمین سے جو مؤمن ہو صرف اس کے لئے مغفرت مانگتے ہیں۔ (ابن
کثیر ج 6 ص 124)

علامہ زکری فرماتے ہیں يستغفرون لمن فی الارض يدل علی حسنة اهل
الارض وهذه الحسنة فائدة فی کلهم وفي بعضهم فيحوز ان يراد به
هذا وهذا (الكشاف ج 4 ص 209)

من فی الارض کی دلالت جنس اهل الارض پر ہے اور یہ جنسیت کل اور بعض
کو شامل ہے تو یہ جائز ہے کہ اس جنسیت سے بعض مراد لیں اور بعض مراد نہ
لیں گویا من فی الارض سے سب مراد نہیں بلکہ صرف مؤمن مراد ہے۔ یا آیت میں
تخصیص نہیں بلکہ اپنے عموم پر ہے اس کا معنی یہ ہوگا. طلب الحلم والغفران
حلم اور غفران طلب کرتے ہیں فرماتے ہیں والمراد الحلم عنهم وان
لا يعالجهم بالانتقام فيكون عاما ان کے بارے میں صبر سے کام لے اور انتقام
میں جلدی نہ کر ابن الجوزی فرماتے ہیں. فلفظ هذه الآية عام وما هنا خاص
وبدل علی التخصیص ويستغفرون للذین آمنوا (زاد المسیر ج 7 ص 272)

(من فی الارض تو عام ہے لیکن مراد خاص ہے کیونکہ آیت میں ہے کہ مؤمنین کے
لئے مغفرت مانگتے ہیں امام قرطبی نے ایک اور قول نقل کیا ہے کہ حاملین عرش صرف
مؤمنین کے لئے دعا مانگتے ہیں اور من فی الارض کے لئے اور فرشتے مقرر ہیں
جو تمام زمین والوں کے لئے دعا مانگتے ہیں. والله ملائكة اخر يستغفرون لمن

فی الارض (قرطبی ج 16 ص 5)

تعارض: 168 سورة المؤمن

آیت 68

فإذا قضی امر اذنا بقول له کن فیکون. پھر جب وہ کسی کام کا پورا کرنا چاہتا ہے
سو بس اس کی نسبت فرمادیتا ہے کہ ہو جا سو وہ ہو جاتا ہے اس آیت سے معلوم
ہوتا ہے کہ تمام اشیاء کی تخلیق دُعی ہے یکدم شی پیدا ہو جاتی ہے حالانکہ بعض
دیگر آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ اشیاء کی تخلیق تدریجی بھی ہے مثلاً ارشاد ربانی ہے
خلق الارض فی یومین زمین کو دو روز میں پیدا کیا ایک اور ارشاد ہے ففضهن
سبع سموات فی یومین ہو دو روز میں اس کے سات آسمان بنا دیئے۔ (سورة حم
السجدة آیت 12)

تطبیق: حضرت مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں اور اس سے تخلیق تدریجی کی
نفی نہ سمجھ لی جاوے بلکہ مطلب یہ ہے کہ وہ ایسا قادر ہے کہ اگر کسی چیز کو دفعتاً پیدا
کرنا چاہے تو کر سکتا ہے تو تدریجاً تو بدرجہ اولیٰ (بیان القرآن ج 10 ص 46)
ایک اور مقام پر ارشاد فرماتے ہیں اور کون اشیاء میں گوا سباب میں تدریج بھی ہوتی
ہے مگر افاضہ صورتہ نوعیہ کا دُعی ہے یا تدریجیات میں کن تدریجاً حکم ہوتا ہے اور
دفعیات میں کن دفعاً (بیان القرآن ج 9 ص 118)

تعارض: 169 سورة المؤمن

آیت 72

یسحبون فی الحمیم ثم فی النار یسجرون. ان کو گھسیٹتے ہوئے کھولتے پانی میں
بیجانیں گے پھر یہ آگ میں جمو تک دئے جائیں گے آیت کا مفہوم یہ ہے کہ اہل جہنم
کو پہلے میم میں ڈالا جائیگا اس کے بعد جہنم یعنی جہنم میں اس طرح بٹھا ہر معلوم

ہوتا ہے کہ جہنم جہنم سے باہر کوئی جگہ ہے سورۃ صافات کی آیت سے بھی اس کی تائید ہوتی ہے تم ان مرجعہم لالی الحیم اور پھر اخیر ٹھکانا ان کا دوزخ ہی کی طرف ہوگا (آیت 68)

معنی یہ ہے کہ اہل جہنم کو جہنم پلانے کے لئے باہر لایا جائیگا۔ پھر جہنم میں لوٹا دیا جائیگا لیکن بعض آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ جہنم جہنم میں ہے چنانچہ ارشاد باری ہے ہذہ جہنم المتی یکذب بہا المجرمون یظوفون بینہا و بین حمیم ان یہ ہے وہ جہنم جس کو مجرم لوگ جھٹلاتے تھے وہ لوگ دوزخ کے اور گرم کھولتے ہوئے پانی کے درمیان دورہ کرتے ہوں گے (سورۃ الرحمن آیت 44)

ایک اور ارشاد ہے حدوہ فاعتلوہ الی سواہ الحیم ثم صیوا فوق رائدہ من عذاب الحیم اس کو پکڑو پھر گھسیٹتے ہوئے دوزخ کے پتوں تک لے جاؤ پھر اس کے سر کے اوپر تکلیف دینے والا گرم پانی چھوڑو۔ (سورۃ الدخان آیت 49) ایک اور ارشاد ہے وما ہم بحارحین من النار اور ان کو دوزخ سے نکلنا کبھی نصیب نہ ہوگا (سورۃ البقرۃ آیت 167) اسی طرح ایک اور آیت ہے وما ہم عنہا یغائبین اور پھر اس (دوزخ) سے باہر نہ ہوں گے (سورۃ الانفاذ آیت 16)

تطبیق: جہنم کے بہت سے طبقات ہیں جن میں مختلف قسم کے عذاب ہوں گے ایک طبقہ جہنم ہے بوجہ ممتاز اور الگ ہونے کے اس کو جہنم سے خارج بھی کہا جا سکتا ہے اور اس بنا پر کہ جہنم کا ایک طبقہ ہے اس لئے اس کو جہنم ہی کہتے ہیں۔ حافظ ابن کثیر فرماتے ہیں۔ یسحبونہم علی وحوہم تارة الی الحمیم وقارة الی الحیم۔ چہروں کے بل اہل جہنم جہنم کی طرف کھینچا جائے گا اور کبھی جہنم کی طرف (تفسیر ابن کثیر ج 6 ص 156)

علامہ زنجیری حمیم کے بارے میں فرماتے ہیں وقیل ان وادیامن اودیۃ جہنم یجتمع فیہ صدید اهل النار فینطلق بہم فی اغلال فیغمسون فیہ حتی ینسجع اوصالہم حمیم جہنم کی وادیوں میں سے ایک وادی ہے جو اہل نار کے پیپ سے بھری ہوگی اہل النار کو جکڑا کر اس میں غوطہ دیا جائیگا۔ (الکشاف ج 4 ص 451)

حکیم الامت مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں احقر کو آیات میں غور کرنے سے ظنا یہ معلوم ہوتا ہے کہ دوزخ میں انواع انواع عذاب ہوں گے کبھی کبھی کبھی کبھی ان میں سے جہنم اور جہنم بھی ہے پس دونوں کا سلسلہ برابر جاری رہے گا پس ہر نوع باعتبار ایک فرد کے دوسری نوع سے مقدم بھی ہے اور باعتبار دوسرے فرد کے اس سے مؤخر بھی ہے۔

بھی ہے اور دوزخ کا اطلاق کبھی جہنم کے مقابل پر آتا ہے کبھی جہنم سے عام مفہوم پر کیونکہ جہنم کا جہنم ہونا خود اسی نار کا اثر ہے پس اس سے ملا بہت عین ملا بہت بالنا ہے معنی اول کے اعتبار سے جہنم کو خارج از جہنم کہہ سکتے ہیں اور معنی ثانی کے اعتبار سے عدم خروج من النار کا حکم صحیح رہتا ہے اس تقریر پر تمام آیتیں جمع ہو گئیں۔ (بیان القرآن ج 10 ص 48)

تعارض: 170 سورة المؤمن

آیت 74

قالوا اضلوا عننا وھم کہیں گے کہ وہ تو ہم سب سے غائب ہو گئے۔ (آیت 74) اس آیت سے معلوم ہوا کہ شرکاء، مشرکین سے آخرت میں غائب ہو جائیں گے لیکن بعض آیات سے ثابت ہوتا ہے کہ شرکاء، ان کے ساتھ ہوں گے، ارشاد ہے انکم

و ما تعبدون من دون الله حصب جهنم . بلاشبہ تم اور جن کو تم خدا کو پھوڑ کر پوج رہے ہو سب جھنم میں جھونکے جاو گے . (سورۃ الانبیاء آیت 98) اس آیت سے معلوم ہوا کہ شرکاء ان کے ساتھ جھنم میں ہوں گے .

تطبیق : قاضی بیضاوی فرماتے ہیں و ذلك قبل ان ينقرن بهم الهتهم بشرکین کا قول ضلوا معنا اس وقت ہوگا جب یہ شرکاء کیساتھ ابھی یکجا نہ کئے گئے ہوں اور ضاعوا معنا فلم نجد منهم ما كنا نتوقع منهم یا غائب ہونے کا یہ مطلب ہے کہ شرکاء ہماری توقع پر پورے نہ اترے (بیضاوی ج 2 ص 262)

حافظ ابن کثیر فرماتے ہیں فالله اضلوا معنا ای ذهبوا فلم ينفعوا شرکاء کھٹک گئے اب ان کا کوئی فائدہ نہیں . (ابن کثیر ج 6 ص 155)

علامہ الوسی فرماتے ہیں وهذا لا ينافي ما يشعربان الهتهم مقربون بهم في النار لان النار طبقات ولهم فيها مواقف فيحوز غيبتهم عنهم في بعضها واقتربتهم بهم في بعض آخر . جن آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ شرکاء اور مشرکین آگ میں یکجا ہوں گے ضلوا معنا ان کے منافی نہیں کیونکہ آگ کے طبقات ہیں جس میں ان کے مختلف مواقع ہیں تو ممکن ہے بعض مواقع میں شرکاء اور مشرکین یکجا اور بعض میں ایک دوسرے سے جدا ہوں .

(۲) وَيَجُوزُ اَنْ يَكُونَ ضَالًّا لِهَمِّ اسْتِعَارَةَ لِعَدَمِ النِّفْعِ فَحَضْرَتُهُمْ كَالْعَدَمِ فَذَكَرَ عِنْدَ حَقِيقَةِ فِي مَوْضِعٍ وَعَلَى مَجَازِهِ فِي آخِرِ شَرِكًا كَمَا مَشْرُكِينَ سَ غَائِبٌ هُوَ اَنْ كَيْ بَ كَارِي سَ اسْتِعَارَهُ هُوَ شَرِكًا كَمَا مَوْجُودٌ هُوَ نَاوِيَا كَالْعَدَمِ هُوَ اَنْ كَيْ بَ هُوَ فِي مِثْلِ كَامِ حَقِيقَتِ پُرْمِنِي هُوَ اَوْ غَائِبٌ هُوَ فِي مِثْلِ كَامِ بَازِ پُرْمِنِي هُوَ . (روح المعاني 242 ص 86)

وقالوا قلوا بئنا فی اکنة مما تدعوننا الیه . اور وہ لوگ کہتے ہیں کہ جس بات کی طرف آپ ہم کو بلا تے ہیں ہمارے دل اس سے پردوں میں ہیں کفار کے اس قول کے نقل سے مقصود ان کی مذمت ہے جس سے ان کا باطل اور کاذب ہونا معلوم ہوتا ہے حالانکہ بعض آیات میں خود ان چیزوں کا اثبات ہے جیسے ارشاد باری ہے و جعلنا علی قلوبہم اکنة و فی اذانہم وقرا . اور ہم نے ان کے دلوں پر تباہ ڈال رکھے ہیں اس سے کہ وہ اس کو سمجھیں اور ان کے کانوں میں ڈالتے ہیں . (سورۃ الانعام آیت 25)

تطبیق : اللہ تعالیٰ کا یہ فرمانا کہ ہم نے ان کے دلوں پر حجاب ڈال رکھا ہے . طرح سورۃ بقرہ میں فرمایا ختم اللہ علی قلوبہم ان کے دلوں پر مہر لگانے کی نسبت ان ذات کی طرف کی اس لئے کہ ہر چیز کے خالق اللہ تعالیٰ ہیں ابی السعد فرماتے ہیں و اسناد احداث تلك الحالة فی قلوبہم الی اللہ تعالیٰ لاستناد جميع الحوادث عندنا من حيث الخلق الیه سبحانه و تعالیٰ .

اور ان کے قلوب کی اس حالت کی نسبت اللہ تعالیٰ کی طرف اسلئے ہوئی ہے کہ ہمارے نزدیک تمام حوادث من حیث الخلق اللہ کی طرف منسوب ہیں . (تفسیر ابی السعد ج 1 ص 30)

مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں مقصود کفار کا ان اقوال سے فقدان مطلق استمداد کا تھا اور یہ باطل ہے اور مقصود حق تعالیٰ کا فقدان استمداد قریب من الفعل کا ہے اور یہ حق ہے دوسرے غرض ان کی اس کلام سے اختیار تھا اپنے عزم اصرار علی الکفر سے اور یہ مذہم اور شنیع ہے اور راسی اعتبار سے ہے کیونکہ کلام کار دکر ناگاہی

مدلول کے اعتبار سے نہیں ہوتا بلکہ غرض کے اعتبار سے ہوتا ہے۔ (بیان القرآن ج 10 ص 51)

علامہ آلوسی فرماتے ہیں کہ کفار کا یہ کہنا کہ ہمارے دل پردوں میں ہیں اس سے غرض حضور کی دعوت کو ٹھکراتے ہوئے آپ کو ناامید کرنا تھا فرماتے ہیں۔ قصدواہیہ اقسام النبی ﷺ عن الاجابة (روح المعانی ج 1 ص 391)۔

کفار کے اس غرض فاسد کے اعتبار سے اللہ تعالیٰ نے ان کے قول کو بطور مذمت ذکر فرمایا۔ امام رازی فرماتے ہیں فالسوانا کما کذلک لم یحز تکلیفنا وتوجیہ الامر والنہی علینا کفار نے یہ قول اس بنا پر کہا کہ ہم ایسی حالت میں ہیں کہ ہماری طرف امر اور نہی متوجہ کرنا اور ہمیں مکلف ٹھہرانا صحیح نہیں۔ (تفسیر کبیر ج 27 ص 98) بالکل اپنے استعداد کی نفی کر دی امام نیشاپوری فرماتے ہیں۔ ووجه الجمع بینہ و بین قوله وجعلنا علی قلوبہم اکنۃ ان یفقیہوہ و فی اذانہم و قرأوہ وان الذم انما یتوجه علی اعتقادہم انہم اذا كانوا کذلک لم یحز تکلیفہم ولا حظاہم بالامر والنہی ان آیات کے مابین توفیق اس طرح ہے کہ کفار کی مذمت ان کے اعتقاد پر ہوئی ان کا یہ خیال تھا کہ ہماری یہ حالت اس قابل نہیں کہ مکلف بن جائیں اور انہم قالوا ذلک علی سبیل الاستہزاء یا اللہ نے ان کی مذمت اس لئے کی کہ کفار نے یہ بطور استہزاء کہا تھا۔ (غرائب القرآن ج 24 ص 62 حاشیہ طبری)

تعارض: 172 سورة حم السجدة

آیت 47

قالوا الذلک امامنا من شہید وہ کہیں گے ہم تو آپ سے یہی عرض کرتے ہیں کہ ہم

میں کوئی مدعی نہیں اس آیت سے معلوم ہوا کہ مشرکین عقیدہ شرک سے بیزار ہو جائیں گے۔ شرکاء کا انکار کر دیں گے لیکن ایک آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ بیزار نہ ہوں گے بلکہ ان کو پکاریں گے۔ ارشاد ہے وقیل ادعوا شرکاءکم فدعواہم اور کہا جائے گا کہ اپنے ان شرکاء کو بلاؤ چنانچہ وہ ان کو پکاریں گے۔ (سورة القصص آیت 64) تظلیق: شرک اور شرکاء کے انکار اور دوبارہ ان کو پکارنے میں کوئی منافاة نہیں کیونکہ یہ پکارنا بدعوا ہی اور حیرانی کی وجہ سے ہوگا۔

علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔ فدعواہم لغرط الحیرة والافلیس ہناک طلب حقیقة للدعاء۔ انتہائی حیرانی کی وجہ سے پکاریں گے کیونکہ وہاں ان کے پکار کی کوئی حقیقت نہیں۔

۲: فدعواہم لضرورة الامتثال علی ان ہناک طلبوا والغرض من طلب ذلک منهم تفضیحہم علی رؤس الاشہاد۔ ان کا یہ پکارنا امتثال امر کی وجہ سے ہوگا۔ کیونکہ جب ان سے کہا جائے کہ شرکاء کو پکارو تو مشرکین پکاریں گے اور مقصد اس سے ان کا تمام مخلوق کے سامنے رسوا کرنا ہوگا۔ (روح المعانی ج 20 ص 101)

دفع تعارض کے لئے آیت کی یہ توجیہ بھی ہے کہ جملہ امامنا من شہید مشرکین کا قول نہیں بلکہ ان کے معبودین کا قول ہے۔

امام فرما فرماتے ہیں۔ ہذا من قول الالہة النبی کانسوا یعبدونہا فی الدنیا قالوا اعلمناک امامنا من شہید بما قالوا جن معبودان باطلہ کی دنیا میں عبادت کی تھی وہ عرض کریں گے کہ ہم مشرکین کے قول کا اقرار نہیں کرتے۔ (معانی القرآن ج 3 ص 20)

فدعواہم مشرکین کا قول ہو اور امامنا من شہید شرکاء کا لہذا دونوں میں کوئی

تعارض: 173 سورة حم السجدة

آیت 49

لايسمع الانسان الامن دعاء الخبير وان مسه الشر فيؤس فنوط. آدمی ترقی کی خواہش سے اس کا جی نہیں بھرتا اور اگر اس کو کوئی تکلیف پہنچتی ہے تو ناامید اور ہراساں ہو جاتا ہے اس آیت میں اس بات کا ذکر ہے کہ جب انسان کو شر پہنچتا ہے تو ناامید ہو جاتا ہے لیکن ایک آیت میں ہے کہ ایسے وقت میں لمبی چوڑی دعائیں مانگتا ہے ارشاد ہے واذمسه الشر فذو دعاء عريض. اور جب اس کو تکلیف پہنچتی ہے تو خوب لمبی چوڑی دعائیں کرتا ہے. (سورة حم السجدة 51)

پہلی آیت سے معلوم ہوا کہ شر کے وقت ناامید ہو جاتا ہے اور دوسری آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ شر کے وقت پر امید ہو جاتا ہے۔

تطبيق: علامه آلوسی فرماتے ہیں الحال الثاني شان بعض غير البعض الذي حكي عند الياس والقنوط. پہلی آیت میں ایک انسان کی حالت کا ذکر ہے اور دوسری آیت میں دوسرے انسان کی حالت کا ذکر ہے۔ اوشان الكل فسي الكل فسي بعض الاوقات یا انسان بعض لوقات پر امید ہو کر اللہ سے مانگتا ہے اور کسی وقت ناامید ہو جاتا ہے یہ اختلاف اوقات پر محمول ہے. (روح المعانی ج 25 ص 5)

علامہ شبیر احمد عثمانی فرماتے ہیں اور تماشہ یہ کہ بعض اوقات اسباب پر نظر کر کے دل اندر سے مایوس ہوتا ہے اس حالت میں بھی بدحواس اور پریشان ہو کر دعا کے ہاتھ بے اختیار خدا کی طرف اٹھ جاتے ہیں قلب میں ناامید بھی ہے اور زبان پر یا اللہ

بھی. (تفسیر عثمانی 625) ناامیدی دل میں اور زبان پر دعا ہوتی دونوں میں کوئی تعارض نہیں.

مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں زبان سے دعا کرتا ہے مگر دل میں مایوسی ہوتی ہے یا یوں کہا جاوے کہ اول اول دعا خوب کرتا ہے پھر بعد چندے مایوس ہو کر چھوڑ دیتا ہے. (بیان القرآن ج 5 ص 5)

تعارض: 174 سورة الشورى

آیت 45

وتراهم يعرضون عليها خشعين من الدال ينظرون من طرف خفي. اور آپ ان کو اس حالت میں دیکھیں گے کہ وہ دوزخ کے روبرو پیش کئے جائیں گے مارے ذلت کے جھکے ہوئے ہوں گے اور ست نگاہ سے دیکھیں گے. سورة ق میں ہے. فكشفنا عنك غطاءك فبصرك اليوم حديد. سواب ہم نے تجھ پر سے تیرا پردہ ہٹا دیا سو آج تیری نگاہ بڑی تیز ہے. (آیت 22) ست نگاہ اور تیز نگاہ میں تعارض ہے.

تطبيق: طرف خفی صبر و دل کی آنکھ ہے امام قرطبی فرماتے ہیں. وانما ينظرون بقلوبهم لانهم يحشرون عميا وعين القلب طرف خفي. یہ دل کی آنکھوں سے دیکھیں گے کیونکہ ان کا حشر اس حال میں ہوگا کہ اندھے ہوں گے اور دل کی آنکھ طرف خفی ہے. (قرطبی ج 16 ص 45)

امام قرطبی فبصرک اليوم حديد کی تفسیر میں فرماتے ہیں. وقيل المراد بصر العين وهو الظاهر. مراد آنکھ کی نظر ہے اور یہ بالکل ظاہر ہے (قرطبی ج 16 ص 15)

ابن الجوزی فرماتے ہیں. احدها البصر المعروف والثاني العلم

(زاد المسیر ج 8 ص 22) تیز نگاہ سے مراد علم ہے یعنی دنیا میں اس کے ہدایت کے راستے بند تھے۔ عنم اللہ علی قلوبہم۔ لیکن آج پردے ختم ہو جائیں گے اور حق کو بالکل ظاہر باہر دیکھ کر جان لے گا کہ واقعی دنیا میں جو کچھ انبیاء کے واسطے سے آیا تھا وہ بالکل سچ اور حق تھا تیز نگاہ سے مراد علم لیں تو تیز نگاہ اور ست نگاہ میں کوئی منافاة نہیں۔

تعارض: 175 سورة الشوری

آیت 45

یَنْظُرُونَ مِنْ طَرَفٍ خَفِیٍّ سَتِ نَظَاهُ سَ دیکھتے ہوں گے اس آیت سے معلوم ہوا کہ کفار کی آخرت میں آنکھیں ہوں گی اس سے دیکھیں گے لیکن دوسری آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ اندھے ہوں گے ارشاد باری ہے وَنَحْشُرُهُ یَوْمَ الْقِیَمَةِ اَعْمٰی ا اور قیامت کے روز ہم ان کو اندھا کر کے اٹھائیں گے۔ (سورة طہ)

تطبیق: ابن جریر طبری فرماتے ہیں۔ لَانِهِمْ یَنْظُرُونَ اِلَى النَّارِ بِقُلُوبِهِمْ

لَانِهِمْ یَحْشُرُونَ عَمِیًّا اِن کادیکھنا دل کی آنکھوں سے ہوگا کیونکہ یہ لوگ اندھے اٹھائے جائیں گے اس لحاظ سے اندھا ہونے اور دیکھنے میں کوئی منافاة نہیں۔ دوسری تفسیر بیان کرتے ہیں کہ ان پر اس روز ایسی ذلت سوار ہوگی کہ ذلت سے دیکھتے دیکھتے ان کی نظر چلی جائے گی۔ حتی کسادت اعینہم ان تغور فنذهب

(تفسیر طبری ج 13 ص 42)

اس تفسیر کے مطابق ابتدا میں ان کی نظر ہوگی لیکن انتہاء اندھے ہو جائیں گے۔

امام فراء فرماتے ہیں وَفَالِ بَعْضُهُمْ نَظَرُوا اِلَى النَّارِ بِقُلُوبِهِمْ وَلَمْ یُرَوْهَا بِاَعْيُنِهِمْ لَانِهِمْ یَحْشُرُونَ عَمِیًّا۔ (معانی القرآن ج 3 ص 26)

دل کی آنکھوں سے دیکھنے کی تفسیر کو علامہ زنجیری اور علامہ آلوسی نے تعسف اور تکلف فرمایا ہے امام رازی اس تعارض کو دور کرتے ہوئے فرماتے ہیں۔ قَلْبًا لَعَلَّهُمْ یَكُونُونَ فِی الْاِبْتِدَاءِ هَكَذَا نَم یَجْعَلُونَ عَمِیًّا وَلَعَلَّ هَذَا فِی قَوْمٍ وَذَلِكَ فِی قَوْمٍ اٰخَرِیْنَ۔ شاید ابتدا میں نظر لگتی ہو پھر اندھے ہو جائیں۔ یاد رکھنا ایک قوم کے بارے میں ہو اور اندھا ہونا کسی دوسری قوم کے بارے میں ہو (تفسیر کبیر ج 25 ص 182)

مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں اور دوسری آیت میں جو انہی ہونے کی خبر دی ہے وہ حشر کے وقت ہے اور یہ (دیکھنا) اس کے بعد چنانچہ وہاں حشرہ مصرح ہے۔ (بیان القرآن ج 10 ص 77)

لفظ حشرہ سے معلوم ہوتا ہے کہ حشر کے وقت اندھے ہوں گے۔

تعارض: 176 سورة الزحرف

آیت 31

وقالوا لولا نزل هذا القرآن علی رجل من القریبتین عظیم۔ اور کہنے لگے یہ قرآن ان دونوں بستیوں میں سے کسی بڑے آدمی پر کیوں نہیں نازل کیا گیا۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ کفار کے نزدیک نبوت بشریت کے منافی نہیں کیونکہ قرآن کا نزول کسی بڑے آدمی پر ہو تو اس کو تسلیم کرتے ہیں حالانکہ سورة التغابن کی آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ کفار کی عقیدہ تھا کہ کیا کہیں بشر بھی پیغمبر اور ہادی ہو سکتا ہے ارشاد باری ہے۔ ذلک بانہ کانت تاتہم رسلہم بالبینت فقالوا ابشر یہدوننا۔

یہ اس سبب سے ہے کہ ان لوگوں کے پاس پیغمبر دلائل واضح لیکر آئے تو انہوں نے

کہا کہ آدمی ہم کو ہدایت کریں گے۔

تطبیق: علامہ زنجیری فرماتے ہیں۔ مازالوا ینکرون ان ینعت اللہ بشراً رسولاً فلما علموا ابتکیر اللہ الحجج ان الرسل لم یكونوا الارجال من اهل القرین جاءوا بالانکار من وجه آخر وهو تحکمهم ان یكون احدھذین کفار کہ کا یہ عقیدہ تھا کہ بشر رسول نہیں ہو سکتا لیکن جب دلائل سے اللہ نے ثابت کر دیا کہ رسول اصل قرنی کے رجال ہی ہو سکتے ہیں تو کفار نے انکار کا ایک اور طریقہ اختیار کر کے حکماً کہا کہ رسالت کسی بڑے آدمی کو ملتی چاہیے۔ (تفسیر کشاف ج 4 ص 248)

اس تفسیر کے مطابق کفار نبوت اور بشریت کے مابین تفریق کے قائل ہیں۔ کیونکہ ان کا یہ قول اقرار انہیں بلکہ حکماً ہے۔ مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں اور ان کا لولا انزل الخ پر ان اس کہنے سے شبہ نہ کیا جائے کہ بشر اور نبوت میں منافاة ہے اصل یہ ہے کہ ایک ان کا عقیدہ تھا اور ایک علی سبیل التنزل والتسلیم۔ (بیان القرآن ج 10 ص 87)

سورة الدخان

تعارض: 177

آیت 49

ذق انک انت العزیز الکریم۔ لے چکھ تو بڑا معزز و مکرم ہے۔ آیت سے ظاہر یہ مفہوم نکلتا ہے کہ دوزخی عزت و اکرام والا ہوتا ہے۔ حالانکہ وہ تو خوار اور ذلیل ہوں گے ذلت اور توہین کی انتہاء ہوگی جیسے ایک ارشاد باری ہے۔ سیدخلون جہنم داخرین۔

تطبیق: دراصل یہ آیت ابو جہل کے بارے میں ہے اس نے حضورؐ سے کہا تھا

ما بین جلیہا اعز ولا اکرم منی مجھ سے زیادہ عزت اور اکرام والا کوئی نہیں۔

زنجیری فرماتے ہیں علی سبیل الہزؤ والتہکم بمن کان یتعزز و یتکرم علی قومہ۔ (الکشاف ج 4 ص 282)

یہ بطور استہزاء اس سے کہا جائے گا جو اپنی قوم میں اپنے تئیں معزز و مکرم جانتا تھا۔ حافظ ابن کثیر ابن عباس کا قول نقل کرتے ہیں ای لست بعزیز ولا مکرم۔ (ابن کثیر ج 6 ص 260) تو معزز و مکرم نہیں۔

امام قرطبی فرماتے ہیں ای ما قالہ انک انت الذلیل المہان تو ذلیل و خوار ہے (قرطبی ج 16 ص 151)۔

قاضی ثناء اللہ پانی پتی لکھتے ہیں فی زعمک قال البغوی (مظہری ج 8 ص 376) بغوی کہتے ہیں کہ اس کے گمان کے مطابق اس کو معزز و مکرم کیا جائے گا۔ ابن الجوزی اس کے تین معنی بیان کرتے ہیں

۱۔ انہ قبل ذلک استہزاء قالہ سعید بن جبیر ومقاتل۔ مقاتل اور سعید بن جبیر کہتے ہیں یہ اس کو استہزاء کہا جائے گا۔

۲۔ انت العزیز الکریم عند نفسک قالہ قتادہ کہتے ہیں کے معنی یہ ہے کہ تو اپنے تئیں معزز و مکرم ہے۔

۳۔ انت العزیز فی قومک الکریم علی اہلک حکاہ الماوردی ماوردی بیان کرتے ہیں کہ تو اپنی قوم میں معزز ہے اور اپنے اہل کے نزدیک مکرم۔ (زاد المسیر ج 7 ص 350) اللہ تعالیٰ اور شریعت کے نزدیک دوزخی ہرگز مکرم و معزز نہیں۔

وترى كل امة جاثية اور آپ ہر فرقہ کو دیکھیں گے کہ زانو کے بل گر پڑیں گے۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ نیک لوگوں کو بھی قیامت کی ہولناکیوں کا سامنا کرنا پڑے گا۔ حالانکہ بعض آیات میں اس کی نفی ہے ارشاد ہے وہم من فزع يومئذ آمنون۔ اور وہ لوگ بڑی گھبراہٹ سے اس روز امن میں رہیں گے۔ (سورة النمل آیت 89)

تطبیق: علامہ زنجیری فرماتے ہیں وعن ابن عباس رضی اللہ عنہما جاثية مجتمعہ۔

ابن عباسؓ فرماتے ہیں تمام فرقے مجتمع ہوں گے۔ (الکشاف ج 4 ص 292) فرقوں کے مجتمع ہونے میں ضروری نہیں کہ نیک لوگوں کو قیامت کی ہولناکی کا سامنا ہو امام قرطبی فرماتے ہیں قبل موخا ص بالکفار زانو کے بل گرنا کفار کے ساتھ خاص ہے۔ (قرطبی ج 16 ص 174) مسلمان اس سے محفوظ رہیں گے امام فراء فرماتے ہیں کل اهل دين جاثية مجتمعہ للحساب ہر ملت والے حساب کے لئے مجتمع ہوں گے۔ (معانی القرآن ج 3 ص 48)۔

امام نیشاپوری فرماتے ہیں۔ والحقوللکفار خاصة زانو کے بل گرنا صرف کفار کے ساتھ خاص ہے۔ وقيل عام ياسب كيلئے ہوگا مؤمن اور کافر (غرائب القرآن ج 25 ص 96 حاشیہ طبری)۔

ابو حیان اندلسی فرماتے ہیں۔ والظاهر عموم کل امة من مؤمن وکافر آیت کے ظاہر سے عموم معلوم ہوتا ہے (البحر المحیط ج 8 ص 50)۔

مولانا اشرف علی تھانویؒ فرماتے ہیں۔ لفظ کل اگر عام ہو تو ظاہر ہول کا ثبوت مقبولین

کے لئے بھی لازم آتا ہے لیکن ممکن ہے کہ بہت تھوڑی دیر کے لئے ہونے سے وہ معتد بہ نہ ہو اس لئے نفی فزع کی نصوص سے اس کا تعارض نہ ہوگا۔ (بیان القرآن ج 10 ص 114)

قلتم ماندرى ما الساعة ان نظن الاظناً تم کہا کرتے تھے کہ ہم نہیں جانتے کہ قیامت کیا چیز ہے محض ایک خیال سا تو ہم کو بھی ہوتا ہے۔

ان نظن سے معلوم ہوتا ہے کہ دوبارہ جی اٹھنے میں ان کا شک تھا جبکہ اس قبل آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ بعث بعد الموت کو یقیناً نہیں مانتے ارشاد باری ہے۔ وقالوا ما هى الا حياتنا الدنيا نموت ونحيا۔ اور یہ لوگ یوں کہتے ہیں کہ بجز ہماری اس دنیوی حیات کے اور کوئی حیات نہیں ہے ہم مرتے ہیں اور جیتے ہیں۔ (سورة الجاثية آیت 24)

تطبیق: الشيخ احمد الصاوی فرماتے ہیں۔ وبممكن الجواب بان الكفار لعلمهم افترقوا فرقتين فرقة حازمة بنفى البعث وفرقة متحيرة فيه۔ جواب ممکن ہے کہ کفار کے دو گروہ ہوں ایک فرقہ یقیناً نفی بعث کا قائل ہے اور دوسرا بعث بعد الموت میں شک کرنے والا ہو۔ (الصاوی ج 4 ص 73)۔

علامہ آلوسی نے بھی ایک یہی جواب دیا ہے۔ کہ دونوں اقوال بعث بعد الموت کی نفی اور اس کا ظن اس بارے میں دو فرقے ہیں ہر ایک قول کا الگ الگ فرقہ قائل ہے۔ دوسرا جواب دیتے ہیں کہ یہ بھی احتمال ہے کہ دونوں اقوال کے قائل ایک ہی فرقہ

کے لوگ ہوں۔ الا ان کل قول فی وقت و حال۔ دونوں اقوال کا وقت اور حال کے مطابق ہے کبھی جزاً بعث بعد الموت کی بات کرتے ہیں کبھی تردد کا قول کرتے ہیں۔

تیسرا جواب دیتے ہیں۔ وقیل الحزم هناک بنفی وقوعها والظن من غیر ايقان مہناب مجرد اسکانہافہم متردون بامکانہا الذاتی جاز مون بعدم وقوعہا بالفعل تو قیامت کے عدم وقوع کا یقین ہے لیکن امکان ذاتی کے طور پر وقوع قیامت کے بارے میں تردد ہے (روح المعانی ج 13 ص 242)۔ یعنی یہ یقین تھا کہ بالفعل تو قیامت واقع نہیں ہوگی لیکن بالذات وقوع ممکن بھی نہیں اس کے امکان ذاتی میں تردد تھا۔

سورة الاحقاف

تعارض: 180

آیت: 9

وما ادری ما یفعل بی ولا یحکم۔ اور میں نہیں جانتا کہ میرے ساتھ کیا کیا جائے گا اور نہ تمہارے ساتھ۔ اس آیت سے یہ مفہوم نکلتا ہے کہ حضور کو اپنا انجام اور حسن خاتمہ کا پتہ نہیں۔ حالانکہ حضور کو دوسری آیت میں حسن خاتمہ کا بتا دیا۔ ارشاد باری ہے۔ لیغفر لک اللہ ما تقدم من ذنبک وما تاخر۔ تاکہ اللہ تعالیٰ آپ کی اگلی کچھلی خطائیں معاف فرمائے۔ (سورة الفتح آیت 2)۔

تطبیق: اس آیت میں حضور نے اپنے علم غیب کی نفی کی ہے۔ جس کی جھجھی وحی ہوئی ہے وہ تو بتا دیں لیکن جس کی وحی نہیں ہوئی اس کا مجھے علم نہیں حضور ﷺ کو اپنا اور مومنین کا انجام معلوم تھا اس لئے مولانا تھانوی مادری کی تفسیر میں فرماتے ہیں مجھ کو مغیبات میں سے بجز معلومات بطریق الوحی کے اور کسی بات کی خبر نہیں۔ (بیان

القرآن ج 11 ص 3

علامہ زکریٰ فرماتے ہیں لانه لا علم لی بالغیب۔ مادری اس لئے کہا کہ مجھے غیب کا علم نہیں جیسے کہ موسیٰ علیہ السلام سے فرعون نے سوال کیا۔ قال فما بال القرون الاولى فرعون نے کہا کہ اچھا تو پہلے لوگوں کا کیا حال ہوا کے جواب میں فرمایا قال علما عند ربی فی کتاب موسیٰ نے فرمایا کہ ان لوگوں کا علم میرے پروردگار کے پاس دفتر میں ہے۔ (سورة طہ آیت 51 ص 52)۔

قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں جب مادری ما یفعل نازل ہوئی تو کفار خوش ہوئے کہ ہم میں اور رسول میں اب کچھ فرق نہ رہا اللہ تعالیٰ نے آیت لیغفر لک اللہ ما تقدم من ذنبک وما تاخر نازل کی تو صحابہ کرام نے کہا صبیحا لک یا نبی قد علمنا ما یفعل بک تجھے مبارک ہوا ہے نبی ﷺ ہم نے جان لیا کہ آپ کا انجام کیا ہے۔ (مظہری ج 8 ص 395)

امام قرطبی فرماتے ہیں لیغفر لک اللہ کے نزول کے ساتھ مادری والی آیت منسوخ ہوگئی لیکن پھر فرماتے ہیں نسخ کا قول صحیح نہیں ہے اس وجہ سے کہ یہ خبر ہے اور خبر منسوخ نہیں ہوتی۔

دوسری وجہ یہ ہے کہ اس سورۃ میں تمام تر خطاب مشرکین سے ہے حضور ﷺ کو کفار کا اور اپنا انجام آخرت کے بارے میں معلوم تھا۔ بلکہ وہ تو ہمیشہ اس کی تبلیغ کیا کرتے تھے۔ پھر کیسے فرما سکتے ہیں کہ تمہارا اور اپنا انجام معلوم نہیں۔ اس لئے حسن کے قول کو واضح کہہ کر نقل کیا ہے۔ وما ادری ما یفعل بی ولا یحکم فی الدنیا مجھے اپنے بارے میں اور کفار کے بارے میں دنیا کے اندر معلوم نہیں کہ کس قسم کے حالات پیش آئیں گے۔ بیماری، رحمت، عذابی یا فقر وغیرہ۔ امام قرطبی نے ایک اور معنی بھی نقل کیا ہے۔

وقیل المعنی لادری مایفرض علی وعلیکم من الفرائض . مجھے معلوم نہیں کہ آئندہ مجھے اور آپ کو کیا فرائض سونے جائیں گے۔ (قرطبی ج 16 ص 186)

حافظ ابن کثیر نے شہاک کا قول نقل کیا ہے۔ ماادری بماذا مروی بماذا انھی بعد هذا۔ ابن کثیر ج 6 ص 277) مجھے معلوم نہیں کہ اس کے بعد کیا کیا امر اور نبی ہوگی۔

تعارض: 181 سورة محمد

آیت 36

ولایسئلکم اموالکم . اور وہ تم سے تمہارا مال طلب نہیں کرتا۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ کسی سے کسی کا مال طلب نہیں کیا جاتا ہے حالانکہ بعض آیات میں صراحتاً مال طلب کیا گیا ہے خاص کردہ آیات جن میں زکوٰۃ کا ذکر ہے ارشاد ہے خذ من اموالہم صدقاتہ آپ ان کے مالوں میں سے صدقہ لے لیجئے۔ ایک اور ارشاد ہے من الذی یقرض اللہ قرضاً حسناً کون یخص بہ جو اللہ کو قرض دے اچھے طور پر قرض دینا۔ (سورۃ البقرۃ آیت 245)

تطبیق: ای ولایسئلکم جمیعاً انما یقتصر منکم علی ربع العشر . تمام اموال طلب نہیں کرتا صرف چالیسویں حصے پر اکتفا کرتا ہے۔ (الکشاف ج 4 ص 330)۔

نبی سارا مال نہیں لیتا بلکہ صرف ڈھائی فیصد لیتا ہے علامہ آلوسی نے کئی توجیحات بیان کی ہیں۔

۱. والمعنی ان تؤمنوا لایسئلکم جمیع اموالکم کما یاخذ من الکافر جمیع ماله . ایمان لے آؤ تو تم سے کافر کی طرف سارا مال نہ لیا جائیگا۔ جنگ میں کافر کا سارا مال مال غنیمت بن جاتا ہے۔

۲. لایسئلکم ماہولکم حقیقۃ وانما یسئلکم ماله عزوجل فهو مالک لہا . تم سے جو مال لیا جاتا ہے وہ حقیقتہً اللہ تعالیٰ کا ہے معنی یہ ہوا کہ تم سے جو لیتا ہے وہ تمہارا مال نہیں وہ اس کا دیا ہوا ہے گویا وہ اپنا مال لے رہا ہے اس لئے فرمایا کہ تم سے نہیں مانگتا۔

۳. ولایسئلکم اموالکم لحاجتہ سبحانہ الیہا بل لیرجع انفاقکم . اللہ تعالیٰ تم سے مال نہیں لیتا بلکہ دوبارہ تم پر خرچ کرنے کے لئے لیتا ہے۔ کیونکہ اللہ مال کا محتاج نہیں۔

۴. لایسئلکم رسول اللہ ﷺ شیء من اموالکم احراً علی تبلیغ الرسالۃ . رسول ﷺ تم سے تبلیغ کی اجرت نہیں مانگتا کہ تمہارے اموال تبلیغ کی اجرت میں تم سے لے لے (روح المعانی ج 26 ص 81)

تعارض: 182 سورة الحجرات

آیت 13

یا ایہا الناس انما خلقنکم من ذکر وانثی . اے آدمیوں ہم نے تم کو بنایا ایک مرد اور ایک عورت سے اس آیت میں انسان کی تخلیق کی نسبت ایک مرد اور ایک عورت کی طرف ہوئی ہے ایک اور جگہ ارشاد ہے فانما خلقنکم من تراب . تو ہم نے تم کو بنایا مٹی سے (سورۃ الحج آیت 5)

ایک مقام پر فرمایا خلق من ماء دافق بنا ہے ایک اچھلتے ہوئے پانی سے (سورۃ الطارق آیت 6)۔

ایک اور ارشاد ہے هو الذی خلقکم من نفس واحدۃ وثقی نے جس نے تم کو پیدا کیا ایک جان سے (سورۃ الاعراف آیت 189) انسان کی تخلیق کی نسبت مرد

فذکر بالقرآن من یحاف و عید۔ سو آپ قرآن کے ذریعے سے ایسے شخص کو نصیحت کرتے رہیے جو میری وعید سے ڈرتا ہے۔ اس آیت سے یہ مفہوم نکلتا ہے کہ جو وعید سے ڈرتا ہے اس کو نصیحت کیجئے جو نہیں ڈرتا اس کو نصیحت نہ کیجئے۔ لیکن تذکیر کے بارے میں جو اور آیات ہیں ان میں مطلقاً نصیحت کا حکم ہے خواہ کوئی وعید سے ڈرتا ہے یا نہیں ارشاد باری ہے فذکر انما انت مذکر سو آپ نصیحت کر دیا کیجئے آپ تو بس صرف نصیحت کرنے والے ہیں۔ (سورة الغاشیة آیت 21)

تطبیق: تذکیر اور نصیحت کی دو قسمیں ہیں عام اور خاص۔ عام وہ تذکیر ہے کہ جس سے کسی کو نفع ملے یا نہ ملے لیکن آپ کا کام ہے کہ برابر نصیحت کرتے رہیں جیسے ارشاد ہے ان علیک الا البلاغ۔ آپ کے ذمہ تو صرف پہنچانا ہے۔ (سورة الشوریٰ آیت 48)

اسی طرح فرمایا مسانت علیہم بحبار آپ ان پر جبر کرنے والے نہیں۔ دوسری تذکیر اور نصیحت خاص اور فائدہ مند ہے جس سے نفع ہو تو نفع ان لوگوں کو ملتا ہے جو اللہ کی وعید سے اور اس سے ڈرتے ہیں جیسے ارشاد ہے۔ انما انت منذر من یحشاہا مؤمن بھی آپ کی تذکیر سے فائدہ حاصل کرتا ہے۔ ارشاد باری ہے و ذکر فان الذکر یرئی تنفع المؤمنین۔ اور سمجھاتے رہیے کیونکہ سمجھانا ایمان والوں کو نفع دے گا۔ (سورة الذاریات آیت 55)۔

امام قرطبی آیت کی تفسیر میں لکھتے ہیں و حص المؤمنین لانہم المنتفعون بہا۔ (قرطبی ج 17 ص 55) علامہ زبخری فرماتے ہیں من یحاف و عید کقولہ انما انت منذر من یحشاہا لانہ لا ینفع الا فیہ دون المصر علی

عورت کی طرف، مٹی کی طرف، مٹی کی طرف اور ایک نفس کی طرف کرنے میں بظاہر بڑا تضاد ہے یہ سب نسبتیں ایک وقت میں کیسے صحیح ہو سکتی ہیں۔

تطبیق: ہر انسان کی تخلیق کی نسبت نفس واحدہ، مٹی، مٹی اور ماں باپ کی طرف صحیح ہے ان میں سے ہر ایک انسان کے لئے اصل ہے اور اپنے اصل کی طرف نسبت صحیح ہوتی ہے۔ فرق صرف یہ ہے کہ بعض اصل بعید ہے اور بعض اصل قریب انسان کی تخلیق کی نسبت کبھی اصل قریب کی طرف ہوتی ہے کبھی اصل بعید کی طرف مٹی تمام انسانوں کے لئے اصل بعید ہے اول اللہ تعالیٰ نے مٹی سے حضرت آدم علیہ السلام کو پیدا کیا۔ پھر ان سے انسانیت کا سلسلہ چلا مٹی کی طرف نسبت اس لحاظ سے بھی صحیح ہے کہ انسان کی تمام خوراکیں مٹی سے تیار ہوتی ہیں اللہ تعالیٰ زمین سے نکلے 'اناج' پھل اگاتا ہے انسان خوراک کھاتا ہے اس سے خون اور مٹی بنتی ہے مٹی سے انسان بنتا ہے۔

ماں باپ کی طرف بھی نسبت صحیح ہے کیونکہ ان دونوں کے ملاپ سے اولاد پیدا ہوتی ہے منہج کی طرف بھی نسبت صحیح ہے کیونکہ رحم مادر کے اندر اسی قطرہ سے انسان کی تخلیق ہوتی ہے۔

علامہ شفق علی فرماتے ہیں اللہ کا ارشاد ہے وقد خلقکم اطواراً اور اس نے بنایا تم کو مختلف اطوار (طرح طرح) سے (سورة نوح آیت 14) تراب طور اول ہے حضرت آدم بھی ایک طور ہیں مٹی اور ماں باپ بھی اطوار ہیں۔ (اضواء البیان ج 10 ص 272)

ہر طور کی طرف نسبت صحیح ہے۔ علامہ زبخری فرماتے ہیں وقد خلقکم اطواراً۔ اسی تارات خلقکم اولاً تراباً ثم خلقکم نطفاً (الکشاف ج 4 ص 618)

الكفر. (الكشاف ج 4 ص 394).

جو کفر پر مصر نہ ہو اس کو نفع ملے گا تو حضور کو مطلقاً تذکیر کا حکم ہے لیکن مؤمن اور ڈرنے والے کا ذکر اس لئے کیا کہ یہ لوگ اس تذکیر سے فائدہ حاصل کرنے والے ہوتے ہیں۔ یہ مطلب یہ نہیں کہ کس اور کونصیحت نہ کی جائے۔ جس کی وجہ سے تذکیر کی آیات کے مابین تعارض پیدا ہو جائے حکیم الامت حضرت تھانوی فرماتے ہیں عام تذکیر سے سب کو اور خاص تذکیر نافع سے فذکر بالقرآن من یخاف وعبید (بیان القرآن ج 11 ص 57)

تعارض: 184 سورة الذاریات

آیت 50

ففر و الی اللہ تو تم اللہ ہی کی طرف دوڑو۔

اس آیت میں اللہ تعالیٰ نے عباد کو اپنی ذات کی طرف ترغیب دی ہے لیکن دوسری آیت میں اللہ تعالیٰ نے اپنی ذات ڈرایا ہے جس کے وجہ سے اس کی طرف بظاہر عدم رغبت معلوم ہوتی ہے فرمان باری ہے ویحذرکم اللہ نفسہ۔ اور خدا تعالیٰ تم کو اپنی ذات سے ڈراتے ہیں۔ (آل عمران آیت 30)۔

تطبیق: امام فراء فرماتے ہیں معناه فررو الیہ الی طاعتہ من معصیۃ اللہ کی معصیت سے اس کو طاعت کی طرف دوڑو۔ (معانی القرآن ج 3 ص 89) ابن الجوزی فرماتے ہیں (فر و الی اللہ) بالتویۃ من ذنوبکم اپنے گناہوں سے توبہ کے ذریعہ اللہ کی طرف دوڑو۔ (زاد المسیر ج 8 ص 41)

امام رازی و یحذرکم اللہ نفسہ کا معنی بیان کرتے ہیں ای یخو کلم عذاب نفسہ او عقاب نفسہ تم کو اپنے عذاب یا عقاب سے ڈراتا ہے۔ (مسائل الرازی

ص 326)۔ اللہ تعالیٰ کی اطاعت کی طرف دوڑنا اور اس کے عذاب سے ڈرانا ان دونوں میں کوئی منافات نہیں بلکہ یہی اصلی ایمان ہے کیونکہ ایمان تو خوف اور امید کے درمیان ہے۔

اللہ تعالیٰ کا اپنی ذات سے ڈرانا بھی اس کی رحمت ہے۔ علامہ زنجیری فرماتے ہیں وعن الحسن من رأفتہ بهم ان حذرہم نفسہ۔ یہ اللہ کی مہربانی ہے کہ عباد کو اپنی ذات ڈراتا ہے (الکشاف ج 1 ص 353)۔

قرآن مجید میں اس جملہ و یحذرکم اللہ نفسہ کے بعد اللہ رؤف بالعباد مذکور ہے جس سے علامہ زنجیری سے نقل کردہ قول کی تائید ہوتی ہے۔

تعارض: 185 سورة الذاریات

آیت 58

ان اللہ هو الرزاق ذو القوۃ المتین اللہ خود بھی سب کو رزق پہنچانے والا ہے قوت والا نہایت ہی قوت والا ہے۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ رزق دینے والا صرف اللہ ہے لیکن بعض آیات سے اس کے خلاف معلوم ہوتا ہے ارشاد ہے واللہ خیر الرزاقین اور اللہ سب سے اچھا روزی پہنچانے والا ہے (سورة الحجۃ آیت 11) معلوم ہوا کہ غیر اللہ بھی رازق ہو سکتا ہے۔

تطبیق: ایک رزاق ہے اور ایک رازق ہے رزاق کا اطلاق غیر اللہ پر نہیں ہوتا۔ امام راغب فرماتے ہیں والرزاق یقال لخالق الرزق ومعطیہ والمسبب لہ وهو اللہ تعالیٰ ویقال ذلک للانسان الذی یرسب سبانی وصول الرزق۔ رازق رزق کے خالق اور اس کے عطا کرنے والے کو کہتے ہیں

رازق کا اطلاق اس انسان پر بھی ہوتا ہے جو رزق کا سبب بن جائے۔ (مفردات القرآن ص 194)۔ خیر الرازقین میں رازق کا ذکر ہے۔ جلالین میں ہے افضل المعطین (ص 284) سب سے بہتر عطا کرنے والا۔

علامہ آلوسی سورۃ الحج آیت وان الله هو خير الرازقین کی تفسیر میں لکھتے ہیں۔ استدلال بذلک علی انه قد يقال لغيره تعالیٰ رازق والمراد به معطى. اس سے معلوم ہوا کہ کبھی غیر اللہ پر رازق کا اطلاق ہوتا ہے جب معنی میں عطا کرنے والے کے ہو۔ (روح المعانی ج 17 ص 188)۔

جلال الدین اٹکلی فرماتے ہیں یقال کل انسان یوزق عائلته ای من رزق الله. کہا جاتا ہے کہ ہر انسان اپنے کنبہ کو رزق دیتا ہے یعنی اللہ کے رزق سے۔ (جلالین ص 461)

تعارض: 186 سورة الطور

آیت 9

یوم تمسور السماء موراً جس دن آسمان تھر تھرانے لگے گا۔ دوسری آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ آسمان پھٹ جائے گا۔ ارشاد ہے اذ السماء انشقت جب آسمان پھٹ جاویگا۔ (الانشقاق 1)

تطبیق: مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں دونوں میں کوئی تعارض نہیں علی سبیل التعاقب دونوں کا تحقق ہو سکتا ہے۔ (بیان القرآن ج 11 ص 65)

علامہ آلوسی تمور کا معنی بیان کرتے ہیں۔ تضطرب كما قال ابن عباس وفي رواية عنه. تشقق ابن عباس سے ایک روایت بھی ہے کہ تمور کا معنی تشقق ہے یعنی آسمان پھٹ جائے گا۔ اس روایت کی بنا پر دونوں آیتوں میں کوئی تعارض نہیں۔ کیونکہ انشقاق اور تمور کا معنی ایک ہے۔ (روح المعانی ج 27 ص 46)

تعارض: 187 سورة الطور

آیت 21

کل امرئ بما کسب رھین۔ اور ہر آدمی اپنی کمائی میں پھنسا ہے۔ اس آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ ہر ایک نفس اپنی کمائی یعنی عمل میں پھنسا ہوا ہے۔ کوئی مستثنیٰ نہیں لیکن سورۃ المدثر کی آیت کل نفس بما کسبت رھینۃ الا صاحب الیمن۔ ہر ایک جی اپنے کئے کاموں میں پھنسا ہوا ہے۔ مگر دائیں طرف والے (آیت 39)

اس آیت میں اصحاب الیمین مستثنیٰ ہیں اور یہ دونوں آیات میں تعارض ہے۔ تطبیق: علامہ شمس الدین عظیمی فرماتے ہیں ان آیت الطور هذه تخصصا آية المدثر. سورۃ مدثر کی آیت سورۃ الطور کے عموم سے خارج ہے یعنی عام کی تخصیص کی گئی ہے۔ (اشواء البیان ج 10 ص 275)

علامہ زبشری فرماتے ہیں فان عمل صالحا فکھا وخلصھا والا وبقھا (الکشاف ج 4 ص 411) اگر نیک عمل کیا ہو تو جان چھوٹ جائے گی ورنہ ہمیشہ کی ہلاکت اور بربادی ہوگی۔

انسان کو اللہ تعالیٰ نے اعمال کا مکلف بنایا ہے یہ اس پر قرضہ ہے جس کی وجہ سے اس کا نفس گرو رہے گا۔ اگر نیک عمل کیا ہو تو جان چھوٹ جائے گی ورنہ ہلاکت اور بربادی ہوگی تقریباً اکثر تقاسیر میں یہی لکھا ہے۔

تعارض: 188 سورة النجم

آیت 43

وما یسطق عن الھوی ان ھو الا وحی یوحی۔ اور نہ آپ اپنی نفسانی خواہش

سے بات کرتے ہیں ان کا ارشاد نبی وحی ہے۔ جو ان پر بھیجی جاتی ہے اس آیت میں اس بات کا ذکر ہے کہ آپ کی ہر بات وحی کی ہے۔ لیکن دیگر نصوص سے ثابت ہوتا ہے کہ آپ اجتہاد بھی کرتے ہیں۔ ارشاد باری ہے۔ عفا اللہ عنک لم اؤت لھم اللہ نے آپ کو معاف کر دیا ہے آپ نے ان کو اجازت کیوں دے دی تھی۔ (سورۃ التوبہ آیت 43)

تطبیق: امام فرما فرماتے ہیں۔ یقول ما یقول هذا القرآن برأیہ انما هو وحی وذلك ان قریشا قالوا انما یقول القرآن من تلقا منزل تکذیبہم (معانی القرآن ج 3 ص 95)

اس آیت میں صرف کفار کے قول کی تردید ہے ان کا خیال تھا یہ یہ قرآن حضور اپنی طرف سے بناتے ہیں تو جواب آیا کہ اللہ کی طرف سے ہے اس سے اس بات کی نفی نہیں ہوتی کہ آپ اجتہاد نہیں کرتے تھے۔

علامہ زنجیری فرماتے ہیں ویحتج بهذه الآية من لا یری الاجتہاد للانبیاء بحباب بان اللہ سوغ لھم الاجتہاد کان الاجتہاد وما یستند الیہ کلہ وحیاً لانطقاً عن الہوی۔ (الکشاف ج 4 ص 418)

بعض اس آیت سے دلیل پکڑتے ہیں کہ انبیاء کرام کے لئے اجتہاد کی گنجائش نہیں لیکن اللہ نے ان کو اجتہاد کی اجازت دی ہے ان کا اجتہاد اور ہر وہ بات جو ان کی طرف منسوب ہو اس کی بنیاد خواہش نفس نہیں بلکہ وحی ہوتی ہے۔ یعنی نبی کا اجتہاد بھی مآلاً وحی بن جاتا ہے کیونکہ نبی کے اجتہاد کی وحی کیساتھ تائید اور تصحیح ہو جاتی ہے۔ نبی غلط اجتہاد پر قائم نہیں رہ سکتا۔

ابن الجوزی فرماتے ہیں وهذا مما یحتج بہ من لا یجیز للنبی ان یجتہد و لیس مما ظنوا ان اجتہاد الرأی اذا صدر عن الوحی جازان

ینسب لہ الوحی۔ (زاد المسیر ج 8 ص 63) جن کا گمان ہے کہ اس آیت سے ثابت ہوتا ہے کہ نبی کے لئے اجتہاد کی اجازت نہیں یہ صحیح نہیں کیونکہ اجتہاد کی اجازت جب وحی سے ہوئی تو اب نبی کے اجتہاد کو وحی کی طرف منسوب کر سکتے ہیں۔

تعارض: 189 سورة النجم

آیت 39

وان لیس للانسان الاماسعی۔ اور یہ کہ انسان کو صرف اپنی ہی کمائی ملے گی اس کا حاصل یہ ہوا کہ کسی کو دوسرے کے عمل سے فائدہ نہ ملے گا۔ لیکن ایک ارشاد خداوندی سے معلوم ہوتا ہے کہ دوسرے کے عمل سے فائدہ ملے گا۔ والذین آمنوا و اتبعتم ذریتہم بایمان الحقناہم ذریتہم اور جو لوگ ایمان لائے اور ان کی اولاد نے بھی ایمان میں ان کا ساتھ دیا ہم ان کی اولاد کو بھی ان کے ساتھ شامل کر دیں گے۔ (سورۃ التورہ آیت 21) اولاد کے درجے بلند ہوں گے۔ یہ ان کو ان کے آباء کے عمل کی وجہ سے ملے۔

تطبیق: ابن الجوزی نے ان دونوں آیتوں کے تعارض کو دور کرنے کے لئے کئی جوابات دئے ہیں۔

(1) لیس للانسان الاماسعی منسوخ ہے اس آیت سے والذین آمنوا و اتبعتم ذریتہم لیکن اس قول کی تردید کی ہے کہ ہذا خیر والاخبار لا تنسخ یہ خبر ہے اور اخبار میں نسخ واقع نہیں ہوتا۔ ابو حیان اندلسی فرماتے ہیں کہ لیس للانسان الاماسعی جمہور کے نزدیک محکم ہے۔

(2) ان ذلک کان لقوم ابراہیم وموسیٰ واما هذه الامة فلہم ماسعدوا و ماسعی غیرہم۔ دوسرے کی سنی سے فائدہ نہ ملنا حضرت ابراہیم

اور حضرت موسیٰ کی امت کے لئے تھا امت محمدیہ کے لئے اپنی اور غیر کی سعی سے فائدہ ملتا ہے۔ (ورنہ ایصالِ ثواب کا مسئلہ ختم ہو جائیگا۔) (نعمانی)

۳: ان المراد بالانسان ههنا الكافر فاما المؤمن فله ماسعی و ماسعی له قاله الربيع بن انس. ربيع بن انس کہتے ہیں الانسان سے مراد کافر ہے مؤمن کو اپنے اور دوسرے کے عمل کا فائدہ ملے گا لیکن قاضی ثناء اللہ پانی پتی نے اس قول کی لیس بھی کہہ کر تردید کی ہے۔ کیونکہ کافر کا عمل ضائع ہو جاتا ہے۔ امام رازی نے اس سے کافر مراد لینے کے قول کو ضعیف کہا ہے۔

۴: انه ليس للانسان الاماسعی من طريق العدل فاما من باب الفضل فحائز ان يزيدہ الله عزوجل ما يشاء قاله الحسن بن فضل بن فضل کہتے ہیں صرف اپنے عمل کا فائدہ اللہ کا عدل ہے اور دوسرے کے عمل سے فائدہ ملنا اس کا فضل ہے جس کے لئے جتنا چاہیں زیادہ کر دیں۔ (اللہ کا فضل اس کے قانون کا پابند نہیں۔) (نعمانی)

۵: ان ماسعی مانوی قاله ابو بكر الوراق کہتے ہیں ماسعی سے مراد مانوی ہے یعنی اس نے جو نیت کی ہے امام قرطبی نے بھی یہ قول نقل کر کے ساتھ حدیث ذکر کی ہے بیعت اللہ الناس بوم القيامة علی نياتهم۔ اللہ تعالیٰ لوگوں کو قیامت کے دن ان کی نیتوں کے مطابق اٹھائیں گے۔

۶: ليس للكافر من الخير الاماعمله في الدنيا فيشابه فيها حتى لا يسقى له في الاخرة ذكره الثعلبي الثعلبی فرماتے ہیں کافر کو اپنے عمل کا بدلہ صرف اس دنیا میں ملے گا۔ آخرت میں کچھ نہ ملے گا۔ (اس قول میں بھی الانسان سے کافر مراد لیا ہے نعمانی)

۷: ان السلام بمعنی علی فتقديره ليس على الانسان الاماسعی۔

ہر انسان کے عمل کا بوجھ صرف اس پر ہوگا اس معنی کے بنا پر یہ آیت ماقبل آیت کے لئے تفسیر بن جائے گی۔ ولاتسروا زررة و زرأخرى۔ کہ اٹھانا نہیں کوئی اٹھانے والا بوجھ کسی دوسرے کا۔

۸: انه ليس له الا سعيه غير ان الاسباب مختلفة. انسان کو اپنی ہی سعی کا فائدہ ملے گا لیکن سعی کے اسباب مختلف ہیں۔ فتارة يكون سعيد في تحصيل قرباته ولديترحم عليه و صديق تارة يسعی في خدمة الدين والعبادة فيكتسب محبة اهل الدين فيكون ذلك سببا حصل بسعيه کبھی آدمی کسی سے قربت حاصل کرے گا کبھی اس کا بیٹا ہوگا جن کو اس ساعی پر رحم آئے گا کبھی ساعی دین کی خدمت یا عبادت کرے گا جس کی وجہ سے اہل دین اس سے محبت کریں گے۔ ان لوگوں کے ایصالِ ثواب کی وجہ سے اس کو فائدہ ہوگا کیونکہ یہ ساعی ان کے ایصالِ ثواب کا باعث بنا۔ (زاد المسیر ج 8 ص 80*81)

امام قرطبی فرماتے ہیں ويحتمل ان قوله وان ليس للانسان الاماسعی خاص في السبب یہ احتمال ہے کہ خاص سینات کی سعی کا اثر صرف اس پر ہوگا۔ (قرطبی ج 16 ص 115) حکیم الامت مولانا تھانوی فرماتے ہیں ایمان کے بارہ میں صرف اپنی کمائی ملے گی یعنی کسی کو دوسرے کا ایمان اس کے کام نہ آوے گا۔ (بیان القرآن ج 11 ص 79) ایک دوسرے کے ایمان سے فائدہ نہ ملنا اور ایک دوسرے کے عمل سے فائدہ ملنا دونوں میں کوئی تعارض نہیں۔

تعارض: 190 سورة القمر

آیت 19

انارسلنا عليهم ريحا صبرا صرأقی بوم نحس مستمر۔ ہم نے ان پر ایک تند

ہوا سبھی ایک دوامی نحوست کے دن میں۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ قوم عاد پر تہذیب کا عذاب ایک دن کے لئے تھا لیکن دوسری آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ کئی دن تک یہ عذاب قائم تھا۔ ارشاد خداوندی ہے: قارسلنا علیہم ریحاً صرصراً فی ایام نحسات۔ تو ہم نے ان پر ایک ہوائے تند ایسے دنوں میں بھیجی جو منحوس تھے۔ پہلی آیت میں یوم مفرد ہے اور اس آیت میں ایام جمع آیا ہے دونوں میں تسانی ہے۔ ایک اور آیت میں ہے سبع لیل وثمانیۃ ایام حسوماً (سورۃ الحاقہ آیت 7)

تطبیق: امام رازی فرماتے ہیں والمراد من الیوم هنا الوقت والزمان کما فی قوله تعالیٰ یوم ولدت ویوم اموت ویوم ابعث حیاً۔ یوم سے مراد صرف وقت اور زمان ہے۔ (تفسیر کبیر ج 29 ص 46)۔

پس یوم اور ایام میں کوئی تعارض نہیں۔ یا یوم سے مراد پہلا دن ہے عذاب کا کیونکہ عذاب دائم اور مستمر تھا۔ اور وہ پہلا دن ایک قول کے مطابق یوم اربعاء ہے تو سورۃ القمر میں صرف عذاب کے شروع ہونے والے دن کا ذکر ہے۔

علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔ والمراد بالیوم مطلق الزمان۔ مطلق زمانہ مراد ہے تھوڑا آگے چل کر لکھتے ہیں لان الیوم الواحد لم یستمر۔ زمانہ اس لئے مراد ہے کہ یوم واحد میں استمرار کا ذکر ہے۔ اس لئے مطلق زمانہ مراد ہے۔ دوسری جگہ جو ایام آیا ہے اس کے معارض نہیں۔

سورۃ القمر

تعارض: 191

آیت 29

فساد و اصابہم فتعاطی فعفر۔ ہوانہوں نے اپنے رفیق کو بلا یا سوا سے وار کیا

اور مار ڈالا اس آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ عاقر یعنی ناقہ کو قتل کرنے والا ایک تھا لیکن دیگر آیات سے پتہ چلتا ہے کہ ایک نہیں بلکہ زیادہ تھے۔ ارشاد ہے فکذبوا فعفر وھا۔ سوانہوں نے پیغمبر کو جھٹلایا پھر اس اونٹنی کو مار ڈالا۔ (سورۃ الشمس آیت 14) ایک اور ارشاد ہے فعفر وھا فاصبحوا اندمین سوانہوں نے اس اونٹنی کو مار ڈالا پھر پشیمان ہوئے۔ (سورۃ الشعراء آیت 157)۔

تطبیق: اونٹنی کا قتل اگرچہ ایک نے کیا تھا لیکن بقیہ سب لوگ اس پر راضی تھے اس لئے اونٹنی کے قتل کی نسبت سب کی طرف ہوئی۔ امام قرطبی نے قتادہ کا قول نقل کیا ہے کہ اس شقی قدار بن سالف نے اس اونٹنی کو اس وقت قتل کیا جب ان کے سب مرد عورتیں چھوٹے بڑے اس جرم کے لئے آمادہ ہو گئے اور اس بد بخت کے موافق ہو گئے۔

امام قرطبی فرماتے ہیں و اضیف الی الكل لانہم رضوا بفعله۔ (قرطبی ج 20 ص 79)

علامہ آلوسی سورۃ قمر کی آیت کی تفسیر میں فرماتے ہیں۔ ونسبۃ العقر الیہم فی قوله فعفر و الناقۃ لانہم کانوا راضین بہ۔ (روح المعانی ج 27 ص 90)

سورۃ الرحمن

تعارض: 192

آیت 35

یرسل علیکمما شواظ من نار ونحاس فلا تنتصران۔ تم ان دونوں پر آگ کا شعلہ اور دہواں چھوڑ دیا جائے گا۔ پھر تم نہ ہٹا سکو گے۔ اس آیت میں اس بات کی دلیل ہے کہ اس قسم کا عذاب انعام نہیں ہو سکتا لیکن اس کے ساتھ متصل آیت "فبای آلاء ربکمات کذبان" پھر کیا کیا نعمتیں اپنے رب کی جھٹلاؤ گے سے معلوم

ہوتا ہے کہ عذاب نعمت ہے دونوں میں تضاد ہے۔

تطبیق: قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں وقیل من الالاء التهديد على موجبات العذاب فيجتنب منها موجبات عذاب سے ڈرانا تاکہ بچ جائیں یہ بھی نعمت ہے (منظہری ج 9 ص 153)

قاضی بیضاوی فرماتے ہیں. فان التهديد لطف والتميز بين المطيع والعاصي بالجزاء والانتقام من الكفار من عذاب الآلاء. ڈراوا مہربانی ہے کفار سے انتقام اور مطیع اور عاصی میں جزا کے ساتھ فرق انعامات میں شمار ہوتا ہے. علامہ شفق علی فرماتے ہیں. لان انذاره في دار الدنيا من الاحوال يوم القيامة من اعظم نعم الله. قیامت کی ہولناکیوں سے دنیا میں ڈرانا اللہ کی بہت بڑی نعمت ہے. (اضواء البیان ج 10 ص 283).

مثال دی ہے کہ ایک انجان مسافر کو ایسے ہلاکت نیر گھرے کی اطلاع دینا جس میں اس کے گرنے کا امکان ہوتا کہ وہ بچ جائے یہ اس مسافر پر بہت بڑا انعام ہے. حکیم الامت مولانا تھانوی فرماتے ہیں اور اس کا بتانا بھی بوجہ ذریعہ ہدایت ہونے کی ایک نعمت عظمیٰ ہے. (بیان القرآن ج 11 ص 91).

یعنی اس عذاب کی خبر دی گئی ہے تو یہ بھی انسان کے لئے ہدایت کا ذریعہ ہو سکتی ہے اس لئے ایک نعمت عظمیٰ بن گئی۔

سورة الرحمن

تعارض: 193

آیت 39

فیومئذ لا یسأل عن ذنبه انس ولا جان. تو اس روز کسی انسان اور جن سے اس کے جرم کے متعلق نہ پوچھا جاوے گا۔

ولا یسئل عن ذنوبہم المجرمون. اور اہل جرم سے ان کے گناہوں کا سوال نہ کرنا پڑے گا. (سورة القصص آیت 78) ان دونوں آیتوں میں مذکور ہے کہ مجرمین میں سے باز پرس نہ ہوگی۔

لیکن بعض آیات میں ذکر ہے کہ ان سے ضرور پوچھا جائے گا۔ فرمان باری ہے فوریک لنستلنہم اجمعین. سو آپ کے پروردگار کی قسم ہم ان سے انکے اعمال کی ضرور باز پرس کریں گے. (سورة الحجر آیت 92) ایک اور ارشاد ہے وقضوہم انہم مسئولون. اور ان کو ٹھہراؤ. ان سے ضرور پوچھا جاوے گا. (سورة الصفات آیت 24)

تطبیق: علامہ شوکانی فرماتے ہیں. ان ماہنا یکون فی موقف والسوال فی موقف آخر من مواقف القيامة. قیامت کے دن بہت مواقف ہیں ایک موقف میں سوال نہ ہوگا. دوسرے موقف میں ہوگا. دوسرا جواب یہ ہے. انہم لایسألون ہنا سوال استفہام عن ذنوبہم. ان سے یہ نہ پوچھا جائے گا کہ بتاؤ کون کونسا گناہ کیا ہے. لان اللہ سبحانہ قد احصى الاعمال وحفظها علی العباد. کیونکہ اللہ نے بندوں کے اعمال کا احاطہ کیا ہے ولکن یسألون سوال توبیخ وتقویع. ان کو ڈانٹنے کے لئے ان سے سوال کیا جائے گا۔

ایک اور جواب بھی دیا ہے. ان عدم السؤال هو عند البعث والسوال هو فی موقف الحساب. بعث کے وقت سوال نہ ہوگا اور حساب کے اسٹیشن پر سوال ہوگا. (فتح القدیر ج 5 ص 138)

ابن الجوزی فرماتے ہیں لایسألون لعلہم حالہم. ان کا حال معلوم کرنے کیلئے سوال نہ کیا جائے گا. کیونکہ اللہ کو سب کچھ معلوم ہے۔

(۲) لایسأل بعضهم بعضا عن حال لا اشتغال کل واحد منهم

بنفسہ لوگ نفسا نفسی کی وجہ سے ایک دوسرے سوال نہ کریں گے۔

(۳) لایسألون عن ذنوبہم لانہم یعرفون بسیماہم اس لئے نہیں پوچھا جائے گا کہ وہ اپنے چہروں سے پہچانے جائیں گے۔ کافر سیاہ چہرے والا ہوگا اور مؤمن کے وضوء کے اعضاء چمکدار ہوں گے۔ (زاد المسیر ج 8 ص 118)

امام قرآن فرماتے ہیں لانہم یعرفون بسیماہم کما وصف اللہ اس لئے سوال نہ ہوگا کہ چہروں سے پہچانیں جائیں گے اس کے بعد والی آیت نے خود یہ بات صاف کر دی۔ یعرف الجرمون بسیماہم پہچانے جائیں گے گناہ گار اپنے چہرے سے۔ (معانی القرآن ج 3 ص 117)

فرماتے ہیں قال المتکلمون ہذہ المعیة اما بالعلم واما بالحفظ والحراصة۔ تفسیر کبیر (ج 29 ص 215) متکلمین کہتے ہیں کہ علمی یا حفاظت کی معیت مراد ہے۔ امام قرطبی کہتے ہیں استوی علی العرش اور ہو معکم اینما کنتم دونوں میں تاویل ضروری ہے اگر دونوں آیتوں کو ظاہر پر محمول کیا تو یہ تناقض کا اعتراف ہوگا۔ وہو معکم کی تاویل میں فرماتے ہیں یعنی بقدرتہ و سلفطانہ وعلمہ (قرطبی ج 17 ص 237) معیت سے مراد اس کی قدرت غلبہ اور علم ہے۔ استوی علی العرش پر کافی بحث کے بعد لکھتے ہیں وقد بیول العرش فی الآیة بمعنی الملک ای ما استوی الملک الالہ عزوجل (قرطبی ج 7 ص 221) عرش سے مراد ملک ہے معنی یہ ہے کہ اس کا راج قائم ہوا۔

تعارض: 195 سورة الحديد

آیت 8

وما لکم لا تؤمنون باللہ والرسول یدعوکم لتؤمنوا بربکم وقد اخذ میثاقکم ان کنتم مؤمنین۔

اور تمہارے لئے اس کا کون سبب ہے کہ تم اللہ پر ایمان نہیں لاتے حالانکہ رسول تم کو اس بات کی طرف بلا رہے ہیں کہ تم اپنے رب پر ایمان لاؤ اور خود خدا نے تم سے عہد لیا تھا اگر تم کو ایمان لانا ہے۔

آیت کے شروع سے معلوم ہوتا ہے کہ کفار میں ایمان نہیں تھا لیکن ان کلمتم مؤمنین سے معلوم ہوتا ہے کہ ایمان تھا۔

تطبیق: جلالین میں ہے ان کنتم مؤمنین ای مریدین الایمان بہ فبادروا الیہ۔ اگر اللہ پر ایمان لانے کا ارادہ ہے تو اس کی طرف جلدی کرو (ص 449)

سورة الحديد

تعارض: 194

آیت 4

ثم استوی علی العرش پھر قائم ہوا تخت پر اس آیت میں ہے کہ اللہ عرش پر مستوی ہے لیکن وہو معکم اینما کنتم اس کے منافی ہے کیونکہ اس آیت کا مطلب یہ ہے کہ وہ تمہارے ساتھ ہے جہاں کہیں تم ہو۔ (سورة الحديد آیت 4)

تطبیق: اللہ تعالیٰ اپنی شان کے مطابق عرش پر مستوی ہے لیکن ساری مخلوق پر علم و قدرت کے لحاظ سے احاطہ کئے ہوئے ہے۔ اسکے علم و قدرت سے کوئی شے باہر نہیں۔ علامہ آلوسی نے ابن عباس کا قول امام بیہقی کی کتاب الاسماء والصفات کے حوالہ سے نقل کیا ہے۔

عالم بکم اینما کنتم (روح المعانی ج 27 ص 168)

تم جہاں بھی ہو اللہ تم کو جانتا ہے سفیان ثوری سے جب اس آیت کے بارے میں پوچھا گیا تو فرمایا علمہ معکم یعنی علم کے لحاظ سے تمہارے ساتھ ہے۔ امام رازی

معنی یہ ہے کہ ایمان ہے تو نہیں اگر لانا چاہتے ہو تو اس کا مقتضی موجود ہے۔
 الشیخ احمد الصاوی فرماتے ہیں ان کنتم مؤمنین بہوی و عیسیٰ فان شریعتھما مقتضیہ
 للایمان بحمدہ ﷺ. اگر تمہارا موسیٰ علیہ السلام اور عیسیٰ علیہ السلام پر ایمان ہے تو ان
 دونوں کی شریعت محمد ﷺ پر ایمان لانے کا تقاضا کرتی ہے۔ (حاشیہ الصاوی ج 4
 ص 170)

علامہ زکریا فرماتے ہیں ان کنتم مؤمنین بموجب ما فان هذا الموجب
 لامزيد عليه. اگر تمہارا ان باتوں پر ایمان ہے جو ایمان کی مقتضی ہیں تو وہ سب
 امور بدرجہ اتم موجود ہیں۔ (الکشاف ج 4 ص 473).

علامہ آلوسی نے تطبیق میں کئی اقوال ذکر کئے ہیں فرماتے ہیں وجوز ان یکون
 المراد ان کنتم ممن یؤمن فمالکم لاتؤمنون والحالة هذه. اگر تم ان
 لوگوں سے ہو جو مؤمن ہیں تو کیوں ایمان نہیں لاتے حالانکہ تمہاری یہ حالت ہے
 کہ ایمان نہیں لاتے۔

(۲) وقال الواحدی ای ان کنتم مؤمنین بدلیل عقلی او نقلی
 فقد بان وظہر لکم علی ید محمد ﷺ بعثہ وانزال القرآن علیہ.
 اگر تمہارا دلیل عقلی اور نقلی پر ایمان ہے تو اس طرح کے تمام دلائل حضور ﷺ کے ہاتھ
 پر آپ کی بعثت اور آپ پر نزول قرآن کی وجہ سے ظاہر ہو گئے۔

(۳) وقال الطبری فی ذلک المراد ان کنتم مؤمنین فی حال من
 الاحوال فآمنوا الان تم کسی بھی حال میں ایمان لانا چاہتے ہو تو ابھی لے آؤ۔ ان
 کنتم مؤمنین بالمیثاق الماخوذ علیکم فی عالم الذر فآمنوا الان.
 اگر تمہارا عالم ذر میں لئے گئے عہد پر ایمان ہے تو اب ایمان لے آؤ۔

(۴) وقیل المراد ان دتم علی الایمان فانتم فی رتب شریفہ

واقدار رفیعیہ. اگر تم نے ایمان پر مداومت اختیار کی تو بلند اقدار اور اعلیٰ رتبوں کے
 مالک بن جاؤ۔ (روح المعانی ج 14 ص 216).

ابی عبد اللہ القرطبی فرماتے ہیں ان کنتم مؤمنین باللہ خالقکم
 وکانوا یعترفون بہذا. اگر تمہارا اللہ کی خالقیت پر ایمان تھا اور وہ اس بات کے
 معترف تھے۔ (القرطبی ج 16 ص 239) یعنی اگر اللہ کو خالق مانتے ہو تو اللہ کی
 ذات پر ایمان لے آؤ۔

تعارض: 196 سورة المجادلة

آیت 12

یا ایہا الذین آمنوا اذنا جیتم الرسول فقد موا بین یدی نجواکم
 صدقة. اے ایمان والو جب تم رسول سے سرگوشی کیا کرو تو اپنی سرگوشی سے پہلے کچھ
 خیرات دے دیا کرو۔ اس آیت میں حضور ﷺ کے ساتھ سرگوشی سے قبل صدقہ دینے
 کا حکم ہے لیکن اس سے بعد والی آیت میں اس حکم کی نفی ہے فرمان باری ہے
 الشفقتم ان تقدموا بین یدی نجواکم صدقات فاذلم تفعلوا وتاب اللہ
 علیکم. کیا تم اپنی سرگوشی کے قبل خیرات دینے سے ڈر گئے سو جب تم نہ کر سکتے
 اور اللہ نے تمہارے حال پر عنایت کی۔ (سورة المجادلة آیت 13) اس آیت میں
 صدقہ نہ دینے کا حکم ہے صدقہ دینا اور نہ دینا دونوں میں تعارض ہے۔

تطبیق: قاضی بیضاوی فرماتے ہیں ولكن منسوخ بقوله الشفقتم صدقة
 کا حکم الشفقتم کے ساتھ منسوخ ہے۔ (بیضاوی ج 2 ص 354).

امام فراء فرماتے ہیں ایک درہم صدقہ دینے کا حکم تھا پھر منسوخ ہو گیا۔ فتنسخت
 الزکوة ذلک الدرہم. زکوٰۃ سے یہ درہم منسوخ ہو گیا۔ (معانی القرآن ج 3

علامہ زحشری فرماتے ہیں قال ابن عباس ہی منسوخہ بالآیۃ التی بعدھا آگے لکھتے ہیں رخص لکم ان لا تفتعلوا (الکشاف ج 4 ص 494) یعنی منسوخ ہوا اور یہ حکم پورا نہ کرنے کی اجازت مل گئی۔

قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں خفف شیخ الصدوقہ صدقہ کا حکم نسخ کے ساتھ آسان اور ہلکا ہو گیا۔ (مظہری ج 9 ص 226)

تعارض: 197 سورة الممتحنة

آیت 8

لا ینہکم اللہ عن الذین لم یقاتلوکم فی الدین ولم یخرجوکم من دیارکم ان تبرؤہم ونقسطوا الیہم۔ اللہ تعالیٰ تم کو ان لوگوں کے ساتھ احسان اور انصاف کے برتاؤ کرنے سے منع نہیں کرتا جو تم سے دین کے بارہ میں نہیں لڑے اور تم کو تمہارے گھروں سے نہیں نکالا۔

ابن آیت سے معلوم ہوا کہ کفار کے ساتھ نیکی اور احسان کی اجازت ہے لیکن بعض آیات سے معلوم ہوا کہ کفار کے ساتھ نیکی اور احسان کی اجازت مطلقاً منع ہے۔ خواہ قتال کیا ہو یا نہ کیا ہو مسلمانوں کو گھروں سے نکالا ہو یا نہ نکالا ہو۔ ومن یتوہم منکم فانه منہم اور جو شخص تم سے ان کیساتھ دوستی کرے گا بے شک وہ ان میں سے ہوگا۔ (سورۃ المائدہ ۵۱) ومن یتوہم منکم فاولئک ہم الظالمون جو شخص تم میں سے ان کے ساتھ رفاقت رکھے گا سوائے لوگ بڑے نافرمان ہیں۔ (سورۃ التوبہ 23)

تطبيق: علامہ زحشری فرماتے ہیں۔ والمعنی لا ینہاکم عن مبرۃ ہؤلاء وانما ینہاکم عن تولی ہؤلاء۔ ان کفار کیساتھ نیکی و احسان سے منع نہیں کیا بلکہ

دوستی سے منع کیا ہے۔ یا اس سے خزاہ والے مراد ہیں جنہوں نے حضورؐ سے صلح کی تھی کہ نہ آپ سے جنگ کریں گے نہ آپ کے خلاف کسی کی مدد کریں گے۔ یا یہ آیت آیت القتال سے منسوخ ہے۔ وعن قتادة نسخها آية القتال (الکشاف ج 4 ص 516)۔

قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں۔ ومن ههنا يظهر ان المنهى عنه انما هو موالاته اهل الحرب دون مبرتهم بشرط ان لا يضر بالمؤمنين وقال الله تعالى في الاسارى من اهل الحرب امامنا بعدوا ما فداء والمن نوع من البر اهل حرب سے دوستی منع ہے ان کے ساتھ احسان منع نہیں بشرطیکہ مسلمانوں کو ضرر نہ ملے اللہ نے اہل حرب کے قیدیوں کے بارے میں فرمایا من يافديه من اور احسان ایک قسم کی نیکی ہے دوستی اہل حرب اور ذمی دونوں سے منع ہے۔ (مظہری ج 9 ص 262)۔

ابن الجوزی فرماتے ہیں لا ینہاکم جوہر النہایعامة فی جمیع الکفار وہی منسوخة بقوله فاقتلوا المشركين حيث وجدتموهم يانزلت فی النساء والصبيان۔ یہ آیت سب کفار کے بارے میں ہے لیکن منسوخ ہے آیت القتال کے ساتھ۔ یا اس سے مراد صرف عورتیں اور بچے ہیں۔ ابن الجوزی کہتے ہیں لا وجه لادعاء النسخ۔ یعنی منسوخیت کے دعویٰ کے لئے کوئی وجہ نہیں لان برالمؤمنين للمحاربين سواء كانوا اقرباء او غير اقرباء غير فرابة غير محرم اذالم یکن فی ذلك تقوية لهم علی الحرب بکراع او سلاح (زاد المسیر ج 8 ص 237)۔ کیونکہ محاربین اپنے ہوں یا پرانے ان کے ساتھ نیکی کرنا ناجائز نہیں بلکہ بشرط محاربین کے لئے اس احسان کی وجہ سے جنگ میں اسلحہ وغیرہ کی تقویت نہ ملے اور دوستی بہر صورت ناجائز ہے۔

اذحاء لك المنافقون قالوا انشهد انك لرسول الله والله يعلم انك لرسوله
والله يشهد ان المنفقين لكذبون. جب آئیں تیرے پاس منافق کہیں ہم قائل
ہیں تو رسول ہے اللہ کا اور اللہ جانتا ہے کہ تو اللہ کا رسول ہے اور اللہ گواہی دیتا ہے کہ
یہ منافق جھوٹے ہیں منافقین نے گواہی دی کہ آپ اللہ کے رسول ہیں آپ کا رسول
ہو تا ایک حق بات ہے اس لئے انہوں نے ایک حق بات کی گواہی دی اللہ کو بھی
معلوم ہے کہ محمد اس کا رسول ہے لیکن اللہ نے واللہ يشهد ان المنفقين لكذبون
کے ساتھ منافقین کی تکذیب کر دی۔ تو اللہ کے نزدیک جو حق بات تھی بظاہر اس کی
تکذیب ہو گئی اور یہ تکذیب ان منافقین کی تصدیق ہو گئی۔ کیونکہ وہ بھی حقیقت میں
آپ کو رسول تسلیم نہیں کرتے تھے۔

تطبیق: علامہ زنجیری فرماتے ہیں۔ ارادوا انقولهم نشهد انك لرسول الله
شهادة و اطاعت فيها فلو بهم السننهم ان کا ادعا گواہی کا تھا جس میں دل زبان
کا ساتھ دیتا ہے اللہ نے ان کی گواہی کی تکذیب کر دی کیونکہ ان کے دل زبانوں
کے موافق نہ تھے۔ دراصل یہاں دو باتیں ہیں ایک ان کا نفس قول انك لرسول
الله ایک اس قول کی گواہی تو نفس قول تو درست ہے اس لئے اللہ تعالیٰ نے بھی ان
کی گواہی کی تکذیب سے قبل کہہ دیا کہ اللہ جانتا ہے کہ وہ اس کا رسول ہے لیکن
انك لرسول الله کے بارے میں ان کی گواہی درست نہ تھی کیونکہ ان کی زبانیں
ان کے دلوں کا ساتھ نہیں دے رہی تھیں اس لئے اللہ نے ان کی گواہی کی تکذیب
کر دی۔ علامہ زنجیری ایک اور توجیہ بھی بیان کرتے ہیں۔ او اراد والله يشهد انهم
لكاذبون عند انفسهم (الکشاف ج 4 ص 538)

یعنی اللہ گواہی دیتا ہے کہ یہ خود اپنے زعم میں بھی جھوٹے ہیں کیونکہ انک لرسول کو
کذب خیال کرتے تھے۔ قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں انهم لكاذبون في
اخبارهم عن هذا القول صادر عن علمهم واذعانهم حتى يصدق على
هذا القول لفظ الشهادة. ان سے جو قول ان کے علم اور اذعان کے مطابق
صادر ہو اس میں یہ جھوٹے ہیں چہ جائیکہ اس پر لفظ شہادت صادق آئے۔ (مظہری ج
10 ص 307).

امام فراء فرماتے ہیں انما الكذب ضميرهم ان کا ضمیر جھوٹ بولتا ہے۔ پھر فرماتے
ہیں لانهم اضمروا غير ما اظهروا کیونکہ انہوں نے اپنے مافی الضمیر کے خلاف
کا اظہار کیا (معانی القرآن ج 3 ص 158)

تعارض: 199 سورة المعارج

آیت 4

فسی يوم كان مقداره خمسين الف سنة. ایسے دن میں ہوگا جس کی مقدار
پچاس ہزار سال ہے۔ اس آیت میں قیامت کے دن کی مقدار پچاس ہزار سال
بتلائی جبکہ بعض آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ ایک ہزار سال ہے۔ ارشاد ہے۔ فسی
يوم كان مقداره الف سنة. ایک ایسے دن میں جس کی مقدار ایک ہزار برس
ہوگی۔ (سورة السجدة آیت 5)

تطبیق: علامہ زنجیری فرماتے ہیں۔ قيل فيه خمسون موطن كل موطن
الف سنة. اس دن پچاس میدان ہوں گے۔ ہر میدان ایک ہزار سال کے
برابر ہے۔ الف سنة سے ایک موطن مراد ہے۔ اور خمسين سنة سے پچاس موطن
مراد ہیں۔ (الکشاف ج 4 ص 609)

قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں قیامت کا دن پچاس ہزار سال کا ہے۔ جہاں ہزار سال کا ذکر ہے اس سے مراد زمین و آسمان میں آنے جانے کی مسافت کا وقت ہے۔ فرشتے ایک دن میں آتے جاتے ہیں اگر کوئی انسان زمین اور آسمان کی مسافت کو طے کرنا چاہے تو ایک ہزار سال لگیں گے۔ قال هذافی الدنيا تعرج الملائكة فی يوم كان مقداره الف سنة وفي قوله تعالى فی يوم كان مقداره خمسين الف سنة قال هذا يوم القيامة. (مظہری ج 10 ص 62)

امام قرظی فرماتے ہیں۔ وقيل معنى ذكر خمسين الف سنة تمثيل وهو تعريف طول مدة القيامة في الموقف وما يلقى الناس فيه من الشدائد. پچاس ہزار سال کا ذکر موقف میں زیادہ دیر رہنے کی طرف ایک مثال ہے۔ کہ زیادہ وقت گزاریں گے۔ (قرظی ج 18 ص 283) مجرمین کی قسمیں ہیں ممکن ہے بعض کا موقف ایک ہزار سال کے برابر ہو اور بعض کا موقف پچاس ہزار سال کے برابر ہو۔

امام قرظی سورۃ السجدۃ کی آیت کی تفسیر میں فرماتے ہیں۔ ان يوم القيامة فيه ايام فمته ما مقداره الف سنة ومنه ما مقداره خمسون الف سنة. قیامت کے دن ايام ہیں بعض ایک ہزار سال کا یوم اور بعض پچاس ہزار سال کا دن ہے۔ وقيل اوقات القيامة مختلفة فيعذب الكافر بجنس العذاب الف سنة ثم ينتقل الى جنس آخر مدته خمسون الف سنة. قیامت کے دن مختلف اوقات ہیں کافر کو ایک جنس کا عذاب ایک ہزار سال تک دیا جائے گا پھر دوسرے جنس کی عذاب کی طرف منتقل کر دیا جائے گا جس کی مدت پچاس ہزار سال ہوگی۔ وقيل موافق القيامة خمسون موافق كل موقف الف سنة. قیامت کے دن پچاس

موقف ہوں گے ہر موقف کی مقدار ایک ہزار سال ہے۔ (قرظی ج 14 ص 88)

تعارض: 200 سورة المعارج

آیت 8

يوم تكون السماء كالمهل. جس دن آسمان تیل کی تلچھٹ کی طرح ہو جائے گا۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ آسمان کا رنگ اسود ہوگا لیکن سورۃ الرحمن کی آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ آسمان کا رنگ سرخ ہوگا۔ ارشاد ربانی ہے فاذا انشقت السماء فكانت وردة كالدهان. غرض جب آسمان پھٹ جائے گا اور ایسا سرخ ہو جاوے گا جیسے سرخ نری۔ (37)

تطبیق: مولانا اشرف علی تھانوی فرماتے ہیں جمع دونوں میں یہ ہے کہ شدت حرمت سے سواد کے مشابہ رنگ پیدا ہوتا ہے پس احمر اور اسود دونوں کہنا صحیح ہے یا اول ایک رنگ ہو پھر دوسرا بدل جاوے۔ (بیان القرآن ج 12 ص 40)

تعارض: 201 سورة اوح

آیت 27

انك ان تذرهم يضلوا عبادك ولا يلدوا الا فاجرا كافرين. اگر آپ ان کو روئے زمین پر رہنے دیں گے تو یہ لوگ آپ کے بندوں کو گمراہ ہی کریں گے۔ اور ان کے جنس فاجر اور کافر ہی اولاد پیدا ہوگی ظاہر اس آیت سے یہ مفہوم نکلتا ہے کہ لوح علیہ السلام کو علم غیب حاصل تھا جب کہ دیگر آیات اس کے خلاف ہیں۔ قل لا يعلم من في السموات والارض الغيب الا الله. آپ کہہ دیجئے کہ جتنی مخلوقات آسمانوں اور زمین میں موجود ہے کوئی بھی غیب نہیں جانتا بجز اللہ تعالیٰ

کے۔ (سورۃ النمل آیت 65)

نوح علیہ السلام نے خود بھی اپنے آپ سے علم غیب کی نفی کی ہے۔ سورہ ہود میں ہے
ولا علم الغیب اور نہ میں تمام غیب کی باتیں جانتا ہوں۔ (آیت 31)

علامہ زختری نے اس تعارض کو سوال و جواب کی شکل میں
تطبیق: ذکر کیا ہے جو اب میں فرماتے ہیں۔ لبث فیہم الف سنة الاحمسين
عاما فذا قہم واکلہم وعر ف طباعہم و احوالہم وکان الرجل من
ینطلق بابنہ الیہ ویقول احذر هذا فانہ کذاب وان ابی حذر نہ
فیموت الکبیر وینشاء الصغیر علی ذلک وقد اخبیر اللہ عزوجل انہ
لن یؤمن من قومک الا من قد آمن (الکشاف ج 4 ص 621) نوح علیہ
السلام نے اپنی قوم کے مابین 950 سال گزارے تھے۔ ان کیساتھ کھایا پیا ان کی
طبیعتوں اور احوال کو جانا ایک آدمی اپنے بیٹے کو نوح علیہ السلام کے پاس لا کر کہتا کہ
بیٹا اس سے بچ کر رہنا یہ جھوٹا ہے مجھے بھی اپنا باپ اس سگورایا کرتا تھا۔ بڑا اسی
حالت کفر میں مرتا اور چھوٹے کی اس حالت میں تربیت ہوتی تھی۔ اور اللہ تعالیٰ نے
آپ کو خبر بھی دی تھی۔

علامہ آلوسی فرماتے ہیں وقد علم کل ذلک بوحي (روح المعانی ج 290
ص 80)

یہ سب کچھ وحی سے معلوم کیا تھا حافظ ابن کثیر فرماتے ہیں۔ وذلک لخبیرتہ بہم
ومکشہ بین اظہرہم الف سنة الاحمسين عاماً (ابن کثیر ج 7 ص 129)
ان میں 950 سال کا عرصہ گزارا گویا تجربہ کے بنیاد پر یہ بات کہی امام رازی
فرماتے ہیں۔ قلنا للنص والاستقراء اما النص فقولہ تعالیٰ انہ لن یؤمن
من قومک الا من قد آمن امام رازی فرماتے ہیں کوئی سوال کرے کہ نوح

کو کیسے پتہ چلا تو ہم جو اب دیں گے کہ نص کی وجہ سے کہ سوان کے جو ایمان لائے
ہیں اور کوئی شخص تمہاری قوم میں سے ایمان نہ لائے گا۔ واما الاستقراء فہو انہ
لبث فیہم الف سنة الاحمسين عاماً فعر ف طباعہم (کبیر ج 30
ص 146) یا تو نص کے وجہ سے جان گئے یا استقراء کی وجہ سے کیونکہ 950 سال
ان میں گزار کر ان کے طبائع کو جان گئے اور ان کو آزما یا تو پتہ چلا کہ یہ ایمان لانے
والے نہیں۔

تعارض: 202 سورة المزمّل

آیت 9

رب المشرق والمغرب وہ مشرق اور مغرب کا مالک ہے۔ رب المشرقین
و رب المغربین وہ دونوں مشرق اور دونوں مغرب کا مالک ہے (سورۃ الرحمن آیت
17)

فلا قسم برب المشارق والمغارب پھر میں قسم کھاتا ہوں مشرقوں
اور مغربوں کے مالک کی۔ (سورۃ المعارج آیت 40)

ایک آیت میں مشرق و مغرب کو مفرد کہا دوسری آیت سے معلوم ہوا کہ مشرق
و مغرب ایک نہیں بلکہ دو ہیں۔ تیسری آیت سے معلوم ہوا کہ مشرق و مغرب بہت
زیادہ ہیں کیونکہ جمع کی دلالت دو سے زیادہ پر ہوتی ہے۔ تینوں آیتوں میں تعارض
معلوم ہوتا ہے۔

تطبیق: تینوں آیتوں میں کوئی تناقض نہیں۔ جہاں ایک مشرق اور ایک
مغرب کا ذکر ہے اس سے مراد ایک جہت اور طرف مشرق ہے اور دوسرا طرف
مغرب عام طور پر لوگ ان دو جہتوں کو سمجھ ہی جانتے ہیں جہاں سے سورج نکلتا ہے

اس کو مشرق کہتے ہیں اور جہاں غروب ہوتا ہے اس کو مغرب کہتے ہیں۔ مشرق اور مغرب سے یہی دو اطراف مراد ہیں۔ جہاں مشرقین اور مغربین فرمایا اس سے مراد گرمی اور سردی کا مشرق اسی طرح گرمی اور سردی کا مغرب۔ مشاہدہ سے یہ بات معلوم کرنا بالکل واضح ہے۔ جس آیت میں مشارق اور مغارب جمع کے صیغے کے ساتھ ذکر کیا ہے تو اس سے مراد ہر روز کا مطلع اور غروب ہے کیونکہ سورج کے طلوع کی جگہ اور نقطہ روزانہ نیا ہوتا ہے۔ اس طرح جائے غروب روزانہ نئی ہوتی ہے۔ یہ سلسلہ پورا سال چلتا رہتا ہے۔ سارا سال روزانہ نئے نئے دائرے میں سورج طلوع اور غروب ہوتا رہتا ہے۔

جدید سائنسی تحقیق اس پر شاہد عدل ہے مشرق اور مغرب کو ہر روز کے نئے مطلع اور جائے غروب کے لحاظ سے جمع کہنا صحیح ہے۔ کہیں طبعی فرماتے ہیں، وافود المشرق والمغرب اذا المرادناحايتاهما اولانہما مصدران وجاء المشارق والمغارب باعتبار وقوعہما فی کل یوم والمشرقین والمغربین باعتبار مشرق الشتاء والصیف ومغربیہما۔ مشرق اور مغرب سے جہت مشارق ومغارب سے ہر روز کا نیا مطلع ومغرب اور مشرقین ومغربین سے گرمی اور سردی کا مشرق اور مغرب مراد ہے۔ (الدرالمصون ج 2 ص 80) تمام تفاسیر کی توجیہات کا حاصل تقریباً یہی ہے اس لئے ایک حوالہ پر اکتفاء کیا گیا۔

سورة المدثر

تعارض: 203

آیت 54

کلا انہ تذکرة ہرگز نہیں یہ قرآن نصیحت ہے۔ ان میں ضمیر مذکر ہے لیکن سورة بئس میں ضمیر مؤنث کی طرف راجع ہے۔ ارشاد ہے کلا انہا تذکرة ہرگز ایسا نہ کہتے

قرآن نصیحت کی چیز ہے۔ (آیت ۱۱)

تطبیق: تاج القرآن الکرمانی فرماتے ہیں۔ لان تقلیدیر الآیة فی هذه السورة ان القرآن تذکرة وفی عبس۔ ان آیات القرآن تذکرة سورة مدثر میں مقدر مرجع قرآن ہے اس لئے ضمیر مذکر کی ہے اور عبس میں مقدر مرجع آیات ہیں اس لئے ضمیر مؤنث کی ذکر ہوئی (البرهان فی توجیہ تشابہ القرآن ص 190)

عبدالقادر عطا فرماتے ہیں۔ ويحتمل ان تكون التذکرة الثانية متوجهة الى قصة الاعمى والآيات نزلت فیہما سورة عبس میں مؤنث کی ضمیر اعمی کے قصے اور اس میں نازل شدہ آیات کی طرف راجع ہو۔ اما الاولى فللقرآن کله اور سورة مدثر میں پورے قرآن کی طرف ضمیر راجع ہو۔ (حاشیہ البرهان فی توجیہ تشابہ القرآن ص 190)

علامہ زنجیری فرماتے ہیں وانما ذکر لانہا فی معنی الذکر اور القرآن مذکر ضمیر اس لئے لائے کہ تذکرہ سے مراد ذکر ہے یا قرآن (تفسیر الکشاف ج 4 ص 657)

ابی السعد والعمادی فرماتے ہیں۔ فالضمیران للقرآن وتأنیث الاول لتأنیث خبره وقيل الاول للسورة اوللآیات السابقة والثانی للتذکرة والتذکیر لانہا فی معنی الذکر والوعظ۔ سورة عبس میں انھا اور ذکرہ کی دونوں ضمیریں قرآن کی طرف راجع ہیں اول ضمیر اس لئے مؤنث ہے کہ اس کی خبر مؤنث ہے یا پہلی ضمیر مؤنث سورة یا سابقہ آیات کی طرف راجع ہے۔ (تفسیر ابی السعد ج 5 ص 237)

وحلوا اساور من فضة. اور ان کو پہنائے جائیں گے کنگن چاندی کے سورة حج میں ہے يحلّون منها من اساور من ذهب ولؤلؤاً. پہنائیں گے ان کو وہاں کنگن سونے کے اور موتی. پہلی آیت میں چاندی کے کنگن کا ذکر ہے جبکہ دوسری آیت میں سونے کے کنگن کا دونوں میں تعارض ہوا۔

تطبیق: علامہ زبیر عری تعارض نقل کرنے کے بعد لکھتے ہیں. وهذا صحیح

لا اشكال فيه على انهم يسورون بالجنسين اما على المعاقبة واما على الجمع كما تزوج لנסاء الدنيا بين انواع الحلوى ويجمع بينهما سونے اور چاندی کے کنگن یا تو ایک ساتھ یا کبھی سونے کے اور کبھی چاندی کے پہنیں گے. جیسے دنیا کی عورتیں مختلف قسم کے زیورات جمع کر کے استعمال کرتی ہیں. اس کے بعد بڑے طریقے انداز میں لکھتے ہیں. وما احسن بالمفصم ان يكون فيه سواران سوار من ذهب وسوار من فضة. کیا ہی اچھی کلائی ہوگی جس میں سونے اور چاندی کے کنگن پہنیں گے (الکشاف ج 4 ص 674)

امام قرطبی فرماتے ہیں. حلى الرجل الفضة وحلى المرأة الذهب وقيل تارة يلبسون الذهب وتارة يلبسون الفضة. آدمی کا زیور چاندی ہوگی اور عورت کا زیور سونا ہوگا یا کبھی سونے کے زیور استعمال کریں گے کبھی چاندی کا (قرطبی ج 19 ص 148).

امام رازی فرماتے ہیں. ان الطباع مختلفة قرب انسان يكون استحسانه لبياض الفضة فوق استحسانه لصفرة الذهب فالله يعطى كل احد ما تكون رغبة فيه اتم وميله اليه اشد.

اللہ تعالیٰ نے مختلف طبیعت کے لوگوں کو پیدا کیا ہے کسی کو چاندی کی سفیدی اچھی لگتی ہے کسی کو سونے کا سنہری رنگ. ہر آدمی کو اس کی رغبت اور میلان کے مطابق اللہ تعالیٰ سونا یا چاندی عطا فرمائیں گے. ایک اور توجیہ کی ہے. ان هذه الاسورة من الفضة انما تكون للولد ان الدين هم الخدم واسورة الذهب

للناس. (تفسیر کبیر ج 30 ص 253' 254)

چاندی کے کنگن خدام لڑکوں کے لئے ہوں گے اور سونے کے کنگن لوگوں کے لئے.

نحن خلقنهم وشددنا أسرهم. ہم ہی نے ان کو پیدا کیا اور ہم ہی نے ان کے جوڑ بند مضبوط کئے. اس آیت سے معلوم ہوا کہ انسان خلقتاً مضبوط ہے لیکن ایک آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ خلقتاً کمزور ہے فرمان باری ہے. وخلق الانسان ضعيفاً. اور آدمی کمزور پیدا کیا گیا ہے (سورة النساء)

تطبیق: امام رازی فرماتے ہیں. قال ابن عباس رضى الله عنه

والاكثرون المراد به انه ضعيف عن الصبر عن النساء فلذلك اباح الله له نكاح الأمة. كما سبق قبل هذه الآية.

عورتوں سے رکے رہنے میں ضعیف ہے اس لئے اللہ تعالیٰ نے لوٹڑیوں کیساتھ نکاح اس کے لئے مباح کر دیا ہے. وقال الزجاج معناه انه يغلبه هواه وشهوته فلذلك وصف بالضعف. شہوت سے مہلہ پ ہونے کے اعتبار سے ضعیف ہے

واما قوله تعالى (وشددنا أسرهم) فمعناه ربطنا او صالهم بعضها الى بعض بالحقوق والاعصاب. اور شدنا اسرہم کا معنی یہ ہے کہ اس کے اعضاء

کورگوں اور پٹھوں کیساتھ مضبوط کیا ہے۔ وقیل المراد بالاسر العصص فان الانسان في القبر يصير فاننا الاعصصه فانه لايفتت . یا اسر سے مراد دم کی ہڈی ہے کیونکہ انسان قبر میں ریزہ ریزہ ہو جاتا ہے لیکن دم کی ہڈی باقی رہتی ہے۔ وقال مجاهد المراد بالاسر مخرج البول والغائط فانه يستخرج حتى يخرج منه الاذى ثم ينقبض ويجمع ويشد بقدره الله تعالى . مجاہد فرماتے ہیں کہ اسر سے مراد بول و براز کی جگہ ہے اللہ تعالیٰ کی قدرت کیساتھ خود بخود کھلتی اور سکتی ہیں۔ (مسائل الرازی ص 363)۔

علامہ زنجیری (خلق الانسان ضعيفا) کی تفسیر میں فرماتے ہیں۔ لا یصبر عن الشهوات وعلی مشاق الطاعات شہوات سے رکنے اور طاعات کی مشیتیں جھیلنے میں کمزور ہے۔ (الکشاف ج 1 ص 501)

تعارض: 206 سورة المرسلات

آیت 35

ہذا یوم لا ینطقون۔ یہ وہ دن ہے کہ نہ بولیں گے۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ قیامت کے دن نہ بول سکیں گے۔ لیکن سورة الانعام کی آیت سے پتہ چلتا ہے کہ بول سکیں گے۔ الا ان قالوا والله ربنا ما كنا مشرکین مگر یہیں کہیں گے تم ہے اللہ کی جو ہمارا رب ہے ہم نہ تھے شرک کرنے والے۔ (آیت 23) لہذا دونوں آیتوں کے مابین منافقا ہے۔

تظہیر: ابن الجوزی فرماتے ہیں۔ قال المفسرون هذا فی بعض مواقف القيامة قیامت میں جو مختلف مواقف ہیں تو بعض موقف میں بات نہ کر سکیں گے۔ فقال عكرمة تكلموا واخضعوا ثم ختموا

علی افواہم فتکلمت ایدیہم وارجلہم فحینئذ لا ینطقون بحجة تنفعہم۔ (زاد المسیر ج 8 ص 451)۔

نکرمہ کہتے ہیں کہ حجت بازی کریں گے اور بولیں گے پھر ان کے مونہوں پر مہر لگا دی جائے گی پھر ان کے ہاتھ پاؤں بولنا شروع کر دیں گے اس وقت نفع بخش حجت بازی کے لئے نہ بول سکیں گے۔

علامہ زنجیری لکھتے ہیں۔ ویوم القيامة طویل ذو موطن ومواقیت ینطقون فی وقت ولا ینطقون فی وقت ولذلك ورد الامران فی القرآن (الکشاف ج 4 ص 681)۔

قیامت کا دن طویل ہے کئی میدان اور اوقات ہوں گے بعض اوقات بات کر سکیں گے بعض اوقات نہ کر سکیں گے اسی لئے قرآن مجید میں دونوں کا ذکر ہے۔ ہذا یوم لا ینطقون۔ میں یوم سے مراد ساعت ہے امام رازی فرماتے ہیں قال الفراء اراد بقوله یوم لا ینطقون تلک الساعة۔ صرف ایک ساعت مراد ہے سارا دن نہیں جیسے کوئی کہے آتیک یوم یقدم فلان۔ صرف ساعت قدوم مراد ہے لہذا ایک ساعت میں بول لیں گے دوسرے میں خاموش ہوں گے۔ امام قرطبی فرماتے ہیں ومعنی الیوم الساعة والوقت۔ امام قرطبی فرماتے ہیں قال الحسن لا ینطقون بحجة وان كانوا ینطقون (قرطبی ج 19 ص 144) حجت والا کلام نہ کر سکیں گے اگرچہ بول سکیں گے۔ علامہ زنجیری ایک اور جواب دیتے ہیں۔ او جعل نطقہم کلا نطق لانه لا ینفع ولا یسمع۔ ان کے بولنے کو نہ بولنا کہا کیونکہ اس کا کوئی فائدہ نہ ہوگا امام رازی فرماتے ہیں کہ ان کے کلام کو کلا کلام کہا کیونکہ حجت والا کلام پیش نہ کر سکیں گے فرماتے ہیں۔ ونظیره ما یقال لمن ذکر کلاماً غیر مفید ما قلت شیئاً غیر مفید بات کرنے والے کو کہا جاتا ہے آپ نے کچھ بھی نہ کہا۔

ولایؤذن لهم فیعتذرون۔ اور نہ ان کو اجازت ہوگی سو عذر بھی نہ کر سکیں گے۔ اس آیت میں اعتذار کی نفی ہے۔ لیکن دوسری آیت سے اعتذار کا ثبوت معلوم ہوتا ہے۔ ارشاد باری ہے۔ یوم لا ینفع الظالمین معذرتہم۔ جس دن کہ ظالموں کو ان کی معذرت کچھ نفع نہ دے گی۔ (سورة المؤمن آیت ۵۲)۔

تطبیق: امام رازی فرماتے ہیں (لا ینفع الظالمین معذرتہم) لایدل علی انہم ذکروا لاعذار بل لیس فیہ الا انہ لیس عندهم عذر مقبول نافع وھذا القدر لایدل علی انہم ذکروہ ام لا۔ ظالمین سے معذرت کی نفی سے یہ معلوم نہیں ہوتا کہ وہ عذر پیش کریں گے بلکہ صرف یہ معلوم ہوا کہ ان کے پاس نافع اور مقبول عذر نہ ہوگا اور اس عذر نافع کی نفی سے یہ معلوم نہیں ہوتا کہ وہ عذر پیش کریں یا نہیں۔

وايضاً فيقال يوم القيامة يوم طويل فيعتذرون في وقت ولا يعتذرون في وقت آخر۔

یہ دوسرا جواب ہے کہ قیامت کا دن بڑا طویل ہے کسی وقت معذرت کریں گے اور بعض اوقات معذرت نہ کر سکیں گے۔ (تفسیر کبیر ج 27 ص 77)۔

مسائل الرازی میں ایک اور جواب ذکر ہے اس کو ضعیف کہا ہے فرماتے ہیں اثبات معذرت مسلمانوں کے لئے ہے اور اعتذار کی نفی کفار کے لئے ہے۔ (ص 363)

لابشین فیہا احقاباً۔ رہا کریں اس میں قرونوں۔

احقابِ حَب کی جمع ہے حَبب ضمہ کیساتھ اسی (۸۰) سال کو کہتے ہیں۔ حَبب بمعنی الدرہ احقاب بہت زمانے۔ بظاہر اس سے تضحی معلوم ہوتی ہے۔ دوزخ میں محدود مدت تک رہیں گے لیکن دیگر آیات میں صاف مذکور ہے کہ کفار اور مشرکین ہمیشہ کے لئے جہنم میں رہیں گے۔ خالد بن فیما ابدأ۔ جہاں ہمیشہ ہمیشہ رہیں گے۔ (سورة البینہ آیت 8)۔

اس آیت سے بظاہر تضحی معلوم ہوتی ہے خُلدین فیہا مادامت السماء والارض الا ماشاء ربک۔ ہمیشہ رہیں اس میں جب تک رہے آسمان اور زمین مگر جو چاہے تیرا رب تضحی اور لامتناہی میں تاقض ہے۔

تطبیق: علامہ زنجیری فرماتے ہیں کلمات ماضی حقب تبعہ آخر

الی غیر النہایة ولا یکاد یستعمل الحقب والحقبۃ الا حیث یراد تنابع الازمنة وتواليہا۔ ایک حقب ختم ہونے کے بعد دوسرا حقب شروع ہو جائے گا۔ اسی طرح نہ ختم ہونے والا سلسلہ جاری رہے گا۔ حقب اور حقبہ کا استعمال وہاں ہوتا ہے جہاں زمانے ایک دوسرے کے پیچھے تسلسل سے لگے ہوں۔ دوسری توجیہ یہ ہے کہ اگر زمانہ متناہی مان لیں تو آیت کا معنی یہ ہے کہ شراب حمیم اور غساق کے عذاب میں کافی عرصہ تک مبتلی رہنے کے بعد دوسری نوع کے عذاب کی طرف منتقل کر دئے جائیں گے لیکن نفس عذاب سے نہ نکلیں گے۔

علامہ زنجیری فرماتے ہیں۔ ثم یدلون بعد الاحقاب غیر الحمیم والفساق من جنس آخر من العذاب۔ حمیم اور غساق کے عذاب کے بعد دوسری

نوع کے عذاب میں مبتلی کر دئے جائیں گے۔ اس توجیہ کی تائید قرآن مجید کی اس آیت سے ہوتی ہے۔ ہذا فلیدوقوه حمیم وغساق و آخر من شکله ازواج۔ یہ کھولتا ہوا پانی اور پیپ ہے سو یہ لوگ اس کو چکھیں اور بھی اس قسم کی طرح طرح کی چیزیں ہیں۔ (سورۃ ص آیت 58)

ایک اور جواب بھی دیا ہے حقب میں حقب عامنا سے ہے۔ اذا قل مطرہ و خیرہ معنی ہو گا لاشین حقبین مجدبین۔ حقب سے مراد ہمارا وہ سال ہے کہ جس میں بارش اور خیر کم ہو یعنی: جنہی تنگی پریشانی اور بے خبری میں رہیں گے ان کو کسی قسم کا مرغوب رزق نہ دیا جائے گا۔ (الکشاف ج 4 ص 689)۔

گویا آیت میں تنہا اور عدم تنہا کا ذکر نہیں بلکہ صرف جنہیوں کی بے خبری و تنگی کا ذکر ہے۔

امام قرطبی فرماتے ہیں صی لا تنقطع فکلما مضی حقب جاء حقب۔ احقاب ختم نہ ہوں گے۔ ہر حقب کے بعد دوسرا حقب شروع ہو جائے گا۔ اس کے بعد فرماتے ہیں اگر احقاب سے محدود اور قنای مراد ہوتے تو کلام یوں ہونا چاہیے تھا۔ خمسة احقاب یا عشرة احقاب۔ لیکن احقاب کے ساتھ عدد مذکور نہیں اسی لئے امام قرطبی فرماتے ہیں۔ وہی کنایۃ عن التابید ای یمکثون فیہا ابداً

احقاب تابید اور بیشکی سے کنایہ ہے۔ یعنی جہنم میں ہمیشہ رہیں گے۔ امام قرطبی ایک اور جواب بھی دیتے ہیں اگر احقاب سے محدود مدت مراد ہو تو پھر گناہ گار مسلمان مراد ہیں جو جہنم سے نکالے جائیں گے فرماتے ہیں ویسکن حمل الایۃ علی عصاة الذین یخرجون من النار بعد احقاب۔ آیت کو گناہ گار مسلمانوں پر حمل کرنا ممکن ہے جو احقاب کے بعد آگ سے نکالیں جائیں گے۔ (قرطبی ج 19 ص 178' 179)۔

امام رازی کی بھی تقریباً مذکورہ تحقیق ہے۔

تعارض: 209 سورة عبس

آیت 2

ان جاءہ الائمی۔ اس بات سے کہ آیا اس کے پاس اندھا، اندھا، اندھا بر القب ہے۔ اللہ تعالیٰ نے ابن ام مکتوم کو اندھا کہا۔ حالانکہ دوسرے مقام پر خود ارشاد باری ہے ولا تناسزوا اباللقاب۔ اور نہ ایک دوسرے کو برے لقب سے پکارو۔ (سورۃ الحجرات آیت 11) اس آیت میں بڑے القاب اور بڑے ناموں سے روکا گیا ہے۔ اس طرح دونوں آیات میں تعارض ہوا۔

تطبیق: دونوں آیتوں میں کوئی تعارض نہیں۔ برے القاب سے روکا گیا ہے۔ لیکن یہاں اللہ نے ابن ام مکتوم کو بڑے لقب سے نہیں پکارا بلکہ ترجم کیلئے لفظ ائمی سے اس کا ذکر کیا ہے۔ ہم روزانہ کی بول چال میں اس کا بہت زیادہ ذکر کرتے ہیں کہ آپ کے پاس ایک اندھا بے چارہ آیا تھا ایک لنگڑا آیا تھا۔ یہ صرف اس لئے کہتے ہیں کہ مخاطب کو اس پر رحم آجائے کیونکہ معذور قابل رحم ہوتا ہے حضور صنادید قریش کے ساتھ اہم سلسلہ میں جو گفتگو تھے کہ ابن ام مکتوم آگئے تو لفظ ائمی میں اس بات کی طرف اشارہ ہے کہ اے رسول اس کے آنے کی وجہ سے آپ کی قطع کلامی ہوئی تو وہ اس میں معذور تھے۔ اندھے ہیں اگر ان کی آنکھیں ہوتی تو وہ ایسا ہرگز نہ کرتے گویا اللہ تعالیٰ نے لفظ ائمی ذکر کر کے ابن ام مکتوم کے عذر کی طرف اشارہ کر دیا کہ ان کو معذور بناؤ۔ قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں۔ و ذکر الاعمی فی الایۃ اشعار بعذره فی الاقدام علی قطع کلام النبی ﷺ۔ (منظہری ج 10 ص 197)

امام رازی فرماتے ہیں۔ ان ذکرہ بلفظ الاعمی لیس لتحقیق شانہ کاہنہ
قیل انہ بسبب عماہ استحق مزید الفرق والرافة فكيف يليق بك
یا محمد ان تخصه بالغلظة (کبیر ج 31 ص 55) لفظ اعمی تحقیر کے لئے نہیں
ذکر کیا بلکہ اس لئے ذکر کیا کہ وہ تو زیادہ نرمی اور شفقت کے قابل ہے تو اے محمد آپ
کے لئے مناسب نہیں کہ ان پر غصہ کریں۔

تو اللہ تعالیٰ نے یہ لفظ ان کی توہین نہیں بلکہ تعظیم کے لئے ذکر کیا ہے۔ علامہ آلوسی
فرماتے ہیں۔ فی ذکر الاعمی نحو من ذلك لانه وصف يناسب الاقبال
والتعطف (روح المعانی ج 3 ص 39)۔

اعلیٰ ایسا وصف ہے کہ جس کی طرف مہربانی کے ساتھ توجہ اور التفات کیا جاتا ہے۔

تعارض: 210

سورة التکویر

آیت 19

انہ لقول رسول کریم۔ یہ قرآن کلام ہے ایک معزز فرشتہ کا لایا ہوا۔

قول کی اضافت رسول کریم کی طرف ہے۔ اور رسول سے مراد حضرت جبرئیل علیہ
السلام ہیں یہ اس بات کی دلیل ہے کہ قرآن جبرئیل کا کلام ہے۔ کیونکہ انہ کی
ضمیر قرآن مجید کی طرف راجع ہے۔ لیکن دیگر آیات سے معلوم ہوتا ہے بلکہ مسلم
الثبوت بات یہ ہے کہ قرآن اللہ تعالیٰ کا کلام ہے۔ جیسا کہ اس آیت میں ہے۔

تنزیل من رب العلمین۔ رب العلمین کی طرف سے بھیجا ہوا ہے۔ (سورة المائدة
آیت 43)

فاجره حتی یسمع کلام اللہ۔ تو آپ ان کو پناہ دیجئے تاکہ وہ کلام الہی سن

لے۔ (سورة التوبة آیت 6) کتاب احکمت آیاتہ ثم فصلت من لدن
حکیم خبیر۔ یہ ایک ایسی کتاب ہے کہ اس کی آیتیں حکم کی گئی ہیں پھر صاف
صاف بیان کی گئی ہیں ایک حکیم بانبر کی طرف سے (سورة هود آیت 1) لہذا یہ
کھلاتا قفس ہے۔

تطبیق: منشاء اشکال لفظ قول ہے لیکن جواب بھی اسی آیت میں ہے۔ لفظ رسول
سے خوب واضح ہے کہ جبرائیل کا کلام نہیں کیونکہ رسول خود مبعوث ہوتا ہے۔ آیت
کا مطلب یہ ہے۔ ای تبلیغہ عن من ارسلہ من غیر زیادة ولا نقص۔ جس نے
اس کو بھیجا اس کے کلام کو من وعن آگے بھیجنا۔

قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں۔ من حیث انہ رسول۔ یعنی جبرئیل کا قول اس
حیث سے کہ فرستادہ ہے اس کا اپنا کلام نہیں۔

امام قرطبی فرماتے ہیں۔ والمعنی انہ لقول رسول عن اللہ کریم علی اللہ
واضاف الکلام الی جبرئیل علیہ السلام ثم عداہ عنہ بقوله تنزیل من
رب العلمین ليعلم اهل التصدیق ان الکلام للہ عزوجل۔ (قرطبی ج 19
ص 240) رسول کا قول ہے اللہ کی طرف سے جو اللہ کے یہاں مکرم ہے۔ کلام کی
اضافت جبرئیل کی طرف کر کے پھر اپنی طرف کی کہ رب العالمین کی طرف سے
نازل کردہ ہے۔ تاکہ تصدیق کرنے والا جان لے کہ اللہ تعالیٰ کا کلام ہے۔

علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔ ونسبته الیہ علیہ السلام لانه واسطة فیہ وناقل
له عن مرسلہ وهو اللہ عزوجل (روح المعانی ج 30 ص 59) جبرئیل علیہ
السلام کی طرف قول کی نسبت اس لئے ہوئی کہ وہ واسطہ اور ناقل ہے مرسل کی
طرف سے جو اللہ ہے۔

امام رازی فرماتے ہیں۔ انما هو قول جبرئیل اتاہ بہ وحیاً من عند اللہ۔

(تفسیر کبیر ج 31 ص 73)۔ یہ جبرئیل کا قول ہے جو اللہ کی طرف سے وحی ہے۔

سورة الانشقاق

تعارض: 211

آیت 10

وامامن اوتی کتابہ وراء ظہرہ ترجمہ اور جس شخص کا نامہ اعمال اس کی پیچھے سے ملے گا لیکن سورة الحاقة میں ارشاد ہے۔ وامامن اوتی کتابہ بشمالہ ترجمہ اور جس کا اعمال نامہ اس کے بائیں ہاتھ میں دیا جائے گا (آیت 25)۔ ان دونوں آیات میں تعارض ہے کیونکہ ایک میں ذکر ہے کہ اعمال نامہ پیچھے سے ملے گا اور دوسرے میں ذکر ہے کہ بائیں ہاتھ میں ملے گا۔

تطبیق: علامہ زحشری لکھتے ہیں۔ تغل یمنناہ الی عنقہ وتجعل شمالہ ورا ظہرہ فیؤتی کتابہ بشمالہ من ورا ظہرہ دایاں ہاتھ کے کا طوق بنایا جائے گا۔ اور بایاں ہاتھ پشت کی طرف لے جا کر اعمال نامہ اس میں تمہا دیا جائے گا۔ ایک اور قول ذکر کیا ہے۔ وقیل تخلع بدہ الیسری من وراء ظہرہ یعنی اس کا بایاں ہاتھ پشت کی طرف نکال دیا جائے گا۔ (الکشاف ج 4 ص 726)

امام فراء فرماتے ہیں۔ یقال ان ایمانہم تغل الی اعناقہم وتكون شمالہم ورا ظہورہم۔ ان کے دائیں ہاتھ گردن کا طوق بن جائیں گے اور بائیں ہاتھ پشت کی جانب کردئے جائیں گے۔ (معانی القرآن ج 3 ص 250)۔

امام قرطبی فرماتے ہیں۔ قال قتادة ومقاتل يفك الواح صدره وعظامه ثم تدخل بدنه وتخرج من ظہرہ فیأخذ کتابہ کذا لک۔ (تفسیر قرطبی ج 19 ص 272)۔

قتادة اور مقاتل کہتے ہیں کہ اس کے سینہ کو چیر کر اس کے ہاتھ کو پشت کی جانب نکال دیا جائے گا۔ اور اس طرح وہ اپنا اعمال نامہ لے گا۔

سورة الطارق

تعارض: 212

آیت 17

مهل الكافرين امهلهم رويدا۔ آپ ان کافروں کو یوں ہی رہنے دیجئے ان کو تھوڑے ہی دنوں رہنے دیجئے ان آیت میں کفار کو مہلت دینے کا ذکر ہے لیکن فاقتلوا المشركين حيث جدتموهم سوان مشرکین کو جہاں پاؤ مارو۔ (سورة التوبة آیت 5) سے معلوم ہوتا ہے کہ ان کو جہاں پاؤ قتل کر دو ان دونوں حکموں میں منافات ہے۔
یق: امام قرطبی فرماتے ہیں۔ ثم نسخت بآية السيف فاقتلوا المشركين حيث جدتموهم (تفسیر قرطبی ج 20 ص 12) ہال مشرکین کا حکم آیت سیف کیساتھ منسوخ ہے۔

ثم شاء الله پانی پتی فرماتے ہیں۔ وهذا منسوخ بآية القتال على يد سير النهي عن الانتقام منهم۔ (تفسیر مظہری ج 10 ص 242) کفار اور مشرکین سے انتقام نہ لینے کا حکم ہے تو یہ قتال کی آیت کیساتھ منسوخ ہے۔ ہال کافرین کا یہ مطلب ہے کہ آپ ان کی ہلاکت کیلئے بد دعا میں جلدی نہ کیجئے انتظار کیجئے آپ دیکھ لیں گے میں ان کو کسی طرح عذاب اور مصیبت میں قبلت یا بعد الموت مبتلی کرتا ہوں۔ قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں

استعجل باهل الكهف بالدعاء عليهم۔ حافظ ابن کثیر لکھتے ہیں۔ ای لرحم ولا تستعجل لهم۔ تھوڑا آگے لکھتے ہیں۔ واستعجل ماذا اجل

بہم من العذاب والنكال والعقوبة والهلاک كما قال نمنعہم قليلا
ثم نضطرہم الى عذاب النار. (ابن کثیر ج 7 ص 266) اور عنقریب آپ
دیکھ لیں گے کہ میں ان کسی قسم کا عذاب نازل کرتا ہوں اور کیسے ان کو ہلاک کرتا ہوں
جیسے اللہ نے فرمایا۔

امہال کافرین کی اس تشریح اور توجیہ کیساتھ آیات قائل کے ساتھ کوئی تعارض نہیں۔
اس لئے تطبیق کی ضرورت نہیں رہتی۔

تعارض: 213 سورة الاعلیٰ

آیت 6'7

سنقرنک فلانتسی الاماشاء اللہ ہم آپ کو قرآن پڑھا دیا کریں گے پھر آپ
نہیں بھولیں گے مگر جس وقت اللہ کو منظور ہو۔ اس آیت میں اس بات کی دالت ہے
کہ اللہ تعالیٰ جس وقت چاہیں جتنا قرآن چاہیں حضور کو بھلا دیں۔ اس آیت
کا بظاہر ان علینا جمعہ وقرآنہ کے ساتھ لکرا ہے۔ کیونکہ اس آیت کا معنی ہے
ہمارے ذمہ ہے اس کا جمع کرنا اور اس کا پڑھوادینا (القیامۃ 17)

اسی طرح فرمان باری ہے۔ اننا نحن نزلنا الذکر واناله لحفظون ہم نے
قرآن کو نازل کیا ہے اور ہم اس کے محافظ ہیں۔ (سورة الحجر آیت 9) یعنی قرآن
ضائع نہ ہوگا۔ ہم اس کے محافظ ہیں لیکن پہلی آیت کے یہ موجب جو بھلا دیا جائے وہ
ضائع ہو جائے گا۔ بظاہر یہ تناقض ہے۔

تطبیق: امام فراء فرماتے ہیں۔ لم یشاء ان ینسی شینا
وهو کقبوله خلدین فیہا مادامت السموات والارض الاماشاء ربک
ولایشاء وانت قائل فی الکلام لأعطینک کل ما سألت الاماشاء

والان اشأ ان امنعک والنبیة ألا تمنعہ. (معانی القرآن ج 3 ص 256)
اللہ نہیں چاہیں گے کہ کچھ بھلا دیں جیسے اللہ کا فرمان ہے کہ شقی لوگ ہمیشہ دوزخ میں
رہیں گے جب تک آسمان اور زمین قائم رہیں ہاں اگر خدا ہی کو منظور ہو تو دوسری
بات ہے لیکن اللہ ایسا نہ چاہیں گے جیسے تو مخاطب سے کہتا ہے کہ جو مانگے عطا کروں
گا مگر جو میں چاہوں نہ دوں گا لیکن نیت نہ دینے کی نہ ہو۔ امام فراء کی اس توجیہ کے
ساتھ تعارض ختم ہو جاتا ہے۔

علامہ زختری فرماتے ہیں۔ او قال الاماشاء اللہ الغرض نفی النسیان راسا
کما یقول الرجل لصاحبه انت سہیمی فیما ملک الاماشاء اللہ
ولایقصد استثناء شیء وهو من استعمال القلة فی معنی
النفی. (الکشاف ج 4 ص 739)۔

یعنی سرے سے نسیان کی نفی ہے جیسے کوئی کسی دوست سے کہے کہ میں جس چیز کا
مالک بنوں تو اس میں میرا برابر کا شریک رہے گا مگر جو میں چاہوں اور نیت استثناء کی
نہ ہو۔ بعض مفسرین کہتے ہیں اس آیت میں ناسخ اور منسوخ کا ذکر ہے قرآن محفوظ
ہے لیکن اس آیت میں نسخ کا ذکر ہے۔

قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں والنساء نوع من التسخ (منظہری ج 10
ص 244) نساء ایک قسم کا نسخ ہے۔ امام قرطبی نے متعدد جوابات دئے ہیں ایک
توجیہ یہ ذکر کی ہے۔ ولکنہ لم ینس شینا منہ بعد نزول هذه الآیة (قرطبی
ج 20 ص 19) اس آیت کے نزول کے بعد کچھ بھی نہیں بھلایا گیا یہاں سوال
پیدا ہوتا ہے کہ جب اس آیت کے نزول کے بعد کچھ بھی نہیں بھولا تو الاماشاء اللہ کس
لئے ذکر فرمایا۔ امام رازی اس کا جواب دیتے ہیں۔

(1) التبرک بذکر هذه الکلمة تبرک کے لئے یہ کلمہ ذکر کیا معنی یہ کہ میں

باوجود عالم الغیب ہونے کے کوئی خبر اس کلمہ کے بغیر نہیں دیتا تو تم بھی ماشاء اللہ یا ان شاء اللہ کہا کرو۔

(۲) دوسرا جواب یہ دیا ہے اللہ کو اپنی قدرت معلوم ہے کہ عدم نسیان اس کا فضل اور احسان ہے یہ کسی انسان کے بس کی بات نہیں۔

(۳) تیسرا جواب یہ ہے اس کے بعد جو وحی بھی اترے حضور اس کے لئے ہر حال میں بیدار رہ کر اس کی حفاظت کے لئے تیار رہیں۔ (تفسیر کبیر ج 31 ص 142' 143)۔

علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔ قال الحسن وقنادة وغيرهما وهذا ما قضى الله تعالى نسخته وان يرتفع حكمته وتلاوته والظاهر ان النسيان على حقيقته. (روح المعاني ج 30 ص 105)۔

حسن اور قنادہ فرماتے ہیں کہ اس میں نسخ کا ذکر ہے جس آیت کی تلاوت اور حکم کے نسخ کا فیصلہ ہو جائے نسیان ہیئتاً اس نسخ پر محمول ہے۔

حاصل یہ ہے کہ باوجود نسخ منسوخ کے قرآن محفوظ ہے نسخ کے بعد جو رہ جائے اللہ نے اس کی حفاظت کا ذمہ لیا ہے۔ اس میں کوئی کسی قسم کا تغیر و تبدل نہیں کر سکتا۔

سورة الغاشية

تعارض: 214

آیت 6

ليس لهم طعام الا من ضريع.

ترجمہ: ان کو بجز ایک خاردار جھاڑ کے اور کوئی کھانا نصیب نہ ہوگا۔ اس آیت سے معلوم ہوتا ہے کہ دوزخیوں کی خوراک صرف ضریح ہے لیکن دیگر آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ ضریح کے علاوہ غسلین اور زقوم بھی دوزخیوں کی خوراک ہے جیسا کہ اس

آیت میں ذکر ہے ولا طعام الا من غسلین اور نہ اس کو کوئی کھانے کے چیز نصیب ہے بجز زقوموں کے دھوون کے۔ (سورة الجاثية آیت 36)۔

اس آیت میں بھی غسلین کے خوراک کا حصر ہے لہذا ان آیات میں تعارض ہوا۔ تطبیق: حکیم الامت مولانا اشرف علی تھانوی لکھتے ہیں اور ضریح میں

حصر طعام کا اضافی ہے یعنی الطعم مرغوبہ لذیذہ کی نفی مقصود ہے پس زقوم اور غسلین کے اثبات سے اس کا تعارض نہیں (بیان القرآن ج 12 ص 94)۔

ان آیات میں خوراک کا ذکر ہے وہ حصر حقیقی نہیں بلکہ اضافی ہے۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ ان کو لذیذ اور مرغوب خوراک نہیں ملے گی۔ غیر مرغوب اور غیر لذیذ خوراک جس جس کا ذکر ہے وہ ملے گی۔

قاضی ثناء اللہ پانی پتی فرماتے ہیں۔ والقصر اضافی (تفسیر مظہری ج 10 ص 56)۔ قاضی صاحب اور مولانا تھانوی دونوں کی تطبیق ایک جیسی ہے۔ امام قرطبی

نے اول تعارض کا ذکر کیا پھر لکھتے ہیں۔ ووجه الجمع ان النار درکات فمنهم من طعامه الزقوم ومنهم ومن طعامه الغسلین ومنهم من طعامه

الضریع ومنهم من شرابه حمیم ومنهم من شرابه الصدید قال الکلبی الضریع فی درجة لیس فیما غیرہ والزقوم فی درجة اخرى۔ دوزخیوں

کے طبقات ہیں۔ بعض کی خوراک زقوم ہے اور بعض کی غسلین اور بعض کی ضریح۔ بعض حمیم پتلیں گے اور بعض صدید کلبی کہتے ہیں جس درجہ میں ضریح والی خوراک ہوگی

اس کے ساتھ دوسری نہ ہوگی۔ اور زقوم دوسرے درجہ میں ہوگی۔ امام قرطبی ایک اور توجیہ بھی بیان کرتے ہیں۔ ویجوز ان تحمل الآیة ان علی

حالتین کما قال بطوفون بسینا وبين حمیم آن۔ دونوں آیتیں مختلف حالتوں پر محمول ہیں ایک حالت اور وقت میں ایک قسم کی خوراک اور دوسری حالت اور وقت

میں دوسری قسم کی خوراک ملے گی جیسا کہ سورۃ رحمن کی اس آیت میں ذکر ہے۔ پھر میں گے سچ اس (دوزخ) کے اور کھولتے پانی کے۔ (تفسیر قرطبی ج 20 ص 31)۔ یعنی کبھی آگ اور کبھی کھولتے پانی کا عذاب ہوگا۔

تعارض: 215 سورة الفجر

آیت 22

وجاء ربك والملك صفاً صفاً.

الملك سے پتہ چلتا ہے کہ ایک فرشتہ ہے لیکن صفاً صفاً سے معلوم ہوتا ہے کہ فرشتوں کی جماعتیں ہوں گی اس ایک آیت میں والملك اور صفاً صفاً میں تعارض ہوا۔

تطبیق: قاضی ثناء اللہ پانی پٹی فرماتے ہیں۔ والملك اللام للجنس ای وجاء ت الملائكة (تفسیر مظہری ج 10 ص 258)۔ الملك میں الف لام جنسی ہے یعنی سب ملائکہ قرآن مجید میں اس کے نظائر ملتے ہیں۔ ارشاد باری ہے ثم استوی السی السماء فسواهن سماء مفرد ہے لیکن اس کی طرف ضمیر جمع مؤنث کی لوٹ رہی ہے۔ اس کا جواب یہی ہے کہ السماء میں الف لام جنسی ہے۔ اسی طرح اول طفل الذین لم یظہروا علی عورات النساء۔ الطفل مفرد ہے اول الذین اور لم یظہروا جمع ہے۔ لیکن یہاں بھی الطفل میں الف لام جنسی مراد ہے۔ امام قرطبی فرماتے ہیں۔ الملك سے ملائکہ مراد ہیں۔ (تفسیر قرطبی ج ۲۰ ص ۵۲)

علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔ والملك ای جنس الملك فی شمل جمع ملائكة السموات والارض (روح المعانی ج 30 ص 128) الملك سے زمین و آسمان کے سب فرشتے مراد ہیں۔

تعارض: 216 سورة الشمس

آیت 8

فالهمها فجورها و تقواها۔ پھر اس کی بدکرداری اور پرہیزگاری کا اس کو القاء کیا۔ اس آیت میں اس بات کی دلیل ہے کہ دلوں میں تقویٰ اور فجور اللہ ڈالتے ہیں۔ کسی نفس کا اس میں اختیار نہیں۔ لیکن فاستحبوا العمی علی الہدیٰ۔ سو انہوں نے گمراہی کو بمقابلہ ہدایت کے پسند کیا۔ (سورۃ عم السجدۃ آیت 17) اس کے منافی ہے کیونکہ اس میں یہ بیان ہے کہ گمراہی خود آدمی اختیار کر سکتا ہے یعنی فجور اور تقویٰ بندہ کے اختیار میں ہے۔

تطبیق: امام فراء فرماتے ہیں۔ عرفها سبیل الخیر و سبیل

الشرو و هو مثل قوله و ہدیناہ النجدین۔ (معانی القرآن ج 3 ص 266) خیر اور شر کے راستے انسان کو بتادے۔ جیسا کہ ہدیناہ النجدین میں ہے۔ یعنی انسان کو خیر اور شر کی گھاٹیاں دکھلا دیں۔ تاکہ برے راستے سے بچے اور اچھے راستے پر چلے۔ علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔ الہمہما فجورہا و تقواہا بینہما لہا۔ (روح المعانی ج 30 ص 143)۔ خیر اور شر اس کے لئے واضح کر دیا۔

تعارض: 217 سورة الليل

آیت 12

ان علینا للہدیٰ

واقعی ہمارے ذمہ راہ کا بتلادینا ہے اس آیت سے یہ مفہوم نکلتا ہے کہ اللہ تعالیٰ سب کو ہدایت دیں گے۔ حالانکہ بعض کو ہدایت نہیں دیتے۔ جیسے ایک جگہ ارشاد باری ہے واللہ لایہدی القوم الفاسقین۔ اور اللہ تعالیٰ ایسے سرکش لوگوں کو ہدایت نہیں

کرتا۔ (سورۃ التوبۃ آیت 12)

تطبیق: عام ہدایت یعنی راہ دکھانا اس کا اثبات ہے اللہ تعالیٰ نے سب کو اس قسم کی ہدایت کی ہے۔ انا ہدیناہ السبیل اما شا کو او اما کفوراً۔ ہم نے اس کو راستہ بتلایا تو وہ شکر گزار ہو گیا یا ناشکر ہو گیا۔ (سورۃ الدھر آیت 3)

نفی خاص ہدایت کی ہے جس کو توفیق کہتے ہیں۔ اللہ تعالیٰ ظالم اور فاسق کو توفیق والی ہدایت نہیں دیتے۔ ظالم اور فاسق سے مراد کافر ہے۔ اما فرما فرماتے ہیں۔ من سلك الهدی فعلى الله سبيله۔ جو ہدایت کے راستے پر چلے گا تو اللہ اس کو اس راستے پر چلائے گا۔ ومثله قوله وعلى الله قصد السبيل من اراد الله فهو على سبيل القاصد۔ جو اللہ کو مقصد بنالے وہ صحیح راستے پر ہے۔ (معانی القرآن ج 3 ص 271)

علامہ زکری فرماتے ہیں۔ ان الارشاد الى الحق واجب علينا بنصب الدلائل وبيان الشرائع۔ (الكشاف ج 4 ص 763)

شریعت اور دلائل کے ساتھ حق کی طرف راستہ دکھانا مجھ پر لازم ہے یعنی عام ہدایت مراد ہے۔ علامہ آلوسی فرماتے ہیں۔ وقيل المراد ان الهدی موكول علينا لا على غيرنا (روح المعانی ج 30 ص 150) ہدایت دینا صرف میرا کام ہے کسی اور کا نہیں وہی خاص ہدایت مراد ہوگی یعنی توفیق جیسے فرمایا انک لاتھدی من اصبت۔

امام قرطبی فرماتے ہیں۔ ان علينا ثواب هداة الذي هديناه۔ (قرطبی ج 20 ص 86) میں نے جو ہدایت دی ہے اس کا ثواب میں ہی دوں گا۔

علامہ حنفی فرماتے ہیں۔ ان الطريق الذي يدل علينا وعلى طاعتنا هو الهدى لا الضلال۔ مجھ تک پہنچنے کا راستہ ہدایت ہے نہ گمراہی۔ من سلك

طريق الهدى وصل الى الله۔ جو ہدایت کے راستے پر چلے گا وہ اللہ تک پہنچے گا۔ (اضواء البیان ج 10 ص 333)

اب معنی ہوگا کہ مجھ تک آنا چاہتے ہو تو میں نے جو ہدایت دی ہے اس پر چلو جس کو ہدایت کہتے ہیں تو مجھ تک پہنچ جاؤ گے۔ یہ مطلب نہیں کہ میں کسی کو ہدایت نہیں دیتا لیکن پھر سوال پیدا ہوتا ہے کہ اللہ تعالیٰ نے ظالم اور فاسق سے ہدایت کی نفی کی ہے اس کا جواب یہ ہے کہ جہاں ہدایت کا اثبات ہے تو وہاں راہ دکھانا مراد ہے جہاں ہدایت کی نفی ہے وہاں توفیق مراد ہے جب انسان عام ہدایت پر نہیں چلتا تو اللہ اس کو خاص ہدایت کی توفیق نہیں دیتے۔

تعارض: 218 سورة الضحیٰ

آیت 7

ووجدك ضالاً فهدی۔

اور اللہ تعالیٰ نے آپ کو بے خبر پایا سو رستہ بتلایا۔ اس آیت سے ظاہر ہے کہ ہدایت کا مفہوم نکلنا ہے کہ حضور ﷺ عیاذ باللہ نبوت سے قبل گمراہ تھے۔ حالانکہ انبیاء کرام معصوم بھی ہوتے ہیں اور حضور ﷺ ابتداء سے دین حنیف پر قائم تھے۔ غار حرا میں عبادت کرتے تھے ارشاد باری ہے۔ فاقم وجهک للدين حنیفاً فطرة الله التي فطر الناس علیہا تو تم کیسے ہو کر اپنا رخ اس دین کی طرف رکھو اللہ کی دی ہوئی قابلیت کا اتباع کرو جس پر اللہ تعالیٰ نے لوگوں کو پیدا کیا ہے۔ (سورۃ الروم آیت 3) معلوم ہوا کہ حضور ابتداء سے صحیح دین حنیف پر قائم تھے جس میں گمراہی کا امکان نہیں تھا۔

تطبیق: ضالاً کا معنی یہ ہے کہ آپ موجودہ شریعت سے ناواقف تھے جو

فطرت اور عقل سے معلوم نہیں ہوتی۔ یہ مطلب نہیں کہ آپ پہلے بے راہ تھے پھر راہ راست پر آگئے اسی لئے اللہ کا فرمان ہے۔ ما کنت تدری ما الکتاب ولا الایمان۔ آپ کو نہ یہ خبر تھی کہ کتاب کیا چیز ہے اور نہ یہ خبر تھی کہ ایمان کیا چیز ہے۔ (سورۃ الشوریٰ آیت 52)

ایمان سے مراد شراعی دین ہیں ایک اور مقام پر فرمایا۔ وان کنت من قبلہ لمن الغافلین۔ اور اس کے قبل آپ محض بے خبر تھے۔ (سورۃ یوسف 3) اسی طرح ارشاد ہے۔ و علمک ما لم تکن تعلم۔ اور آپ کو وہ باتیں بتلائی ہیں جو آپ نہ جانتے تھے۔ (سورۃ النساء آیت 113)۔

علامہ زبیر فرماتے ہیں ضالا معناه الضلال عن العلم الشرائع و ما طریقہ السمیع کقولہ ما کنت تدری ما الکتاب (الکشاف ج 4 ص 768) شراعی کے علم سے بے خبر تھے۔ فرماتے ہیں ضلال معناه الذہاب عن العلم۔ علم سے بے خبر یہ معنی قرآن مجید میں مستعمل ہے۔ ان تضل احداہما تا کہ ان دونوں عورتوں میں سے کوئی ایک بھی بھول جاوے۔ (سورۃ البقرۃ آیت 282) لایضل ربی ولا ینسی۔ میرا رب نہ غلطی کرتا ہے نہ بھولتا ہے۔ (طہ 52)۔

ضالا کے تین اور معنی بیان کئے ہیں

(۱) بچپن میں مکہ کی کسی وادی میں کھو گئے تھے۔ ابو جہل ان کو عبدالمطلب کے پاس لے گئے۔

(۲) جب بنی ہاشم دودھ چھڑانے کے بعد ان کو لائی تو باب مکہ کے پاس ان سے کھو گئے پھر بنی ہاشم ان کو عبدالمطلب کے پاس لے آئی۔

(۳) ابو طالب کے ساتھ شام کے سفر میں راستہ بھول گئے تھے اللہ نے ہدایت فرمائی۔

امام قرطبی نے ضلال بمعنی غفلت لیا ہے ای غافلا عما یراد بک من امر النبوة فہدک۔

آپ نبوت سے غافل تھے اللہ نے آپ کو نبی بنا دیا۔ امام قرطبی نے کئی معانی بیان کئے ہیں۔

(۱) قال قوم ووجدک ضالا ای فی قوم ضلال فہداهم بک۔ تجھے بے راہ قوم میں پایا آپ کی وجہ سے اس گمراہ قوم کو ہدایت دی۔

(۲) ووجدک ضالا عن الهجرة فہدک الیہا۔ تجھے ہجرت سے بے خبر پایا پھر اس کی طرف راہنمائی کی۔

(۳) ووجدک طالبا للقبلة فہدک الیہا۔ تجھے قبلہ کا طالب پایا اور بتا دیا۔ ضلال بمعنی طلب آتا ہے اس لئے ضال بھی طالب ہوتا ہے۔

(۴) ووجدک متحیرا عن بیان ما نزل علیک فہدک الیہا۔ تیری طرف جو نازل ہوا اس کے بارے میں آپ متحیر تھے پس اللہ تعالیٰ نے وہ حیرانی راہنمائی کر کے ختم کر دی۔ ضال بھی متحیر ہوتا ہے۔

(۵) ووجدک محبا للہدایۃ فہدک الیہا۔ تجھے ہدایت کا چاہنے والا پایا پس وہ ہدایت آپ کو نصیب کر دی۔ ضلال محبت کے معنی میں آیا ہے۔

ارشاد ہے۔ قالوا تا اللہ انک لفی ضلالک القدیم۔ ای فی محبتک وہ کہنے لگے۔ بخدا آپ اس پرانے غلط خیال میں مبتلا ہیں۔ (سورۃ یوسف آیت 95)

(۶) ووجدک ضالا لیلۃ المعراج حین انصرف عنک جبیرئیل وانست لاتعرف الطریق فہدک الی ساق العرش معراج کی رات جب جبیرئیل آپ سے واپس ہوئے تو آپ کو راستہ معلوم نہ تھا پس آپ کو عرش کی ساق کا راستہ بتا دیا۔

(۷) وقال بسام بن عبد الله ووجدك ضالاً بنفسك
لاتدري من انت فعرفك بنفسك و حالک بسام فرماتے ہیں کہ آپ
اپنے مقام کو نہیں پہچانتے تھے اللہ تعالیٰ نے بتایا کہ آپ کا کیا مقام کیا ہے۔

(۸) وقال الجنیدی ووجدک متحیرا فی بیان الكتاب
فعلمک البیان لتبین للناس ما نزل الیہم۔ تجھے کتاب کی تفہیم کے بارے
میں حیران پایا پس آپ کو ما نزل الیہم کے بیان کا طریقہ بتادیا۔

(۹) وقال بعض المتکلمین اذا وجدت العرب شجرة
منفردة فی فلاة من الارض لا شجر معها سموها ضالا فیہتدی بہا الی
الطریق فقال الله ووجدک ضالا ای لا احد علی دینک وانت
وحید لیس معک احد فہتدی بہک الخلق الی بعض متکلمین کہتے ہیں کہ
عرب جب کسی بیابان میں صرف ایک درخت پاتے ہیں تو اس کو ضال کہتے ہیں تو
کرتے ہیں اس درخت کو نشان بنا کر اس کے ذریعے راستہ معلوم کرتے ہیں تو
آیت کا معنی یہ ہوا آپ کے دین پر آپ کے سوا کوئی قائم نہ تھا آپ اکیلے تھے اللہ
تعالیٰ نے آپ کی وجہ سے تمام مخلوق کی اپنی طرف راہنمائی فرمائی امام قرطبی فرماتے
ہیں کہ یہ تمام توجیحات اچھی ہیں بعض مسی ہیں بعض معنوی لیکن یہ آخری توجیہ مجھے
بہت اچھی لگتی ہے کیونکہ اس میں تمام معنوی توجیحات کا استقصاء ہے۔ والقول
الاخیر اعجب الی لانه یجمع الاقوال المعنویة۔ (قرطبی ج 2 ص 97
'98' 99)

امام رازی نے بھی بہت سے جوابات ذکر کئے ہیں فرماتے ہیں۔ ضل الماء فی
اللبن اذا صار منسورا فسنى الآیة نکنت مغمورا بین الکفار بمکة
فقواک الله تعالیٰ حتی اظہرت دینہ۔ پانی جب دودھ میں بالکل غائب

ہو جائے آیت کا معنی یہ ہے کہ کفار اتنے زیادہ تھے کہ آپ ان کے مابین بالکل
غائب تھے۔ اللہ نے آپ کو قوت دی یہاں تک کہ آپ نے اپنا دین ظاہر کر دیا یعنی
نمایاں ہو کر سامنے آ گئے۔

ایک اور توجیہ ذکر کی ہے۔ ووجدک ضالاً عافی قومک کانوا یؤذونک
ولایرضون بہک رعیتہ فقوی امرک وهداک الی ان صورت
والیسا علیہم۔ آپ کو ایسی حالت میں پایا کہ آپ عن قریب ان کی ایذاؤں کی وجہ
سے ضائع ہونے والے تھے اور وہ آپ کی رعایا بننا پسند نہیں کرتے ہیں اللہ نے
آپ کو قوت دی اور آپ ان کے والی بن گئے۔ (کبیر ج 32 ص 217)۔

ابن الجوزی فرماتے ہیں ووجدک ضالاً لا تذکر ولا تعرف فہد الناس
الیک حتی عرفوک قالہ عبد العزیز بن یحییٰ و محمد بن علی
القرمذی (زاد المسیر ج 9 ص 159)
آپ کو گوشہ گنہامی میں پایا آپ کو کوئی بھی نہیں پہچانتا تھا اللہ تعالیٰ نے تمام لوگوں
میں آپ کو متعارف کرایا۔

تعارض: 219 سورة القدر

آیت 1

انا انزلہ فی لیلة القدر۔

ہم نے اس کو اتارا شب قدر میں انزال کے معنی ہیں یکدم نازل ہونا اس آیت کا یہ
مطلب نکلا کہ قرآن مجید دفعتاً نازل ہوا لیکن دیگر آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ قرآن
مجید کا نزول تدریجی ہے تھوڑا تھوڑا نازل ہوا ہے ارشاد باری ہے ننزل من
السور سن الوحیم۔ یہ کلام رحمان رحیم کی طرف سے نازل کیا جاتا ہے۔ (سورۃ تم

تنزیل تدریجی نزول کو کہتے ہیں نزول دفعی اور نزول تدریجی میں تضاد ہے۔

قرآن مجید کے نزول کے بارے میں خود قرآن مجید کے اندر دو

تطبیقی:

قسم کے صیغے ہیں ایک انزال کا اور دوسرا تنزیل کا انزال دفعی نزول کو کہتے ہیں اور

تنزیل تدریجی نزول کو دونوں میں کوئی تعارض نہیں قرآن مجید لوح محفوظ سے آسمان

دنیا کی طرف شب قدر میں دفعتاً اور یکدم نازل ہوا ہے جس کا ذکر اس آیت میں

ہے۔ انا انزلناه فی لیلة القدر۔

امام قرطبی فرماتے ہیں انزل اللہ القرآن کله فی لیلة القدر من ام الكتاب

الی بیت العزة فی سماء الدنيا ثم انزل اللہ علی نبیہ ﷺ فی اللیالی

والایام فی ثلاث وعشیرین سنة۔ (قرطبی ج 16 ص 126)

اللہ تعالیٰ نے پورے قرآن مجید کو لوح محفوظ سے آسمان دنیا میں بیت العزة کی طرف

شب قدر میں نازل کیا۔ پھر حضور پر تیس سال کے عرصہ تک دن رات نازل ہوتا

رہا اس لئے دونوں نزول صحیح ہیں۔

علامہ آلوسی فرماتے ہیں انه نزل فیہ جملة الی السماء الدنيا ثم نزل

منجماً الی الارض فی ثلاث وعشیرین سنة۔ (روح المعانی ج 2 ص 61)

شب قدر میں آسمان دنیا کی طرف یکدم نازل ہوا اور زمین پر تیس سال کے عرصہ

میں۔

تعارض: 220 سورة الزلزال

آیت 8'7

فمن يعمل مثقال ذرة خیراً یؤره ومن یعمل مثقال ذرة شراً یره۔

سو جو شخص ذرہ برابر نیکی کرے گا وہ اسکو دیکھ لے گا اور جو شخص ذرہ برابر بدی کرے گا وہ

اس کو دیکھ لے گا۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ ہر عامل خواہ کافر ہو یا مسلمان اپنے خیر اور شر کا بدلہ پائے

گا۔ لیکن دیگر آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ کفار کا عمل تو ضائع ہو جاتا ہے۔ ارشاد ہے

وقدمنا الی ما عملتمو امن عمل فجعلناہ ہباء منثوراً۔ اور ہم ان کے ان

کاموں کی طرف جو کہ وہ کر چکے ہیں متوجہ ہوں گے سوان کو ایسا کر دیں گے جیسے

پریشان غبار۔ (سورة الفرقان آیت 23)۔

ایک اور جگہ ارشاد ہے والذین کفرو واعمالہم کسراب بقعیة یحسبہ

الظمآن ماء حتی اذا جائہ لم یجدہ شیئاً اور جو لوگ کافر ہیں ان کے اعمال

ایسے ہیں جیسے ایک چٹیل میدان میں چمکتا ہوا ریت کہ پیاسا اس کو پانی خیال

کرتا ہے۔ یہاں تک کہ جب اس کے پاس آیا تو اس کو کچھ بھی نہ پایا۔ (سورة

النور آیت 39)۔

ان آیات سے معلوم ہوا کہ کفار کے اعمال بے کار محض ہیں اجر تو دور کی بات ہے۔

تطبیقی: علامہ شہنشاہی فرماتے ہیں یہ آیت عام مخصوص البعض ہے اپنے

نیک عمل کا بدلہ پائے گا بشرطیکہ نیک عمل کو کفر نے ختم نہ کیا ہو۔

(۲) آیت اپنے عموم پر ہے کافر اپنی نیکی کا بدلہ دنیا میں پاتا ہے۔ دلیل یہ ہے

نوف الیہم اعمالہم فیہا۔ ہم ان کو ان کے اعمال کا بدلہ دنیا میں پورا پورا دیں

گے۔ (سورة ہود آیت 15)

(۳) آیت عموم پر ہے مؤمن آخرت میں اپنا خیر اور شر دیکھ لے گا۔ اللہ اس کے شر کو معاف کر دے گا۔ اور خیر پر ثواب عطا فرمائے گا۔ کافر بھی اپنا خیر اور شر دیکھ لے گا۔ خیر ضائع ہو جائے گا۔ اور شر کی سزا بھگتے گا۔ (انصواء البیان ج 10 ص 342)۔
امام رازی فرماتے ہیں اس آیت میں اشکال ہے کہ کافر کی نیکیوں کو اس کا کفر کھا جاتا ہے۔ تو اجر کا کیا مطلب۔ جواب دیتے ہیں کافر اپنی نیکی کا بدلہ دنیا میں پالیتا ہے اور آخرت میں کوئی حصہ نہیں ہوتا۔

دوسرا جواب یہ ہے کہ مؤمن اور کافر دونوں کو اللہ اپنا اپنا خیر اور شر دکھائیں گے۔ مؤمن کے گناہ معاف کر دیں گے اور نیکی پر اجر عطا فرمائیں گے۔ اور کافر کو اپنی نیکی لوٹا دی جاتی ہے اور گناہ پر عذاب دیں گے۔ یا آیت میں تخصیص ہے سعدا (نیک بخت لوگ) خیر پائیں گے۔ اور اشقیاء (بد بخت) شر دیکھ لیں گے (کبیر ج 32 ص 61)۔

سورة العاديات

تعارض: 221

آیت 6 ' 7

ان الانسان لربه لکنود وانه على ذلک لشهيد۔ بے شک آدمی اپنے رب کا ناشکر ہے۔ اور وہ آدمی اس کام کو سامنے دیکھتا ہے اس آیت سے معلوم ہوا کہ انسان اپنی ناشکری پر گواہ ہے اور سمجھتا ہے کہ ناشکر ہوں لیکن بعض آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ اپنے اعمال کو نیک اور اچھا سمجھتا ہے ارشاد ہے۔ وهم يحسبون انهم يحسنون صنعاً۔ اور وہ اس خیال میں ہیں کہ وہ اچھا کام کر رہے ہیں۔ (سورة الکھف آیت 104)
ایک اور ارشاد ہے يحسبون انهم مهتدون۔ اور یہ لوگ خیال کرتے ہیں کہ وہ

راہ پر ہیں (سورة الزخرف آیت 37)

تطبیق: وانه على ذلک لشهيد: میں ضمیر رب کی طرف راجع ہے علامہ زنجیری فرماتے ہیں۔ وقيل ان الله على کنوده لشاهد على سبيل السوعيد۔ اللہ تعالیٰ ان کی ناشکری پر گواہ ہے اور یہ گواہ ہونا بطور وعید کے ہے۔ (الکشاف ج 4 ص 288)

یعنی گناہوں سے باز آ جا اس لئے کہ اللہ تعالیٰ تیرے سب گناہوں کو دیکھ رہا ہے۔ امام فراء فرماتے ہیں وان الله على ذلک لشهيد۔ (معانی القرآن ج 3 ص 283)

اللہ تعالیٰ اس ناشکری پر گواہ ہے لیکن رب کی طرف ضمیر لوٹنا ناظم قرآن کے مناسب نہیں کیونکہ اس سورت میں تمام ضمیریں انسان کی طرف راجع ہیں۔

تطبیق (۲) انسان کی گواہی اپنی ناشکری پر حال کی گواہی ہے زبان سے اگرچہ اقرار نہیں کرتا۔ حافظ ابن کثیر فرماتے ہیں ای بلسان حالہ ای ظاہر علیہ فی اقوالہ و افعالہ کما قال ماکان للمشرکین ان يعمر و مساجد الله شاهدين على انفسهم بالكفر۔ زبان حال کی گواہی ہے جو ان کے اقوال و افعال سے معلوم ہوتی ہے جیسے اللہ کا فرمان ہے مشرکین کی یہ لیاقت ہی نہیں کہ وہ اللہ کی مسجدوں کو آباد کریں جس حالت میں کہ وہ خود اپنے کفر کا اقرار کر رہے ہیں۔ (ابن کثیر ج 7 ص 355)

تطبیق: (۳) علامہ شافعی فرماتے ہیں ان شهادتہ على نفسه بذلک يوم القيامة۔ انسان کی یہ گواہی قیامت کے دن ہے جیسے فرمان باری ہے۔ وشهدوا على انفسهم كانوا کافرين۔ اور وہ لوگ مقرر ہوں گے کہ وہ کافر تھے۔ (سورة الانعام آیت 130)

ایک اور ارشاد ہے فاعترفوا بذنوبهم فسحقاً لأصحاب السعير. غرض اپنے جرم کا اقرار کریں گے سواہل دوزخ پر لعنت ہے۔ (سورۃ الملک آیت 11. انصواء البیان ج 10 ص 342)

ناشکری کی گواہی قیامت کے دن ہوگی اور خود دنیا کو میں نیک اور اچھا سمجھ رہا ہے۔

تعارض: 222 سورة العصر

آیت 2

ان الانسان لفي خسر. انسان بڑے خسارے میں ہے۔

اس آیت میں ایک انسان کا ذکر ہے لیکن اس سورت میں الا الذين آمنوا بغير جو لوگ ایمان لائے۔ (آیت 3) سے معلوم ہوتا ہے کہ انسان ایک نہیں ورنہ استثناء کا کیا مطلب۔

تطبيق: الانسان میں الف لام استغراق کے لئے ہے یعنی کل انسان

ہر انسان مراد ہے۔ علامہ زکری فرماتے ہیں والا انسان للجنس الف لام جنسی ہے۔

والمعنى ان الناس في خسران من تجارتهم الا الصالحين و حدہم۔ (الکشاف ج 4 ص 794)

تمام انسان اپنے اعمال کی تجارت کے وجہ سے گھٹانے میں ہیں لیکن صرف نیک لوگ نہیں۔

علامہ ابن کثیر فرماتے ہیں فاستثنى من جنس الانسان عن الخسران الذين

آمنوا بقلوبهم وعملوا الصالحات بجوارحهم۔ (ابن کثیر ج 7

ص 366)

جنس انسان سے مراد ہے جس دلی ایمان والے اور بوارح کے ساتھ اعمال والے

مستثنیٰ ہیں۔

امام رازی فرماتے ہیں الف لام جنسی ہے یا انسان سے شخص معین مراد ہے جیسے روایات میں آتا ہے اس انسان کا مقصد اق ولید بن مغیرہ عاص بن وائل اور اسود بن عبد المطلب ہے مقاتل کہتا ہے ابولہب ہے ایک مرفوع خبر میں ابو جہل کا ذکر ہے کیونکہ ان سب نے کہا تھا محمدؐ خیار سے میں ہے امام رازی فرماتے ہیں ان حملنا الانسان على الكافر كان المراد كونه في الضلالة والكفر الامن امن من هؤلاء۔ (تفسیر کبیر ج 32 ص 86)

اگر انسان سے خاص کافر مراد لیا جائے تو معنی ہوگا کافر کفر اور گمراہی میں ہے ہاں اگر ان میں سے کوئی ایمان لے آئے تو گھٹانے سے نفع کی طرف لوٹ آئے گا۔

تعارض: 223 سورة الكافرون

آیت 3

ولا اثم عابدون ما عبد. اور نہ تم میرے معبود کی پرستش کرتے ہو۔

اس آیت سے معلوم ہوا کہ اس آیت کے مخاطب کفار کبھی بھی اللہ تعالیٰ کی عبادت نہیں کریں گے حالانکہ دیگر آیات سے معلوم ہوتا ہے کہ یہ کفار ایمان لائے ہیں اور ظاہر ہے جب ایمان لے آئیں تو عبادت بھی کریں گے ارشاد ہے۔ و منعم من يؤمن به. اور ان میں سے بعض ایسے ہیں جو اس پر ایمان لے آویں گے۔

(سورۃ یونس آیت 40)۔

ایک اور ارشاد ہے ومن هؤلاء من يؤمن به. اور ان لوگوں میں بعض ایسے ہیں کہ اس کتاب پر ایمان لے آتے ہیں۔ (سورۃ العنکبوت آیت 47)۔

تطبیق: ابوبکر الجصاص فرماتے ہیں۔ هذه الآية وان كانت خاصة
فی بعض الکفار دون بعض لان کثیر منهم قد اسلموا (احکام القرآن
للجصاص ج 3 ص 476)۔

سب کافر اذنبیں بلکہ بعض مراد ہیں۔ کیونکہ ان میں بہت سے ایمان لے آئے تھے۔
امام رازی فرماتے ہیں۔ ولا يجوز ايضا ان يكون قوله ولا انتم عابدون
ما عبد خطابا مع الكل لان في الكفار من آمن وصار بحيث يعبد الله۔ یہ
خطاب سب کفار سے نہیں تھا۔ کیونکہ ان میں کچھ ایمان لائے اور اللہ کی عبادت
کرنے والے بن گئے فرماتے ہیں کہ یہ خطاب کفار کی ان مخصوص اقوام کی طرف
تھا۔ جنہوں نے کہا تھا کہ ایک سال ہم آپ کے معبود کی عبادت کریں گے اور ایک
سال آپ ہمارے معبود کی عبادت کریں۔ (تفسیر کبیر ج 32 ص 144)۔

حافظ ابن کثیر فرماتے ہیں قل يا ايها الكفرون يشمل كل كافر على وجه
الارض ولكن المواجهون بهذا الخطاب هم كفار قريش۔
يا ايها الكفرون تورؤن زمين کے سب کفار کو شامل ہے لیکن خطاب کے لحاظ سے
صرف قريش کے کفار مراد ہیں۔ (ابن کثیر ج 7 ص 392)۔

علامہ شمس تطبی فرماتے ہیں۔ انه خطاب لجنس الکفار وان اسلموا فيما بعد
فهو خطاب لهم ماداموا كفارا فاذا اسلموا لم يتناولهم ذلك لانهم
حينئذ مؤمنون لا كفرون۔ (اضواء البيان ج 10 ص 349)۔

یہ خطاب تمام کفار سے ہے اگرچہ وہ بعد میں ایمان لے آئیں یہ خطاب ان کو اس
وقت تک ہوگا جب تک وہ کافر رہیں جب وہ ایمان لے آئے تو اب یہ خطاب ان
سے نہ ہوگا کیونکہ اس وقت وہ کافر نہ رہے بلکہ ایمان لے آئے۔

ان کی عبارت کا حاصل یہ ہے کہ یہ خطاب تمام کفار سے ہے لیکن اس وقت تک

جب تک کافر رہیں جب کفر سے توبہ کی ایمان لے آئے تو اب اس خطاب کے تحت
داخل نہیں کیونکہ اب تو مؤمن ہیں اللہ تعالیٰ نے بالکل درست فرمایا کہ عبادت نہیں
کریں گے کیونکہ کافر عبادت نہیں کیا کرتے۔

تعارض: 224 سورة الناس.

من شروا سواس الخناس۔ آیت 4

سورہ ذالے والے پیچھے بٹ جانے والے کے شر سے۔ سواس اور خناس میں تنافی
ہے کیونکہ سواس کا معنی ہے لوگوں کو گمراہ کرنے کے لئے سورہ ذالے والا اور خناس
کا معنی ہے لوگوں کو گمراہ کرنے سے خوب پیچھے ہٹنے والا۔

تطبیق: سواس خناس دونوں شیطان کی صفات ہیں۔ ایک وقت میں
سواس اور خناس نہیں بلکہ ایک وقت میں سواس ہوتا ہے اور دوسرے وقت میں
خناس شیطان جب انسان کے دل کو اللہ کے ذکر سے غافل پاتا ہے تو سورہ
ذالتا ہے جب اس کو یاد کر پاتا ہے تو فوراً پیچھے بٹ جاتا ہے۔ امام فراء فرماتے ہیں
يوسوس في صدر الانسان فاذا ذكر الله عز وجل خنس۔ (معانی القرآن
ج 3 ص 287)۔

انسان کھول میں سورہ ذالتا ہے جب انسان اللہ کو یاد کرتا ہے تو شیطان پیچھے بٹ
جاتا ہے امام رازی اور علامہ زبیری سعید بن جبیر کی روایت ذکر کرتے ہیں
اذا ذكر الانسان ربه خنس الشيطان وولى فاذا غفل وسوس
اليه۔ (الكشاف ج 4 ص 824)۔ کبیر ج 32 ص 198۔

جب انسان اللہ کو یاد کرتا ہے تو شیطان پیچھے دکھا کر بھاگ جاتا ہے جب انسان
کو غافل پاتا ہے تو سورہ ذالتا ہے۔

علامہ آلوسی نے حضرت انس کی روایت ذکر کر کے فاذا غفل ابن آدم وضع
 ذلک المنقار فی اذن القلب یوسوس فان ذکر اللہ تعالیٰ نکص
 وخنس فلذلک سم الوسواس الخناس۔ جب ابن آدم کو غافل پاتا ہے
 تو اپنی چونچ و سوسہ کے لئے اس کے دل پر رکھتا ہے جب ابن آدم اللہ کو یاد کرتا ہے
 تو بھاگ جاتا ہے اسی لئے شیطان کو وسواس اور خناس کہا گیا۔ (روح المعانی ج 30
 ص 287)۔

حافظ ابن کثیر ابن عباس کی روایت ذکر کرتے ہیں۔ الوسواس فان هو الشیطان
 یا امر فاذا اطمع خنس۔ (تفسیر ابن کثیر ج 7 ص 423)۔
 وسوسہ ڈالنے کے بعد خود بخود پیچھے ہٹ جاتا ہے کیونکہ اس کی بات مان لی گئی جیسے
 ایک آدمی جرم کا ارتکاب کرنے کے بعد خود بخود واپس ہو جاتا ہے کیونکہ اس
 کا مقصد پورا ہو گیا۔

وَلِلَّهِ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ

مصنف کی مطبوعہ تصانیف

- ۱۔ تطبیق الایات
 - ۲۔ وجوه التکرار فی القرآن
- ## مصنف کی زیر طبع تصانیف
- ۱۔ جدید معاشی مقالات
 - ۲۔ جدید سیاسی مقالات
 - ۳۔ جدید طبی مسائل اور ان کا فقہی حل
 - ۴۔ اسلامی و قانونی مقالات
 - ۵۔ الجواب الشافی
 - ۶۔ شرعی حقائق امثال کی روشنی میں
 - ۷۔ الاحکام المستنبطۃ (من القرآن)
 - ۸۔ نکات القرآن
 - ۹۔ شرح العقیدۃ الطحاویۃ (اردو)

دار التصنیف

جامعہ عثمانیہ پشاور پوسٹ کوڈ: 1209